बुन्देलखण्ड की राष्ट्रीय चेतना में राष्ट्रकवि

: पं० घासीराम व्यास का योगदान :

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी की
पी०एच०डी० (हिन्दी) उपाधि हेतु
प्रस्तुत शोध प्रबन्ध
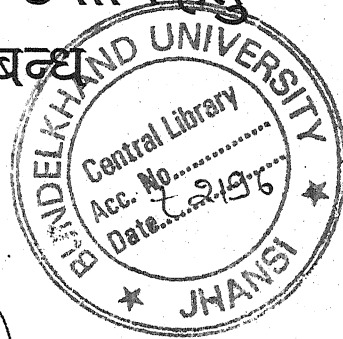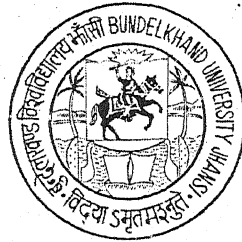
शोध निदेशिका :-
डॉ० (श्रीमती) कमलेश आनंद
रीडर - हिन्दी विभाग
बुन्देलखण्ड महाविद्यालय - झाँसी

प्रस्तुतकर्ता :
उमाकान्त खरे
प्राध्यापक - हिन्दी विभाग
डॉ० आर०पी०आर०, महाविद्यालय
बरूआसागर - झाँसी

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ. प्र.)
2005

बुन्देलखण्ड महाविद्यालय, झाँसी
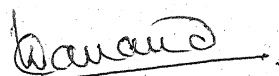
प्रमाण पत्र

मैं सहर्ष प्रमाणित करती हूँ कि श्री उमाकान्त खरे ने मेरे निर्देशन में बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के शोध केन्द्र बुन्देलखण्ड महाविद्यालय, झाँसी से हिन्दी विषय के शोध – छात्र के रूप में पंजीयित होकर 'बुन्देलखण्ड की राष्ट्रीय चेतना में राष्ट्रकवि पं0 घासीराम व्यास का योगदान' विषय पर अपना शोध कार्य पूर्ण करने हेतु निर्धारित अवधि तक यथाविधि निर्देशन प्राप्त किया है । अपनी प्रशंसनीय प्रतिभा और गम्भीर एवं सतत् अध्यवसाय के द्वारा इन्होनें अपना शोध प्रबन्ध पूर्ण कर लिया हैं ।

उर्पयुक्त शोध प्रबन्ध सर्वथा मौलिक और महत्वपूर्ण हैं । मैं इसका परीक्षण किये जाने हेतु उचित कार्यवाही के लिये अपनी संस्तुति प्रदान करती हूँ ।

दिनाँक :–
3.8.05

शोध निदेशिका :-

डॉ0 कमलेश आंनद
रीडर - हिन्दी विभाग
बुन्देलखण्ड महाविद्यालय
झाँसी

घोषणा पत्र

मैं घोषणा करता हूँ कि बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी के अन्तर्गत हिन्दी विषय में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध – प्रबन्ध "बुन्देलखण्ड की राष्ट्रीय चेतना में राष्ट्रकवि पं0 घासीराम व्यास का योगदान" मेरा मौलिक कार्य है । मेरे अभिज्ञान से प्रस्तुत शोध का अल्पाँश अथवा पूर्णांश किसी भी विश्वविद्यालय में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी अथवा अन्य किसी भी उपाधि हेतु प्रस्तुत नहीं किया गया है ।

दिनांक :– 03/08/2005

शोध छात्र

उमाकान्त खरे

उमाकान्त खरे
प्राध्यापक - हिन्दी विभाग
डॉ0 आर0पी0 आर0 महाविद्यालय
बरूआसागर - झाँसी

-: समर्पण :-

अपनी बगिया के नन्हें - नन्हें सुमन 'सिद्धार्थ और मृगनयनी' को जिनकी निश्छल मुस्कानें मेरे शोध पथ का आलोक बनी .... ।

'उमाकान्त खरे'

प्राक्कथन

बुन्देलखण्ड की भूमि वीरों और कवियों की खान हैं । भगवान वेदव्यास से लेकर राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त और ऐतिहासिक उपन्यास सम्राट बाबू वृन्दावन लाल वर्मा तक हमारी परम्परा ऐसी ही रही हैं । संस्कृत के महाकाव्य काल में भी इस भूभाग का अग्रणी स्थान रहा हैं । हिन्दी साहित्य का इतिहास इस बात का साक्षी है कि आदिकाल से लेकर वर्तमान तक साहित्यिक क्षेत्र में बुन्देलखण्ड का यथेष्ट योगदान है । भक्तिकाल में गोस्वामी तुलसीदास, रीतिकाल में आचार्य केशव और बिहारी इसके प्रमाण है । इनका साहित्य प्रचुर मात्रा में विद्यमान हैं जिस पर मंथन तो अवश्य होता रहा किन्तु लिपिबद्ध पर्याप्त मात्रा में नहीं हो सका । इधर साहित्यिक संस्थाओं, समीक्षकों, कवियों एवं लेखकों के माध्यम से इनकी रचनायें जन सामान्य तक पहुँच सकी, जिन पर गम्भीरता से विचार करने और साहित्य संस्थाओं, समीक्षकों, कवियों एवं लेखकों के माध्यम से इनकी रचनायें जनसामान्य तक उनके व्यक्तित्व और कृतित्तव से जाग्रत राष्ट्रीय चेतना को जनमानस तक पहुँचाने की पर्याप्त आवयश्कता का अनुभव किया जाने लगा,

परन्तु आज तक राष्ट्रकवि पं0 घासीराम व्यास पर किसी ने भी शोधकार्य करने का प्रयास नहीं किया । इस उद्देश्य के पीछे सुनियोजित दृष्टि रही अथवा अनायस, परन्तु यह पूर्णरूपेण स्पष्ट है कि इनके काव्य का अस्वाद राष्ट्रीय परिपेक्ष्य में अपना विशिष्ट स्थान रखता हैं । इन्होनें अपने काव्य के माध्यम से बुन्देलखण्ड से स्वतंत्रता की अलख ज्योति जाग्रत कर अपनी ओजस्वी वाणी से जन–जन में राष्ट्रीयता का शंखनाद फूंका । जनमानस को स्वतंत्रता संग्राम के लिये प्रेरित किया और स्वयं आजादी के दीवाने हो राष्ट्रीय आँदोलनों में बुन्देलखण्ड के पुरोधा रहे । राष्ट्रकवि के शब्दों में :–

"मन–मानस को भुवि भारत के प्रिय भावों से भरना सीखा ।
नौका पतवार बिना दुर्वह भवसागर से तरना सीखा ।
आजादी के शुभ यज्ञ बीच प्रिय प्राणाहुति करना सीखा ।
पावन बलि बेदी पर चढ़कर हँसते–हँसते मरना सीखा ।
सीखा फाँसी से प्यार अधिक सुरभित सुमनों के हारों से ।
आजादी के दीवाने हैं, खेला करते अंगारों से ।"

ऐसे महान राष्ट्रकवि पर सुधीजनों के समक्ष मैं शोध–प्रबन्ध प्रस्तुत करते हुये हर्षित हूँ, जिसका निर्णय आप सब के बीच हैं ।

प्रस्तुतकर्ता :
उमाकान्त खरे
प्राध्यापक - हिन्दी विभाग
डॉ० आर०पी०आर०, महाविद्यालय
बरूआसागर - झाँसी

आभार

बुन्देलीधरा की यह परम्परा ही रही है कि उसने अपने अंचल से कवियों को जन्म दिया । परन्तु समय की धूलि में ऐसी महान विभूतियाँ अदृश्य हो गयी हैं, जिनकी साहित्यिक एवं साँस्कृतिक देन अपूर्व रही हैं, ऐसे ही विस्मृत कवियों में एक राष्ट्रभक्त कवि पं0 श्री घासीराम व्यास जी हैं । जिनकी वाणी में बुन्देली, खड़ी और ब्रज भाषा की त्रिवेणी प्रवाहित हुई और इस त्रिवेणी पर राष्ट्र भक्ति का प्रयाग स्थापित हुआ जिसके लिये वह जिये और मरे .... । इन्हीं के पग चिन्हों पर चलने वाले श्री घासीराम व्यास जी के ज्येष्ठ पुत्र श्री लक्ष्मी नारायण व्यास का में ह्रदय से आभारी हूँ कि वृद्धावस्था में भी उन्होनें मेरी हर प्रकार से सहायता कर मेरी पथ बाधाओं को हमेशा दूरं किया ।

इस विषय पर शोध प्रबन्ध लिखने की प्रेरणा मुझे अपने गुरूजी श्री डॉ0 सियारामशरण शर्मा से मिली और उन्होनें समय – समय पर जो बहुमूल्य सुझाव और प्रेरणा मुझे दी वह हमेशा अविस्मरणीय हैं ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को साकार रूप देने में मेरी शोध निदेशिका पूजनीया डॉ0 कमलेश आनन्द सदा मेरी मार्ग दर्शक रही । अत्यन्त व्यस्त रहने पर भी उन्होनें हमेशा मेरा मनोबल बढ़ाया । प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में जो कुछ भी बिशिष्टता हैं, वह शोध निदेशिका की कृपा से फलीभूत हुई हैं । मैं तो कहूँगा कि इस भौतिक युग में किसी भी शोध छात्र को मेरे जैसी शोध निदेशिका मिलना ईश्वर की ही कृपा होगी ।

राजकीय जिला पुस्तकालय झाँसी, सेन्ट्रल लायब्रेरी बुन्देलखण्ड विश्व विद्यालय एवं उन सभी सहयोगियो का ह्रदय से आभारी हूँ जिनका इस शोध प्रबन्ध में प्रत्यक्ष – अप्रत्यक्ष रूप से मुझे सहयोग प्राप्त हुआ ।

अपने परम पूज्य पिता श्री भगवत नारायण खरे एवं पूजनीया माता श्री लक्ष्मीदेवी खरे के प्रति कैसे कृतज्ञता ज्ञापित करूँ जिन्होंने मुझे जन्म देकर इस लायक बनाया ।

मैं अपनी धर्मपत्नी श्रीमती सीमा खरे, चिं. विजयदीप कॉंत खरे (सिद्धार्थ) एवं प्रिय पुत्री मृगनयनी खरे (सृष्टि) का ह्रदय से आभारी हूँ, जिन्होंने अभावों में भी रहकर मेरे इस कार्य को पूर्ण होने तक अपनी हर मंशा को दबाये रखा ।

यस नेटवर्क एण्ड प्रिन्टर्स का विशेष आभारी हूँ जिन्होनें मेरे इस शोध प्रबन्ध को अल्प समय में साकार रूप दिया ।

अंत में मैं उस परम पिता परमात्मा को कैसे विस्मृत कर सकता हूँ जिसने मुझे मानव रूप मे जन्म देकर उसे सुसभ्य और सुशिक्षित बनने का आर्शीवाद दिया । में तो ईश्वर से कामना करूगाँ कि वह मुझे हमेशा मानवता के पथ पर चलने का सम्बल देता रहे ।

आखिरी में व्यास जी के शब्दों में ....

"कौमी खिदमत में ही जिन्दगी निसार होये ।
भूले नहीं व्यास कभी एक पल को भी याद ।
फाँसी हो गले पै और जुबां पे यही आवाज ।
इन्कलाब जिन्दाबाद, इन्कलाब जिन्दाबाद ।"

शोध छात्र :
उमाकान्त खरे
प्राध्यापक - हिन्दी विभाग
डॉ० आर०पी०आर०, महाविद्यालय
बरूआसागर - झाँसी (उ०प्र०)

अनुक्रमणिका

सप्तम् अध्याय 231 - 263

- राष्ट्रीय काव्य धारा में कविवर व्यास जी के काव्य की प्रासाँगिकता :
- तत्कालीन् काव्य साधना में उनका स्थान :
- स्वतंत्रता आन्दोलन विषयक दस्तावेज :
- महत्वपूर्ण पत्र:
- संस्मरण :
- स्वाधीनता आन्दोलक विषयक तथ्य आदि :
- उद्गार :
- परिशिष्ट
- आधार ग्रन्थ सूची
- राष्ट्र कवि घासीराम व्यास के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाशित विद्वानों के आलेखों की सूची
- सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

प्रथम अध्याय

- बुन्देलखण्ड की साहित्यिक एवं साँस्कृतिक परम्परायें :
- हिन्दी साहित्य के तत्कालीन राष्ट्रीय कवियों की परम्परा में बुन्देलखण्ड के राष्ट्रीय कवियों का योगदान :
- हिन्दी साहित्य के क्रम में व्यास जी की महत्वपूर्ण भूमिका :
- पं० घासीराम व्यास की राष्ट्रीय काव्य चेतना का तुलनात्मक विवेचन :

अध्याय एक

बुन्देलखण्ड की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक परम्परायें :-

भारत के ह्रदय स्थल में बसा हुआ विन्ध्य भूमि का यह बुन्देली भाषा–भाषी क्षेत्र अपने साथ साहित्यिक एवं सांस्कृतिक परम्परायें, उत्कृष्ट देशभक्ति एवं असाधारण शौर्य का एक उज्जवल राजनैतिक इतिहास लिए हुये है । यदि इस देश के मध्य प्रदेश में मालव भूमि को पग–पग पर रोटी और डग–डग नीर पर नाज हैं, तो इसी प्रदेश की बुन्देलखण्ड की इस धरती को भी पग–पग पर अपने शौर्य और डग–डग अपने साहित्य की गंगा – जमुना बहाकर जगह – जगह प्रयाग राज के पुनीत दर्शन कराने में कुछ कम गर्व नहीं हो सकता । यहाँ की मिट्टी ने अतीत काल से लेकर आज तक अपने शौर्य पूर्ण बलिदानों की बेजोड़ परम्पराओं के साथ साहित्यक एवं सांस्कृतिक धरोहरों की जो उल्लेखनीय देन इस देश को दी है, उसने अपनी मातृभूमि के कलेवर को सजाने और अलंकृत करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है ।

कौन नही जानता की अपनी मातृ भूमि की आन पर अतीत काल से लेकर आज तक न जाने कितने देशभक्त सपूतों ने रक्त की लाल बूँदों से इस वीर भूमि को सींचा है । यह अतिशयोक्ति नहीं है कि उनके वही रक्त कण पन्ना की खदानों के चमकते हीरों के रूप में निकलकर, आज भी विश्व के बाजारों में बेमिसाल हैं । इतिहास साक्षी है कि सन् 1857 के स्वाधीनता संग्राम में, यहाँ की माटी के सपूतों ने विदेशी साम्राज्य को चुनौती दी थी, वह इस देश के स्वधीनता संग्राम के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा हुआ है । श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान के शब्दों में :

"बुन्देले हर बोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी ।

खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी ।।"

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, उनका अमर सेनानी तात्या टोपे, सागर के स्वातंत्र्य वीर मधुकर शाह आदि बुन्देलखण्ड की श्रंगार मंजूषा के वे अनमोल रत्न है, जिन पर इस देश को अनंत काल तक नाज रहेगा ।

बुन्देलखण्ड का सांस्कृतिक, राजनैतिक शौर्यपूर्ण इतिहास सदियों पुराना हैं, जिसे समय की कलापूर्ण छैनियों ने बड़ी साधना के साथ गढ़ा और सँवारा है । पौराणिक कथाओं के आधार पर कहा जाता है कि इस देश के उत्तर व दक्षिण भारत के रूप में बांटता हुआ विन्ध्याचल पर्वत अपनी किशोरावस्था में अपने कुल गुरूऋषि अगस्त्य के आशीर्वाद से उत्रोत्तर शक्ति शिखर पर आसीन हो रहा था । समय की गति के अनुसार उसकी उँचाई में असाधारण वृद्धि होने से ऐसा प्रतीत होने लगा कि उसकी यह उँचाई आकाश को भी छेदकर संसार में प्रलय करा देगी । इससे संसार में खलबली मच गयी और देवताओं ने ऋषि अगस्त्य से इस आगामी संकट से मुक्ति दिलाने की प्रार्थना की । ऋषिराज देवताओं को आश्वासन देकर विन्ध्याचल के पास पहुँचे । अपने कुल गुरू के आगमन पर विन्ध्याचल ने उनको साष्टांग प्रणाम किया । ऋषिराज ने उसे आर्शीवाद देते हुए कहा कि वे दक्षिण यात्रा पर जा रहे हैं, जब तक वे वापिस न लौटें, तब तक इसी तरह पड़े रहना । विन्ध्याचल पर्वत अपने कुलगुरू की आज्ञा का कैसे उल्लंघन कर सकता था ? ऋषि अगस्त्य आज तक अपनी दक्षिण यात्रा से लौटे नहीं हैं और विन्ध्याचल आज भी उनके आगमन की प्रतीक्षा में उसी तरह आड़ा लेटा हुआ है ।

विन्ध्याचल के दक्षिण में नर्मदा नदी की पावन धारा मध्य प्रदेश की जीवन रेखा है । विन्ध्य और सतपुड़ा के संधि स्थल पर अमरकंटक से

3500 फुट की उँचाई से इस नदी ने दोनों पर्वतराजों के चरण पखारते हुए बुन्देलखण्ड की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक गरिमा में अनगिनत सुनहले पृष्ठ जोड़े हैं । नर्मदा के किनारे जबलपुर में तिलवारा घाट पर त्रिपुरी कलचुरी के राजवंश के बिखरे हुए अवशेष इस बात के साक्षी हैं कि इनकी पावन धारा ने अपने अंचल में एक से एक बढ़कर पानीदार राजवंशों को ऊपर उठाने की प्रेरणा दी है ।

विन्ध्य प्रदेश का अधिकांश भाग प्राचीन काल में चेदि जनपद के नाम से प्रसिद्ध था, बाद में यह बुन्देलखण्ड के नाम से प्रसिद्ध हुआ । सागर विश्वविद्यालय के पुरातत्व विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर के.डी. बाजपेयी ने उत्खनन के बाद यह सिद्ध किया है कि इस भूभाग में कला की उत्कृष्ट मूर्तियों का निर्माण हुआ था । पूर्व मध्यकाल में इस प्रदेश में चन्देलों द्वारा निर्मित खुजराहों के मन्दिर तथा कलचुरियों द्वारा निर्मित त्रिपुरी, जाँजगीर, रतनपुर आदि के मन्दिर इसके ज्वलन्त प्रमाण है । सांची स्तूप एवं खुजराहों के मंदिरों को देखकर यह स्पष्ट है कि ललित कलाओं के विकास की दृष्टि से यह भूभाग कितना समृद्ध था ।

विन्ध्यभूमि ऋषि अगस्त्य के अतिरिक्त पाराशर, वेदव्यास एवं बाल्मीकि आदि तपस्वी ऋषियों की साधना स्थली रही है । पौराणिक कथाओं के आधार पर मध्य प्रदेश का यह भूभाग महाराज इक्ष्वाकु को शासन करने के लिए दिया था । इस क्षेत्र पर महाराजा शिशुपाल का भी राज्य रहा है । तब से आज तक इस भूभाग ने उत्थान और पतन के अच्छे–बुरे दिन देखे हैं । लगभग एक हजार वर्ष पहले यहाँ चन्देलों का प्रभुत्व स्थापित था । इस कुल के एक वंशज ने खजूर वाहक में एक महान यज्ञ किया और उनके वंशजों ने अपनी इस यज्ञस्थली खजुराहों को अपनी राजधानी बनाकर यहां अपने कुलदेवताओं की प्रतिष्ठा में एक के बाद

एक पचासी मंदिरों की स्थापना की । इतिहासकारों के अनुसार इनमें से अधिकांश मंदिर दसवीं और ग्यारहवीं शताब्दी के मध्य में निर्मित हैं, जबकि चंदेलों का वैभव और जैन मंदिरों की एक साथ स्थापना इनके निर्माताओं की धार्मिक सहिष्णुता की नयनाभिराम झांकी प्रस्तुत करती है ।

पौराणिक कथाओं के आधार पर बुन्देलखण्ड के इस क्षेत्र को युद्ध क्षेत्र का नामकरण किया गया है । पौराणिक युग में यहां के राजा शिशुपाल का भी कृष्ण के साथ हमेशा युद्ध होता रहा है । कहा जाता है कि देवासुर संग्राम भी यहीं हुआ था । यहां तक शक, कुशान और बाकाटक आदि राजघरानों ने अपनी क्रीड़ास्थली बनाकर भारतवर्ष के इतिहास में अपनी–अपनी प्रभावपूर्ण भूमिकायें अदा की हैं । इसी क्षेत्र को मौर्य और गुप्त वंश के स्वर्णयुगों को भी सजोने का श्रेय है । गुप्त सम्राटों के राज्यकाल में एरन (सागर) उनकी राजधानी था । एरन की खुदाई में जो अवशेष प्राप्त हुए हैं, वे गुप्त काल के स्वर्णयुग की पुष्टि करते हैं । सन् 1531 के लगभग यह भाग बुन्देल राजाओं के अधिकार में आया।[1] यहाँ की माटी में वीरत्व के अंकुर प्रारम्भ से ही फूटते चले आ रहे हैं । यहां की मिट्टी में पैदा हुए आल्हा और ऊदल ने युद्ध के मैदान में अद्वितीय शौर्य, जुझार सिंह और महाराज छत्रसाल का तेजस्वी पराक्रम, सन् 1857 का रणचण्डी झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, रणबांकुरे सेनापति तात्यां टोपे, मधुकर शाह और बख्तबली आदि वीर योद्धओं की वीर गाथाएँ साहित्यकारों या कथाकारों की कपोल कल्पनायें नहीं हैं, वे उस इतिहास की वीर गाथाएँ हैं, जिन्होंने देश के इतिहास के सुनहले पृष्ठ जोड़े हैं । चंदेलों के बाद यहाँ मधुकर शाह बुन्देला ने इस वीर भूमि के औरछा राज्य को अपने सतत् प्रयास से शक्तिशाली बनाया, महाराजा छत्रसाल मुगल सम्राट औरंगजेब से

निरन्तर युद्ध करते रहे । अन्त में कड़े संघर्ष के बाद उन्हें अपने प्रयत्न में सफलता मिली, इस पराक्रम की पुष्टि इस दोहे से प्रमाणित होती है –

'इत चम्बल उत नर्मदा, इत जमुना उत टौंस ।
छत्रसाल से लरन की, रहीं न काहू हौंस ।।'

बुन्देलों की ऐतिहासिक श्रंखला में लाला हरदौल को भी हम स्मृति से ओझल नहीं कर सकते, जिसने अपनी भाभी के सम्मान की रक्षा के लिए उनके हाथों से विष का प्याला पीकर उनके सतीत्व पर लेशमात्र भी आँच नहीं आने दी थी । उनके बलिदान की स्मृति में बुन्देलखण्ड में आज भी विवाह के तत्काल बाद वर–वधु हर जगह हरदौल के चबूतरे पर जाकर और नारियल फोड़ कर उनके सम्मान में श्रद्धा के फूल अर्पित करते हैं । मिर्जापुर के पास ही विन्ध्यवासिनी देवी का मंदिर है, जो बुन्देल राजाओं की इष्ट देवी थी ।

साहित्यिक परम्परायें :-

बुन्देलखण्ड भूमि सदा से ही कवियों की खान रही है । अपनी परम्परा का ध्यान तथा उसका उचित अभिमान किसी की प्रगति के लिए आवश्यक ही नहीं, अपरिहार्य भी है । यह बुन्देलभूमि अपने कवियों का आदर करने की परम्परा सदा से बनाये रही है । साहित्य के क्षेत्र में यह भूभाग सदा अग्रणी रहा है । भगवान वेदव्यास से लेकर राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त और ऐतिहासिक उपन्यास सम्राट बाबू वृन्दावन लाल वर्मा तक हमारी परम्परा ऐसी ही रही है । संस्कृत के महाकाव्य काल में भी इस भूभाग का स्थान अग्रणी रहा है । हिन्दी साहित्य का इतिहास इस बात का साक्षी है कि आदिकाल से लेकर आज तक साहित्यिक क्षेत्र में बुन्देलखण्ड का महत्वपूर्ण योगदान रहा है । भक्तिकाल में गोस्वामी

तुलसीदास, रीतिकाल में आचार्य केशव और बिहारी इसके प्रमाण हैं । कविवर मुंशी अजमेरी की सुप्रसिद्ध रचना से बुन्देलखण्ड की प्रमाणिकता सिद्ध हो जाती है –

"तुलसी, केशव, लाल बिहारी, श्रीपति, गिरधर
रसनिधि, रायप्रवीण, भजन, ठाकुर, पद्माकर,
कविता–मंदिर–कलश सुकवि कितने उपजाये,
कौन गिनावे नाम किससे गुण गायें,
यह कमनीया काव्य – कला की नित्य भूमि हैं,
सदा–सरस बुन्देलखण्ड साहित्य भूमि हैं ।"[2]

बुन्देलखण्ड के कवि प्रायः उस भाषा में ही कविता करते हैं, जिसे आज ब्रजभाषा कहा जाता है । "यह भाषा उस समय की परम्परागत काव्य भाषा रही है और उस समय इसका नाम भी ब्रजभाषा नहीं, प्रत्युत ग्वालहेरी भाषा थी । इसका बुन्देली आदि बोलियों से उतना ही सम्बन्ध था जितना ब्रज की बोली से । इसे ब्रजभाषा भी नाम बाद में मिला और यह भ्रम हो गया कि ब्रजभाषा ब्रज की बोली का ही साहित्यिक रूप है, और यही कारण है कि केशवदास जैसे महाकवि ने काव्य के लिये इसी भाषा को जो समस्त हिन्दी भाषा–भाषी प्रदेश की परम्परागत काव्य भाषा थी, अपनाया" केशव की भाषा में यह स्पष्ट ही दिखता है कि जिस प्रकार उसे साहित्यिक ब्रजभाषा कहा जा सकता है, उसी प्रकार उसे सांहित्यिक बुन्देली भाषा भी कहा जा सकता है ।[3] बुन्देलखण्ड के कवि इसी व्यापक काव्य भाषा में अपना काव्य व्यापक दृष्टि से अब तक करते आये हैं, तो वह वास्तव में साहित्यिक ब्रज, बुन्देली भाषा, बल्कि साहित्यिक ब्रज–बुन्देली–अवधी कन्नौजी आदि के और हो ही क्या सकती थी ।[4]

कविवर घासीराम व्यास ने बुन्देलखण्ड की महिमा का गान ऐसे भाव भरे हृदय से किया है, जिसे बुन्देली के अतिरिक्त और किस भाषा का रूप कहा जा सकता है–

जाकै शीश जमुन डुलावै चौर मोद मान,

नर्मदा पखारे पाद्–पद्म पुष्य पेरवी है ।

कटिकल केन किंकिणी सी कल धौत कान्ति,

बेतवा विशाल मुक्त मात्र समलेखी है ।

'व्यास' कहैं सोहैं सीस फूल सम पुष्पावती,

पायजेब पायन पयस्विनी परेखी है ।

ऐ हो सखि सांची कहौ, सांची कहौ–सांची कहौ,

दिव्य भूमि ऐसी दुनी और कहूँ देखी है ।

X X X

लखन विदेहजा समेत वनवासी राम,

बास कियौ हयाँयी सोच शान्ति सरसाय लेहु ।

पाइ सुख शरण अज्ञात–वास कीन्हों यहाँ,

पांडवन प्रेम सों प्रभाव उर धाम लेहु ।

पाँय न पिराने हौंहिं भ्रम–भ्रम लोक–लोक,

पलक विसार श्रम चित्त बिरमाय लेहु ।

ए हो शशि परम पुनीत पुण्य भूमि यह,

नैनन निहारि नैकु हिय सिमराय लेहु ।[5]

अभिजात व्यापक साहित्य और जन–साहित्य की धारायें बराबर समानान्तर चली आ रही हैं । "अभिजात साहित्य यदि इसके समान है तो

जन–साहित्य ताजे फूल के समान है । इत्र बरसों रहता है, फूल का जीवन एक दिन का होता है । नागरिक जीवन में इसका महत्व है, परन्तु जन–जीवन में फूलों का महत्व तो स्पष्ट ही है । परिणाम की दृष्टि से जन–जीवन को रखने का कार्य जितना जनसाहित्य, लोकगीतों आदि ने किया है, उतना तथाकथित अभिजात साहित्यिक कृतियों ने नहीं ।[6]

तात्पर्य यह है कि साहित्य, संगीत तथा कला के क्षेत्र में बुन्देल बसुन्धरा ने अनेक वैभवशाली कलाकारों को जन्म दिया है, जिन्होंने अपनी कला साधना द्वारा बुन्देलखण्ड को ही नहीं वरन् भारत को गौरावान्वित किया है । आदि कवि बाल्मिकी, भगवान वेदव्यास, कृष्ण द्वैयापन, भवभूति, कृष्णदत्त मिश्र, काशीनाथ आदि संस्कृत के कवियों तथा जगनिक, गोस्वामी तुलसीदास, कवीन्द्र केशव, बिहारी, भूषण, पद्माकर, मतिराम, रायप्रवीण, चन्द्रसखी, ईसुरी तथा आधुनिक काल में मुंशी अजमेरी, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, सियाराम शरण गुप्त, वियोगि हरि, घासीराम व्यास, घनश्यामदास पाण्डेय, सुभद्रा कुमारी चौहान, रामकुमारी चौहान, गोविन्द दास विनीत, कवीन्द्र नाथूराम माहौर, आचार्य सेवकेन्द्र त्रिपाठी, रामचरण हयारण "मित्र" आदि कवियों ने साहित्य संस्कृति को आगे बढ़ाया और बुन्देलखण्ड को गौरावान्वित किया । कविवर वेणी माधव तिवारी ने बुन्देलखण्ड का यशगान इस प्रकार किया है –

"जन्म और निवास व्यास जी का कालपी के पास,
रचे गये जहाँ धर्म ग्रंथ ज्ञान मारतंड ।
भूषण और मतिराम, केशव का क्रीड़ाधाम,
तुलसी, बिहारी आदि कवि प्रकटे प्रचण्ड ।
लक्ष्मीबाई, नाना, आल्हा–ऊदल का वीर बाना,

छत्ता का जमाना है, विभूति जिसकी अखण्ड ।

परम पुनीत, जम्बू द्वीप में भरत–खण्ड,

पुण्य खंड उसका है अपना बुन्देलखण्ड ।[7]

सांस्कृतिक परम्परायें :–

उत्कृष्ट पराक्रम और अपूर्व देशभक्ति के साथ इस क्षेत्र ने साहित्य और कला के क्षेत्र में भी अपनी विनम्र श्रद्धांजलियाँ भेंटकर माँ सरस्वती का कलेवर अलंकृत करने में भी कोई कसर नहीं छोड़ी । महाकवि बिहारीलाल, पद्माकर, केशव, बोधा, पजनेस और पन्ना की वीर भूमि को अपने स्नेह सागर से गौरवान्वित करने वाले साहित्य महारथी बख्शी हँसराज और आल्हा के रचयिता जगनिक, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, उपन्यासकार वृन्दावनलाल वर्मा आदि बुन्देली भूमि की श्रृंगार मंजूषा के अनमोल रत्न हैं । महाराज छत्रसाल के उत्तराधिकारी हृदयशाह ने हंसराज जी को कृपा करके उन्हें अपने राज्य का बख्शी बनाया, साथ ही उन्हें प्रणामी सम्प्रदाय में दीक्षित भी किया । इनकी प्रसिद्ध रचना 'स्नेह सागर' है, जिसमें राधाकृष्ण की लीलाओं का वर्णन है । स्नेहसागर के संवादों में बुन्देली रीति रिवाज, आचार–व्यवहार, मुहाविरों–कहावतों के रूप में प्रयुक्त हुआ है ।

ग्रामीण अंचलों में आधारित और गुंजित देवी–देवता वहाँ के जन–जीवन में सर्वाधिक विश्वस्त आश्रय होते है। । दैविक, दैहिक, भौतिक तापों और सब प्रकार की सांसारिक समस्याओं के निवारण हेतु ग्रामीण जन अपने परम्परागत देवी–देवताओं पर अगाध विश्वास रखते हैं और उस अनुपमेय विश्वास की सार्थक सिद्धि भी आश्चर्यजनक रूप में प्रायः देखने को मिलती है । आंचलिक संस्कृति के ऐतिहासिक विश्लेषण के लिए देवी–देवताओं का अध्ययन नितॉंत आवश्यक है । बुन्देलखण्ड की आंचलिक

संस्कृति की प्राचीनता, यहाँ के लोक जीवन के स्वभाव और परम्पराओं की पृष्ठभूमि को समझने के लिए बुन्देलखण्ड के देवी–देवताओं के महत्त्व पर अवश्य विचार किया जाना चाहिए । टीकमगढ़ जिले के गांव बीजोर–बाघाट की द्रोण पहाड़ियों पर प्राप्त लाल रंग के उन अर्द्ध स्वास्तिक चिन्हों की कथाओं को चित्रमय किया गया है, अनुमान है कि यह पाँच हजार वर्ष पूर्व के हैं ।[8] डॉ0 वागीस शास्त्री ने अपनी पुस्तक 'बुन्देलखण्ड की प्राचीनता' में अकाट्य प्रमाणों से पुष्ट करते हुए लिखा है कि बुन्देलखण्ड भूभाग के आदि निवासी पुलिन्द थे ।[9]

बुन्देलखण्ड प्राचीन काल से शक्ति पूजा का प्रमुख केन्द्र रहा है । साथ ही शैव्य शासक तंत्र–मंत्र सिद्ध के लिये यहाँ के निवासी विश्वास करते रहे हैं । प्राचीन काल में 'कालंजर' पर काली का निवास था । देवी भागवत में कालीपीठ का उल्लेख मिलता है । इस प्रकार कालंजर की काली, खजुराहो की चामुण्डा, विन्ध्याचल की शववाहना, गढ़कुण्डार की सिद्ध वाहिनी, मैहर की शारदा देवी, टीकमगढ़ जिले की अछरू माता, कामाँक्षा देवी, काली–खोह की भद्रकाली, महोबा की चण्डिका, कुलपहाड़ की बाघ–राजन, राठ की श्यामला, मदनमहल की विन्ध्यकाली, मऊरानीपुर केदारेश्वर की चण्डिका, सेवढ़ा की महाकाली, चंदेरी की वागेश्वरी, सागर (विनायका) की महिसासुर–मर्दिनी और दतिया की पीताम्बरा देवी इत्यादि अनेक पुरातन सिद्धपीठ और मठ बुन्देलखण्ड में प्राचीन काल से उपस्थित और विख्यात हैं ।[10]

बुन्देलखण्ड में जो देवी देवता चिरकाल से पूजे जाते हैं, उनमें से अधिकांश का सम्बंध उसी परम्परागत पृष्ठ भूमि से जुड़ा हुआ है । नवरात्र में कन्याओं द्वारा 'सुआटा' का भूत जो दीवारों पर बनाया जाता है, वह किसी अति प्राचीन अनार्य राक्षस का प्रतीक है । विशेष पूजाओं पर जो

भित्ति चित्र बनाये जाते हैं वह शैव्य–शाक्त पूजा पद्धति के प्रतीक हैं, जिनमें दीपावली की सुराती महत्वपूर्ण है । इस प्रकार बुन्देलखण्ड के गाँव–गाँव में काली, जगदम्बा, माता–माई आदि पूजनीय हैं । इनमें सर्वाधिक पूजित देवी बीजासेन है, यह विन्ध्यवासिनी देवी का ही रूप है ।[11] अन्य प्रचलित देवी देवताओं में ठाकुर बाबा या बुन्देला बाबा, सैरे की भुवानी, खैरामाता या खेरापति, हरदौल लाला, दूलादेव या दूलाराजा, घटोइया, कारसदेव, खातीबाबा, गौंड–गौडइया, बरमदेव, मेढ़ादेव, मढ़ईदेव, भगतदेव, पीरियाबाबा, ग्वालबाबा, मसान बाबा, नट बाबा, नाग देवता, खंडेराव आदि उल्लेखनीय हैं ।

लोकगीत प्राचीन भारतीय परम्परा के जीवित स्मारक हैं । इनमें देश के रीति रिवाजों एवं संस्कृति की थाती युग परम्परा से सुरक्षित चली आ रही है । इन लोकगीतों में सोहरे, विवाह के गीत आदि हमारी प्राचीन धार्मिक एवं सांस्कृतिक परम्परा के प्रतीक हैं ।

हिन्दी साहित्य के तत्कालीन राष्ट्रीय कवियों की परम्परा में बुन्देलखण्ड के राष्ट्रीय कवियों का योगदान :-

वर्तमान हिन्दी कविता में राष्ट्रीय भावनाओं का श्रीगणेश भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के काल से होता है । इनके जीवन काल में ही 'स्वदेश प्रेम' से भरी हुई इनकी कविताएँ चारों और देश के मंगल का मंत्र सा फूंकने लगी थीं । 'भारत दुर्दशा' को लेकर उन्होंने एक नाटक भी लिखा था, किन्तु भारतेन्दु की देशभक्ति, राजभक्ति को साथ लेकर चलती थी और उनकी राष्ट्रीयता भी जातीयता की ही पोषक थी । पं0 प्रताप नारायण मिश्र, पं0 श्रीधर पाठक, देवी प्रसाद पूर्ण आदि ने भी स्वदेश प्रेम से सम्बन्ध रखने वाली कविताएँ लिखीं । आपको यह जानकर आश्यर्च होगा कि भारतेन्दु

से भी बहुत पहले श्री बांकीदास (सन् 1818–1890) नामक एक राजस्थानी कवि ने हिन्दु–मुस्लिम ऐक्य की राष्ट्रीय भावना को इस प्रकार व्यक्त किया था –

"आओ अंग्रेज मुल्क रे ऊपर
राखो रे कोहिंक राजपूती मरदां हिन्दु की मुसलमाणा ।"

अर्थात अंग्रेज हमारे मुल्क पर चढ़ आया है, इसलिए हे वीर देशवासियों ! हिन्दू–मुसलमान का भेद–भाव छोड़कर कुछ तो अपने शौर्य का परिचय दो ।[12] इस सामाजिक और राष्ट्रीय कविता का पूर्ण विकास हुआ द्विवेदी युग में जिसे ईसा की बीसवीं शताब्दी के प्रथम बीस वर्षों में सीमित किया जा सकता है । सरस्वती के सम्पादक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी इस युग के सूत्रधार थे और उन्होंने वही काम किया जो एक महान युग निर्माता का है । हिन्दी कविता का दूसरा कायापलट आचार्य द्विवेदी जी ने किया । द्विवेदी जी को उस खड़ी बोली को नया शरीर दिलाने का पूर्ण श्रेय है । उन्होंने उस युग के हिन्दी कवियों पर शासन और अनुशासन किया । 'सरस्वती' के सम्पादक के सिंहासन से राजदण्ड लेकर और उन्हीं के दिशा निर्देशन में मैथिलीशरण गुप्त, सियाराम शरण गुप्त, हृदय नारायण पाण्डेय जैसे सिद्ध–प्रसिद्ध कवियों ने खड़ी बोली के जन्म और शैशव का पूरा इतिहास निर्माण किया । यही खड़ी बोली हिन्दी कविता की गंगोत्री है, जो आगे बढ़कर महानदी का रूप धारण करती है और जिसमें अनेक छोटी–छोटी जलधाराएँ आकर मिलती हैं ।[13]

भारतेन्दु जी के सम–सामयिक अन्य कवियों व उनके बाद के कवियों ने अपनी कविता में राष्ट्रीयता की भावनाओं को व्यक्त किया । अब तक राष्ट्रीय काँग्रेस की स्थापना हो चुकी थी, अतः राष्ट्रीयता का आँदोलन और भी तीव्र गति से प्रारम्भ हुआ और अनेक कवियों ने देश की दुर्दशा को

पहचान ऊँचे स्वरों से देश के उद्धार के गीत गाये । कवियों का यह राष्ट्रभाव अनेक रूपों में प्रकट हुआ । किसी ने देश प्रेम के गीत गाये, किसी ने देश के उद्धारक महापुरूषों की वन्दना की, किसी ने अतीत गौरव का स्मरण कराकर भारतवासियों को जगाया तथा किसी ने देश की दुर्दशा के चित्र खींचे । भारतेन्दु के बाद ऐसे कवियों में राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त प्रमुख हैं । 'भारत—भारती' में उन्होंने अपनी राष्ट्रीय भावनाओं को पूर्णतः व्यक्त किया है । सियारामशरण गुप्त ने भी मैथिलीशरण जी की ही भांति अपनी कविताओं में राष्ट्रीयता व देश प्रेम की भावनाओं को स्वर दिये —

"जान लिया तुमने विशुद्ध अन्तःकरण से,
सत्ताधारियों के प्रहरण से, नाश नहीं जीवन का ।
बीज है उसमें चिरन्तन का ।"

पं0 बालकृष्ण शर्मा नवीन ने भी प्रारम्भ में देशभक्ति से ओत—प्रोत वीर रस पूर्ण रचनायें कीं । अपनी वर्तमान अवनति को देखकर कवि कहीं—कहीं व्यथा से भी भर उठा है —

"आज खड्ग की धार कुण्ठिता, है खाली तूणीर हुआ ।
विजय पताका झुकी हुई है, लक्ष्य भ्रष्ट यह चीर हुआ ।"

पं0 माखन लाल चतुर्वेदी इस काल में अपनी राष्ट्रीय कविताओं के कारण विशेष प्रसिद्ध हुए । देश प्रेम उनकी कविताओं में छलक उठा है । 'फूल की चाह' शीर्षक कविता में तो उन्होंने अपनी अभिलाषाओं का अत्यन्त सुन्दर व्यक्तीकरण किया है —

"मुझे तोड़ लेना बनमाली, उस पथ पर तुम देना फेंक ।
मातृभूमि हित शीश चढ़ाने, जिस पथ जावें वीर अनेक ।"

राष्ट्रीय कविताओं में श्री सोहन लाल द्विवेदी का भी अपना स्थान है । आपकी कविताएँ भी देश प्रेम व राष्ट्रीय भावनाओं से ओत–प्रोत हैं ।

श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान ने 'झांसी की रानी' रचकर अपने को अमर कर दिया । उनकी यह पंक्तियाँ आज भी मानवमन में राष्ट्रीय भावनाओं को प्रोत्साहित करने में सक्षम हैं ।

"बुन्देले हर बोलों के मुख, हमने सुनी कहानी थी ।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी ।"

राष्ट्रीय कवियों की इस परम्परा में दिनकर, पंत, निराला, प्रसाद को भी नहीं भुलाया जा सकता । 'दिनकर' ने तो राष्ट्रीय कविताओं के क्षेत्र में अपने को अमर कर लिया है । 'मेरे नगपति मेरे विशाल' शीर्षक कविता ही दिनकर की राष्ट्रीय भावनाओं का प्रतिनिधित्व करने को पर्याप्त हैं । पंत की 'युगवाणी', 'ग्राम्या', 'युगपथ, आदि काव्य संग्रहों में अपने राष्ट्रीय विचारों को अत्यन्त सुन्दरता से व्यक्त किया है । पं0 जवाहर लाल नेहरू के प्रति लिखी अपनी एक कविता में वे कहते हैं –

"हे भारत स्वातंत्र्य विश्वहित स्वर्ण जागरण ।
राम व्यथित भू पिये शांति सुख का संजीवन ।"

हिन्दी की छायावादी काव्य धारा देश और समाज के नूतन इतिहासबोध, नए सांस्कृतिक एवं सामाजिक चैतन्य की अनिवार्य काव्य परिणति रही है । लोकताँत्रिक चेतना की इस पृष्ठभूमि ने सम्पूर्ण राष्ट्र के

साहित्य मानस को प्रभावित किया है । फलस्वरूप छायावाद में राष्ट्रीयता की रागात्मक अभिव्यक्ति हुई । इसी से इस युग में अतीत गौरव, उद्बोधन गीत, प्रयाण गीत आदि की रचना के साथ–साथ यथार्थ परक चित्रण भी हुआ । छायावाद के पश्चात् हिन्दी साहित्य में आधुनिकता की अभिव्यक्ति प्रयोगवाद और प्रगतिवाद के रूप में दिखाई पड़ी जो क्रमशः व्यक्तिवादी और समाजवादी जीवन दृष्टि लिए हुए थी । लोकभावों और जीवन की ज्वलन्त समस्याओं की अभिव्यक्ति इस काव्य में अधिक हुई । जीवन का यथार्थ प्रगतिवाद युग में विशेष रूप से प्रखर हुआ । प्रगतिवाद युग की दृष्टि से प्रधान नहीं हो पाया, किन्तु परम्परा के रूप में सम्पूर्ण साहित्य को आज भी प्रमाणित करता है । हिन्दी साहित्य में माखन लाल चतुर्वेदी, पंत, निराला, दिनकर, नवीन, प्रगतिवादी दृष्टिकोण के कवि हैं ।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने हिन्दी साहित्य का इतिहास में लिखा है – "यहाँ भी किसान आंदोलन, मजदूर आंदोलन, अछूत आंदोलन आदि कई आंदोलन विराट परिवर्तनवाद के नाना व्यावसायिक अंगों के रूप में चले ।" सन् 1930 में भारतीय काँग्रेस ने पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त करना अपना लक्ष्य घोषित कर दिया था । बाल गंगाधर तिलक, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी देश की एकता व स्वतन्त्रता के लिए अलख जगा रहे थे । देशभक्त युवक शासन के अंकुश व भय को चुनौती देकर नित्य आत्म बलिदान कर रहे थे । ऐसे समय में समाज का सर्वाधिक संवेदनशील साहित्यकार प्रगति की दौड़ में कैसे पीछे रह सकता था । सन् 1935 में जिनेवा में प्रगतिशील लेखकसंघ की स्थापना की गई । उसके एक वर्ष पश्चात् 1936 ई0 में मुंशी प्रेमचन्द्र की अध्यक्षता में भारत में भी प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना की गयी । मुंशी प्रेमचन्द ने प्रगतिशील साहित्य को इस प्रकार परिभाषित किया हैं –

"उच्च कोटि का चिन्तन, स्वाधीनता का भाव, सौन्दर्य का सार, सृजन की आत्मा व जीवन की सच्चाई और साथ ही साथ गति, संघर्ष तथा बैचेनी जिस काव्य में होगी, वही प्रगतिशील काव्य कहला सकता है ।"

भारत में राष्ट्रीय चेतना की पृष्ठभूमि में भारतीय नव जागरण है जिसके प्रस्थान बिन्दु के रूप में राममोहन राय का उल्लेख किया जाता है । ब्रह्म समाज, आर्य समाज, रामकृष्ण मिशन, थियॉसाफीकल सोसायटी आदि आंदोलन इसी से जुड़े हुए हैं । सामाजिक सुधार और पुर्नजागरण राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन की पीठिका में सक्रिय रहे हैं । आगे चलकर नेतृत्व को भी इसका अहसास था कि सामाजिक सुधार और आजादी की लड़ाई एक दूसरे के पूरक हैं । उल्लेखनीय है कि नेताओं को भारतीय परम्परा और इतिहास की समझ है । तिलक, गांधी, ऐनीबेसेन्ट, अरविन्द, बिनोवा गीता पर भाष्य लिखते हैं, अपने–अपने दृष्टिकोण से । गीता ने स्वतन्त्रता आंदोलन को सर्वाधिक प्रेरणा दी । "आत्मा अजर अमर है – फिर कैसा मृत्यु भय । कर्म करो, फल की चिन्ता न करो । अनाशक्ति योग से आगे बढ़ो । जो लोग समाजवाद के प्रखर चिंतक बने, वे भी भारतीय संस्कृति में रचे पगे थे । आचार्य नरेन्द्र देव, डॉ0 सम्पूर्णानन्द, राम मनोहर लोहिया आदि बीसवीं शताब्दी के प्रथम चरण में एक मिली जुली सांस्कृतिक चेतना है जो रचना को भी प्रभावित करती है ।"

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की कविताएँ राष्ट्रीय भावनाओं से ओत–प्रोत थीं, इसीलिए उन्हें सन् 1936 ई0 में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने काशी के एक भव्य समारोह में राष्ट्रकवि घोषित करते हुए कहा था कि – "वे राष्ट्र के कवि हैं, उसी प्रकार जिस प्रकार राष्ट्र के बनाने से मैं महात्मा बन गया हूँ ।[14]"

"भारत–भारती" को आपत्तिजनक मानकर बिट्रिश शासन ने उसे जब्त कर लिया था ।

हम कौन थे, क्या हो गये और क्या होंगे अभी,

आओ विचारें आज मिलकर, ये समस्याएँ सभी ।

उपर्युक्त यह उद्‌बोधन ही साम्राज्यवाद को उत्तेजित करने के लिए पर्याप्त था । बुन्देलखण्ड को यह सौभाग्य प्राप्त है कि राष्ट्रकवि गुप्त जी की जन्मभूमि चिरगाँव जिला झाँसी है, यहीं रहकर उन्होंने अपनी अमर राष्ट्रीय रचनाओं के माध्यम से देश में राष्ट्रीयता का संचार संवर्धन किया । एक लम्बी अवधि में फैला हुआ उनका काव्य कई चरणों से गुजरता है । उनके रचना व्यक्तित्व के निर्माण में वैष्णव चेतना से उपजा प्रार्थना भाव, सुधारवादी दृष्टि जो युग की देन है और गाँधी के व्यक्तित्व का प्रभाव, उनकी 'भारत–भारती' का सबल पक्ष है । उसकी राष्ट्रीय चेतना 'साकेत' में उनकी पुनरूत्थानवादी भावना परिपक्व होकर हमारे सामने आती है । वे न तो आर्यसमाजी थे और न सनातनधर्मी । 'साकेत' में राम न तो बाल्मीकि के राम हैं, न भवभूति के और न तुलसी के ही । गुप्तजी ने साकेत में राम के बहाने मानव को ही ऊपर उठाया है । भारतीय संस्कृति के उन नायकों में उनका स्थान सर्वोपरि हैं । आपके सम्पूर्ण कृतित्व का मूल स्वर ही संस्कृति रहा है, उन्होनें अपने देशवासियों में साँस्कृतिक चेतना को विकसित करना ही आवश्यक समझा । उनकी कला की सार्थकता कदाचित सांस्कृतिक आदर्शों की अभिव्यक्ति में ही निहित रही है । कवि के शब्दों में –

"अभिव्यक्ति की कुशल शक्ति ही तो कला ।"

निश्चय ही गुप्त जी की कला भारतीय संस्कृति से अनुप्राणित है । भारतीय संस्कृति और भारतीय कलाओं का सम्बन्ध बीज और द्रुम के समान है । इस संदर्भ में कवि की उक्ति अवतरित है –

"संस्कृति जननी कला, कला संस्कृति जनती है ।
सरस उसी से रामराज्य की विधि बनती है ।"[15]

मैथिली शरण गुप्त के साहित्य में भारतीय संस्कृति की प्राचीन परम्पराओं और नवीन मान्यताओं का सुन्दर समन्वय हुआ है । यह समन्वय योजना ही भारतीय संस्कृति का तत्व है । भारतीय संस्कृति के इस समन्वयकारी तत्व में गुप्त जी की दृढ़ आस्था है और उन्हें पूर्ण विश्वास है कि सकल देशों की संस्कृतियाँ विश्व मानव में चरम विकास के लिए भारतीय संस्कृति की व्यापकता एवं महानता में समाविष्ट हो जायेंगी । कवि के ही शब्दों में गौरव–गर्भित आशा अभिव्यक्त है –

आर्य भूमि अंत में रहेगी आर्य भूमि ही,
आकर मिलेगी यहीं संस्कृतियाँ सबकी,
होगा एक विश्वतीर्थ भारत ही भूमि का ।[16]

यह हमारे देश की परम्परा रही है, जिसका सटीक चित्रण राष्ट्रकवि ने किया है । झाँसी (बुन्देलखण्ड) का यह भी सौभाग्य रहा है कि बाबू श्याम सुन्दर दास के पश्चात् 'सरस्वती' का सम्पादन हिन्दी साहित्य के द्विवेदी युग के प्रवर्तक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने जनवरी 1903 ई0 में झाँसी में रहकर किया, 1904 तक वे यहाँ रहकर 'सरस्वती' का सम्पादन करते रहे ।[17] खड़ी बोली काव्य की रचना और विकास का प्रथम श्रेय झाँसी को ही है, यहीं से द्विवेदी जी खड़ी बोली काव्य के प्रवर्तक के रूप

में स्वीकार किये गये । राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त और उनके भाई सियारामशरण गुप्त ने इनकी प्रेरणा से ही काव्य सृजन करके हिन्दी साहित्य का गौरव बढ़ाया ।

सियारामशरण गुप्त भारतीय संस्कृति के कवि हैं । आज का युग हिंसा, ईर्ष्या, द्वेष, आतंक, भय आदि में भ्रमित है । वे शांति स्थापना के लिए युद्ध को त्याज्य मानते हैं । उर्पयुक्त काव्य में गुप्त जी ने इन शब्दों में आज के युग को चेतावनी देते हुए कहा है –

"हिंसानल से शाँत नहीं होता हिंसानल,
जो सबका है, वही हमारा भी है मंगल,
मिला हमें चिर सत्य आज यह नूतन होकर,
हिंसा का है एक अहिंसा ही प्रत्युत्तर ।"

मुंशी अजमेरी प्रेम साहित्य मर्मज्ञ, गायक, कवि, साहित्य मनीषी एक साथ सब कुछ थे । राष्ट्रकवि डॉ० गुप्त जी के वह बालसखा थे, आजीवन चिरगाँव में रहकर उन्होंने साहित्य सृजन किया । खड़ी बोली, ब्रजभाषा, डिंगल और बुन्देली भाषा में कविता लिखने में वे सिद्धहस्त थे । अनेक ग्रन्थ उनके प्रकाशित हैं ।

श्री वियोगि हरि, जो बुन्देलखण्ड की ही देन हैं, ने मुंशी अजमेरी की सराहना करते हुए लिखा है कि – "मुंशी अजमेरी इसमें सन्देह नहीं, एक ऊँचे प्रतिभावान कवि, लेखक, अनुवादक, कहानीकार, कलाकार और नाटककार थे और खरे आलोचक भी थे, वे संगीत के ज्ञाता और कुशल अभिनेता भी थे । मुंशी अजमेरी के ज्येष्ठ पुत्र पं० गुलाब राय हिन्दी जगत

के शिरोमणि कवि रहे हैं । मुंशी जी की भांति वे भी प्रकाण्ड विद्वान एवं कवि तथा लेखक रहे हैं ।"

आधुनिक काल में उरई के काली कवि (जन्म सन् 1910, निधन सन् 1980) श्री युगलेश जी (जन्म सन 1920) घनश्यामदास पाण्डेय (सन् 1943) मऊरानीपुर, श्री चतुर्भुज पाराशर 'चतुरेश' कुलपहाड़, श्री भगवानदास बालेन्दु कुलपहाड़, कवीन्द्र श्री द्वारिका प्रसाद गुप्ता 'रसिकेन्द्र' कालपी ने अपनी राष्ट्रीय एवं लोकरचनाओं द्वारा मानस को प्रभावित किया था । राष्ट्रीय आँदोलनों को प्रभावित किया और उसे शसक्त बल प्रदान किया । श्री चतुरेश की कुछ पंक्तियाँ देखिये –

"फूकता स्वराज्य शंख, चरखे का चक्र लिए,

सत्याग्रह सदा प्रेम पद्य भुज भाती में ।

X X X

ले के अवतार भगवान कृष्ण आये न हो,

देखना है है तो नहीं चर्ण चिन्ह छाती में ।।"[18]

श्री श्रवण प्रसाद जी मिश्र 'श्रवणेश' की कृति 'प्रजामित्र' की राष्ट्रीय रचनाओं की एक झलक देखिये –

"शासक यहाँ का रहे कोई, क्यों न "श्रवणेश"

पावेगा समानता न उस मर्दानी की ।

X X X

जौं लौं धरती पै सूर्य–चन्द्र का प्रकाश तौ लौं,

झाँसी की कहावे रानी, झाँसी महारानी की ।"[19]

कवीन्द्र श्री नाथूराम माहौर ने बुन्देलखण्ड की महिमा का बखान इस प्रकार किया है –

"नौनौ खण्ड बुन्देलखण्ड हमारौ, नौऊं खण्ड को प्यारौ ।

बाल्मीकी, तुलसी, केशव भए, जई में सुकवि हजारौ ।

आल्हा–ऊदल, मधुकर, चंपत, बैरिन को मद मारौ ।

वीर सिंह देव छत्ता भयौ रन में कबहुँ न हारौ ।

बाई लच्छमी रानी जई में, धारौ लगन दुधारौ ।।

माहुर सुकवि कहाँ लौं कहियत जौ है जग उजयारौ ।

सियाराम हूँ ने दुर्दिन में जई को लयो सहारौ ।[20]

कविवर माहौर जी की राष्ट्रीय रचनाओं के अंश कुछ इस प्रकार हैं । अमर शहीद भगत सिंह के बलिदान की गाथा इन शब्दों में –

"भारत के भाल में था दाग परतन्त्रता का,

फांसी चढ़ वीर खून अपने से धो गया ।

X X X

भारतीय काले रंग बालों को न छेड़ कभी,

एक मुख वाले दस मुख को नसाते हैं ।

X X X

तेरी क्या मजालं यदि आँख भी दिखाए कहीं

काल विकराल को भी गाल में समाते हैं ।"[21]

बुन्देलखण्ड भूषण वीर कवि अम्बिका प्रसाद 'अम्बिकेश' जब मंच से ओजस्वी कविता पढ़ते थे तो श्रोताओं में वीर रस हिलोरे लेने लगता था । वे प्रायः पढ़ते समय म्यान से तलवार निकाल लिया करते थे । भारत–चीन आक्रमण के समय युद्ध में जूझते हुए भारतीय सैनिकों का मनोबल बढ़ाते हुए वे कहते हैं –

टूट पड़ौ सिंह से दहाड़, शत्रु सेना पर,
मार दो गरूर से अफीमची अरीन के ।
धूर में मिला दो मीढ़ कायर कपूतों को,
जौहर दिखा दो वह जौहर नवीन के ।
कहैं 'अम्बिकेश' छली छोयन छका दो आज,
नाम ही मिटा दो खूंट नाक चपटीन के ।
कूंदो जुर जंग बीच, जंग वीर भारतीय,
घवले उड़ा दो अब चीन–चीन 'चीन' के ।[22]

हिन्दी जगत की प्रमुख कवियत्री श्रीमती रामकुमारी चौहान के काव्य में भारतेन्दु युग के पश्चात के समस्त काव्य प्रवाह की पृष्ठभूमि निहित है, इनका कविता काल द्विवेदी युग से प्रारम्भ होता है, अतः एव इस कवयित्री ने द्विवेदी काल में रचनाओं का सृजन करते हुए छायावाद, रहस्यवाद, प्रगतिवाद आदि युगों में सफलतापूर्वक आगे बढ़ते हुए हिन्दी साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान बनाया । उनकी 'विश्वास' काव्यकृति पर सन् 1935 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के 25वें नागपुर अधिवेशन में अखिल भारतीय सेकसरिया पुरस्कार प्राप्त हुआ था । राष्ट्रीय काव्य चेतना का समावेश इनकी रचनाओं में स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुआ है ।

राष्ट्रीयता का एक उदाहरण देखिए –

"माँ के सपूत कर सिंहनाद समरांगण में हुंकार उठे ।
आजाद हिंद के सैनिकगण, विषधर बनकर फुंकार उठे ।
कर उठीदिशायें अट्टहास,
भर उठे मेदिनी के खप्पर,
चल पड़े वीर निज शोणित से,
लिखने इतिहास नया सत्वर ।।

पं0 गौरीशंकर द्विवेदी 'शंकर' राष्ट्रीय परम्परा के कवि रहे हैं । वीरांगना लक्ष्मीबाई को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए वे कहते हैं –

"सुदृढ़–स्वराज्य नींव उसने थी ऐसी डाली ।
इस स्वदेश की कटी कष्टकर जड़ता जाली ।
हुआ देश स्वाधीन, विश्व ने गुणगान गाया ।
उसने सुयश महान अमर गौरव पद पाया ।"

कविवर श्री रामचरण हयारण 'मित्र' बुन्देलखण्ड के उत्कृष्ट कवियों में स्थान के अधिकारी रहे हैं । सम्पादक प्रवर पं0 बनारसीदास चतुर्वेदी ने उन्हें बुन्देली लोक संस्कृति का प्रतीक कहा है, उनकी एक कविता में बहिन भाई से राष्ट्र रक्षा का आवाहन करती हुई कहती है –

"जागो विरन मोरे समर जुझारू, सुन धरती की गुहार,
घेरो आफिमचिन आज हिमांचल बांदो कमर तरवार,
तुम सौं सौगन्ध मात–कूप के हिलुरे की सौ बार,
मेरी उन उलियन की सौगन्ध जिनमें पलो दुलार,

कोइ करन न पावे कैसऊ सीमा ऊपर वार,

रच्छया अपने करौ देश की 'मित्र' जई में सार ।"

बृजभाषाचार्य श्री सेवकेन्द्र त्रिपाठी अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे, उन्होंने मीरामानस, राजमहल, सूरदास, छत्रसाल आदि अनेक खण्डकाव्य लिखे हैं । मीरा के विषपान का एक भावपूर्ण छंद की पंक्तियाँ इस प्रकार हैं –

नाचौ लग्यौ पीय प्यालौ कर में उमंग संग,

नाचन लग्यौ है मोद मन के मंझारी आजु ।

X X X

लोच भरे लोचन हू नाचैं लगे प्याले मांहि,

लोचन में सोचे भरयौ नाचे गिरधारी आजु ।

अन्य प्रमुख राष्ट्रीय विचारधारा के कवियों में श्री रामपाल सिंह 'प्रचण्ड', श्री राजरानी चौहान, पं0 हरदास शर्मा, श्री द्वारिका प्रसाद मिश्र 'द्वारिकेश', श्री हरगोविन्द गुप्त, डा0 भगवानदास माहौर, पं0 मुंशीलाल 'शशिधर', श्री लक्ष्मी प्रसाद शुक्ल 'वत्स', श्रीमती रेखा सिंह, श्री भगवतीशरण दास, श्री श्याम सुन्दर बादल राठ, आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं । उपर्युक्त समस्त कवियों ने राष्ट्रीय भावना से ओत–प्रोत रचनाओं द्वारा देश में जन जागरण का बिगुल फूंका ।

विशेष रूप में हम यहाँ उन कवियों का उल्लेख करना उचित समझते हैं जो पं0 घासीराम व्यास के सम्पर्क में रहे हैं, साथ ही उनकी जन्मभूमि से निकटता रही है । ऐसी स्थिति में परस्पर एक दूसरे के विचारों का राष्ट्रीय संवर्धन होता रहा है । कविवर घनश्याम दास पाण्डेय एवं कविवर नरोत्तम दास पाण्डेय व्यास जी की जन्मभूमि मऊरानीपुर के ही

निवासी थे, साथ ही समकालीन भी रहे हैं । उन दिनों प्रायः फड़ साहित्य का बोलबाला था, कवि लोग एक ही मंच पर उपस्थित होकर अपनी सम–सामयिक रचनाओं से श्रोताओं का रसास्वादन करते रहते थे । बुन्देलखण्ड में फड़ के माध्यम से कवियों की काव्य भूमिका की सराहना की जाती थी ।

श्री नरोत्तम दास पाण्डेय 'मधु' की रचनायें भी इस समय विशेष लोकप्रिय रही हैं । इनका जन्म सं0 1972 तथा निधन सं0 2008 में 36 वर्ष की अल्पायु में हो गया। इन्होंने सैर और ख्याल ही विशेष लिखे हैं, जिन्हें चंग पर गाने का ही रिवाज था । इनकी सर्वाधिक लोकप्रिय रचना 'गरीब की दुनिया' है, जिसमें जन–जीवन का त्रास मुखरित हुआ है, राष्ट्रीय भावना की दृष्टि से इसका मूल्यांकन होता रहा है । इसकी कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं –

ओ उच्च भवन वालो बोलो,
  ओ अतुलित धन वालो बोलो ।
कान्तित कंचन वालो बोलो,
  जगमग जीवन वालो बोलो ।
क्या कभी निहारी है तुमने,
  अनजान गरीबों की दुनियाँ ।
शमसान गरीबों की दुनियाँ ।[23]

पं0 घनश्याम दास पाण्डेय का जन्म सं0 1943 वि0 में मऊरानीपुर (झाँसी) में पं0 बल्देव प्रसाद पाण्डेय के गृह हुआ था । 'गांधी गौरव' में उनकी राष्ट्रीय रचनायें संग्रहीत हैं । पाण्डेय जी ने तत्कालीन छायावादी कविता का मखौल इन शब्दों में अपनी एक घनाक्षरी में किया है –

'गेहूँ, चना, मटर, जौ पीसती है एक साथ,

छायावादी कविता अजीब पिसनारी है ।

काव्य के अन्य उदाहरण में –

विधि की विभूति मूर्तिमान सी हुई है जहाँ

परम पवित्र भूमि है बुन्देलखण्ड की ।[24]

'बुन्देलखण्ड रामायण सभा' झाँसी ने आपको कविरत्न की उपाधि से विभूषित किया था । आपकी कविता में लालित्य और पांडित्य दोनों का समावेश हुआ है । श्री राम को बुन्देलखण्ड कितना प्रिय है, पाण्डेय जी की इस रचना में उनके भावों का सजीव चित्रण इस प्रकार देखने को मिलता है :–

सिया के वियोग में विलाप करें राघवेन्द्र,

लखन बुझावै नाथ शोक सब दीजे छोड़ ।

बोले राम शोक नहीं हमें त्यागवें की हमें,

शोक नहीं मात कैकई ने जो दियो है दंड ।

विप्र घनश्याम एक चूक और साल रही,

बेर–बेर बाकी हूक हिये में उठे प्रचण्ड ।

चित्रकूट शैल दुर्गवास भलौ हतौ तो,

न सिया हरी जाती, जो न छोड़ते बुन्देलखण्ड ।[25]

कविवर पं0 नरोत्तमदास पाण्डेय 'मधु' धनी–निधनी समाज की बढ़ती हुई दूरी पर आक्रोश व्यक्त करते हुए अपनी पैनी दृष्टि से ओजस्वी स्वरों में भाव व्यक्त करते हुए कहते हैं –

पत्थर कठोरता का नींव में गलाया गया,

जिसमें चुनाई गई ईंट अभिमान की ।

गारत गरीबों के लहू का आज पानी मिला,

मुरम मिलाई गई औरतों के प्राण की ।

अबल अनाथो की कमाई का कंगूरा कढ़ा,

डाट लगी डाट फटकार के विधान की ।

छुरियाँ छलों की चला करती गली में जहाँ,

ऐसे महलों से भली कुटिया–किसान की ।[26]

हिन्दी साहित्य एवं पत्रकारिता के संवर्धन में बुन्देलखण्ड का महत्वपूर्ण योगदान रहा है । पत्रकार प्रवर सम्पादकाचार्य श्री बनारसीदास चतुर्वेदी बुन्देलखण्ड के टीकमगढ़ में स्थित कुण्डेश्वर में साढ़े चौदह वर्ष तक रहे । तत्कालीन महाराज श्री वीरसिंह जू देव ने बुन्देलखण्ड के साहित्य को प्रकाश में लाने तथा पत्रकारिता को और अधिक व्यापक बनाने के उद्देश्य से 'मधुकर' के माध्यम से योगदान करते रहने के लिए प्रेरित किया तथा हर प्रकार की उन्हें साहयता प्रदानकी । कुण्डेश्वर द्वारा हिन्दी साहित्य को नई दिशाएँ मिलीं । हिन्दी के साहित्याकर श्री कृष्णानंद गुप्ता एवं श्री यशपाल जैन ने भी इस साहित्यिक यज्ञ में अपना अमूल्य योगदान दिया । 'मधुकर' पत्र के माध्यम से हिन्दी साहित्य लेखन को नई दिशा मिली । मधुकर पहला पत्र था जिसमें बुन्देलखण्डी साहित्य को उजागर किया गया तथा जनपद आंदोलन को गति मिली । भोजपुरी, मैथिली, मालवी, छत्तीसगढी, निमाड़ी तथा राजस्थानी के लोक साहित्य कार्यकर्ताओं को कुण्डेश्वर से ही प्रेरणा मिली है । इस अवसर पर देश के जाने माने साहित्यकार कुण्डेश्वर आते–जाते रहे, उसमें सर्व श्री विष्णु प्रभाकर,

अम्बिका प्रसाद दिव्य, लोकनाथ शिलाकारी, पं0 गौरी शंकर द्विवेदी, डा0 भगवानदास माहौर, मुंशी अजमेरी, यशपाल जैन, श्री जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी आदि साहित्यकार श्री चतुर्वेदी से मिलने यहाँ आते रहे तथा साहित्य एवं पत्रकारिता के उन्नयन के लिए उनसे प्रेरणा प्राप्त करते रहे ।

हिन्दी साहित्य के क्रम में व्यास जी की महत्वपूर्ण भूमिका :-

हिन्दी साहित्य का राष्ट्रीय संघर्षी धारा में बुन्देलखण्ड के योगदान में ऐतिहासिक उपन्यास सम्राट डॉ0 वृन्दावनलाल वर्मा के उन नाटकों का आदर से उल्लेख किया जाना चाहिए जो उन्होंने सन् 1908 के लगभग प्रणीत किये थे और उनमें केवल एक 'सेनापति ऊदल' ही छपकर प्रकाशित हो पाया था, वह सरकार द्वारा तुरन्त ही जब्त कर लिया गया था, क्योंकि उसमें इस बात का समर्थन था कि देशद्रोहियों को गोली से, जहर से, जैसे भी हो सके मार देना चाहिए । उसके प्रकाशन ने फिर उनके अन्य नाटकों को प्रकाशित करने का साहस नहीं किया । उन नाटकों की पाण्डुलिपियाँ भी फिर वर्मा जी को वापिस नहीं मिलीं । सन् 1908 में प्रकाशित वर्मा जी के 'बुद्ध चरित्र' में भी राष्ट्रीय स्वतन्त्रता संग्राम के लिये प्रेरणादायक विचार रहे । राष्ट्रकवि मैथली शरण गुप्त की 'भारत-भारती' और तत्कालीन अन्य रचनाओं की और संकेत मात्र कर देना ही नहीं, इस राष्ट्रीय काव्यधारा के विकास में बुन्देलखण्ड के शीर्ष योगदान को स्थापित करने के लिये पर्याप्त है । इसके पूर्व 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम की नेत्री झाँसी की रानी की वीरता का बखान होता रहा, इसका प्रभाव बिट्रिश शासन में भी और देशी रियासतों में भी कवियों की प्रेरणा का सूत्रधार रहा । दतिया के कवि कल्याण सिंह कुड़ारा ने एक बाईसाब लक्ष्मीबाई को रायसौ सन् 1861 में ही प्रणीत किया था, फिर झाँसी के एक कवि गुरू पं0 मदन मोहन द्विवेदी 'मदनेश' ने एक पूरा 'लक्ष्मीबाई रायसो' सन् 1904 के लगभग लिखा था,

जो स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद ही प्रकाशित हो सका । झाँसी के भग्गीदाऊ जू के रानी लक्ष्मीबाई सम्बंधी 'कटक' काव्य की भी ऐसी ही स्थिति रही और माहौर क़वि मंडल के अखाड़िया कवि चतुरेश का रानी विषयक काव्य और इसी प्रकार गंगा प्रसाद सुनार का भी ऐसा ही काव्य आज भी खोज का विषय बना हुआ है ।[27]

"कांग्रेसी आँदोलन में महात्मा गाँधी के नेतृत्व में एक क्रांतिकारी उभार आया । आरम्भ में कांग्रेस के मंच से बिट्रिश राज्य ने सहयोग करके देश की उन्नति की आकांक्षा प्रकट की जाती थी । यही साहित्य में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों में 'आधुनिक काल' का 'प्रथम उत्थान' रहा । तदन्तर काँग्रेसी खुला आँदोलन लोकमान्य तिलक जी के कर्तव्य से सहयोग की नीति में आगे बढ़कर विरोध और जवाबी सहयोग की नीति के धरातल पर आगे बढ़ा । यही साहित्य में द्विवेदी युग या 'द्वितीय उत्थान' रहा । तदन्तर महात्मा गाँधी के नेतृत्व में खुला आंदोलन बिट्रिश सरकार से सहयोग करने को 'पाप' घोषित करता हुआ अंहिसात्मक असहयोग के धरातल पर पहुँचा और जनव्यापी बना । यही हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल का 'तृतीय उत्थान' हुआ । महात्मा गाँधी के नेतृत्व ने साहित्य को नयी परिचालना दी । कवि व्यास जी यू.पी. के अन्तर्गत बुन्देलखण्ड में इसी नयी परिचालना की उपज हुए । वह उसके सर्वोत्कृष्ट प्रतिनिधि हुए ।"[28]

"वर्मा जी और गुप्त जी की कृतियों से साधारण जनता का मानस उस रूप में प्रभावित नहीं हुआ था, जिस रूप में वह व्यास जी के कृतित्व से हुआ तो इसका कारण यही है कि उस समय तक वर्मा जी और गुप्त जी की कृतियाँ महात्मा गाँधी के नेतृत्व से पूर्व की थीं । जवाबी सहयोग से खुले आँदोलन और स्वतन्त्रता की बात गूढ़ रूप में कहने के युग की थी

और मध्य वर्ग को ही प्रभावित करने वाले उपक्रम की थीं । व्यास जी के काव्य के उत्कर्ष का समय वही था, जब बुन्देलखण्ड की साहित्य की तृतीय भेंट वियोगी हरि जी 'वीर सतसई' में रानी लक्ष्मीबाई की कीर्ति खुलकर गाई गयी थी और सुभद्रा देवी की 'खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी' जन–जन का कण्ठहार बन रही थी ।"[29]

"व्यास जी के राजनीतिक और साहित्यिक व्यक्तित्व और कृतित्व के सम्बन्ध में विशेष रूप से इतना ही निवेदन है कि वह यह भलीभाँति हृदयगम किए हुए थे कि स्वतन्त्रता संघर्ष की ऊपर से परस्पर विरोधी दिखने वाली दोनों धाराओं में तत्कालीन अहिंसात्मक असहयोग तक विकसित खुले काँग्रेसी आँदोलन की धारा और गुप्त शशस्त्र क्राँतिकारियों की धारा में, वास्तव में कोई विरोध नहीं है । वे एक कैंची के दो अन्यान्य सापेक्ष फलों की भाँति ही हैं । जिसकी गति परस्पर विरोधी दिशाओं में होते हुए ही वह कैंची एक चीज को काटती है, तभी तो व्यास जी अहिंसात्मक सत्याग्रह के गीत और "लेजामत मान लेजा शीघ्र भेजा फाड़, नेजा पे टांग दे कलेजा देशद्रोही का' समान उत्साह से गाये जाते थे । उनके ऐसे काव्य से अमर शहीद चन्द्रशेखर बहुत ही उत्साहित हुए थे ।"[30]

इस सम्बन्ध में यह स्पष्ट करना नितान्त आवश्यक है कि झाँसी के निकट सातार नदी के तट पर औरछा के अन्तर्गत स्थित स्थान पर देश के जाने–माने क्राँतिकारी अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद अज्ञातवास में रहे थे, यह स्थान भारत के क्राँतिकारियों का केन्द्र बिन्दु रहा है, जहाँ वे अज्ञातवास में एक–दूसरे से सम्पर्क स्थापित कर अंग्रेजी सत्ता के विरूद्ध अभियान चलाया करते थे । यहीं आजाद के सम्पर्क में झाँसी के क्राँतिकारी डॉ0 भगवानदास माहौर एवं श्री सदाशिव राव मल्लापुर भी आए, और इन्होंने अंग्रेजी सत्ता के विरूद्ध सामूहिक दृष्टि से क्राँतिकारी आँदोलन छेड़ा था ।

पं० घासीराम व्यास की राष्ट्रीय काव्य चेतना का तुलनात्मक विवेचन :-

स्वतन्त्रता संघर्ष के परिपेक्ष्य में बुन्देलखण्ड के राष्ट्रीय कवि श्री घासीराम व्यास साहित्य के क्षेत्र में आत्मकेन्द्रित अपने ही उत्कर्ष की ओर प्रवत्त नहीं रहे, प्रत्युत उन्होंने बुन्देलखण्ड के अपने क्षेत्र के कवियों और काव्य प्रेमियों को अपने सम्पर्क में लाकर उन्हें भी राष्ट्रीय भावनाओं से प्रभावित और प्रेरित किया, और वे भी उनकी ही भांति स्वतन्त्रता संघर्ष के लिए उपयोगी राष्ट्रीय रचनाओं का सृजन करने में जुट गए । इस अंचल में फड़ों या कवि दंगलों और कवि सभागमों की जो परम्परा रही, उसे राष्ट्रीय और स्वतन्त्रता संघर्षी मोड़ देने का सबसे अधिक श्रेय कविश्री व्यास जी को ही है । उन्होंने कुशल दंगली कवि के रूप में भी अपनी ख्याति अर्जित की । उन्होंने इन फड़ों में जो राष्ट्रीय रचनाएँ प्रस्तुत कीं, उनसे फड़ों में भाग लेने वाले कवि और गायक उसी कोटि की रचनाएँ प्रस्तुत करने में प्रवृत हुए ।[31]

मऊरानीपुर में उस समय दो साहित्यिक संस्थाएं थीं । प्रथम दुर्गा पुरोहित की, द्वितीय गंगाधर व्यास की । इन दोनों संस्थाओं द्वारा यहाँ साहित्यिक गोष्ठियों में सैर, लोकरागिनी, ख्याल, मंज, तड़ाका और कवियों का पाठ विशेष महोत्सव में हुआ करता था । इन साहित्यिक गोष्ठियों में पहले प्रायः प्राचीन कवियों की रचनाओं का विशेष रूप से पाठ किया जाता था, उसके पश्चात् नवीन कवियों की कविताओं का । इन गोष्ठियों में इस बात का ध्यान रखना पड़ता था कि रचना पढ़ने वाला व्यक्ति जिस भाव में छंद पढ़ रहा है, उसके उत्तर में वैसे ही भाव का छंद पढ़ा जाना चाहिए । उदाहरण के तौर पर कुछ छंद तुलनात्मक दृष्टि से दिये जा रहे हैं ।

कवि गोष्ठी का शुभारम्भ श्री परमानन्द बुधौलिया ने बुन्देलखण्ड की साहित्यिक परम्परानुसार श्री गणेश वन्दना से किया –

कलित कुण्डलित शुण्ड विच, राजत रदन सुदेश ।
विघन विनाशन कौ मनौ, धनुसर धरौ गणेश ।

कवित्त – विसद वितुण्ड तुण्ड कुण्डलित सुण्ड पर,
झुंड–झुंड ऐरावत मान मनहारी लेत ।
हेर–हेर–हसन ललाम कोटि काम धाम,
दसन सुदाम दाम–दामिनी तिहारी लेत ।
'व्यास' कहें वरूण कुबेर बेर–बेर आन,
अरूण सुरेस जोर करन जुहारी लेत ।
एहौ चन्द्रचूड़ तेरे चारू चंद्र चूड़ पर,
वारि चन्द्रचूड़, चंद्रचूड़ बलिहारी लेत ।

तदुपरान्त वरिष्ठ कवित्त गायक श्री काशी प्रसाद अड़जरिया ने अपने कोकिल कंठ से व्यास जी रचित नर्मदा जी की वन्दना प्रस्तुत की –

"कलमलता के कल, कलमलता के कल,
कलपलता के भल कलपलता के हैं ।
भव–करता के भव, भव–करता के 'व्यास'
भव–भरता के भव–भय हरता के हैं ।
गुरू–गुरूता के जाहि, गुरू गुरूता के पुण्य,
पावन पता के पुण्य पावन पताके हैं ।
सुयश–सुता के सब सेवक सुता के पद,
येकल सुता के पद मेकल सुता के है ।"

तत्पश्चात् श्याम सुन्दर बादल ने व्यास जी के बसंत–वर्णन में से लता पक्षी वर्णन समन्वित छंद प्रस्तुत किए –

"लह लही ललित लवंग लतिकान लोल,

गहब गुलाल गोल गुल मँहदी कौ है ।

करन कनेर है चमेली प्रीति केर कुन्द,

कलि कचनार औ अनार अबली कौ है ।

'व्यास' कहें सुमन सरोज, मौतियों में सोय,

मौलसिरी, सिरस, कमोदिनी, जुही कौ है ।

सेवती, निवारी, केतकीन, फुल वारिन कौ,

लाल भयो काल, आज माल–मालती कौ है ।

X X X

गेंदा गोल गोटी, गुलतेरिया, गुलेरी गुल –

दावदी, चमेली, गुलाबासन हिसाब कौ ।

कुमुंद, कमंच, मचकुंद, कुंद, केतकीन,

करन कदंब, केर करतन ताव कौं ।

'व्यास' कहैं मालती, निवारी गुलनारिन कौं,

बेला, कचनार चारू सेवती सबाब कौ ।

चलत कुचाल चाल मालिन भली न यह,

काहे मधुमास माहिं सींचत गुंलाब कौं ।"

तत्पश्चात दुर्गा पुरोहित पक्ष के कुशल कवित्त गायक श्री शत्रुघन पुजारी ने भी घनश्यामं दास पाण्डेय रचित फाग छंदों को प्रस्तुत किया । फाग हास्य सूक्ति देखिए –

अक्षर अबीर वेग अक्षर बना दे मातु,

कुमकुम कल्पना के झोली में बगार दै ।

केशर की गंध सम भरित कलित मेरी,

पुन्य पहुमी के और–छोर लौं पसार दै ।

गरिमा गुलाल सौं निहाल कर देरी मोय,

भाल पर टींको सुखमा कौ बिसतार दैं ।

एरी वृषभानु की कुमारी आज मौंपे नेक,

नैन पिचकारी ते दया को वारि ढार दैं ।

X X X

आई रिद्धि–सिद्धि भाज सास गिरिजा के पास,

अंग–अंग कांपत चुचात रंग सारी तैं ।

हेर हंस पूछै लगी अम्बिका बधू जन तैं,

आई हार मान का गणेश बलधारी तैं ।

विप्र 'घनश्याम' बोली बैन नैन नीचे कर,

सहस विलास हास स्वामि महतारी तैं ।

कैसे गणनाथ संग खेलैं फाग मेलैं वह,

हाथन गुलाल, रंग सुंड पिचकारी तैं ।

तदुपरान्त शत्रुघन ने घनश्यामदास पाण्डेय की फाग पर कुछ अनूठी सूक्तियाँ प्रस्तुत कीं –

होरी हित भोरी वृषभानु की किशोरी ब्रज –

खोरी में अकेली पथ हेरे गिरधारी कौ ।

दोऊ लख्यौ दौउन को एक संग रंग परयौ,

दौउन पै दोउन की दीठ पिचकारी कौ ।

एक दूसरे के हेर फेर भीजें जात भीति –

पावैं दोऊ एक दूसरे की सीत भारी कौ ।

नील पट राधै कौ निचौरें बनबारी बारी –

राधिका, निचौरे पीत पट बनबारी कौ ।

अब श्री राधाचरण रामचरण 'मित्र' ने राज्य कवि श्री हीरालाल व्यास 'हृदेश' रचित कवित्त प्रस्तुत किये । फाग वर्णन का उनका एक कवित्त इस प्रकार है –

"पनघट जैहै कहौ कैसें बच जैहै बाल,

बसन नसैहैं रंग झिर बरसात है ।

फैल फाग खेलत गुपाल ग्वाल बाल संग,

दूर'दूर ताई वबकार दरसात है ।

भनत 'हृदेस' ब्रजधाम धस मुख –

मलत गुलाल अंत बकत कुबात है ।

गावत धमार धौर धूम धुधुकी की धुन

अधर धरातें धूर धूंधर दिखात है ।"

इस अवसर पर अन्य विद्धानों में सर्वश्री परमानन्द बुधौलिया ने भी व्यास जी के अभिनव रचना व्यूह के कुछ छंद प्रस्तुत किये । श्री बुधौलिया द्वारा प्रस्तुत इन वीर रस भावोत्पादक छंदों से दुर्गा पुरोहित के सदस्य मौन प्रतीत हुए । इन्होंने भी महाभारत विषयक छंद लिखे थे किन्दु इन्हें वह छंद कंठाग्र नहीं थे ।

रामनारायण शर्मा के अनुसार – "कवि दंगल अथवा फड़ काव्य की परम्परा बहुत पुरानी है । संस्कृत साहित्य में इसे 'पर्ण' कहा गया जो दंगल अथवा दल व प्रतिस्पर्धात्मक रूप में जाना गया । बुन्देलखण्ड के कवि दंगल अथवा फड़ साहित्य के पुरोधा झाँसी के कवि भग्गीदाऊ जू रहे थे । वे महारानी लक्ष्मीबाई झाँसी के समकालीन थे । इनके द्वारा रचित लक्ष्मीबाई रायसो बहुत प्रसिद्ध है । छतरपुर के कविवर गंगाधर व्यास से पुष्पित कवीन्द्र नाथूराम माहौर द्वारा पल्लवित और मऊरानीपुर के घासीराम व्यास, घनश्याम दास पाण्डेय, नरोत्तम पांडे से सुरभित होता हुआ सेठ भोगीलाल गुरसराय एवं आचार्य चतुर्भुज 'चतुरेश' के काव्य कानन से सुशोभित रहा । फड़ साहित्य इसके अतिरक्त बिजावर, महोबा, चरखारी एवं राठ में फलता–फूलता रहा । वैसे फड़ सहित्य तो प्रदेश व देश के सभी भागों में अपने विविध रूपों में प्रख्यात है ।"

"दंगल और फड़ साहित्य के अन्तर्गत बुन्देली जन–मन के गीत जैसे–सैर, फागें, ख्याल, दिवारी, कवित्त, सवैया एवं भजन, कीर्तन आते हैं । इस साहित्य का उद्‌भव और विकास जन संस्कृति के साथ हुआ, इसीलिए इसमें लोक व शिष्ट दोनों काव्यों का समावेश है । फड़ साहित्य में लोक संगीत उसकी आत्मा है । इसलिए जन वाध स्वर लय सब उसके अपने हैं । चंग (ख्याल), ढोल, झाँझ, मंजीरा, अडब्बी आदि (लेढ़, फाग, दिवारी, कीर्तन) की मिली–जुली ध्वनि प्रभावोत्पादक होती है । फड़ का अर्थ ही दल है, अतः दो दल या दो प्रतिद्वन्दी सामने होते हैं और ईश वंदना के बाद फड़ आरम्भ होता है जो रातभर कई दिनों तक चलता है । प्रत्येक दल के साथ एक काव्यकार होता है जो आवश्यकतानुसार गीत की रचना कर त्वरित पूर्ति कर देता है । इस प्रकार विपुल साहित्य की रचना होती है ।"[33]

यह विडम्बना ही कही जायेगी कि आज यह फड़ साहित्य प्रकाशन के अभाव से बहुत कुछ नष्ट हो गया है, और होता जा रहा है ।

"होनहार बिरहान के होत चीकने पात' की युक्ति को चरितार्थ करते हुए व्यास जी विद्यार्थी जीवन से ही तुकबन्दी करने लगे थे मात्र 17 वर्ष की अवस्था में ही वे काव्य शास्त्र के श्रेष्ठ अध्येता तथा जनकवि के रूप में स्थापित हो गये । पं० दुर्गाप्रसाद पुरोहित एवं पं० गंगाधर व्यास की पार्टियों के मध्य ख्याल गायन की प्रतिस्पर्धा जन सामान्य के मनोरंजन का मुख्य आकर्षण हुआ करती थी । व्यास जी ने संस्कृत साहित्य, पिंगल शास्त्र एवं धर्म शास्त्रों का अध्ययन तो विधिवत किया ही था । अस्तु आशुकवि के रूप में जब द्वितीय पक्ष के भावपूर्ण छंद का उत्तर उससे श्रेष्ठ भाव एवं अलंकारित छंदों में प्रस्तुत करते तो श्रोता झूम उठते और तालियों की गड़गड़ाहट से सारा वातावरण गूंज उठता ।[34]

कविवर व्यास आशुकवि और समस्यापूर्ति के सुयोग्य कवि थे । लोक में प्रचलित उक्तियों को उन्होंने अपने काव्य में समाहित कर 'लोकोक्ति काव्य' की रचना की थी । व्यास गंगाधर और व्यास घनश्याम पाँडे का त्रिगुट मऊरानीपुर में धूम मचाये रहता तो झाँसी में कवीन्द्र नाथूराम माहौर की फड़ मंडली अपनी अलग प्रभा बिखेर रही थी । इन गोष्ठियों में यदा-कदा काव्य रचना के लिए पूर्ति हेतु समस्यायें प्रस्तुत कर दी जाती थीं, उन समस्याओं की पूर्ति कवि मंडलों के सदस्यों द्वारा किया जाना अनिवार्य था । किसी-किसी बैठक में उसी समय प्रस्तुत की गयी समस्यापूर्ति तत्काल करना पड़ती थी, फलतः आशु कवित्व क्षमता तीव्र होती थी । श्री घासीराम व्यास का भाव ग्रहण क्षेत्र विस्तृत रहा तथा अपनी अन्तर की गहराई में उनका मन पूर्ण रूपेण प्रवेश करने में सक्षम रहा । फलतः उनकी काव्य प्रणयन प्रक्रिया में विविधता सन्निविष्ट हुई ।[35]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. श्री प्रभुनाथ तैलंग – सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं इतिहास विद ।

2. बुन्देलखण्ड का साहित्यिक इतिहास – मोतीलाल त्रिपाठी 'अशाँत' । पृष्ठ–127

3. मध्यदेशीय भाषा ग्वालहेरी–श्री हरिहर निवास द्विवेदी, ग्वालियर ।

4. 'बुन्देली काव्य भाषा और बोली – श्री नाथूराम माहौर 'बेतवावाणी' अगस्त – अक्टूबर (1978) ।

5. 'बेतवावाणी' बुन्देलखण्ड विश्व विद्यालय झाँसी, अगस्त – अक्टूबर (1978) – पृष्ठ–28

6. बुन्देली काव्य भाषा और बोली, कविवर श्री नाथूराम माहौर, 'बेतवावाणी' (1978) ।

7. बुन्देलखण्ड का इतिहास, श्री मोतीलाल त्रिपाठी 'अशाँत' पृष्ठ – 30 ।

8. दैनिक मध्यदेश, गणतंत्र विशेषांक, 1971, पृष्ठ–12

9. बुन्देलखण्ड की प्राचीनता – डॉ0 बागीश शास्त्री ।

10. बेतवावाणी – बुन्देलखण्ड विश्व विद्यालय झाँसी, पृष्ठ–192 ।

11. बुन्देलखण्ड के देवी–देवता–'बेतवावाणी' अगस्त–अक्टूबर 1978 ।

12. वर्तमान हिन्दी कवियों में राष्ट्रीयता – श्री कन्हैयालाल 'सहल' पृष्ठ–78 ।

13. साहित्य समीक्षांजलि सं0 श्री सुधीन्द्र – पृष्ठ–138 ।

14. राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त अभिनंदन ग्रंथ ।

15. श्री मैथिलीशरण गुप्त – डॉ0 लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय – पृष्ठ–55 ।

16. श्री मैथिलीशरण गुप्त – डॉ0 लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय – पृष्ठ–55 ।

17. साहित्य संदेश – आगरा – अप्रैल 1939 ।

18. श्री माहौर अभिनंदनग्रंथ – पृष्ठ 31 ।

19. श्री माहौर अभिनंदनग्रंथ – पृष्ठ 34 ।

20. श्री माहौर अभिनंदनग्रंथ – पृष्ठ 34 ।

21. श्री माहौर अभिनंदनग्रंथ – पृष्ठ 34 ।

22. वीर चीन पच्चीसी – कवि अम्बिकेश ।

23. लोकप्रभा – डॉ0 श्याम सुन्दर बादल, पृष्ठ–105 ।

24. लोकप्रभा – डॉ0 श्याम सुन्दर बादल – पृष्ठ 98

25. दैनिक 'राष्ट्र बोध' झाँसी, 14 सितम्बर 2003 ।

26. दैनिक जागरण, झाँसी, बुन्देलखण्ड साहित्य लेखमाला – 28 ।

27. राष्ट्रकवि घासीराम व्यास का व्यक्तित्व एवं कृतित्व – रामचरण हयारण 'मित्र' पृष्ठ – 12 ।

28. राष्ट्रकवि घासीराम व्यास का व्यक्तित्व एवं कृतित्व – रामचरण हयारण मित्र – पृष्ठ–13 ।

29. राष्ट्रकवि घासीराम व्यास का व्यक्तित्व एवं कृतित्व – रामचरण हयारण मित्र – पृष्ठ–13 ।

30. राष्ट्रकवि घासीराम व्यास का व्यक्तित्व एवं कृतित्व – रामचरण हयारण मित्र – पृष्ठ–14 ।

31. राष्ट्रकवि घासीराम व्यास का व्यक्तित्व एवं कृतित्व – रामचरण हयारण 'मित्र' पृष्ठ–13 ।

32. राष्ट्रकवि घासीराम व्यास का व्यक्तित्व एवं कृतित्व – रामचरण हयारण 'मित्र' पृष्ठ – 3–5 ।

33. व्यास–यश–सिन्धु : (राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रन्थ) : – पृष्ठ – 136–137 ।

34. व्यास–यश–सिन्धु : (राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रन्थ) : – पृष्ठ – 142 ।

35. व्यास–यश–सिन्धु : (राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रन्थ) : – पृष्ठ – 94 ।

द्वितीय अध्याय

- पं० घासीराम व्यास का व्यक्तित्व एवं जीवन दर्शन :
- पारिवारिक औदात्य, साँस्कृतिक परम्परा तथा व्यास जी का उस पर प्रभाव :
- पूर्वज, माता-पिता और परिस्थितियाँ :
- जन्म स्थान, जन्म संस्कार आदि :
- शीक्षा-दीक्षा, वैवाहिक जीवन, जीविकोपार्जन, व्यवसाय तथा जीवन विषयक अन्य उल्लेखनीय तथ्य :
- पारिवारिक प्रभाव का मूल्याँकन :

द्वितीय अध्याय

पं० घासीराम व्यास का व्यक्तित्व एवं जीवन दर्शन :-

पं. घासीराम व्यास का जीवन सदैव राष्ट्रीय संघर्ष में व्यतीत हुआ। वे राष्ट्र के लिये जिये और राष्ट्र के लिये मरे। इन्होनें अपने जीवन के 39 बसन्त इस बुन्देलखण्ड वसुन्धरा की गोद में (जिसमें 17 वर्ष अध्ययन और 22 वर्ष साहित्य सेवा एवं राष्ट्रीय आन्दोलन में अंग्रेजी सरकार की कठोर यातनाएँ झेलते हुये) बिताये। व्यास जी ने अपनी काव्यमयी अनुभूतियों द्वारा साहित्य एवं राष्ट्र को जो अनूठी भाव राशि प्रदान की उससे सारा साहित्यक जगत और जनमानस सदा – सर्वदा ऋणी रहकर उनका स्मरण करता रहेगा।

पारिवारिक औदात्य :-

श्री घासीराम व्यास जी का एक समृद्ध परिवार रहा है। व्यास जी के वंशज ग्राम चदंरा, जिला–टीकमगढ़ (म0प्र0) के मूल निवासी थे इनका कुल गौत्र गौतम है। व्यास वंश का इतिहास पं0 देवी प्रसाद व्यास से प्रारम्भ हुआ। पं0 देवी प्रसाद व्यास के दो पुत्र थे पं0 श्री सुखराम व्यास और पं0 श्री अन्तराम व्यास।

पं0 श्री सुखराम व्यास के तीन पुत्र हुये पं0 श्री रामचरण व्यास, पं0 श्री मदन मोहन व्यास उर्फ छिंगे व्यास तथा पं0 श्री गोरे लाल व्यास।

पं0 श्री मदन मोहन व्यास के दो पुत्र पं0 श्री घासीराम व्यास तथा पं0 श्री सुन्दर लाल व्यास हुये एवं एक पुत्री सुश्री नर्वदा देवी हुई।

पं0 श्री घासीराम व्यास के काका पं0 श्री नाथूराम व्यास जो जबलपुर (म0प्र0) जाकर बस गये थे उनके चार पुत्र पं0 श्री सालिगराम व्यास, पं0

श्री कृपाशंकर व्यास, पं0 श्री दयाशंकर व्यास तथा पं0 श्री नारायण शंकर व्यास हुये । पं0 सालिगराम व्यास मराठी, संस्कृत तथा अंग्रेजी भाषाओ के विशेषज्ञ थे, इनके भाई कृपाशंकर जी ने एम0ए0 एल0टी0 तक शिक्षा प्राप्त की। दयाशंकर व्यास भी एम0ए0एल0टी0 थे। नारायण शंकर व्यास बी0एस0सी0 ज्योतिषाचार्य थे ।[1]

पं0 श्री घासीराम व्यास के तीन पुत्र पं0 श्री लक्ष्मी नारायण व्यास, पं0 श्री कमलाकांत व्यास, पं0 श्री रमाकान्त व्यास तथा पुत्री सुश्री कंचनादेवी हुई, जिनका विवाह पं0 श्री राधाचरण उपाध्याय के साथ झाँसी में हुआ । जो विपिन बिहारी, कॉलेज झाँसी में अध्यापक रहे ।[2]

पं0 श्री घासीराम व्यास के भाई श्री सुन्दर लाल व्यास के एक पुत्र पं0 श्री मदनकान्त व्यास हुए तथा मदन कान्त व्यास के तीन पुत्र मंजुल व्यास, पं0 श्री मधुर व्यास, पं0 श्री मनीष व्यास तथा एक पुत्री सुश्री संध्या व्यास हुई ।[3]

पं0 श्री लक्ष्मी नारायण व्यास के चार पुत्र श्री ज्योति प्रकाश व्यास, पं0 श्री केदारनाथ व्यास, पं0 श्री प्रकाश चन्द्र तथा पं0 श्री अनिल कुमार व्यास हुये । लक्ष्मी नारायण व्यास के पहले अनुज श्री कमलांन्त व्यास के तीन पुत्र पं0 श्री रविन्द्र व्यास, पं0 श्री धर्मेन्द्र व्यास और पं0 श्री अरविन्द व्यास हुये । इनके सबसे छोटे अनुज श्री रमाकान्त व्यास के भी तीन पुत्र पं0 श्री सुनील व्यास, पं0 श्री सुधीर व्यास, पं0 श्री अखिलेश कुमार व्यास हुये ।[4]

व्यास वंशावली
श्री देवी प्रसाद व्यास
श्री सुखराम व्यास
श्री अनन्तराम व्यास
श्री राम चरण व्यास
श्री मदन मोहन व्यास उर्फ छिंगे
श्री गोरेलाल व्यास
श्री घासीराम व्यास
श्री सुन्दर लाल व्यास
पुत्री सुश्री नर्वदा देवी
श्री लक्ष्मीनारायण व्यास
श्री कमलाकाँत व्यास
श्री रमाकाँत व्यास
पुत्री सुश्री कंचन देवी
दामाद - श्री राधाचरण उपाध्याय
श्री ज्योति प्रकाश व्यास
श्री केदारनाथ व्यास
श्री प्रकाश चन्द्र व्यास
श्री अनिल कुमार व्यास
श्री रवीन्द्र व्यास
श्री धर्मेन्द्र व्यास
श्री अरविन्द व्यास
श्री सुनील व्यास
श्री सुधीर व्यास
श्री अखिलेश व्यास
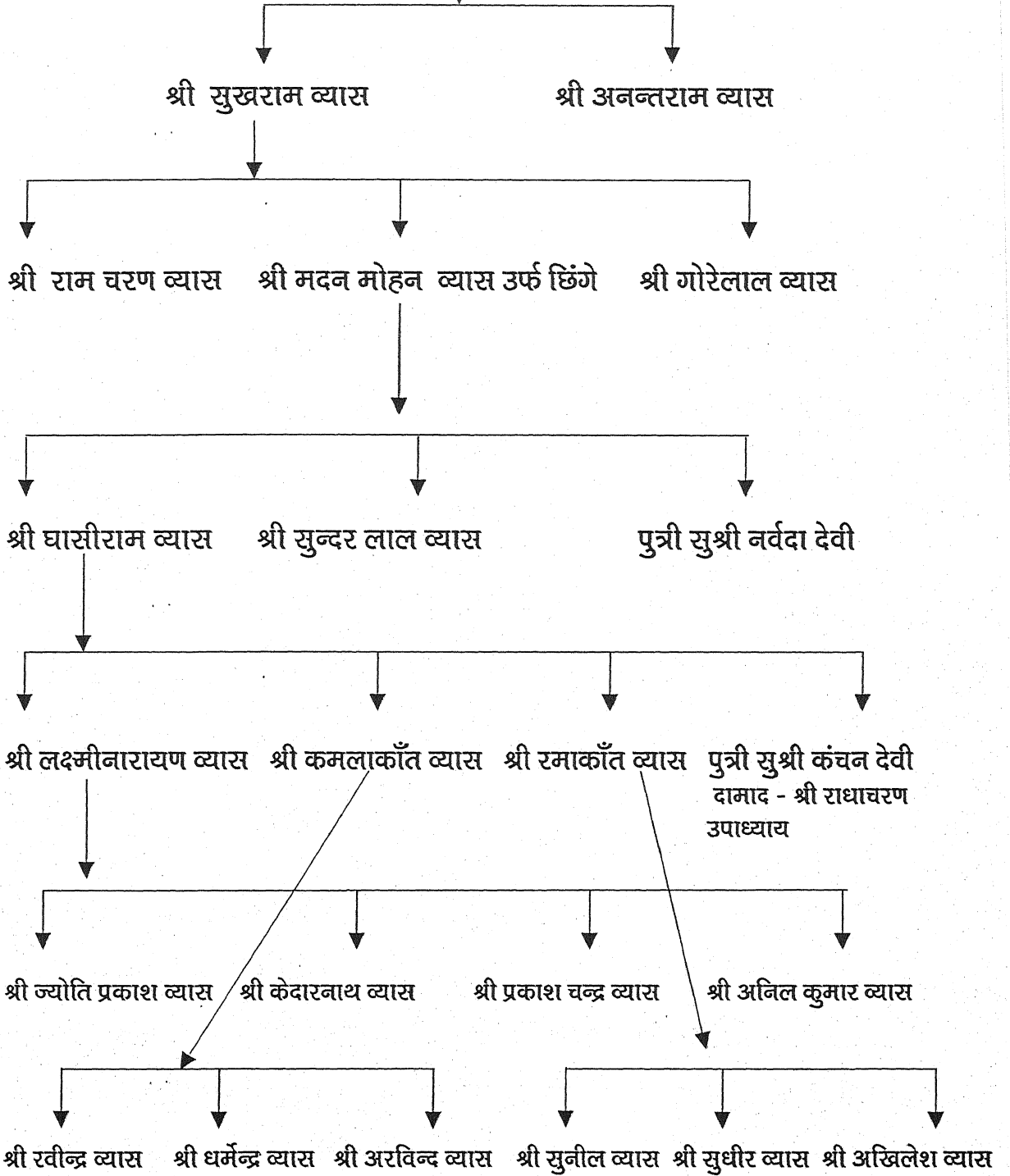
पूर्वज माता-पिता और परिस्थितियाँ :-

व्यास जी के पिता पं0 मदन मोहन व्यास परम वैष्णव थे, उनके हाथ में छः उगलियाँ थी अतएव वे छिंगे उप नाम से जाने जाते थे । छिगे व्यास संस्कारी पंण्डित एवं सरल स्वभाव के व्यक्ति थे, जिनके गुण पं0 घासीराम में परिलक्षित हुए । छिंगे व्यास का प्रथम विवाह टेरी ग्राम में हुआ, किन्तु उनकी पत्नी का असमय और निःसन्तान निधन होने पर इनका दूसरा विवाह ग्राम झबरा निवासी उदैनिया परिवार की पुत्री राधारानी से हुआ था । छिगे व्यास के निधन पर (1927) के बाद राधारानी ने व्यास परिवार का पालन–पोषण किया । अपने पुत्र व्यास जी की यशकीर्ति की सद्‌गाता माता राधारानी रहीं । माता राधारानी ने अपने पुत्रों को संस्कार, सदाचार, स्वभिमान एवं सदगुणों को मातृ वरदान के रूप में प्रदान किये । पति के निधन के उपरान्त सम्पूर्ण परिवार का लालन–पालन उन्होंने ही किया था । वह ग्रहस्थ नारी होने के साथ–साथ समाज का मार्ग दर्शन करते रहने में भी सक्रिय रही । सन् 1920 में अग्रेजी कुशासन के विरूद्ध सफल धरना विरोधकर अपनी शक्ति का प्रदर्शन उन्होंने किया था । प्रदेश सरकार ने 1948 से 1963 तक उन्हें 25 रू0 पेंशन दी थी । कृतज्ञ समाज ने उनका हर प्रकार समादर और सहयोग प्रदान किया ।

जन्म स्थान - जन्म संस्कार आदि :-

बुन्देलखण्ड की ह्वदय स्थली में केदारेश्वर की पर्वत श्रंखलाओं की मनोरम घाटियों से सुशोभित बुन्देलखण्ड की अयोध्या कहे जाने वाली मधुपुरी (वर्तमान नाम मऊरानीपुर, जो जिला–झाँसी की प्रसिद्ध तहसील) सुखनई सरिता के तट पर स्थित है । बुन्देलखण्ड की ऐसी पावन वसुन्धरा की गोद में पं0 घासीराम व्यास का जन्म सं0 1960 वि0 की अनन्त चतुदर्शी तद्‌नुसार 5 मई सन् 1903 को हुआ था ।[5]

कविवर व्यास ने अपना काव्यमय परिचय अपनी प्रसिद्ध पुस्तक श्याम संदेश मे इस प्रकार दिया है :–

विदित बुन्देलखण्ड वासी सुखरासी श्याम,
राधिका उपासी विसवासी व्रतधारी हूँ ।
सत्य व्यवहारी भव्य भोले भाईयों का भक्त,
दीन दुखियों का दास देश दुःखहारी हूँ ।
बुध अवतंश कल हंस–हंस वाहिनी का,
'व्यास' वंश का प्रसंश अंश अधिकारी हूँ ।
कवियों का प्रीत, 'मित्र' भीत चाव चेरा चारू,
भाव का भिखारी पुन्य प्रेम का पुजारी हूँ ।[6]

पं0 घासीराम व्यास ने अपने जन्म स्थान मऊरानीपुर के बारे मे स्वयं लिखा हैं : –

ललित ललाम सुख धाम मधुपुरी ग्राम,
अमित अराम सुखधाम राम जी को है ।
ताते दिस दक्षिण विलक्षण सुलक्षण की,
राशि दास रक्षिण सुपास 'व्यास' ही की है ।
अति रमनीक नीक रौनी के नजदीक शुभ,
शिखर पुनीत वर ठौर–ठीक, ठीको है ।
वरद सवार वर वरद सवार वर,
वरद सवार श्री केदारनाथ नीको है ।[7]

इनके माता – पिता ने इनको लड़कपन से ही सुसंस्कार और सुसंस्कृति के ज्ञान से परिचित कराना शुरू कर दिया था, जिसका प्रभाव व्यास जी के मनोमस्तिक पर आजीवन बना रहा ।

शीक्षा-दीक्षा, वैवाहिक जीवन, जीविकापार्जन, व्यवसाय तथा जीवन विषयक अन्य उल्लेखनीय तथ्य :-

पं0 घासीराम व्यास की प्रारम्भिक शिक्षा मऊरानीपुर की एक प्राईमरी पाठशाला से हुई थी जो हिन्दी मिडिल तक चली । इन्होनें संस्कृत की शिक्षा अपने गुरू पं0 गणपति त्रिपाठी जी से ग्रहण की । इसके उपरान्त ये शिक्षा ग्रहण करने के लिए अपने काका श्री नाथूराम व्यास के पास जबलपुर चले गये । इन्होनें बनारस में (शास्त्री) की शिक्षा ग्रहण की ।

पं0 घासीराम का विवाह लगभग 15 वर्ष की आयु में पानकुअँर के साथ सम्पन्न हुआ था । पानकुअँर जिला – जालौन की तहसील कोंच में रहने वाले पं0 श्री पारीक्षत गुसाँई की सुपुत्री थी । व्यास जी की पत्नी श्रीमती पानकुअँर अपने पति के अनुरूप शाँत सरल तथा पतिानुगामिनी थी । वह अपने परिवार में अपनी पीढ़ी में सबसे बड़ी थी । जब व्यास जी के छोटे भाई श्री सुन्दरलाल के देवी – देवताओं की मनौती के बाद पुत्र प्राप्त हुआ तो पानकुअँर ने इस पुत्र के जन्मोत्सव को बड़े धूमधाम के साथ मनाया था ।

पं0 घासीराम व्यास के पिता पं0 श्री मदनमोहन उर्फ छिंगे व्यास कर्मकाण्डी पंण्डित एवं प्रसिद्ध ज्योतिषी थे । इनकी शिक्षा भी पं0 घासीराम व्यास को विरासत में मिली इनके पिता जी रोजाना व्यास मंदिर पर पूजा अर्चना करने जाया करते थे और दूसरो को भी इसके लिये प्रेरित करते थे । सत्यनारायण की कथा यह बड़े मनोयोग के साथ सुनाया करते थे । पं0 घासीराम व्यास सत्यनारायण की इस सत्यकथा से बहुत प्रभावित हुआ करते थे जो आगे चलकर उनके सत्य और जीविका का साधन बनी ।

व्यास जी लीला अभिनय में भी निपुण थे । सुन्दर तन मुख पर काँति और सिर पर घुघराले कंधों तक फैले केशों से उनकी छवि महाकाव्य

के महानायक जैसी लगती थी। आजीविका के लिये मऊरानीपुर मे लोग रामलीला खेला करते थे, जिसमें व्यास जी राजा दशरथ जी का पाठ किया करते थे, साथ ही व्यास जी अपनी कविताओं के माध्यम से भी श्रोताओं का मनोरंजन करते थे । उनका कंठ बड़ा सुरीला था । उनके संवादों से श्रोता भाव–विभोर हो जाते थे । रामलीला ही व्यास कवि मण्डल का आधार बनी ।

मधुपुरी की बनाच्छादित पहाड़ियों और सुखनई के कल–कल करते प्रवाह ने व्यास ह्रदय में काव्य का प्रस्फुट स्वभाविक रूप से किया था । प्रकृति का सौन्दर्य और भावुक ह्रदय कविता के लिये उर्वरा भूमि प्रदान करते हैं । वहीं पर समीपस्थ केदारेश्वर के घंटो की ध्वनि से संयुक्त, शीतल समीर जाग्रति के लिए आह्वान दे रही थी । स्वतन्त्रता संग्राम की बजती भेरी की प्रति ध्वनि युवकों में रोष एवं जोश का संचार कर मातृभूमि की विमुक्ति हेतु संकल्प बद्ध होने की भाव भूमि प्रस्तुत कर रही थी । गाँवों एवं नगरों में भारत – भारती, झाँसी की रानी की राष्ट्रीय भावना के गीत गूज रहे थे । जल विहार जैसे सांस्कृतिक उत्थान के आयोजनों में कविता में राष्ट्रीय धारा के स्वर मुखरित हो रहे थे । पं0 घासीराम व्यास को इस राष्ट्रीय स्वाभिमान के वातावरण ने उद्‌बोधन काव्य रचने को प्रेरित किया । अतएव उनके काव्य स्वरों में राष्ट्र और राष्ट्रीयता प्रमुखता से अभिव्यक्त हुये । दूसरी और लोकाभिरंजन की काव्य गोष्टियाँ पूरे अंचल में अपना प्रभाव जनता में उत्पन्न कर एक जुटता की भावना पैदा कर रही थी । व्यास जी को जनाधार का यह रूप भी पसन्द आया और उनके काव्य में फड़ काव्य की सुरभित सुगन्ध का उदय हुआ । छतरपुर में गंगाधर व्यास और झाँसी मैं माहौर कवि मंडल काव्य गोष्ठियों के प्रमुख प्रेरणा स्रोत थे । पं0 गंगाधर व्यास मऊरानीपुर में गोषठियों में आते और वह सुकवि व्यास की

काव्य प्रतिभा से प्रभावित हुए । इसके बाद घासीराम व्यास ने व्यास कवि मण्डल का गठन किया और क्षेत्र प्रदेश एवं देश के प्रमुख कवि सम्मेलनों, साहित्यकार सम्मेलनों में भाग लेकर सम्मान अर्जित किया ।[8]

पं0 घासीराम व्यास का दाम्पत्य जीवन बड़ा सुखद रहा । यद्यपि उनकी साहित्यक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक व्यस्तता उन्हें परिवार की और अधिक ध्यान देने में बाधक रहती थी, जो आगे चलकर और भी ज्यादा कष्टदायक हो गयी थी। इनका एक पैर घर में तो दूसरा पैर हमेशा किसी न किसी कारागार में रहता था । किन्तु इनकी पत्नी पारिवारिक समस्याओं को व्यास जी के मार्ग में बाधक नही बनने देती थी, परिवार की सभी प्रकार की समस्याओं का निपटारा वह स्वयं कर लिया करती थी, इसी कारण व्यास जी घर की तरफ से कभी भी चिंतित नही रहते थे और निश्चित होकर अपने देश भक्ति के कार्यो में लगे रहते थे ।

पं0 घासीराम व्यास अपनी पत्नी से बहुत स्नेह करते थे, जब उनकी पत्नी बीमार हुई तो उन्होने उनका उपचार उस समय के सुप्रसिद्ध वैद्य बेनीप्रसाद बबेले तथा वैद्यपरमानन्द पाण्डेय से करवाया किन्तु ईश्वर की मर्जी तो कुछ और ही थी जिस कारण वह अपनी पत्नी के प्राण नही बचा सके । पानकुँअर की यह लीला 01.04.1942 को समाप्त हो गयी । अपनी पत्नी के अस्थि विसर्जन हेतु व्यास जी इलाहाबाद गये लेकिन वहाँ से लौटकर वे गम्भीर रूप से बीमार हो गये । इनके परिवार के लोगो ने इनका बहुत उपचार कराया, लेकिन सभी प्रयास विफल हुए और अंततः 16. 04.1942 को व्यास जी ने अपने प्राण त्याग दिये । उस दिन मऊरानीपुर नगरी मे शोक की लहर दौड़ गई और जनजीवन ठहर सा गया । श्री स्वामी ब्रहमानन्द, डा0 श्याम सुन्दर बादल, श्री राम किशोर मोर आदि

अपार जनसमूह ने आजादी के इस दीवाने को अश्रुपूर्ण नेत्रों से अंतिम विदाई दी । और हवाओं में यह स्वर गूंज रहे थे ।

सर पर कफन लपेट कर निकले हैं,
आज मरने के लिये माँ की आन की है याद ।
मारने दो गोलियां चलाने दो लाठियाँ उन्हें,
खोल कर सीना अड़ जाओं कर एतकाद।
है न परवाह 'व्यास' आह का न लेना नाम,
होगा खुद जालिमों का जोरो जुल्म बरबाद ।
फाँसी के तख्ते पर होके दिलशाद कहो,
इन्कलाब जिन्दाबाद, इन्कलाब जिन्दाबाद ।[9]

जीवन विषयक अन्य उल्लेखनीय तथ्य :-

राष्ट्रीय कवि व्यास जी के निकट सम्पर्क में रहे श्री द्वारिकेश मिश्र लिखते है – "उनका कंठ इतना सुरीला और ललित था कि लोग उन्हें बुन्देलखण्ड कोकिल कहा करते थे, इतना सीधा सरल व्यक्तित्व कि जिसमें तनाव की कोई रेखा नहीं । सहानुभूति उनमें सामान्य से बहुत अधिक थी, किसी का किसी भी तरह का कष्ट हो, यदि वह उनके पास पहुँच गया तो, अपना सब कुछ छोड़कर वे उसकी सहायता के उद्योग में तत्पर हो जाया करते थे । इसलिये आज भी बुन्देलखण्ड वासी व्यास जी को सश्रद्धा याद करते है । व्यास जी में भावना और कर्तव्य का अद्भूत समन्वय था । वे भावुक और रससिद्ध कवि थे । ऐसे कवि थे जिनकी वाणी में तेज था और लोगो को उठा देने की प्रेरणाप्रद शक्ति, निश्चय ही राष्ट्रीय आन्दोलनों में बुन्देलखण्ड की जनता ने जो कुछ किया, उसके मूल में व्यास जी को कुछ कर बैठने की उमंग बनाने वाली कविताओं का बहुत बड़ा हाथ था । राष्ट्र युद्ध में व्यास जी स्वयं एक कर्तव्य परायण सेनानी रहें । कई बार जेल

गये । 1942 की अंतिम जेल यात्रा में उन्होनें मुस्कुराते हुए अपना स्वास्थ्य होम दिया और जेल से लौटने के बाद तो उन्हें यह सांसारिक कार्य क्षेत्र ही इतना छोटा दिखाई दिया कि वे सदा के लिए चल बसे । जब वे गाते तो लोग तन्मय हो जाते उनके उद्‌बोधन, सुनने वालों की नसों में उठता रक्त वे दौड़ा दिया करते थे ।[10]

सुप्रसिद्ध उपन्यासकार एवं हिन्दी जगत के उपन्यास सम्राट वृंदावन लाल वर्मा ने भी व्यास जी के व्यक्तित्व कृतित्व के मूल्यांकन का भाव इन शब्दों में व्यक्त किया हैं – "स्व0 श्री घासीराम व्यास की सुधि आते ही मन को एक मसोस लग जाती है । वह भव्य सुन्दर चेहरा, स्नेह और उदारता के निर्झर वे नेत्र जिनके पीछे निर्भीकता हिलोरे मारा करती थी, आज सामने होते तो न मालूम कितनी सत्यप्रेरणाओं को बल मिलता ।[11]

राष्ट्रकवि पं0 घासीराम व्यास की जयन्ती के अवसर पर अध्यक्षता करते हुये पूर्व कुलपति बुन्देलखण्ड विश्व विद्यालय झाँसी डॉ0 गोरखनाथ द्विवेदी ने व्यास जी के 'व्यक्तित्व – कृतित्व की सराहना करते हुये कहा कि "व्यास जीं जैसे साहित्यकार जो दे जाते हैं, वह थोड़े समय मे नष्ट नही होता ।"

जागरण के सम्पादक श्री रामसेवक रावत ने कहा कि "व्यास जी ने आँचलिकता को राष्ट्रीय चेतना व जाग्रति के साथ जोड़ दिया । व्यास जी ने राष्ट्रीय ओज तथा शौर्य का मार्ग प्रशस्त किया ।"[12]

व्यास जी का राष्ट्रीय व्यक्तित्व :–

कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते है जो अपनी सीमित आयु मे असीमित को समेट लेने में सक्षम होते हैं । वे अपनी अखण्ड प्रतिभा की अमिट आभा और ओजस्वी कर्तव्य की अजरता छोड़ जाते है, जो जीवनादर्शो के सोपान

गढ़ते है । इस प्रकार के व्यक्तित्व हर क्षेत्र में उपलब्ध हैं । क्राँति जनक राष्ट्रकवि पं० घासीराम व्यास (जन्म 5 सितम्बर 1903, निधन 16 अप्रैल 1942) की गांठ में केवल 39 वर्ष का जीवन था, फिर भी उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का व्यास शताधिक वर्षीय जीवन के नाम मे नहीं आयेगा । व्यास जी के दो प्रमुख रूप थे, एक और वे प्रखर राष्ट्र भक्त थे, दूसरी और एक यशस्वी राष्ट्रकवि । जहाँ देशभक्त के रूप में वे ज्वालामुखी थे, वहीं सरस्वती की उपासना में आरती रूप थे । बड़ा ही आर्कषक था उनका व्यक्तित्व, साथ ही देशभक्ति और काव्य । जहाँ देशभक्त और काव्यगुण में सौरभायित उनका जीवन मऊरानीपुर ही क्या समग्र बुन्देलखण्ड और देश प्रदेश के लिए एक अमूल्य निधि था । श्री रामनाथ द्विवेदी ने अपने पड़ौसियों के सहयोग से एक भजन मण्डली का गठन किया था, कालान्तर में यही भजन मंडली राष्ट्रीय जन जागरण के रूप में स्थानान्तरित हो गयी, इस प्रकार व्यास जी का एक रूप तो राष्ट्रीय उपासना का और दूसरा काव्य साधना का । उनके यशाकाश में उड़ान भरते उनके जीवन पखेरू के ये दो पंख थे देशभक्ति और काव्य साधना । ये दोनों पंख साथ–साथ गतिशील रहे और यह पखेरू भरपूर उड़ाने भरता रहा । उनकी रचनायें देशभक्ति और राष्ट्रीयता से ओत–प्रोत होती थी तथा उनका काव्यपाठ अत्यन्त आर्कषक सुरीला और ललित होता था जिसका सर्वसाधारण पर अमिट प्रभाव पड़ता था ।[13]

सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ0 रामकुमार वर्मा के अनुसार "व्यास जी में एक और काव्य शास्त्र पर असाधारण अधिकार, दूसरी और काव्य रचना की नैसर्गिक प्रतिभा एक और श्रृंगार की अजस्त्रधारा और दूसरी और वीर काव्य की घोर हुंकार, एक और जीवन की मर्यादा में विश्वास और दूसरी और क्रांति का शंखनाद के समन्वय पर आश्चर्य होना स्वाभाविक है । ऐसे

उत्कृष्ट काव्य के रचयिता थे राष्ट्रकवि पं0 घासीराम व्यास उनका अमरकाव्य देशवासियों को सदैव राष्ट्र पर बलिदान होने के लिये प्रेरित करता रहेगा । उनके जीवन की अंतिम अभिलाषा थी" :–

कब्र पर डाले दे जरा सी कोई लाके पाक,

माँ के कदमों की खाक मेरे मरने के बाद ।

इन्कलाब जिन्दाबाद, इन्कलाब जिन्दाबाद ।[14]

"इसमें कहना ही क्या कि स्व0 व्यास जी हमारे प्रांत के एक रत्न थे । उनकी प्रतिभा से अभी हमें और कितना पाने की आशा थी, परन्तु काल ने वह पूरी न होने दी । उनकी मृत्यु से समिष्ट रूप में हिन्दी की हानि तो हुई ही हैं ।" .... कार्तिक 1999 वि0 में जब मऊरानीपुर झाँसी निवासी राष्ट्रीय विचारधारा के यशस्वी कवि पं0 घासीराम व्यास के निधन पर राष्ट्र कवि मैथलीशरण गुप्त द्वारा लिखी पक्तियां हमें झकझोरने वाली है । राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने भी कविवर व्यास जी के सम्बन्ध में बहुत पहले कहा था – "बुन्देलखण्ड धन्य है जिसने व्यास जी जैसे जनमानस के ह्रदय स्पर्श करने वाले राष्ट्रीय कवि को जन्म दिया ।[15]

पंण्डित घासीराम व्यास ने विभिन्न रसों और विभिन्न क्रियाओं में खड़ी बोली तथा बुन्देली में कविता लिखकर बुन्देलखण्ड के यशस्वी कवियों में अपना नाम अमर किया है । उनकी राष्ट्र भक्ति परक वीर रस की कविताओं में देश के स्वतंत्रता सेनानियों को देश की खातिर बलि देने की प्रेरणा ही नहीं दी स्वयं व्यास जी को भी वाक्यवीर के साथ–साथ कर्मवीर बना दिया ।

उन्हीं के शब्दों में :-

हम वाक्यवीर ही नहीं, कर्मवीर भी हैं,

ऐसा कुछ करके दिखा दो वीर कवियों ।[16]

समाज के उच्च वर्ग के प्रतिष्ठित परिवार मे जन्में व्यास जी ने संवेदनशील, स्वानुभूत काव्य का सृजन किया । विघटित होते परिवार, टूटते सामाजिक बन्धन एवं सरोकार, सिमटती संवेदनाओ का यथार्थ रूप में चित्रण उन्होंने अपनी रचनाओं में किया । रचनाओं का माधुर्य, मार्मिकता, जीवन से जुड़ी वास्तविकताओं एवं बहुआयामी होने का इतना जबरदस्त प्रभाव हुआ कि अंसख्य श्रोताओं को कंठस्थ हो गयी । व्यास जी श्रोताओ के ह्रदय के साथ-साथ उनके कंठो में भी बस गये । पं0 श्याम सुन्दर बादल तो व्यास जी की प्रशंसा करते हुए कभी अघाते ही नहीं थे । उनकी निम्न छंदबद्ध पक्तियों में व्यास जी की लोकप्रियता का अनुमान लगाया जा सकता है ।

बड़े से भी बड़े अधिवेशनों में, तुम नित्य निमंत्रित थे किये जाते ।

फलीभूत बन जाता रहा, जिस मंच पर आप अलापते आते ।।

जहाँ आपका नाम पुकारा गया, वहाँ श्रोता प्रसन्न हो ताली बजाते ।

अहो ! व्यास जी है कहाँ, ? है कहाँ ? व्यास जी हैं यही तो झुक-झूमते आते ।[17]

"व्यास जी की आत्मा एक राष्ट्रीय कवि की आत्मा थी, जिसमें भारत माता की वरूण पुकार प्रतिध्वनित होकर वही थी । उनके स्फुट कवित्त जो राष्ट्रीयता की धरोधर है । उनके कवित्त महाराजा छत्रसाल, महारानी लक्ष्मीबाई, राणाप्रताप, शिवाजी, गुरूगोविन्द सिंह तथा देश के अन्य वीरों पर

प्रतिदिन पढ़ने की वस्तु है । उनमें वह शक्ति है कि वे मुर्दा दिलों में भी राष्ट्र प्रेम की एक लहर जगा दें :—

प्रबल प्रताप सा प्रताप दे पराक्रम दे,

विक्रम सा विक्रम पृथ्वी सा लक्ष सर दे ।

साहस स्वदेश व्रत साधन शिवाजी जैसा,

छत्रसाल जैसी दिव्य दृढ़ता अमर दे ।

'व्यास' गुण गौरव गुमान गुरू गोविन्द सा,

लक्ष्मी महारानी ऐसी वीरता का वर दे ।

कर दे स्वतंत्र भव्य भारत हमारा देवि,

भारती हमें तू भारतीयता से भर दे ।[18]

पारिवारिक प्रभाव का मूल्यांकन :—

व्यास जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के सम्बन्ध में हिन्दी साहित्य के विद्वानों, क्रांतिकारियों, समाज सेवियों, साहित्यकारों, कवियों तथा अन्याय राष्ट्रीय भावनाओं से ओत —प्रोत नागरिको ने अपने विचार व्यक्त किये है, इनमें उनकी विशालता, महानता, राष्ट्रीय भावना का पता चलता है । "व्यास जी उस महान भूमि की संतान थे, जिसका इतिहास वीरों, त्यागियों और कवियों की अमर गाथाओं से भरा पड़ा हैं । बहादुरी उनमें कूट—कूट कर भरी थी, त्याग उनके स्वभाव का अभिन्न अंग था और वीर काव्य तो मानों उनके जीवन की श्वाँस थी । अपने समकालीन कवियों में उन्हें असामान्य लोकप्रियता हासिल थी .... व्यास जी में अपनी भूमि के प्रति अगाध अनुराग था । उन्हीं के शब्दों में :—

वन्दित विश्व में खंड बुन्देल हैं, और नहीं जिसका कहीं सानी ।

हो गया धन्य धरा में वही, जिसने कभी जो यहाँ का पिया पानी ।[19]

व्यास जी केवल कल्पना जगत में ही विचरण करने वाले व्यक्ति न थे, बल्कि जो कुछ उन्होंने लिखा, उनके पीछे उनकी जीवन अनुभूतियाँ थी । अपनी कविताओं में उन्होने समाज के यथार्थ चित्र खीचें हैं और जहाँ उन्होने श्रृंगार का वर्णन किया हैं, वहाँ उनके काव्य में एक आध्यात्मिक प्रकृति की आंकाक्षा ही मिलती है ।[20]

वे देश के लिये कई बार जेल गये, इसलिये उनका स्वास्थ्य इतना खराब हो गया कि उन्हें असमय में ही परलोक यात्रा करनी पड़ी, व्यास जी गये और सदा के लिये गये, उनकी कहानी रह गयी ।[21]

"श्रीयुत घासीराम व्यास की असामयिक मृत्यु केवल हमारे प्रान्त बुन्देलखण्ड की ही नहीं, वरन् अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य क्षेत्र की एक महान दुर्घटना हैं । सत्यनारायण ब्रज कोकिल थे तो व्यास जी बुन्देलखण्ड के कोकिल । दोनों में अनेक समानताएँ थी और दोनों करीब–करीब एक ही उम्र मे स्वर्गवासी हुये । जिसने अपनी प्रतिभा में सहस्स्रों, लक्ष्यों श्रोताओं को स्फूर्ति प्रदान की और जो हमारे स्वाधीनता संग्राम का एक सच्चा सिपाही था, क्या हम उनके लिए श्राद्धकर्म भी नहीं कर सकेगें ।

हम बुन्देलखण्ड वासियों की यह परीक्षा का समय हैं :–

यों तो होती हैं मूं देखे की मोहब्बत सबको,
मैं तो तब जानू मेरे बाद मेरी यादें रहें ।[22]

"व्यास जी प्राकृतिक कवि थे, उन्होंने प्रायः प्रत्येक दिवस पर लिखा है, फिर भी प्रेम विषयक और राष्ट्रीय रचनायें उनकी प्रिय और अपनी पसन्द

की रचनायें थी । गोपी ऊधव विषयक रचनायें 'वीर ज्योति' और 'जवाहर ज्योति' में प्रकाशित रचनायें इसका स्वयं प्रमाण है ।[23]

व्यास जी राष्ट्रीय उग्रधारा के भी कवि थे । उनकी 'ज्योति' इसका ज्वलंत उदाहारण हैं । उनकी 'जवाहर ज्योति' भी राष्ट्रीयता से ओत–प्रोत है ।[24]

साहित्य महोपाध्याय डा0 श्याम सुन्दर बादल ने व्यास जी के व्यक्तित्व कृतित्व के सम्बन्ध में इस प्रकार अपना मत प्रकट किया – "थोड़ा लम्बा कद, ईषद गौर वर्णन दुर्बल और न स्थूल शरीर, प्रफुल्ल कमल के आयत पत्र के समान विशाल नेत्र एव स्मित और संकोच की धूप छाँही भावनाओं से भावित मुखाकृति । इन्हीं कुछ रेखाओं में स्व0 व्यास जी सरल और पहिचाने जा सकते थे ।"[25]

व्यास जी के पिता श्री मदन मोहन व्यास योग्य कर्मकाण्डी पंडित एवं सुन्दर हस्तलिपिक थे । बरू (पीली लकड़ी) की कलम से लिखी गयी उनकी पुस्तकें प्रदशर्नी मे रखने योग्य होती थी एवं अन्य पण्डित उनसे पुस्तकें दिखाया करते थे । माता श्री राधारानी ने राष्ट्रीय आंदोलनों में स्वंय भाग लिया था । पिता की मृत्यु के पश्चात् व्यास जी के राष्ट्रीय आंन्दोलनो में लगे रहने के कारण उनकी मुख्य जीविका पंडिताई को बड़ा धक्का लगा ।

श्री हरगोविन्द मिश्र ने व्यास जी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए लिखा था – "गेहुआँ छरहरा बदन, कंधों तक छहरते घुघराले काले बाल, सुन्दर मुखाकृति में स्नेह और उदारता के निर्झर नेत्र और इन सबके अन्तर स्वाभिमान से भरी सजग निर्भयता । जेल में प्रार्थना कराने का कार्य उनका

था । जिस समय शांत और मधुर स्वर में 'सुजलम् सुफलाम्' का घोष करते, सारी जेल श्रद्धा से शाँत और नत् हो जाती ।[26]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. राष्ट्रकवि घासीराम व्यास का व्यक्तित्व एवं कृतित्व – रामचरण हयारण 'मित्र' – पृष्ठ – 61 ।

2. राष्ट्रकवि घासीराम व्यास का व्यक्तित्व एवं कृतित्व – रामचरण हयारण 'मित्र' – पृष्ठ – 62 ।

3. व्यास – यश – सिंधु (राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ) पृष्ठ – 3 ।

4. राष्ट्रकवि घासीराम व्यास का व्यक्तित्व एवं कृतित्व – रामचरण हयारण 'मित्र' – पृष्ठ – 62 ।

5. व्यास – यश – सिंधु (राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ) पृष्ठ – 3 ।

6. श्याम – सन्देश, राष्ट्रकवि घासीराम व्यास, पृष्ठ – 1 ।

7. व्यास – यश – सिंधु (राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ) पृष्ठ – 4 ।

8. व्यास – यश – सिंधु (राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ) पृष्ठ – 8 – 9 ।

9. राष्ट्रकवि घासीराम व्यास का व्यक्तित्व एवं कृतित्व – रामचरण हयारण 'मित्र' – पृष्ठ – 61 ।

10. राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जी, श्री द्वारिकेश मिश्र, श्री माहौर अभिनंदन ग्रंथ, – पृष्ठ – 33 ।

11. राष्ट्रकवि घासीराम व्यास – श्री वीरेन्द्र कुमार शर्मा मऊरानीपुर (आलेख) ।

12. दैनिक जागरण – झाँसी, दिनाँक – 25 – 9 – 1980 ।

13. काव्य चिदाकाश राष्ट्रकवि व्यास, श्री निवास शुक्ल एडवोकेट, छतरपुर (आलेख) (व्यास–यश–सिंधु राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ) पृष्ठ 110 – 113 ।

14. परमदेश भक्त पं0 घासीराम व्यास, श्री जानकी शरण वर्मा (आलेख) (व्यास – यश – सिंधु राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ) पृष्ठ – 119 ।

15. व्यास – यश – सिंधु राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ (आलेख) डॉ0 गुणसागर सत्यार्थी, पृष्ठ – 124 ।

16. व्यास – यश – सिंधु राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ, (आलेख) डॉ0 एन0डी0 सोनी, पृष्ठ – 133 ।

17. मधुकर वर्ष – 2, अंक – 11, कविता श्रद्धाँजलि, डॉ0 श्याम सुन्दर बादल ।

18. वीर ज्योति वन्दना – घासीराम व्यास, पृष्ठ – 1 ।

19. नवभारत टाइम्स 20 मई, 1942, यशपाल जैन (लेख) ।

20. मधुकर 1 अगस्त, 1942, (श्री गोर्वधनदास त्रिपाठी) पृष्ठ – 20 ।

21. मधुकर 16 मई, 1942, (डॉ0 हरीशंकर शर्मा) ।

22. मधुकर 16 फरवरी, 1942, सम्पदाकाचार्य श्री बनारसीदास चतुर्वेदी पृष्ठ – 24 ।

23. राष्ट्रकवि घासीराम व्यास का व्यक्तित्व एवं कृतित्व – रामचरण हयारण 'मित्र' (संस्मरण – श्री गौरीशंकर द्विवेदी) पृष्ठ – 286 ।

24. राष्ट्रकवि घासीराम व्यास का व्यक्तित्व एवं कृतित्व – रामचरण हयारण 'मित्र' (संस्मरण – डॉ0 गनेशीलाल बुधौलिया – राठ) पृष्ठ – 287 ।

25. राष्ट्रकवि घासीराम व्यास का व्यक्तित्व एवं कृतित्व – रामचरण हयारण 'मित्र' (संस्मरण – डॉ0 श्याम सुन्दर बादल) पृष्ठ – 288 ।

26. नवभारत टाइम्स नई दिल्ली, 28 जुलाई, 1957 ।

तृतीय अध्याय

- जीवन काव्य, काव्य साधना, राष्ट्रीय चेतना की पृष्ठभूमि :
- तत्कालीन राष्ट्रीय काव्य धारा के कवि और उनका व्यास जी के काव्य पर प्रभाव :
- स्वतंत्रता आँदोलन में व्यास जी की भूमिका, स्वाधीन दृष्टि, बलिदानी वाणी, तत्कालीन युग की देन :
- स्वतंत्रता आँदोलन में ओज क्राँति के कवि, योगदान, कारावास तथा राष्ट्रीय आँदोलनों में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका :
- समग्र रूप से व्यास जी का तत्कालीन जीवन दर्शन एवं स्वतंत्रता संघर्ष की ओजस्वी वाणी का प्रभाव :
- व्यास जी के कृतित्व के माध्यम से सामाजिक, राष्ट्रीय चेतना, काव्य में विद्रोह एवं क्राँति के स्वर तथा एक सचेतक कवि के रूप में महती भूमिका :

तृतीय अध्याय

जीवन काव्य, काव्य साधना एवं राष्ट्रीय चेतना की पृष्ठभूमि :–

19वीं सदी का दौर भारतीय साहित्य के इतिहास में परिवर्तनकारी दौर माना जाता है । यह परिवर्तन भारतीय इतिहास के हर क्षेत्र (धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक) में दिखाई देता है । कम्पनी के राज्य में भारतवासियों की दयनीय स्थिति हो गयी थी । अंग्रेजों द्वारा भारत का विदेश भेजा जा रहा था । मंहगाई, अकाल की स्थिति में बढ़ते हुए टैक्सों से देश की हालत बिगड़ती जा रही थी । धार्मिक दृष्टि से देखें तो अंधविश्वास, मत–मतान्तर के झगड़े और रूढ़ियों से लोग जकड़े हुए थे । हमारे समाज में जाति–पांति, छुआ–छूत, भेद–भाव, बाल–विवाह, बहु–विवाह, विधवा–विवाह विरोध, स्त्री शिक्षा विरोध तथा विदेश गमन आदि अनेक बुराईयाँ दिखाई देती थीं । कवि राजनीतिक दृष्टि से देखते हैं, तो अंग्रेजों की असलियत सामने आ जाती है । यह निर्विवाद सत्य है कि किसी भी युग में अव्यवस्था और अत्याचार अधिक बढ़ जाता है तो उसे दूर करने के लिए कोई–न–कोई संत, महात्मा, साहित्यकार जन्म लेता है ।

सन् 1857 की क्राँति के समय भारत के शासन की बागडोर कम्पनी सरकार के हाथ से छूटकर महारानी विक्टोरिया के हाथ में चली जाती है । हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने अंग्रेजी राज्य के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की थी, जनता भी ब्रिटिश राज के आगमन से हर्षित थी, भारतेन्दु जी ने तो अंग्रेजी राज की प्रशंसा भी की है, किन्तु आगे चलकर उनका अंग्रेजी राज से मोह भंग हो गया और उन्हें कहना पड़ा –

भीतर–भीतर रस चूसे,
हंसि–हंसि के तन–मन–धन मूसे ।

जाहिर बातन में अति तेज,

क्यों सखि सज्जन नहीं अंग्रेज ।।

आगे चलकर द्विवेदी युग में 'सरस्वती' सम्पादन के माध्यम से हिन्दी में जिस युगान्तकारी साहित्य के सृजन का द्विवेदी जी ने पथ–प्रशस्त किया था, उसके मूल में उनका युग सापेक्ष, स्वस्थ्य परम्परागत चिन्तन था, जिसमें तत्कालीन चुनौतियों का उत्तर तथा हिन्दी साहित्य धारा के लिए स्पष्ट दिशा निर्देश समाहित था । उन्होंने इस भाव को स्पष्ट करते हुए कहा है –

"कवि को ऐसी भाषा लिखनी चाहिए जो युगानुकूल अपेक्षाओं की पूर्ति हेतु साहित्य की आकृति–प्रकृति का निरूपण करें । अपने युग की पूरी सामर्थ्य और सीमा के साथ प्रतिबिम्बित कर यथार्थ चित्र प्रस्तुत करने का उत्तरदायित्व भी द्विवेदी जी साहित्य का ही मानते हैं ।"[1]

द्विवेदी युग के प्रयोगधर्मी कवियों में राष्ट्रकवि मैथली शरण गुप्त का नाम विशेषतः उल्लेखनीय है । इस युग में खड़ी बोली काव्य भाषा के रूप में प्रतिष्ठित हो चुकी थी । मैथलीशरण गुप्त का काव्य परम्परा–पुष्टता और प्रयोगधर्मिता के अनूठे संगम का उदाहरण है । गुप्त जी के युग में राष्ट्रीयता का स्वर प्रबल था । भारतेन्दु युग में राष्ट्र की स्वतंत्रता का स्वर इतना मुखर नहीं था, जितना कि गुप्त जी के युग में । द्विवेदी युग के काव्य में मैथलीशरण गुप्त ने अपने युग की राष्ट्रीय चेतना को अपनी कविता में ही नहीं, अपने गद्य में भी वरीयता दी । राष्ट्र की गौरव गाथाओं और शौर्य गाथाओं को उन्होंने भाषा के नये तेवरों के साथ प्रस्तुत किया । परम्परागत कथाओं को युगीन चेतना के अनुरूप ढालने में तो गुप्त जी को असाधारण सफलता मिली ।[2] गुप्त जी पर महात्मा गाँधी का बड़ा गहरा

प्रभाव था और उनकी राष्ट्रभक्ति तो 'भारत–भारती' और 'जय–भारत' रचनाएँ अत्यंत प्रभावित स्वर में व्यक्त हुई है । गुप्त जी की इन दोनों रचनाओं में राष्ट्रभक्ति का इतना प्रबल स्वर विद्यमान है जो जाति, सम्प्रदाय और धर्म की समस्त संकीर्णताओं को ध्वस्त कर देता है ।[3]

माखनलाल चतुर्वेदी बीसवीं शताब्दी के भारत का एक आलोकमय नाम है । पराधीन भारत की स्वतंत्रता और तदुपरांत गाँधी दर्शन की राम–राज्य वाली कल्पना के अनुरूप समाज रचना के लक्ष्य के प्रति उनके जीवन के प्रति हर सांस सम्पूर्णतः समर्पित थी । 'एक भारतीय आत्मा' के उपनाम से उनका काव्य पूरे भारत की आत्मा का प्रतिबिम्ब है । उनकी वाणी हर देशभक्त भारतीय की वाणी है । उनका यह गीत राष्ट्रीय प्रेरणा का स्रोत है ।

"मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर देना तुम फेंक ।
मातृ भूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जावें वीर अनेक ।।

श्री बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' हिन्दी की प्रगतिशील, सांस्कृतिक, स्वच्छन्दतावादी धारा के अन्यतम कवियों में से थे । वे हिन्दी में एक नवीन विचारधार के कवि हैं, वे सम–सामयिक जन आँदोलन के प्रेरक कवि हैं, उनकी रचनाओं में युग की पुकार है । राष्ट्रीय चेतना और क्राँतिकारी भावना है । वे निःसंदेह एक जुझारू कवि, उन्हें किसी वाद के घेरे में नहीं बाँधा जा सकता । उनका एक ही वाद है – 'मानवतावाद' उसी में उनकी युगानुरूप रचनाएँ समाहित हो जाती हैं । उनकी कविता की अपनी एक निराली दुनिया है, निराला चिंतन है, जो अंदर और बाहर दोनों में एकरूपता और तादात्मय लिए हुए है । वे हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय क्रान्ति काल के संदेशवाहक बन गये ।[4]

अन्य कवियों में सोहनलाल द्विवेदी, सुभद्रा कुमारी चौहान, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानन्दन पंत, रामनरेश त्रिपाठी तथा बुन्देलखण्ड के कवियों में द्वारिका प्रसाद गुप्त 'रसिकेन्द्र', मुंशी राघवेन्द्र, भगवानदास बालेन्दु, अम्बिका प्रसाद 'दिव्य', दीनानाथ अश्क, सूर्य प्रकाश दीक्षित और पं0 घासीराम व्यास आदि कवियों ने राष्ट्रीय भावना से ओत–प्रोत रचनाओं का सृजन कर तत्कालीन राष्ट्रीय आँदोलन को गति प्रदान की और समाज को इस भाव धारा में प्रविष्ट करने का प्रयास किया ।

गाँधी जी के नेतृत्व में इस असहयोग और अहिंसात्मक सत्याग्रह के आंदोलन से देश के कोने–कोने में जन–जन में व्यापक राजनैतिक चेतना फैली और सभी ने उसमें भाग लेने का संकल्प लिया । क्राँतिकारियों ने महात्मा गाँधी और उनके इस अहिंसात्मक आँदोलन के प्रभाव की भूरि–भूरि सराहना की है, इसमें राजनीतिक चेतना और स्वराज्य के लिए त्याग और बलिदान करने की भावना का जनता में व्यापक प्रसार हुआ, जिसके आधार पर ही जन क्राँति हो सकती है । सुप्रसिद्ध क्राँतिकारी तथा लेखक, कवि डॉ0 भगवानदास माहौर ने इस युग की राष्ट्रीय क्राँति एवं असहयोग आँदोलन की व्याख्या करते हुए लिखा है – "काँग्रेस का व्यापक खुला अहिंसात्मक आँदोलन और सशस्त्र क्राँतिकारियों का गुप्त सशस्त्र आँदोलन एक चिमटे के दो हाथ में रहे हैं, वे सन् 1942 से 46 तक के आँदोलन में पास–पास आते गये और अंततः मिल गये और उससे भारत ने विदेशी दासता को पकड़कर दूर फेंक दिया ।[5]

बुन्देलखण्ड राष्ट्रीय साहित्य की दृष्टि से अत्यंत सम्पन्न और राष्ट्रीय चेतना की दृष्टि से अग्रणी रहा है । राष्ट्रीय धारा में काव्य सृजन करने वाले कवियों में झाँसी के जन कवि भग्गी दाऊ जी, श्याम, चतुरेश नीखरा, हृदयेश, पं0 मदन मोहन द्विवेदी 'मदनेश', सियाराम शरण गुप्त, मुंशी

अजमेरी, कवीन्द्र नाथूराम माहौर, अम्बिका प्रसाद 'अम्बिकेश' घनश्यामदास पाण्डेय, नरोत्तम दास पाण्डेय और इसी परम्परा में राष्ट्र कवि घासीराम व्यास आदि उल्लेखनीय हैं । कवियों की दृष्टि से बुन्देलखण्ड उत्कृष्ट रहा है, जिनके काव्य ने राष्ट्रीय चेतना को मुखरित किया । बुन्देलखण्ड काव्य की एक समृद्ध परम्परा है, जिसने राष्ट्रीय काव्य के माध्यम से जन–जन में प्रेरणा का संचार किया ।

"पं. महावीर प्रसाद 'द्विवेदी युग' में पराधीनता से मुक्ति की आकांक्षा बलवती हुई, राष्ट्रीयता की भावना और प्रबल हुई । कविवर पं. घासीराम व्यास के जीवन और काव्य का अर्विभाव इसी युग में हुआ था । जैसा कि स्पष्ट है कि रचनाकार अपने युग की चेतना से आप्लावित हुए बिना नहीं रह पाते । वह इस युग के जनसाधारण की मानसिकता और सोच को भी वाणी देता है । राष्ट्र और राष्ट्रीयता की भावना से ओत–प्रोत कवि व्यास जी माँ भारती के उन महान सपूतों में से एक हैं, जिन्होंने अपनी लेखनी और वाणी से सुसुप्त जन मानस में स्वदेश के प्रति स्नेह और चेतना की लहर पैदा की । उनकी अबाध साहित्य साधना एवं उदीप्त मान चेतना ने स्वतंत्रता संग्राम की विस्तृत भावभूमि तैयार करते हुए उसमें लड़ने और जूझने वालों की एक ऐसी टोली तैयार की, जिसमें अदम्य साहस एवं गहन आत्म विश्वास था । कवि का रचनाकार राष्ट्र की स्थिति से तादात्म्य स्थापित कर रचनायें सम्पृक्त होने का आवाहन करता है । वह स्वयं उस वेदना को केवल अनुभव ही नहीं करता, अपितु उसे सहा भी है, यही वेदना इनके साहित्य के मूल में है, जिसमें विद्रोह का स्रोत निहित है । इतिहास इस बात का साक्षी है कि विद्रोह की यह लपट ही जिस रचनाकार में जितनी रही है, वह उतना ही सफल रहा है । व्यास जी ने इस युग में

राष्ट्र और राष्ट्रीयता की उर्जा को जाग्रत किया । राष्ट्रीय जागरण एवं जन आँदोलन से ओत–प्रोत काव्य साहित्य का सृजन किया ।[6]

उपर्युक्त विवेचन् से यह स्पष्ट हो जाता है कि राष्ट्र की महिमा का गान, अतीत गौरव के चित्र एवं सम्पूर्ण देशवासियों को अपनी स्वाधीनता एवं स्वतंत्रता के लिये आत्मोत्सर्ग के भाव से उदीप्त करने वाले पं. घासीराम व्यास ने अपनी रचनाओं से जन–जन में राष्ट्र प्रेम और मातृभूमि के प्रति अटूट श्रद्धा एवं विश्वास जाग्रत किया । वे सच्चे अर्थों में अपने युग के प्रतिनिधि थे । उन्होंने समकालीन विविध, सामाजिक, राजनीतिक एवं साहित्यिक गतिविधियों का भलीभाँति साक्षात्कार किया तथा आदर परक सामग्री जुटाकर युगानुरूप काव्य की सृष्टि की । उन्होंने समाज में एक नयी चेतना जाग्रत करने एवं सदैव सजग व जागरूक होकर युगानुकूल कार्य करते हुए भी वृद्धि की और अग्रसारित होने की प्रेरणा दी ।

कविवर व्यास जी ने सामाजिक अन्याय, अनाचार एवं विरूपताओं के विरूद्ध निर्भय होकर संघर्ष की सतत् प्रेरणा अपनी अनेक रचनाओं के माध्यम से दी है । उनके राष्ट्रीय काव्य की सराहना राष्ट्रपिता माहत्मा गाँधी, राष्ट्रनायक पं. जवाहरलाल नेहरू एवं राष्ट्रकवि पं0 बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने की है । उनकी कविता की पंक्तियाँ देखिये –

बेजा मत मान लेजा, लेजा शीघ्र भेजा फाड़ ।
नेजा पर टांग दे कलेजा देश द्रोही का ।

महात्मा गाँधी जी ने विक्रम संवत 1974 को हिन्दी साहित्य सम्मेलन इन्दौर के मंच से व्यास जी की यह ओजस्वी कविता सुनकर मुक्त कंठ से सराहना करते हुए कहा था – बुन्देलखण्ड धन्य है, जिसने व्यास जी जैसे जन मानस के हृदय स्पर्श करने वाले राष्ट्रीय कवि को जन्म दिया ।[7]

राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त ने इनके काव्य की सराहना करते हुए अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किये थे – 'इसमें कहना ही क्या कि स्वर्गीय व्यास जी हमारे प्राँत के एक रत्न थे । उनकी प्रतिभा से हमें और कितना पाने की आशा थी, परन्तु काल ने वह पूरी न होने दी । उनकी मृत्यु से समिष्ट रूप में हिन्दी की हानि तो हुई ही है, व्यक्तिगत सम्बंध से मेरी जो क्षति हुई उसकी पूर्ति अब कहाँ ?'[8]

सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं पत्रकार शिरोमणि डॉ0 बनारसीदास चतुर्वेदी ने व्यास जी के काव्य का मूल्याँकन करते हुए कहा था – 'श्रीयुत घासीराम व्यास की असामयिक मृत्यु केवल हमारे प्राँत बुन्देलखण्ड की ही नहीं, वरन् अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य क्षेत्र की एक महान दुर्घटना है, ... जिस किसी ने उनके मधुर स्वर से कविता का पाठ सुना, वही उनका प्रेमी और प्रशंसक बन गया । आज भी उनकी अनेक पंक्तियाँ कानों में गूँज रही हैं । .... कवि सत्यनारायण ब्रज कोकिल थे, तो व्यास जी बुन्देलखण्ड के कोकिल, दोनों में अनेक समानताएँ थीं और दोनों करीब–गरीब एक ही उम्र में स्वर्गवासी हुए ।'[9]

सुप्रसिद्ध सम्पादक प्रवर एवं लेखक श्री लक्ष्मण नारायण गर्दे के अनुसार – 'मैंने व्यास जी रचित 'श्याम–संदेश' के कुछ मधुर पद्य सुने । व्यास जी के दर्शन हुए बिना ही मैं कह सकता हूँ कि व्यास जी ने प्रेम रहस्य को भलीभाँति समझा हुआ था, और अवश्य ही वे प्रेम के स्वरूप होंगे ।'[10]

सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं पत्रकार श्री जैनेन्द्र कुमार जैन के अनुसार 'ज्ञान और भक्ति की प्रतियोगिता पुरातन है । कृष्ण कथा के उद्धव प्रसंग में इसका मुझे सरस और सहज समाधान दीखता है उसी मार्मिक प्रसंग को

लेकर कवि व्यास जी ने वह रचना की इसके लिए मैं उनकी मर्मज्ञता का अभिनंदन करता हूँ ।'[11]

'किसान कान्फ्रेंस में राष्ट्रकवि घासीराम व्यास के राष्ट्र काव्य की और उनकी राजनीतिक विचारधारा की तारीफ करता हूँ ।' पं. जवाहर लाल नेहरू ।[12]

कविवर श्री घनश्याम दास पाण्डेय ने व्यास जी के कवित्व से प्रभावित होकर इस प्रकार अपने विचार व्यक्त किये –

विरचि श्याम सन्देश ज्यों, अमर भये वह व्यास ।
विरचि श्याम सन्देश त्यों, अमर रहे यह 'व्यास' ।।[13]

व्यास जी ने अपने साहित्य द्वारा राष्ट्रीय चेतना जाग्रत की । तत्कालीन कवियों एवं साहित्यकारों को तो उनहोंने प्रभावित किया ही, वे भी अपने समकालीन कवियों एवं साहित्यकारों से प्रभावित हुए, तभी तो उन्होंने अपने काव्य द्वारा राष्ट्रीय जागरण का संदेश दिया । वे राजनीति में भी पूर्ण निष्ठा के साथ कार्य करते थे तथा समाज सेवी के रूप में भी उनमें उतनी ही लगन थी, जितनी व्यास जी ने साहित्य के द्वारा राजनैतिक चेतना को प्रज्जवलित किया ।

तत्कालीन राष्ट्रीय काव्य धारा के कवि और उनका व्यास जी के काव्य पर प्रभाव :–

राष्ट्र कवि व्यास जी अपने काव्य के माध्यम से स्वतन्त्रता संग्राम से जुड़े हुए थे, तथा राष्ट्रीय रचनाओं द्वारा तत्कालीन राष्ट्रीय काव्य की रचना करके जन मानस को राष्ट्रीय धारा से जोड़ने का कार्य कर रहे थे । वहीं वे दूसरी और तत्कालीन राष्ट्रीय भावनाओं को प्रेरित करने वाले कवियों से भी प्रेरणा ग्रहण कर रहे थे । स्वतन्त्रता संघर्ष का बिगुल बज चुका था

और उसके कार्यान्वयन में बुन्देलखण्ड के राष्ट्रीय धारा के कवि तन, मन, धन से अग्रसर होकर जन चेतना जाग्रत कर रहे थे ।

कविवर श्री रामचरण हयारण 'मित्र' राष्ट्र कवि श्री घासीराम व्यास के व्यक्तित्व, कृतित्व से अत्यधिक प्रभावित रहे हैं, उनके सन्निकट रहने का उन्हें अवसर प्राप्त हुआ है, वे व्यास जी को अपना काव्य गुरू मानते थे, उनसे उन्हें विशेष प्रेरणा मिली और उनके काव्य एवं राष्ट्रीय जीवन को निकट से देखने समझने का अवसर भी प्राप्त हुआ ।

मित्र जी ने श्री नाथूराम माहौर की 'राष्ट्रीय काव्य साधना' विषयक आलेख में व्यास जी के स्वतंत्रता संघर्ष का आँखों देखा चित्रण प्रस्तुत करते हुए लिखा है – "सन् 1925 में मऊरानीपुर में राजनीतिक कॉन्फ्रेंस हुई, जिसमें मुझे श्री घासीराम व्यास के दर्शन हुए और उनके राष्ट्रीय कवित्त को सुनने का अवसर मिला । व्यास जी के राष्ट्रीय साहित्य से राष्ट्र को जो बल प्राप्त हुआ वह सभी को विदित है ।"[14] कवि गोष्ठियों में व्यास जी केवल राष्ट्रीय छंद ही पढ़ा करते थे । सन् 1928 में क्रॉंतिकारी आँदोलन तीव्र रूप में जारी था । क्रॉंतिकारी श्री भगवान दास माहौर एवं श्री सदाशिव राव मल्लकापुरकर भुसावल में गिरफ्तार कर लिये गये । सन् 1931 में क्रॉंतिकारी सरदार भगतसिंह को जब बिट्रिश सरकार ने फाँसी पर लटका दिया, तब झाँसी के कवियों के साथ क्रॉंतिकारी आँदोलन और आगे बढ़ा । व्यास जी तत्कालीन अपने समय के उन सभी आँदोलनों से प्रभावित रहे जो देश की स्वतन्त्रता के लिए समग्र देश में व्याप्त थे । इन राष्ट्रीय कवियों के काव्य पर तत्कालीन स्वराज्य आँदोलन का पर्याप्त प्रभाव पड़ा, व्यास जी ने तो इन आँदोलनों में आगे बढ़कर कार्य किया ।

श्री द्वारिकेश मिश्र ने राष्ट्रीय कवि व्यास जी नामक आलेख में लिखा है – "व्यास जी में भावना और कर्तव्य का अद्भुत समन्वय था । वे भावुक और रससिद्ध कवि, ऐसे कवि थे कि उनकी वाणी में तेज था और लोगों को उठा देने की प्रेरणाप्रद शक्ति थी । निश्चय ही राष्ट्रीय आँदोलनों में बुन्देलखण्ड की जनता ने जो कुछ किया, उनके मूल में व्यास जी कुछ कर बैठने की उमंग जगाने वाली कविताओं का बहुत बड़ा हाथ था । राष्ट्र युद्ध में व्यास जी स्वयं एक कर्तव्य परायण सेनानी रहे । कई बार जेल गए । सन् 1942 की अंतिम जेल यात्रा में उन्होंने मुस्कराते हुए ही अपना स्वास्थ्य होम दिया और जेल से लौटने के बाद तो उन्हें सांसारिक कार्यक्षेत्र ही इतना छोटा दिखाई दिया कि वे सदा के लिये चल पड़े । जब वे गाते तो लोग तन्मय हो जाते । उनके उद्बोधन सुनने वालों की नसों में उष्ण रक्त भी दौड़ पड़ता था ।"[15]

कविता की पंक्तियाँ इस प्रकार हैं –

"याद है प्रताप शिवा, छत्रसाल वंशज हो ।
दौड़ता रगों में खून, गीता ज्ञान ज्ञाता का ।"

विदेशी शासकों की क्रूरता को उन्होंने साहस के साथ सहा, धीरज के साथ देखा, फिर भी एक बार उनका कोमल कवि हृदय भर उठा –

"निष्ठुर स्वतंत्रते ! क्या चाहती है ? तेरे लिए –
तरूणों की करूण कहानी–कहनी पड़ी ।
विभव विलास तज आज राज–रानियों को,
जेल की अनन्त यातनायें सहनी पड़ीं ।"

महात्मा गाँधी व्यास जी की प्रतिभा और उससे भी ऊपर उनके विनयावृत व्यक्तित्व के प्रशंसक थे । अपने 20 वर्ष के राजनीतिक जीवन

में व्यास जी ने अपने जनपद के घर–घर में बापू का संदेश पहुँचाया । स्वयं सक्रिय और तत्पर रहे, हर संग्राम में सबसे आगे । महात्मा गाँधी के आदर्शों के व्यास जी दृढ़ उपासक थे, उनमें वे अलौकिक प्रेरक शक्ति के दर्शन करते थे –

> "खेल जाते खेल, जेल जाते, झेल जाते कष्ट,
> ठेल जाते उसका, दलेल को मिटाते हैं ।
> लाठियों को खाते, गोलियों से घबराते नहीं,
> व्यास 'पास फाँसी के बलि–बलि जाते हैं ।
> 'मोहन' तरूण तेरे एक ही इशारे पर,
> समुदित सुख–सरवस्य को लुटाते हैं ।
> बलिदान होने को स्वदेश बलिवेदी पर,
> वीरों के करोड़ों शीश आके झुक जाते हैं ।"[16]

बुन्देलखण्ड में राष्ट्रीय जागरण जाग्रत करने का श्रेय अधिकाँशः व्यास जी के कृतित्व एवं व्यक्तित्व के कारण ही है, उनहोंने इस खण्ड में राष्ट्रीय चेतना जाग्रत की । उनकी जन्मभूमि मऊरानीपुर में काव्य मंचों के माध्यम से जन चेतना के राष्ट्रीय काव्य प्रस्तुत किये गए, अच्छे कवियों के निर्माण में व्यास जी का सर्वाधिक योगदान रहा, यहाँ आयोजित सैर दंगलों के व्यास जी विशेष प्रेरक रहे । इन काव्य प्रतियोगिताओं तथा सैर दंगलों में यहाँ के कवियों ने असंख्य कविताएँ लिखीं ।

व्यास जी ने क्राँतिकारी साहित्य का सृजन किया, उनका कवि हृदय अंग्रेजी सत्ता के अत्याचारों से विद्रोह करने लगा था । महात्मा गाँधी ने सन् 1921 में अहिंसात्मक आँदोलन का बिगुल बजा दिया, तब उनकी माता राधारानी ने अपने लाड़ले पुत्र घासीराम के भाल पर तिलक लगाकर

आँदोलन में जाने का आशीर्वाद प्रदान कर दिया । उस समय व्यास जी माता जी को सम्बोधित करते हुए कहते हैं –

बढ़े चलो मातृ भू की नमक अदाई हेतु,
भय है क्या ? काल का, त्रिकाल का, विधाता का ।

व्यास जी तो देश के लिए बलिदान तक करने की प्रेरणा देते हैं –

काट दी जो मातृ भू की पराधीनता की पाश,
जेल गये जान पर सच्चे स्वाभिमान पर,
फूल बरसायेंगे लगायेंगे गले से देव,
बलि–बलि जायेंगे तुम्हारे बलिदान पर ।

व्यास जी इस वाणी से नवयुवकों को राष्ट्रीय आँदोलनों की और प्रेरित किया करते थे । राष्ट्रीय भावना और भी तीव्रता से प्रस्फुटित होने लगी । ब्रिटिश सरकार की तीव्र अत्याचारों की परवाह न करते हुए वे अपने लक्ष्य भेदी शब्द् वाण से उस सत्ता को ललकारते हुए कह उठते हैं –

"चाहे खूब जितना सता ले जुल्म जालिम कर,
आ गया है अंत अब तेरे हरषाने का ।

X X X

भारत स्वतन्त्र भारत स्वतन्त्र, हम गाते हैं ललकारों से ।
आजादी के दीवाने हैं, खेला करते अंगारों से ।"[17]

श्री व्यास जी अपनी जन्मभूमि के प्रति अगाध अनुराग रखते थे, इस पावन भूमि की महिमा उनकी अनेक भावमयी रचनाओं में देखने को मिलती है । एक उदाहरण देखिए –

वंदित विश्व में खण्ड बुन्देलखण्ड है, और न ही जिसका कहीं सानी ।
हो गया धन्य धरा में बही, जिसने कभी यहाँ का जो पिया पानी ।।

व्यास जी के क्राँतिकारी विचार और उनकी बलिदानी राष्ट्रीयता का भाव इन पंक्तियों में भलीभांति स्पष्ट है –

"सर पर कफन लपेटकर निकले हैं,
आज मरने के लिए माँ की आन की है याद ।।
मारने दो गोलियाँ चलाने दो लाठियाँ उन्हें,
खोलकर सीना, अड़ जाओ कर एतकाद ।।
है न परवाह 'व्यास' आह का न लेना नाम,
होगा खुद जालिमों का जोरो जुल्म बरबाद ।।
फाँसी के तख्ते पर होके दिलशाद कहो,
इन्कलाब जिन्दाबाद, इन्कलाब जिन्दाबाद ।।"[18]

बुन्देलखण्ड की महिमा का एक अन्य भावपूर्ण चित्रण इनकी इस कविता में स्पष्ट रूप में देखने को मिलता है –

"जाके शीश जमुन डुलावैं चौंर मोद मान,
नर्वदा पखारै पाद – पद्म पुण्य पेखी है ।
कटि कल केन किंकणी–सी कल द्यौत कान्ति,
बेतवा विशाल मुंक्तमाल सम लेखी है ।
'व्यास' कहैं सो है शीशफूल सम पुष्पावती,
पायजेब पायन पयस्विनी परेखी है ।
ऐहो शशि, सांची कहो, सांची कहो, सांची कहो,
दिव्य भूमि ऐसी दुनी और कहुँ देखी है ।"[19]

विन्ध्य भूमि बुन्देलखण्ड की महिमा का रूपक एवं उसके सौन्दर्य स्वरूप का स्वभाविक आंकलन, प्रकृति वैभव का मानवीय निरूपण का निश्च्छल चित्रण समरस भाव में अद्भुत तो है ही स्वतन्त्रता के रूपकत्व अनुभाव इन पंक्तियों से स्पष्ट देखने को मिलता है –

"विन्ध्य उपत्यकाओं में समोद उषा अनुराग सकेल रही हो ।
मानमयी सुमनाधरों में मुस्कान मनोहर मेल रही हो ।।
भव्य विभावरी पावन प्रेम से पुण्य पियूष उड़ेल रही हो ।
भाषित होता अभी–अभी तो यहाँ जैसे स्वतन्त्रता खेल रही हो ।"[20]

कविवर जयशंकर प्रसाद का ऊषा के प्रति कही गयी यह पंक्तियों बरबस स्मरण हो जाती हैं –

"ऊषा सुनहले तीर बरसाती जय लक्ष्मी सी उदित हुई ।

श्री व्यास जी बुन्देली जनपदों में अपनी पीढ़ी के ऐसे पहले सुकवि थे, जिन्होंने बुन्देली को सशक्त और प्राणवन्त काव्य धारा को राष्ट्रीय चेतना और जन–जाग्रति की विद्या की और मोड़ा । रससिद्ध सुकवि के नाते व्यास जी ने प्राचीन शैली की काव्य परम्परा को भी नवीन ज्योति प्रदानकी और बुन्देली भाषा के सौष्ठव को अपनी ललित काव्य शैली में सजीव बना दिया ।" व्यास जी बुन्देलखण्ड के फड़ों और कवि समागमों को राष्ट्रीयता की और प्रभावित कर सके, इसके लिये अपरिहार्य था कि वह पहले परम्परागत ढर्रे के एक कुशल दंगली कवि होने की ख्याति अर्जित कर लें । यह ख्याति उन्होंने फड़ों, सैरों और कवियों के रूप में उच्च कोटि का परम्परागत काव्य प्रचुर मात्रा में प्रस्तुत करके प्राप्त की और तब ही वह इन फड़ों में चलने वाली स्पर्द्धा का उपयोग अन्य कवियों को राष्ट्रीय काव्य की और प्रभावित करने में कर सके । उन्होंने इन फड़ों में जो राष्ट्रीय

रचनाएँ प्रस्तुत कीं, उससे फड़ों में भाग लेने वाले कवि और गायक उसी कोटि की राष्ट्रीय रचनाएँ प्रस्तुत करने में प्रवृत्त हुए । इन फड़ों में बड़ी रूचि से भाग लेने वाली सामान्य जनता में भी फिर ऐसी ही रचनाओं को सुनने की ही रूचि अधिकाधिक हुई क्योंकि वह उनके जीवन के लिए आवश्यक बात थी । केवल वाग्विलास नहीं ।"[21]

व्यास जी ने अपनी कवि मंडली के अतिरिक्त जिन कवि मण्डिलयों को इस और प्रभावित किया उनमें झाँसी के कवि कवीन्द्र, नाथूराम माहौर के आस–पास जमी कवि मण्डली और मऊरानीपुर में पं. घनश्याम दास पाण्डेय की कवि मण्डिलयों में विशेष ख्याति अर्जित की । व्यास जी पं. घनश्याम दास पाण्डेय और नाथूराम माहौर की कवि मंडलियों में प्रायः झाँसी और मऊरानीपुर में फड़ होते रहे, जिनमें प्रचुर राष्ट्रीय जन–साहित्य का निर्माण हुआ ।

"यह विशेष उल्लेखनीय है कि बुन्देलखण्ड उस समय राजनीतिक और प्रशासनिक रूप में बहुत ही बड़े विखराव से ग्रस्त था । वह अनेक छोटी–बड़ी देशी रियासतों में और ब्रिटिश भारत के संयुक्त प्राँत के चार जिलों मध्य प्राँत के कई जिलों में बंटा हुआ था । इस राजनीतिक विखराव का प्रभाव उसकी साहित्यिक गतिविध पर भी होना स्वाभाविक था । राष्ट्रीय स्वतन्त्रता संघर्ष का विकास भी 1857 से स्वतन्त्रता संग्राम के बाद ऊपर से अलग–अलग और परस्पर विरोधी जैसी दिखने वाली दो धाराओं में चल रहा था । एक थी भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के आँदोलन की खुली धारा और दूसरी सशक्त क्राँति के प्रयास की गुप्त धारा । बुन्देलखण्ड की देशी रियासतों में जो राजनीतिक स्थिति थी वह तो ऐसी ही थी कि वहाँ के राज्याश्रित कवि का राजाश्रय की और ताकने वाले कवि रीतिकालीन परम्परा युक्त काव्य में ही अपना अलंकार कौशल और नायिका

भेद के ज्ञान का प्रदर्शन करते रहे हैं, इस परम्परा में भी कवियों का आकर्षण श्रृंगार के बाद वीर रस की और विशेष रहा । परन्तु इसमें राष्ट्रीय स्वतंत्रता संघर्ष की खुली प्रेरणा युग के लिए अभीष्ट रूप में न आ सकी, ओजपूर्ण कवित्तों किरसानी छप्पयों आदि में प्राचीन धारा की ही वीरता का बखान होता रहा । सन् 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम की नेत्री झाँसी की रानी की वीरता ने कवियों को ब्रिटिश भारत में भी और देशी रियासतों में भी प्रेरित किया ही था । आम जनता में उसके ऐसे जनकवियों के काव्य का पाठ या गान छोटी–छोटी गोष्ठियों में ही होता रहता था, यह छपकर प्रकाशित न हो सकता था, न हुआ । ऐसे जनकवि लक्ष्मीबाई की वीरता का बखान निरन्तर करते रहे । दतिया के कवि कल्याण सिंह कुड़रा ने एक 'बाई साब झाँसी बारी को रायसो' सन् 1861 में ही प्रणीत किया था । तत्पश्चात् झाँसी के एक कवि गुरू पं. मदनमोहन द्विवेदी 'मदनेश' ने एक पूरा 'लक्ष्मीबाई रायसो' सन् 1904 के लगभग लिखा था । झाँसी के भग्गी दाऊजू के रासो लक्ष्मीबाई सम्बंधी 'कटक' काव्य भी लिखा गया, किन्तु उस समय की विषम परिस्थितियों के कारण इनका प्रकाशन यथा समय न हो सका । झाँसी के माहौर कवि मण्डल कवि चतुरेश तथा गंगा प्रसाद सुनार का काव्य आज भी प्रकाश में न आ सका ।"[22]

हिन्दी साहित्य की राष्ट्रीय स्वातंत्रता संघर्षी धारा में बुन्देलखण्ड का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, ऐतिहासिक उपन्यास सम्राट डॉ0 वृन्दावनलाल वर्मा ने 1908 में अनेक नाटक लिखे थे, जिनमें सेनापति ऊदल ही प्रकाशित हो सका । यह नाटक भी तत्कालीन सरकार द्वारा जब्त कर लिया गया था । उसमें स्पष्ट उल्लेख यह था कि देशद्रोहियों को गोली से, जहर से जैसे भी हो सके मार देना चाहिए । अन्य नाटकों की पाँडुलिपियाँ भी

जब्त कर ली गयीं । सन् 1908 में प्रकाशित वर्मा जी के 'बुद्ध चरित्र' में भी राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के लिये प्रेरणास्पद विचार रहे । राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त की भारत भारती और तत्कालीन अन्य रचनाओं ने राष्ट्रीय भाव धारा को आगे बढ़ाया । आगे चलकर भी व्यास जी फड़ों के द्वारा राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम को प्रेरणा मिलती रही । तत्कालीन कवि मण्डलियों के माध्यम से राष्ट्रीय भावनाओं का प्रचार–प्रसार हुआ, जिसे कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता । बुन्देलखण्ड के इन कवियों के काव्य ने निरन्तर जन मानस को प्रभावित किया, जिनके द्वारा जन–जीवन में राष्ट्रीय ओजस्वी धारा का प्रस्फुटन हुआ । डॉ0 भगवानदास माहौर ने तत्कालीन स्वतंत्रता संघर्ष की दो धाराओं का उल्लेख करते हुए लिखा है – "एक तत्कालीन अहिंसात्मक असहयोग और दूसरा गुप्त सशक्त क्रॉंतिकारियों द्वारा विदेशी साम्राज्य को चुनौती । उन्होंने इन दोनों धाराओं को एक कैंची के दो अन्यान्य सापेक्ष फलों की भांति माना है । तात्पर्य यह है कि कविवर व्यास जी के काव्य में सशक्त क्रॉंतिवाद और अहिंसात्मक सत्याग्रह दोनों एक साथ वर्जित हैं ।"

<u>स्वतंत्रता आँदोलन में व्यास जी की भूमिका, स्वाधीन दृष्टि, बलिदानी वाणी, तत्कालीन युग की देन</u> :–

5 सितम्बर, सन् 1903 में कर्मकाण्डी ब्राह्मण परिवार में जन्म लेने वाले राष्ट्रकवि, स्वतंत्रता सेनानी स्व0 पं0 घासीराम व्यास मऊरानीपुर जिला–झाँसी के निवासी थे । वे भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के तपे तपाये जुझारू नवयुवक नेता थे । उनकी माताश्री राधारानी ने उन्हें स्वतंत्रता आँदोलन में उत्साहित तो किया ही, स्वयं सक्रिय रूप में भाग लिया । प्रथम बार सन् 1921 में आगरा जेल में मूर्धन्य साहित्यकार पं. श्री बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' एवं अभ्युदय के सम्पादक 'श्री कृष्णकांत मालवीय' के सम्पर्क में आये । व्यास जी के ज्येष्ठ पुत्र श्री लक्ष्मीनारायण व्यास ने मुझे बताया

कि जब अंतिम बार मई 1941 में उन्हें जेल यात्रा करनी पड़ी, तब उन्हें दफा 38 के अनुसार 6 माह का कठोर कारावास एवं 100 रू0 का जुर्माना जमा करने और न दिये जाने पर 6 माह की और सजा भुगतने का आदेश दिया गया । जुर्माना वसूल करने जब पुलिस उनके घर पहुँची तो उनके पुत्र ने अपने परिचित श्री काशी प्रसाद अग्रवाल से रूपये लेकर पुलिस को दिये ।

17 वर्ष की अवस्था में आगरा जेल में स्वतंत्रता आँदोलन में भाग लेने का उद्देश्य – "क्यों हम यहाँ आये ? माँ के पूजन को आये हैं ।" पक्तियों में देखा और परखा जा सकता है । सन् 1930 में नमक सत्याग्रह में द्वितीय कारावास भोगना पड़ा । तृतीय कारावास विदेशी वस्त्र बहिष्कार और मद्य निषेद्य आँदोलन (सन् 1935) में भाग लिया, फलस्वरूप झाँसी कारागार में भेज दिया गया । 25 अप्रैल, 1941 में गरौठा में गिरफ्तार कर झाँसी जेल भेजे गये और उन्हें 6 माह की सजा भुगतनी पड़ी । जेल प्रवास में उन्होंने 'रूकमणी मंगल' और 'श्याम–संदेश' जैसी अमर साहित्यिक कृतियों की रचना की । 12–11–1941 में जेल से मुक्त हुए, काफी अस्वस्थ्य थे, उसी समय उनकी पत्नी का स्वर्गवास हो गया, इस आकस्मिक आघात् का सामना वे न कर सके, तब 16 अप्रैल 1942 को अपनी वृद्ध माता, एक भाई, तीन पुत्र, एक पुत्री को बिलखता छोड़ संसार से विदा ली ।[23]

हिन्दी जगत के वॉल्टर स्काट बाबू वृंदावन लाल वर्मा ने इनके निधन पर श्रद्धाँजलि अर्पित करते हुए कहा था – "स्वर्गवासी श्री घासीराम व्यास की सुधि आते ही मन को एक मसोस लग जाती है । वह भव्य सुन्दर चेहरा, स्नेह और उदारता के निर्झर वे नेत्र जिनके पीछे निर्भीकता हिलोंरे

मारा करती थी, आज सामने होते तो न मालूम कितनी सत्प्रेरणाओं को बल मिलता ।"

स्वतंत्रता आँदोलन में आज क्राँति के कवि तथा राष्ट्रीय आँदोलन में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका :-

कविवर व्यास जी को उनकी माताश्री राधारानी ने सन् 1920 में धरना आँदोलन कर शासन को झुका देने का मंत्र दिया था । उसी से प्रेरित होकर व्यास जी ने सन् 1921 में गाँधी जी के असहयोग आँदोलन में मऊरानीपुर में संगठित होकर जुलूस निकाला । माता राधारानी ने स्वयं व्यास व साथियों को तिलक लगाकर और माला पहिनाकर राष्ट्रीय ध्वज देकर इसकी लाज रखने को कहा । इस अवसर पर राष्ट्रकवि व्यास का यह उद्बोधन उनकी राष्ट्रीय भावना का परिचायक है –

बढ़े चलो मातृ–भू की नमक अदाई हेतु
भय है क्या काल का, त्रिकाल का, विधाता का ।
गोलियों को खाना, शीश फाँसी पर झुलाना,
मर जाना पर वीरों ! न लजाना दूध माता का ।[24]

आगरा जेल में जब श्री बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने अपने कमरे में 'खटखट' से परेशान हो व्यास जी से 'खटके' की समस्यापूर्ति का प्रस्ताव रखा, तब उसकी पूर्ति उन्होंने इस प्रकार की –

धन्य होगी कोख पुण्य होगा दूध मेरा जब,
देखूंगी कि तेर गला फांसी पर लटके ।
तन पर लाठिया हों सीने पर –
शीश पर या किं फिर तेरे तेग खटके ।[25]

स्वतंत्रता सेनानी श्री व्यास जी का सम्पूर्ण जीवन देशभक्ति, त्याग, मातृभूमि सेवा एवं बलिदान की भावना से प्रेरित था । उनका मूल उद्देश्य और ही शब्दों में –

जनता की शुचि सेवा करना अपना स्वधर्म पहिचाना है,
है जान हथेली पर लिये हुये, पावन स्वदेश व्रत ठाना है ।
कर्त्तव्य मार्ग पर मिट जाना, इतना बस केवल जाना है,
यह दुनिया गोरखधंधा है सुख–दुःख का ताना बाना है ।
है विपदाओं से मीति नहीं उर प्रीति न फल उपहारों से
आजादी के दीवाने हैं, खेला करते अंगारों से ।[26]

सन् 1933 में उन्होंने इस मातृभूमि गीत की रचना की थी –

धन्य जगजीवन के फूल,
अड़े रहे निज स्वाभिमान पर सदा स्नेह कबूल ।
अंत समय शुचि मातृ–भूमि की शीश चढ़ाई धूल,
धन्य जगजीवन के फूल ।[27]

व्यास जी का यह 'राष्ट्रगीत' भी इसी परम्परा का है –

प्रण कर निकले हैं शीश को हथेली धर,
प्राण रहते न पग पीछे को पछेलेंगे ।
अरि के समक्ष दुरलक्ष लक्ष गोलियों के,
समर समझ निज वक्ष पर झेलेंगे ।
धसेंगे दुधारों पर नाचेंगे कटारों पर,
आरों पर चलेंगे, अंगारों पर खेलेंगे ।[28]

व्यास जी की राष्ट्रीयता इन्हीं उपर्युक्त भावों पर आधारित रही, वे तन, मन, धन से मातृभूमि के प्रति बलिदान के लिए अग्रसर रहे, तभी तो राष्ट्रीय उद्बोधन में स्वातंत्र्य वीरों को उन्होंने अपनी राष्ट्रीय भावनाओं से प्रेरित किया ।

मातृभूमि के प्रति बलिदान की तीव्र भावना उनकी रग–रग में समाई हुई थी, वे देश की स्वतंत्रता के लिए अपना सर्वस्य न्यौछावर करने को तत्पर रहे –

पूर्ण प्रण ठान कर 'व्यास' वीर बान पर,
आने दी न आँच भले आ बनी जो प्राण पर ।
दूना दमकेगा दिव्य तेज गर शान पर,
अड़ गये आन पर बढ़ गये बान पर ।
काट दी जो मातृ भू की पराधीनता की डोर,
खेल गये जान पर सच्चे स्वाभिमान पर ।
फूल बरसायेंगे लगायेंगे गले से देव,
बलि–बलि जायेंगे तुम्हारे बलिदान पर ।

अंग्रेज सरकार के दमन चक्र से जन–जीवन आक्रान्त होता गया, तब न जाने कितने ज्ञात–अज्ञात लोगों ने अपने प्राणों की आहुति दे दी । ठीक उसी समय दीवान शत्रुघन सिंह की रानी राजेन्द्र कुमारी के नव शिशु की जेल में ही मृत्यु हो गयी, तब व्यास जी का कवि हृदय स्वतंत्रता को सम्बोधित करते हुए उग्र भावों में फूट पड़ा –

कुसुमति पल्लवित कुसमय टूटकर,
कितनी ही 'व्यास' कल्पतरू रहनी पड़ी ।

तेरे चरणों तले लाल लाड़ि ले लुटा के निज,
स्वजनियों की सूनी गोद रहनी पड़ी ।

इस घटना से पीड़ित होकर व्यास जी ने नवयुवकों को मातृभूमि पर बलिदान होने के लिए ललकारा –

काट दी जो मातृ भू की पराधीनता की पाश,
जेल गये जान पर सच्चे स्वाभिमान पर
फूल बरसायेंगे, लगायेंगे गले से देव,
बलि–बलि जायेंगे तुम्हारे बलिदान पर ।[29]

राष्ट्र पर न्यौछावर होने वाले स्वतंत्रता सेनानियों को अनेक कष्टों का सामना करना पड़ा । जेल में रोमांचकारी यातनाएँ दी गयीं, किन्तु वे अपने पथ में विचलित नहीं हुए । इनमें सत्य के प्रति निष्ठा थी और राष्ट्र के लिये थी कर्तव्य की पराकाष्ठा । नवयुवकों ने जेल भर दिये और राष्ट्रीय काव्य में अंग्रेजों की दमन नीति एवं अत्याचारों–अनाचारों की परवाह न कर उन्हें ललकारते हुए कहा है –

पीड़ितों की करूण कराहों शर्द आहों से ही,
खाक हुई कितनी अटूट राजधानियाँ ।
'व्यास' कहें होसिले मिटाले दिल खोलकर,
रहेगी न जालिमों के जुल्म की निशानियाँ ।
बात में बिलायेंगी ये बात बरतानियाँ की
आयेगी न याद कभी लंबी तंतरानियाँ ।
लेना देख एक दिन लायेगी जरूर रंग,
व्यर्थ नहिं जायेगी हमारी कुर्बानियाँ ।[30]

राष्ट्रीय परम्परा के जीवन्त कवि व्यास जी की तो यही हार्दिक कामना है कि देशके लिए तन–मन–धन सब कुछ अर्पित है । मृत्यु भी उन्हें नहीं डरा पाती, उनकी तो यही भावना है –

कौमी खिदमत में जिन्दगी निसार होये,
भूले नहीं व्यास कभी एक पल को भी याद ।
जेल खुश खेल हाथ हथकड़ियों को बजा,
गाते हो आजादी के तराने दिल हो के शाद ।
फाँसी हो गले पे और जुबाँ पे यही आवाज,
इन्कलाब जिन्दाबाद, इन्कलाब जिन्दाबाद ।[31]

"व्यास जी के दो प्रमुख रूप थे एक और वे प्रखर राष्ट्र भक्त थे, दूसरी और एक यशस्वी राष्ट्रकवि । उनके अन्तर में निरन्तर तीव्र राष्ट्र भक्ति हिलोरें मारती थी, वहाँ सतत् काव्य सर्जना फलित हो रही थी । देश को स्वतंत्र कराने की छटपटाहट, व्याकुलता की सदा आग धधकती रहती थी साथ ही काव्य सर्जना का यश चलता रहता था । जहाँ देश भक्त के रूप में वे ज्वालामुखी थे वहीं सरस्वती की उपासना में आरती थे ।"[32]

इस प्रकार व्यास जी का एक रूप तो राष्ट्रीय उपासना एवं देश सेवा का है और दूसरा रूप है सरस्वती उपासना अथवा काव्य साधना का । उनके यशाकाश में अड़ान भरते उनके जीवन परवेश के ये दो पंख थे, देश भक्ति और काव्य साधना । ये दोनों रूप साथ–साथ गतिशील रहे और यह पखेरू भरपूर उड़ाने भरता रहा ।

"व्यास जी के इस प्रकार के काव्य को देख शहीद भगत सिंह के साथी डॉ0 भगवानदास माहौर जी का यह कथन सशस्त्र क्राँतिवाद और

अहिंसात्मक सत्याग्रह की भावना से व्यास जी का समस्त राष्ट्रीय काव्य व्याप्त है । व्यास जी का सशस्त्र क्राँतिवादी और अहिंसात्मक सत्याग्रही देश भक्ति की एकता का समन्वित रूप भली भांति उभरकर आया है । उनका समस्त काव्य प्राचीन परिपाटी और नवीन राष्ट्रीय लहर का काव्य है ।"[33]

सन् 1932 में मऊरानीपुर में किसान सम्मलेन का आयोजन था । व्यास जी के नेतृत्व में कायकर्ता उसकी सफलता के लिए जी–जान से जुटे हुए थे । उमा नेहरू और नेहरू जी ने इसमें सम्मिलित होने की स्वीकृति दे दी थी । सरकार इस किसान आँदोलन को असफल करना चाहती थी । व्यास जी ने अपनी सूझबूझ से दो मंचों की व्यवस्था की, एक किसान मंच के नाम से और दूसरी लोक साहित्य के नाम से ईसुरी मंच, पुलिस पंडाल को घेरे खड़ी थी, दूसरी और ईसुरी पंडाल में नेहरू जी अपने भाषण को पूरा कर रहे थे, इस प्रकार पुलिस को दबाते रहने में व्यास जी अत्यंत सूझबूझ और कुशलता से कार्य करते रहे । इस सफलता पर उनकी यह पक्तियाँ कितनी स्वाभाविक हैं –

हंसा आ गये देश बिराने, सरवर जाय सुखाने ।[34]

व्यास जी के नेतृत्व में मऊरानीपुर में विदेशी वस्त्रों की होली जलाई गई और बहिष्कार तथा मद्य निषेद्य आँदोलन चला जिसके फलस्वरूप व्यास जी को गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया । जेल में ही उन्होंने 'रूक्मनी मंगल' और 'श्याम संदेश' पुस्तकों की रचना की, जिन्हें हिन्दी साहित्य में सम्मान के साथ स्वीकार किया गया ।

व्यास जी ने अपनी कविता 'देश के काम जो आया नहीं' में अन्याय के विरूद्ध संघर्ष करते रहने का मूलमंत्र स्वीकार किया था । वे कहते हैं :–

दुःखी भूख से बन्धु करोड़ों मरे,
पड़े ऐश में आपका मौज उड़ाना ।
लुटती ललनाओं की लाज रहें,
तुम मौन रहो धिक मर्द कहाना ।

उन्होंने तो देश भक्ति की परिभाषा इन शब्दों में की है –

जनता की शुचि सेवा करना अपना स्वधर्म पहिचाना है ।
है जान हथेली लिए हुए पावन स्वदेश व्रत ठाना है ।
कर्तव्य मार्ग पर मिट जाना इतना बस केवल जाना है ।

X X X

भाया है जीवन में लड़ना उत्पीड़न अत्याचारों से,
आजादी के दीवाने हैं, खेला करते अंगारों से ।[35]

उनका अमर काव्य एक क्राँतिकारी भाव की दृष्टि से सदैव अमर रहेगा, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में व्यास जी का कृतित्व महत्वपूर्ण स्थान पाने का अधिकारी बना रहेगा । सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ0 रामकुमार वर्मा के अनुसार – "व्यास जी में एक ओर काव्यशास्त्र पर असाधारण अधिकार दूसरी ओर काव्य रचना की नैसर्गिक प्रतिभा एक ओर श्रंगार की अजस्त्र धारा दूसरी ओर वीर काव्य की ओर हुंकार, एक ओर जीवन की मर्यादा में विश्वास और दूसरी ओर क्राँति का शंखनाद के समन्वय पर आश्चर्य होना स्वभाविक है ।"[36]

इस प्रकार भारत माँ के सच्चे सपूत व्यास जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन स्वतंत्रता संग्राम के लिये ही अर्पित कर दिया था । अंग्रेज पुलिस ने देश प्रेमी नवयुवकों के साथ व्यास जी को स्वतंत्रता संघर्ष में गिरफ्तार किया और झाँसी जेल भेज दिया तत्पश्चात् आगरा जेल में स्थानान्तरित कर दिया । इनका अपराध यही था कि इन्होंने युवकों के साथ भारत माता की जय के नारे लगाते हुए राष्ट्र ध्वज हाथ में लेकर जुलूस निकाला था । आगरा जेल में ही इनकी भेंट श्री 'कृष्णकाँत मालवीय' और बालकृष्ण शर्मा नवीन जैसे महान साहित्यकारों एवं स्वतंत्रता संघर्ष सेनानियों से हुई । उनका तो बस एक ही मूल मंत्र था –

"कर दे स्वतंत्र भव्य भारत हमारा देवि,
भारती हमें तू भारतीयता से भर दे ।"

राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त ने व्यास जी की राष्ट्रभावना एवं स्वतंत्रता आँदोलन में उनकी आहुति का समादार करते हुए कहा था – "इसमें कहना ही क्या ? कि स्वर्गीय व्यास ही हमारे प्राँत के एक रत्न थे । उनकी प्रतिभा में अभी हमें और कितना पाने की आशा थी । परन्तु काल ने वह पूरी न होने दी, उनकी मृत्यु से समिष्ट रूप में हिन्दी की हानि तो हुई ही है ।"

महात्मा गाँधी जी ने भी व्यास जी की राष्ट्रीय कविता से प्रभावित होकर कहा था । "बुन्देलखण्ड धन्य है, जिसने व्यास जी जैसे जन मानस के हृदय स्पर्श करने वाले राष्ट्रीय कवि को जन्म दिया ।"[37]

सुप्रसिद्ध साहित्यकार समीक्षक डॉ0 सियाराम शरण शर्मा ने व्यास जी के राष्ट्रीय काव्य का मूल्यांकन इन शब्दों में किया है – "राष्ट्र और राष्ट्रीयता उनके जीवन में भलीभाँति रच पच गयी थी । वे स्वातंत्रय

सेनानी और सवातंत्रय काव्य के उद्घोषक एक साथ रहे हैं । उनके काव्य में तत्कालीन युग बोलता प्रतीत हो रहा है । तन मन से वे राष्ट्र के लिए न्यौछावर रहे हैं । उन्होंने पराधीनता की बेड़ियों को तोड़ने के लिए अंग्रेजी साम्राज्य को कड़े शब्दों में ललकारा और जनसाधारण के बाहुबल को ऊर्जा प्रदान की । साम्राज्यवाद के उत्पीड़न को हँसते–हँसते सहा, पराधीनता रूपी समुद्र का विषपान करते करते अपने मानस मंथन से स्वतंत्रता रूपी अमृत रस का रसास्वादन जन साधारण को अपने ओजस्वी काव्य से कराया । एक ही उदाहरण से उनकी राष्ट्र भावना को देखा और परखा जा सकता है –

"सुवन स्वतंत्र निज देश का बढ़ा दे मान,
घटा दे गुमान शाह कामी क्रूर को ही का ।
राजपूतनी के नीके दूध को पुनीत कर,
सबक सिखा दे छुद्र छल छोही का ।[38]

व्यास जी यद्यपि मानवतावादी राष्ट्रीयता के पक्षधर थे तथापि वे बलिदान को ही आजादी की कुंजी मानते थे । उनकी बलिदानी भावना के दर्शन इस छंद में देखने को मिलते हैं –

सेवा व्रत लेके सत्याग्रह पर अटल रहा,
सत्पथ न भुलाकर ख्याल नेहनाता का ।
दीन दुखियों का दुःख दूर करने मे सारा,
जीवन बिताया मंत्र मान विश्वमाता का ।

बुन्देलखण्ड के वरिष्ठ साहित्यकार –कवि डॉ0 शंकर लाल शुक्ल के अनुसार – "घासीराम व्यास जहाँ क्राँति सर्जक थे, वहीं ओज के कवि । वे जलती आग भी थे और शीतल जल भी । नियति ने उन्हें हमारे मध्य

अधिक नहीं जीने दिया । वे हमारे बीच मात्र 39 वर्ष रहे । इतने कम समय मे ही उन्होंने अपने प्रखर व्यक्तित्व से वो चमक छोड़ी जो सदैव जगमगाती रहेगी और हमारा मार्गदर्शन करती रहेगी ।"[39]

व्यास जी समतावादी समाज की संरचना के पक्षधर थे, आजीवन इसी भाव से उन्होंने संघर्ष किया तथा जन–जीवन का सही मार्ग–दर्शन किया । हरगोविन्द गुप्त सन् 1931 में उनके साथ झाँसी जेल में रहे थे, उन्होंने व्यास जी के व्यक्तित्व का परीक्षण इन शब्दों में किया – "गेहुँआ छरहरा बदन, कंधों तक छहरते घुंघराले काले बाल, सुन्दर मुखाकृति में स्नेह और उदारता के निर्झर नेत्र और इन सबके अन्तस में स्वाभिमान से भरी सजग निर्भयता ।"

आगे गुप्त जी लिखते हैं – "व्यास जी राजनैतिक कारणों को लेकर चार बार जेल गये और जब 1941 में अन्तिम बार जेल गये तब झाँसी जिला काँग्रेस के डिक्टेटर थे । अपने देश धर्म और संस्कृति के कर्मठ और निःस्वार्थ पुजारी थे ।"[40]

सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं पत्रकार श्री द्वारिका प्रसाद मिश्र 'द्वारिकेश' ने उनके व्यक्तित्व के सम्बंध में लिखा है – "उनका कंठ इतना सुरीला और ललित था कि लोग उन्हें बुन्देलखण्ड कोकिल कहते थे । .... उनमें भावना और कर्तव्य का अद्भुत समन्वय था । वे भावुक और रससिद्ध कवि थे । ऐसे कवि थे कि उन की वाणी में तेज था और लोगों को उठा देने की प्रेरणाप्रद शक्ति थी । निश्चय ही राष्ट्रीय आँदोलनों में बुन्देलखण्ड की जनता ने जो कुछ किया, उसके मूल में व्यास जी की कुछ कर बैठने की उमंग जगाने वाली कविताओं का बहुत बड़ा हाथ था ।"[41]

साहित्य महोपाध्याय श्याम सुन्दर बादल ने लिखा है – "उनकी कथनी और करनी एक थी । उनके व्यक्तित्व और कवि में पूर्ण सामंजस्य था । वे मानव धर्म को सबसे बड़ा धर्म समझते थे । जनता की सेवाओं को सबसे बड़ी साधना समझते थे । दीनहीन शोषित और पीड़ित मानव के लिए उनका हृदय संवेदना से सदैव भरा रहता था ।"[42]

मुंशी अजमेरी के वंशज डॉ0 गुणसागर सत्यार्थी के अनुसार – "हमारे प्राँत अर्थात् हिन्दी संसार के बुन्देलखण्ड में जन्में तीन महानक्षत्र ऐसे बिलोपित हो गये, जिनमें हिन्दी सरस्वती का अथाह भण्डार तो था परन्तु हिन्दी साहित्य के इतिहास में उनका यथोचित उल्लेख नहीं हुआ । इन तीन महानक्षत्रों में चिरगाँव के मुंशी अजमेरी 'प्रेम', कालपी निवासी रसिकेन्द्र जी और मऊरानीपुर के नर रत्न स्व0 पं0 घासीराम जी व्यास ।"[43]

व्यास जी जनता के बीच सामाजिक एवं राष्ट्रीय विचार धारा के कवि रहे हैं, उन्होंने जन–जागरण के लिए स्थान–स्थान पर किसानों और मजदूरों के सम्मेलन किए । कवि सम्मलेलनों के माध्यम से समाज को चेतना प्रदान की । वे रचना भी करते थे और जगह–जगह काव्य गोष्ठियाँ या सम्मेलन कर राष्ट्रीय चेतना का प्रसार भी करते थे । क्राँतिकारी राष्ट्रीय भावना के साथ ही उनकी रचनाओं में विश्व बन्धुत्व, प्रेम, त्याग, नीति तथा मानवता का भरपूर संयोजन है । दलितों और शोषितों के प्रति उनमें गहरी संवेदना तथा कुरीतियों के प्रति गहरा विद्रोह भी था । सन् 1932 के किसान सम्मेलन में व्यास जी ने किसान शीर्षक से जो लम्बी कविता सुनायी थी उसमें किसानों की दारूण दीन दशा का मार्मिक चित्रण किया गया है । इस कविता को सुनकर नेहरू जी ने अभिभूत होकर व्यास जी की खुलकर प्रशंसा की थी –

"कितने उदार, कितने महान, कितने महान हो हे किसान,

तुमको तन की परवाह नहीं, यश वैभव की है चाह नहीं ।"

देश समाज और मातृभूमि के प्रति समर्पित भावनाओं के साथ ही उन्होंने प्रकृति और ऋतुओं, पर्वों का बड़ा ही मनोहारी चित्रण किया है । सन् 1931 के साहित्यिक सम्मेलन में अध्यक्ष श्री अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' जी ने व्यास जी की "धान सरसी" रचना की भूरि–भूरि प्रशंसा की थी ।

"चित चौगुने चाव से भावमयी थपकी दे समीर सुलाने लगी,

लख अंक में मंजुल सी बिलसी, सरसी, सरसी सुख पाने लगी ।

मरते–मरते कुछ मातृ भू की पद सेवा करे झुके जा रहे थे,

अड़े आन पै धान समान खड़े–खड़े शान से शीश कटा रहे थे ।"[44]

प्रकृति चित्रण में भी राष्ट्रीय भावना के साथ स्वरूप का यह सामंजस्य अद्भुत है, जिसमें प्रकृति भी राष्ट्रहित के कर्तव्य पालन करते रहने में व्यस्त और समर्पित भाव से लीन–तल्लीन हो गयी है ।

बुन्देलखण्ड में सैरों और फागों की फड़बाजी में एक प्रकार की साहित्यिक प्रतियोगिता होती रहती थी, उस समय इसका खूब प्रचलन था । ईसुरी के सखा और समकालीन छतरपुर के लोक कवि गंगाधर व्यास और पं0 परमानन्द पाण्डे के दल थे । इन दोनों दलों की फड़बाजी बुन्देलखण्ड के विभिन्न भागों में हुआ करती थी । व्यास जी ने फड़बाजी, कवि गोष्ठियों, कवि सम्मेलनों के माध्यम से बुन्देलखण्ड के साहित्यिक वातावरण को जीवन्त बनाया । श्री निवास शुक्ल एडवोकेट के अनुसार – "इस माध्यम से व्यास जी ने जन सामान्य में जन चेतना और राष्ट्रीय जागरण जम कर किया । उनकी रचनायें देशभक्ति और राष्ट्रीयता से

ओत–प्रोत होती थीं तथा उनका काव्य पाठ अत्यंत आर्कषक, सुरीला और ललित होता था, जिसका सर्व साधारण पर अमिट प्रभाव पड़ता था ।"[45]

डॉ0 बलभद्र तिवारी के अनुसार–"राष्ट्रकवि घासीराम व्यास स्वतंत्रता संग्राम में योगदान देने वाले बुन्देलखण्ड के अग्रणी कवि हैं । इन्होंने आधुनिक काल की पूर्व संध्या में जन्म लिया था और स्वतंत्रता की देवी को जगाने के लिए वे आये थे और बुन्देलखण्ड में अलख जगाकर आगे बढ़ गये । उनके व्यक्तित्व और कृतित्व की एक ही अद्भुत विलक्षण देशभक्ति की रेखा है, जिसमें वे रानी लक्ष्मीबाई के बाद महत्वपूर्ण योगदान देते हैं । जितने महान कवि विचारक उपदेशक, धर्मसुधारक इस देश में हुए हैं उनमें राष्ट्रकवि घासीराम व्यास का नाम अग्रणी है ।"[46]

आचार्य डॉ0 कृष्णानंद हुण्डैत, ललितपुर ने उनके काव्य का समस्त अध्ययन, मनन, चिंतन किया है, वे व्यास जी के समकालीन थे, उनके सम्पर्क में भी वे रहे, उनके काव्य में उनकी निकटता रही है । उनके अनुसार – "व्यास जी में राष्ट्र प्रेम अपने चरम पर पहुँचा हुआ था । वे विदेशी शासन के क्रियाशील विरोधी रहे । यही नहीं युवाओं में राष्ट्रभक्ति के न केवल बीज बपन करने में उन्होनें सक्रिय भूमिका में कार्य करने की प्रेरणा देने में वे अपने समय पर अग्रिम पंक्ति के कवियों में रहे हैं इसके लिए उन्होंने वर्तमान राजनीति में विदेशी शासन के विरूद्ध संग्राम रत वीरों के यशोगाथा के साथ–साथ भारतीय पुराणों एवम् इतिहास में चर्चित स्वतंत्रता प्रेमी एवं देश–धर्म के रक्षार्थ पूर्ववर्ती महापुरूषों के सद्कृत्वों को प्रस्तुत किया ।"[47]

कविवर श्री रामचरण हयारण 'मित्र' काव्य क्षेत्र में उनके सर्वाधिक निकट सम्पर्क में रहे, उनसे इन्हें प्रेरणा भी मिली और प्रोत्साहन भी, उनकी

निरन्तर इनके काव्य स्वरूप पर दृष्टि रही और इनके काव्य का भी यथार्थ परक मूल्याँकन उनकी कला से सर्वाधिक हुआ है । वे व्यास जी से प्रेरणा भी लेते रहे तथा समय–समय पर उनके काव्य गुणों का प्रचार–प्रसार भी करते रहे । उनके अनुसार जब उनका (व्यास जी) कवि हृदय अंग्रेजी सत्ता के अत्याचारों से विद्रोह करने लगा, तब वे झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई को सम्बोधित करते हुए अपने भाव इस प्रकार व्यक्त करते हैं –

"बाई साब तिहारी साहिबी ने सत्य,
कोरे साहबों की सारी साहिबी नसाई थी ।"

व्यास जी हँसते–हँसते आगरा जेल चले गये । जेल में जब भोजन की अव्यवस्था पर स्वयं सेवकों ने उपद्रव किया, तब उन्होंने गाँधी जी का यह सन्देश काव्य में प्रस्तुत किया –

क्यों हम यहाँ जेल में आये, शाँति, अहिंसा, सत्यव्रती बन ।
सत्याग्रह का लिया पुण्य प्रण, विश्व बंधु बापू के पावन ।[48]

व्यास जी ने परतंत्रता की श्रंखलाओं में आबद्ध भारतवासियों के किसी दुःखी, मजदूर या कृषक की बात करना और कारागार जाते हुए स्वतंत्रता सेनानियों का स्वागत करना अपराध समझा जाता था और अहिंसात्मक आँदोलन करते हुए देश भक्तों को अपराधी समझा जाता था एवं उन पर राजद्रोह का अभियोग लगाकर बंदी बनाया जाता था । व्यास जी ने तत्कालीन जमीदारों के जुल्म के कृत्यों से आहत निर्धन भूखे किसानों की व्यथा का सजीव वर्णन इन शब्दों में किया है –

"दलिया में कंकड़, दाल काली में कंकड़,
साग रोटी में कंकड़ ही कंकड़ चबाए हैं ।
छाले पड़े हाथन में चक्की को पीस पीस,

बान–बटने से खून हातन चुचाए है ।

कीन्हों न अनुचित कार्य शक्ति भर शाँति,

राखी ताहू पैं देश हित डंडा बैत खाए हैं ।

देश भक्त मेलन में देश भक्त रेलन में,

देश भक्त केलन में जेलन में समाए हैं ।"[49]

अंग्रेजों के अत्याचारों की परवाह न करते हुए व्यास जी अपने संगी–साथियों का आवाहन करते हुए कहते हैं –

भुविभारत के सुत हो समरत्थ सु कालहु की मय खैयो नहीं ।

शुचि–शाँति–सत्याग्रह पै दृढ़ है सहियो शठ सीख सिखैयो नहीं ।

कुल–कायर–क्रूर–कपूतन की, अबली विचनाय, लिखैयो नहीं ।

मर जैयो चाहे कट जैयो भले रणते पर पीठ दिखैयो नहीं ।

वे तो अपने साथियों को जेल में स्वतंत्रता आँदोलन के कष्टों को झेलने की शिक्षा देते हुए उन्हें उनके कर्तव्य का स्मरण कराते हैं –

जेल खाने में आप ठसक भई चूर–चूर, काये लखत घूर–घूर

दाल माँय मौ दिखात, साग कच्चों मिल जात ।

मांगे मिलत न विलात, तोई घटत नई नूर ।

X X X

रोटी जैसी मिले खाले, दाँत नोन को निकालें ।

चना कच्चे ही चबा लें पतरो दरिया है जीवन भर ।

वे तो अपने साथी सत्याग्रहियों को उनके अपने लक्ष्य की और स्मरण कराते हुए प्रेरणा देते हुए अंग्रेजी साम्राज्य को ललकारते हुए कहते हैं –

क्राँति के पुजारी हैं, अहिंसा व्रतधारी शाँति,

सत्याग्रहकारी वीर वंशज बड़ेरो को ।

आन पर खेल जाना जान पर जानते जो,

धमकाना शान से अजान क्या दिलेरों को ।

होश भुला देंगे इठलाता किस नाज पर,

काफी एक–एक तेरे लाख–लाख घेरों को ।

जानकर ऐ रे ! मोमी जाल में फंसाता इन,

कोमी मतवाले साहसी सपूत शेरों को ।

स्वतंत्रता के दीवानों का तो एक ही लक्ष्य है – आजादी ! आजादी ! आजादी ! भारत माता के इन सपूतों को वे उनके लक्ष्य का स्मरण कराते हुए उन्हें प्रेरित करते हैं –

कष्ट कल कलियाँ विपत्तियाँ सहेलियाँ हैं,

जिसे अठखेलियाँ विशेष विधु जाल है ।

हथकड़ियाँ हैं स्वर्ण कंकण समान जिसे,

कारागाह कृष्ण भूमि सुखद विशाल है ।

करता हृदय रक्त देके अभिव्यक्ति भूरि,

भूसित भुवन भव्य भारत का भाल है ।

हँस–हँस प्राणों को लुटा दे दिव्य देश पर,

पूजनीय प्यारा वीर माँ का वही लाल है ।

जेल में सत्याग्रहियों को मूँज बँटने के लिये दी जाती थी, कठोर श्रम कराया जाता था । देश की पराधीनता की कथा–व्यथा व्यास जी के काव्य में सर्वत्र दिखाई देती है –

आ रहे नम्बरदार वे बड़ो बाँध के बोझ,

हमें चैन आवै जबई मिटे मूंज को खोज,

लख तों बंधी बोझ भर आ रई, दुश्मन हमें दिख रई ।

बटवै की मन में है नैंया पराधीनता बटा रई,

करत सूरन को असुर मानो उल्टी गंगा बहा रई,

लखलो बंधी बोझ भर आ रई, दुश्मन हमें दिखा रई ।[50]

व्यास जी जहाँ क्राँतिकारी भावनाओं से ओत–प्रोत थे वहीं दूसरी और वे महात्मा गाँधी के परम अनुयायी थे । खादी, तकली, चर्खा से वे अत्यधिक प्रभावित थे । काँग्रेस द्वारा आयोजित असहयोग सत्याग्रह के वे प्रबल समर्थक थे । अपने राष्ट्रप्रेमी स्वतंत्रता सेनानियों के साथ हँस–हँस देश के लिए मर मिटना उनका मुख्य लक्ष्य था । उनका तो आत्म विश्वास था कि देश एक दिन स्वतंत्र होगा और अत्याचारी क्रूर अंग्रेज शासकों को स्वराज्य सौंपकर यहाँ से भागना होगा । इसी आत्म विश्वास के साथ वे कहते हैं –

कपट–कुचक्र चक्र व्यूह चूर–चूर होगा,

चारू–चक्र–चरावे की चोंक हलचल से ।

गाढ़ा लख हाथ मखमल के मिटेंगे अरि,

आप मल–मल के विशाल मलमल से ।

एक्य दृढ़ संगठित सूत्र ग्रह शीघ्र अब,

निकलेगा दुष्ट दासता के दलदल से ।

कुमति कमायेगा खपायेगा दरिधर को,

लायेगा स्वराज हिन्द खद्दर के बल से ।

और अंत में तुम्हारा बलिदान काम आयेगा । देश स्वतंत्र होगा । यहाँ के नागरिक स्वतंत्रता की सांस ले सकेंगे । आततायी अंग्रेजी साम्राज्य चूर–चूर होकर ढह जायेगा ।

"सुमन स्वतंत्रता का मंत्र मंजु मूर्तिमान,
पावन स्वदेश व्रत सेवियों का सव्य ज्ञान ।
जगा देगा जीवन की ज्योति युवकों में भूरि,
भर देगा कूट–कूट कर उरों में स्वाभिमान ।
जला देगा अंध अविचारियों की आशा लता,
काट देगा कुटिल अनेकता का तरू तान ।
भूल कर कामियों कुपथ पथ गामियों का,
पथ दिखलायेगा तुम्हारा दिव्य बलिदान ।"[51]

राष्ट्रकवि का मूल मंत्र यही है कि देश की आजादी के लिए अंगारों पर खेलना –

"प्रण कर निकले हैं शीश को हथेली रख,
प्राण रहते न पग पाछे को पछेलेंगे ।
अरि के प्रत्यक्ष दुर लक्ष्य गोलियों के,
समर समक्ष निज वक्ष पर झेलेंगे ।
"व्यास" भारतीय शाँति क्राँति का अपूर्व पाठ,
देंगे पढ़ा विश्व को समोद स्वत्व ले लेंगे ।
धसेंगे दुधारों पर नाचेंगे कटारों पर
आरों पर चलेंगे, अंगारों पर खेलेंगे ।"

स्वतंत्रता सेनानी तो देश के लिए हँस–हँस कर अपना बलिदान देने के लिए लालायित हैं –

शाँति के व्रती हो शुचि सत्य स्वाभिमान भर,

अरिमान मेटने के दिल अरमान हो ।

फिर भी न जान कौन पाप से हमारे दीन,

कारूणिक वचन विनीत नाहि कानि हो ।

'व्यास' कहैं तन मन धन की चली है कौन,

परम पुनीत पुण्य अरपन प्रान हो ।

सुभग स्वतंत्रते तिहारी बलिवेदी पर,

हँस–हँस देश के दुलारे बलिदान हो ।

स्वराज्य का समय निकट आने लगा, स्वतंत्रता सेनानियों में आशा का संचार हुआ और उस दिन के स्मरण से उनका आत्म विश्वास जाग्रत होने लगा । उत्साह उस समय और जाग्रत होने लगा, जब विदेशी अंग्रेजी शासन ने घुटने टेक दिये तथा परतंत्रता की निशा धीरे–धीरे अंतिम स्थिति की और पलायन करने लगी । स्वतंत्रता सूर्य के उदय ने उषा की लालिमा से सम्पूर्ण देश की भावनाओं को आपूरित कर दिया, तब कवि का स्वर आशा और विश्वास के साथ इस राष्ट्रीय भाव के स्वरों को गुजायमान करने में कैसे पीछे रह सकता था, जिसने इस दिन के लिए अपना तन–मन–धन न्यौछावर कर दिया हो –

"अंत हुआ हंत परतंत्रता निशा का अब,

मिटा अंधकार अनाचार मानमय है ।

आशा आसमान पर भाषा–भासमान–भानु,

उन्नत उषा का हुआ उज्जवल उदय है ।

'व्यास' वर विकसित सुमन सरोज हुए,

भ्रमर स्वतंत्रगीत गाते मोदमय हैं ।

सुमन स्वराज वरमाला पहनाने हेतु,

बढ़े चलो वीरों खड़ी सामने विजय है ।"[52]

इस प्रकार व्यास जी तन–मन–धन सब कुछ न्यौछावर करके देश प्रेम, स्वतंत्रता संघर्ष, बलिदान की लालसा लिए आजीवन पराधीन भारत को स्वतंत्र कराने का बीड़ा उठाये हुए अपने वीर साथियों के साथ जूझते निरन्तर आगे बढ़कर देश की आजादी के लिए हर संभव प्रयास में रत रहकर अपना सर्वस्व बलिदान कर स्वतंत्रता इतिहास में सदा–सदा के लिए अमर हो गये ।

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी 20वीं शताब्दी के आरम्भ में पैदा हुए थे, यह समय वैज्ञानिक खोज और राष्ट्रीय विचारों के विकास का युग था । राष्ट्र भावना ने अपने देश, अपनी जाति एवं देशवासियों के प्रति प्रेम एवं लगाव की भावना को जन्म दिया । श्री व्यास जी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी थे, उन्होंने महात्मा गाँधी की पुकार पर सविनय अविज्ञा आँदोलन में भाग लिया और जेल काटी । उनके काव्य में सर्वत्र यही राष्ट्रीय भाव देखने को मिलते हैं । साहित्य का केन्द्र बिंदु उन्होंने राष्ट्र और राष्ट्रीयता को ही बनाया । उनक़ी श्याम संदेश रचना में भी राष्ट्रीय भाव प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप में विकसित हुआ है । समय की सार्थकता वे मानते रहे हैं –

झूठी सेवे जग प्रीति प्रतीत है,
सोने को जीवन व्यर्थ न गारो ।

निःसंदेह निर्गुण–सगुण की तकरार ने हिन्दी साहित्य के मधुर और सरस भाव निधि सौंपी है । सूर का भ्रमर गीत इसी कारण हिन्दी प्रेमियों

के गले का हार बन गया है । व्यास जी स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी थे, उनके यह राष्ट्रीय भाव श्याम संदेश में भी प्रतिध्वनित होते हैं –

"राधिका उपासी विसवासी व्रतधारी हूँ,
सत्य व्यवहारी भव्य भोले भईयों का भक्त ।"

श्याम संदेश में यह कथन – 'दीन–दुखियों का दास–देश दुःखहारी हूँ निश्चय ही उनके इसी भाव का सूचक है । यह स्मरण रहे कि व्यास जी ने ऐसे समय पर काव्य सृजन किया है, जब चली आ रही रीति परम्परा भी प्रतिष्ठित थी और वह समय ऐसा भी था, जब सम्पूर्ण भारत स्वतंत्रता के लिए उनमुक्त था । व्यास जी के काव्य में राष्ट्र प्रेम कूट–कूट कर भरा था, वे विदेशी शासन के विरूद्ध संग्राम रत वीरों की यशोगाथा के साथ–साथ भारतीय पुरूषों एवं इतिहास में चर्चित स्वतंत्रता प्रेमी एवं देश व धर्म के रक्षार्थ पूर्ववर्ती महापुरूषों के सद्कृत्यों को प्रस्तुत किया । महाभारत काव्य में अभिमन्यु द्वारा द्रोण रचित चक्रव्यूह भेदन तथा बलिदान की गाथा प्रस्तुत करने का उद्देश्य भी शत्रु को पराजित करना तथा आत्म बलिदान हेतु युवकों को प्रोत्साहित करना रहा । उनकी लेखनी ने वीर युवा अभिमन्यु का युधिष्ठर के प्रति कथित वाक्य में कितना ओज गर्भित है –

"चाचा जी भला हूँ तव कृपा कोर चाहूँ बीच,
समर–सु अचला हूँ समर चला हूँ मैं ।
सरन सधाऊँ–शूर–समर–सुलाऊँ–शत्रु,
सैन विच लाऊँ बड़ी–विकट–बला हूँ मैं ।
कल–कल पाऊँ क्रुद्ध भीषम भगाऊ वृद्ध,
युद्ध किलपाऊँ–काल कौतुक कला हूँ मैं ।

कपहिं– कपाऊँ द्रोण–दिल–दहलाऊँ 'व्यास',

व्यूह विनसाऊँ तो पै अर्जुन लला हूँ मैं ।"[53]

डॉ0 कृष्णानंद हुण्डैत के अनुसार – "व्यास जी ने इतिहास प्रसिद्ध ऐसे ऐतिहासिक पुरूषों ने जिन्होंने स्वातंत्रतार्थ एवं राष्ट्र तथा धर्म रक्षार्थ युद्ध किया तथा अपने न्याय तथा शौर्य के लिए आदर्श प्रस्तुत किया, का पूर्ण उत्साह एवं जोश के साथ प्रशस्ति गान किया ।"

राष्ट्रकवि व्यास जी ने महारानी लक्ष्मीबाई के शौर्य चित्रण में भी यह भाव प्रतिपादित किया है । उदाहरणार्थ –

"तेजन सौ तमक तमाम अंगरेजन के,

नेजन पे छेद के करेजे लटकाये ते ।"

विजय ग्लानि शीर्षक रचना में देवगढ़ विजय पर दिल्ली की सेनाकी और से युद्ध करने तथा विजय प्राप्त करने में छत्रसाल की ग्लानि इसी भाव का सूचक है –

"आओ आज हौंसले मिटा ले दिल खोलकर,

स्वागत है आपकी गफा का जुल्म ढाने का ।

हमको मुसीबतें उठाने में मिला है मजा,

शौक गपाने में तुम्हें रौब के जमाने का ।"[54]

स्वतंत्रता आँदोलन में रत अहिंसात्मक आँदोलन कर्ताओं की आत्मप्रस्तुति एवं जुल्म ढाने वाली सरकारकी स्थिति इससे स्पष्ट रूप क्या प्रस्तुत किया जा सकता था । इस प्रकार व्यास जी ने पौराणिक आख्यानों अश्वमेघ यज्ञ, कुरूक्षेत्र के चक्रव्यूह 'रूकमणि मंगल' के आदि से लेकर

अंग्रेज शासन से युद्धरत वीरों तक को उन्होंने चरित्र नायक के रूप में प्रस्तुत किया है ।

श्याम–संदेश में कवि (व्यास जी) ने गोपी उद्धव संवाद बड़ी ही सूझ बूझ से किया है । यहाँ यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि राष्ट्रीय कवि धारा को प्रवाहित करने वाले इस कवि ने स्वातंत्रता आंदोलन के मध्य कृष्ण गोपी संवाद की महत्ता क्यों समझी ? मेरी अपनी दृष्टि में राष्ट्रीय साहित्य को प्रस्तुत करने में कवि ने इस साहित्यक परम्परा को सार्थक कर दिया है । कविवर रामचरण हयारण 'मित्र' ने व्यास जी को रससिद्ध कवि कहा है, किन्तु मेरी दृष्टि में इन्हें सरस्वती ही सिद्ध थी । कहीं कहीं तो रत्नाकर भी इनकी समता में नहीं दिखाई पड़ते । मैं तो कवि के श्याम–संदेश को राष्ट्रीय साहित्य के अंतर्गत ही देख रहा हूँ । अन्यथा ऐसे गाढ़े समय में जबकि राष्ट्रीय आँदोलन चरम सीमा पर था, निर्गुण–सगुण की सार्थकता मुझे कृष्ण–गोपी कथन के परोक्ष में तत्कालीन राष्ट्रीय भावों के पल्लवन में ही दिखाई देती है उनका यह मर्मपर्शी छन्द इस भाव का पोषक है, जिसमें गोपियों की हृदय पीड़ा में तत्कालीन समाज के जन–जन की पीड़ा समायी हुई है । इस प्रकार के छंदों की मार्मिकता स्वभाविकता और तत्कालीन जन–जीवन के हाव–भाव से परखा और देखा जा सकता है –

"फिर–फिर–फेरि–फेरि हरि मग हेरि–हेरि
हारी जिय सूखगौ वियोग जरि नैन–नीर ।
प्रेम की पियासी इन ग्वारिन–गंवारिन कौ,
योग उपदेशन पठायौ भलौ बलबीर ।
ऊधव जू कहैं कैसे कै दिखवै उर चीर तुम्हैं,
तब तुम जानते हमारी ये व्यथा अधीर ।

हमरो सौ हीय होतो हीय में जु नैन होते,

नैनन के होतो हीय, हीय में जु होती पीर ।"[55]

हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ0 किशोरी लाल गुप्ता ने स्वतंत्रता आँदोलन की अनवरत सफलता पर राष्ट्रीय कवियों के हर पहलू पर विचार करने का मार्ग प्रशस्त किया है । जैसे–जैसे स्वातंत्रता सेनानी स्वतंत्रता के निकट आते जा रहें थे, वैसे ही उन्हें जड़ चेतन सभी में राष्ट्रीय भावों के स्पंदन–पल्लवन–पुष्पन के चेतन्य स्वरूप में स्वतंत्र भारत के प्रतीक्षरत स्वातंत्रय रूप की झाँकी इस प्रकृति वैभव में भी प्रदर्शित होती दृष्टिगत हो रही है । केन नदी के मानवीयकरण रूप में कवि व्यास जी की यह पंक्तियाँ उपर्युक्त संदर्भ की सूचक हैं –

"विश्व–विभूतियाँ पावन भावन, भाव से भाँवरियाँ भरती हैं,

वीर–बुन्देल–वसुन्धराकी वह रातें भली, हिय को हरती हैं ।

तारिकाएँ अवंगुंठन टार के, देखने को उछली परती हैं,

'केन' में केलि–कलाधार की, किरनें–कल–किन्नरियाँ करती है।"[56]

उपर्युक्त चित्रण से यह भाव ध्वनित होता है कि स्वातंत्रय सूर्य के उदय का अनुभव प्रकृति को भी सार्थक बनाए बिना नहीं रहता । वह भी सजीव भाव से अपने पल्लवन–पुष्पन से स्वराज्य सूर्य के उदय के साथ भाव–विभोर हो रहा है, नदियाँ उल्लसित भाव से तरंगें बिखेर रही हैं ।

बुन्देलखण्ड में कवि दंगलों में व्यास जी का वर्चस्व रहता था । महारानी लक्ष्मीबाई के समय कवि दंगलों की परम्परा तत्कालीन कवि भग्गी दाऊ जू से प्रारम्भ हुई । फड़ साहित्य के रूप में भी इसे जाना जाता है । श्री भग्गी दाऊ जू द्वारा रचित लक्ष्मीबाई रायसो इसी साहित्य का प्रथम ग्रंथ स्वीकार किया जाता है । इसी परम्परा में कविवर व्यास

मऊरानीपुर, गंगाधर व्यास छतरपुर, कवीन्द्र नाथूराम माहौर झांसी, घनश्याम दास पाण्डेय एवं नरोत्तम पाण्डेय मऊरानीपुर के नाम उल्लेखनीय हैं । सेठ भोगीलाल गुरसंराय, आचार्य चर्तुभुज 'चतुरेश' ने इस साहित्य को और आगे बढ़ाया । सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड तथा देश के अन्यान्य भागों में फड़ साहित्य लोकप्रिय रहा । इसके अंतर्गत सैर, फागों, ख्याल, दिवारी, कवित्त, सवैया, भजन आदि आते हैं । इसका उद्भव विकास जन संस्कृति से हुआ है । इसके माध्यम से राष्ट्रीय साहित्य भी पल्लवित पुष्पित हुआ ।

व्यास मंडली के नाम से यह फड़ साहित्य राष्ट्रीय, सामाजिक एवं जन–जीवन के प्रेरक साहित्य का सृजन करता था । व्यास जी के पश्चात् यह परम्परा बहुत समय तक जाग्रत रही । इसने राष्ट्रीय जन आँदोलन को आगे बढ़ाया तथा स्वातंत्रता संघर्ष को जन साधारण के मध्य प्रेरणा प्रदान की । गंगाधर व्यास, घासीराम व्यास एवं घनश्याम दास पाण्डेय के त्रिगुट ने मऊरानीपुर में तथा कवीन्द्र नाथूराम माहौर ने झाँसी में मंडली तैयार की, इन सहित्यिक दंगलों ने तत्कालीन प्रेरणा दायक साहित्य का सृजन कर जन साधारण में चेतना जागृत की तथा काव्य के प्रति आकर्षण प्रदान किया । देश में आयोजित अनेक साहित्य सम्मलनों में व्यास जी ने अपने कवित्व द्वारा लोकप्रियता अर्जित की ।

"मधुकर वर्ष 2 अंक 22 पृष्ठ 22 ने लिखा था – "व्यास जी की आत्मा एक राष्ट्रीय कवि की आत्मा थी, जिसमें भारत माता की करूण पुकार प्रतिध्वनित होकर बही थी । उनके स्फुट कवित्त जो राष्ट्रीयता पर है, बुन्देलखण्ड भर में प्रचलित है । ये छन्द उत्कृष्ट राष्ट्रीयता के धरोहर हैं । उनके कवित्त महाराजा छत्रसाल, महारानी लक्ष्मीबाई, राणा प्रताप, शिवाजी, गुरू गोविन्द सिंह तथा देश के अन्य वीरों पर प्रतिदिन पढ़ने की

वस्तु है । उनमें वह शक्ति है कि वे मुर्दा दिलों में भी राष्ट्र–प्रेम की एक लहर जगा दे ।"[57]

हिन्दी साहित्य सम्मेलन इन्दौर (सन् 1934) में महात्मा गाँधी जी की अध्यक्षता में आयोजित किया गया था । इसमें उन्होंने खेत की आत्मकथा के माध्यम से जन भावना के रूप–स्वरूप की अभिव्यक्ति इन शब्दों में की थी ।

"दूसरों का हो भला कुछ तो,
सुख दे सकूँ यूँ उर में उठी दाया ।
लालसा थी, यही हा जिसने,
मुझे दीन बना, पराधीन बनाया ।[58]

किन्तु यही अर्न्तद्वन्द आगे चलकर स्वाधीन–स्वराज्य और राष्ट्रीय भावों में परिवर्तित होकर उनके सम्पूर्ण काव्य में किसी न किसी प्रकार यथार्थ और सार्थक हो गया । कविवर श्री घासीराम व्यास जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व इसी भाव का द्योतक है । बुन्देलखण्ड के साथ–साथ हिन्दी साहित्य के इतिहास में ऊपर है और ऊपर रहेगा । वे राष्ट्र के लिए जिये, राष्ट्रोत्थान में जुटे, स्वतंत्रता समर में डटे और बलिदानी भावना में अग्रसर रहे, यही उनका अनूठा व्यक्तित्व रहा है ।

दतिया पीताम्बरा पीठस्थ राष्ट्र गुरू श्री 1008 श्री स्वामी जी महाराज के शब्दों में – स्व0 श्रीयुत पं. घासीराम जी व्यास बुन्देलखण्ड के श्रेष्ठ कवि थे, जो अपनी कविता में काव्य शास्त्र की सभी बातों का सुन्दर निरूपण करते थे । बहुत समय से हम उनकी कविताओं को सुनते रहे हैं । उनकी कविता में काव्य के गुण विद्वानों ने कहे हैं – 'वाक्यम् रसात्मकं काव्यम्' के अनुसार सभी गुण विद्यमान हैं ।"[59]

कवि श्री घासीराम व्यास असि और मसि के स्थापित कवि रहे हैं, उनकी जीवन शैली में प्रारम्भ से ही राष्ट्रीयता रची–बसी रही है, उन्होंने राष्ट्र और राष्ट्रीयता का कर्तव्य पाठ पढ़ा था और उसे आजीवन गले लगाया । उनकी इन पंक्तियों में उनके राष्ट्रीय जीवन का सार समाया हुआ है –

"माँ के पूजन को आये हैं ।
यह तन किसका यह मन किसका ?
यह तन–मन–धन जीवन किसका ?
जिसकी गोदी में खेल–खेल,
किससे इतने सुख पाये हैं ।

X X. X

माँ के पूजन को आये हैं ।
मानवता का सम्मान रहे,
माता की अनुपम सान रहे,
सादर सहर्ष बलिदान हेतु,
वेदी पर शीश झुकाये हैं ।"[60]

और उन्होंने राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्य का निर्धारण इन शब्दों में किया था –

"शाँाति अहिंसा सत्यव्रती बन ।
सत्याग्रह का लिया पुण्य प्रण ।
विश्व बंधु बापू के पावन,
सुमति शील सैनिक कहलाये ।
क्यों हम यहाँ जेल में आये ?"[61]

उपर्युक्त यही भाव उनके राष्ट्रीय जीवन का सम्बल रहा है । उन्होंने प्राण'पण से देश की स्वतंत्रता के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया ।

सन् 1924 में जब राष्ट्रीय आँदोलन ने उग्र रूप धारण कर लिया, जिसका प्रभाव झाँसी जिलान्तर्गत मऊरानीपुर तहसील में सर्वाधिक रहा । इस आँदोलन में सर्वाधिक सक्रिय योगदान व्यास जी का था, उन्होंने राष्ट्रीय आँदोलन आगे बढ़ाने के लिये कवियों का इन शब्दों में आवाहन किया –

हम वाक्य वीर ही नहीं हैं, कर्मवीर भी हैं,
ऐसा कुछ करके दिखा दो वीर कवियों ?

जीवन के अंतिम समय तक व्यास जी का यही लक्ष्य रहा कि हमारे देश को आजादी मिले, चाहे हमें कितनी ही कुर्बानियाँ क्यों न देती पड़ें और इसी लक्ष्य को प्रापत करने के लिये व्यास जी आजीवन तन–मन–धन से संघर्षरत रहे, उन्होंने मातृभूमि के प्रति अपनी भावना इन शब्दों में व्यक्त की है –

धन्य, जग–जीवन वन के फूल ।
मुकलित हुए उदित उषा के उर अंचल अनुकूल ।
सुरभित–सरस–समीर–संग खुल–खेल–खेल अतूल ।

X X X

सहने पड़े प्रहार न किंचित उर में दुख दा शूल,
बंधे नहीं परवश बंधन के गर फंदन दुःख मूल ।

X X X

अड़े रहे निज स्वाभिमान पर सदा सनेह कबूल,

अंत समय शुचि मातृभूमि की शीश चढ़ाई धूल ।

धन्य जग जीवन वन के फूल ।[62]

राष्ट्रीय आँदोलन में भूमिका :-

व्यास जी ने राष्ट्रीय आँदोलन में सक्रिय भूमिका का निर्वाह किया और स्वराज्य के लिए तन–मन–धन से जुट गये ।

जिला राजनैतिक कॉन्फ्रेंस मऊरानीपुर में सन् 1928 में पं0 रामेश्वर प्रसाद शर्मा की अध्यक्षता में आहूत की गयी, इस अवसर पर प्रमुख राष्ट्रीय विचार धारा के कर्मठ नेता श्री कृष्णकाँत मालवीय प्रयाग, उमा नेहरू प्रयाग और श्री बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' कानपुर, बुन्देलखण्ड क्षेत्र के कर्मठ नेता श्री रघुनाथ विनायक धुलेकर झाँसी, दीवान शत्रुघन सिंह, रानी राजेन्द्र कुमारी मगरोठ और श्री बेनी माधव तिवारी उरई आदि ने भाग लिया ।

लाहौर काँग्रेस और नमक सत्याग्रह :-

15 अप्रैल 1930 में अन्य प्राँतों की तरह झाँसी जिले में नमक सत्याग्रह हुआ, जिसमें श्री व्यास जी के साथ मऊरानीपुर के राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं ने भाग लिया । इसमें प्रमुख नेताओं में श्री घासीराम व्यास, रामनाथ त्रिवेदी, रामनाथ राव, पन्नालाल अग्रवाल, श्री रघुनाथ विनायक धुलेकर, कुंजबिहारी लाल 'शिवानी', क्राँतिकारी मास्टर रूद्रनारायण सिंह, कृष्ण चन्द्र शर्मा आदि ने भाग लिया, जिसके फलस्वरूप इन सभी को 13 अप्रैल से 27 अप्रैल, 1930 तक अंग्रेजी शासन द्वारा बंदीगृह भेज दिया गया । यह लोग गाँधी इरविन समझौता होने पर रिहा कर दिये गये ।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन - झाँसी :-

28 दिसम्बर 1931 को झाँसी में इक्कीसवाँ हिन्दी साहित्य सम्मेलन डॉ0 वृन्दावन लाल वर्मा स्वागताध्यक्ष, श्री सुधीन्द्र कुमार वर्मा स्वागत मंत्री के सफल प्रयास से गोपाल बाग झाँसी में आयोजित किया गया, जिसमें राष्ट्रीय भावनाओं से ओत–प्रोत रचनाओं का पाठ किया गया, जिसका सभापत्तिव हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार पं. किशोरीलाल गोस्वामी 'वृन्दावन' ने किया । इसके मनोनीत अध्यक्ष हिन्दी साहित्य के प्रमुख कवि श्री अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' थे ।

उपर्युक्त राष्ट्रीय कवि सम्मेलन में जिन साहित्य महारथियों ने भागलिया, उनमें राष्ट्रीय कवि श्री मैथलीशरण गुप्त, राजकवि श्री मुंशी अजमेरी, श्री दीनानाथ 'निशंक', श्री मातादीन शुक्ल, श्री कुसमाकर दीक्षित, श्री गया प्रसाद शुक्ल 'स्नेही' श्री केशवदेव शास्त्री, श्री करूणेश, श्री प्रणमेश, श्री वचनेश, श्री जगदम्बा प्रसाद 'हितैषी' श्री रामकुमार वर्मा, श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान, पं. गौरीशंकर द्विवेदी 'शंकर' कविराज श्री बिहारी लाल भट्ट 'बिहारी', श्री हरनाथ, श्री घासीराम व्यास, श्री पुत्तू लाल वर्मा 'करूणेश' आदि के नाम उल्लेखनीय हैं । इन्होंने अपनी राष्ट्रीय रचनाओं से देश की स्वतंत्रता के लिए उपस्थित जन समूह का आवाहन किया । इस अवसर पर सुभद्रा कुमारी चौहान ने यह राष्ट्रीय रचना 'झाँसी की रानी' पढ़ी जिसकी पंक्तियाँ यह हैं –

"बुन्देले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी ।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी ।

और जब डॉ0 रामकुमार वर्मा ने अपनी 'नूरजहाँ' कविता का वाचन मधुर कोकिल कंठ से प्रस्तुत किया तो आजादी के दीवाने झूम उठे । पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं –

नूरजहाँ तेरा सिंहासन था कितना अभिमानी ।
कितने हृदय–प्रदेशों की थी एक साथ तू रानी ।
नूर रहित हो गया जहाँ तेरे जग के जाने से ।
नूरजहाँ अब जाग–जाग तू मेरे इस गाने से ।[63]

श्री रामचरण हयारण 'मित्र' झाँसी (संयोजक – कवि सम्मेलन) ने कानपुर के साम्प्रदायिक दंगे में गणेश शंकर विद्यार्थी के बलिदान पर 'बलिदान' शीर्षक कविता का पाठ किया, जिसकी पंक्तियाँ इस प्रकार हैं –

"प्यारे श्री गणेश को इस–
बूढ़े भारत का भाल कहूँ,
दीन–दुखियों की ढाल कहूँ या–
वीर हृदय की माल कहूँ
या युवकों की जान कहूँ,
या मातृभूमि का मान कहूँ
नहीं–नहीं भारत का प्रताप का
निश्चय ही अभिमान कहूँ ।
वीर बांकुरे वीर लोक को
जाओ देती हूँ वरदान ।
भारत को स्वतंत्र कर देगा,
यह तेरा पुनीत बलिदान ।"[64]

राष्ट्रकवि श्री घासीराम व्यास ने अपनी धान–सरसी रचना का पाठ किया । इसकी कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं, जिसमें धान के पौधे समाज को अपना सर्वस्य न्यौछावर करने के लिए आतुर हैं –

"मदु मानस मोहन मंत्रणा की,
मधु–मादकता छवि छा रही थी ।
सरसी–सुख से दृग आंसुओं को,
निज पी रही थी, बलि जा रही थी ।
दुःखी दीनों के पालने की ध्वनि में,
उर के घने–घाव छिपा रही थी ।
जग के उपकार में लाड़िले ये,
निज गोद के लाल लुटा रही थी ।"[65]

श्री व्यास जी की माता राधारानी ने सन् 1920 में चीनी का उत्पादन कम होने के कारण चीनी विक्रेताओं के द्वारा अधिक लाभ उठाने का प्रयास करने पर मऊरानीपुर में धरना दिया, जिसके फलस्वरूप अंग्रेज सरकार को झुकना पड़ा और चीनी का मूल्य निर्धारित करना पड़ा । व्यास जी ने 11 दिसम्बर 1921 में असहयोग आँदोलन छेड़ने पर जुलूस निकाला । तब इनकी माता राधारानी ने इनका तिलक लगाकर और माला पहनाकर इनके हाथ में राष्ट्रीय ध्वज दिया, तत्पश्चात उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया । वे आगरा जेल भेज दिये गये । द्वितीय कारावास 1930 में नमक सत्याग्रह के फलस्वरूप हुआ ।

तृतीय कारावास 1935 में विदेशी वस्त्र बहिष्कार एवं मद्य निषेद्य आँदोलन में झाँसी जेल में रखे गये । जुर्माना न देने पर घर की कुर्की और फिर चार माह की साधारण जेल हुई और एक माह के सक्षम कारावास

की सजा दी गयी । अंतिम कारावास द्वितीय विश्व युद्ध के समय हुआ । 25 अप्रैल 1941 को गरौठा में गिरफ्तार किया गय और झाँसी जेल भेज दिया गया । केस धारा 28 इंडिया रूल्स के अन्तर्गत आरम्भ हुआ और 10–6–1941 को व्यास जी को 6 माह का कठोर करावास एवं 100 रूपया अर्थदण्ड या दो माह की कैद की सजा मिली ।

समग्र रूप से व्यास जी का तत्कालीन जीवन दर्शन एवं स्वतंत्रता संघर्ष की ओजस्वी वाणी का प्रभाव :–

राष्ट्रकवि श्री घासीराम व्यास बेधड़क, बेपरवाह, एवं स्वाभिमानी परम्परा के व्यक्ति थे । देशभक्ति उनमें कूट–कूट कर भरी थी । अंग्रेज सरकार के अत्याचारों से वे कभी नहीं झुके । उनका जीवन त्याग से भरा और देश के लिए मर मिटने की चाह लिये हुए था । उनका जीवन दर्शन अपने ढंग का निराला और सात्विक भाव से युक्त था । उनके शब्दों में उनका परिचय इस प्रकार है –

"विदित बुन्देलखण्डवासी सुखरासी–श्याम,
राधिका उपासी विसवासी व्रतधारी हूँ ।
सत्य व्यवहारी भव्य–भोले–भाईयों का भक्त,
दीन–दुखियों का दास–देश–दुःखहारी हूँ ।
बुध अवतंश कल हंस–हंस वाहिनी का,
'व्यास' वंश का प्रसंश अंश अधिकारी हूँ ।
कवियों का प्रीत, 'मित्र' भीत चाव–चेरा–चारू,
भाव का भिखारी पुण्य–प्रेम का पुजारी हूँ ।

परिस्थितियाँ :–

दीन–दुखियों की बात करना कुसूर जहाँ,
अपने घरों में अपनी न कह पाते हैं ।

जाते हुए जेल भाईयों के कही स्वागत में,
हाथ जो बढ़ाते हैं, तो हथकड़ी पाते हैं ।
भली–भाँति शाँति के व्रती है सुकृती है वे ही,
माने अपराधी हैं अशाँति उकसाते हैं ।
ऐसा एक ही अनोखा देश विश्व में है,
जहाँ देश भक्त राजद्रोही कहे जाते हैं ।

और हमारे आकाओं (अंग्रेज शासक) का कहना तो यह है –

मालिक है हम अधिकारी इस देश के हैं,
हक हमको है अच्छे बुरे के विचार का ।
शिक्षा दे हमी ने तुम्हें सभ्यता सिखाई और
ढंग बतलाया बोलने का दरबार का ।
हम जानते हैं राजनीति युद्ध नीति क्या है,
मूल्य क्या तुम्हारे इस देश का दुलार का ।
तुम अज़ान भटके हो भूल–भूल कर
कुछ मत कहना है हुक्म सरकार का ।

किन्तु हम तो :-

सच्चे काँग्रेस के सिपाही हैं अवश्य और –
दीन दुखियों के दास देशव्रत पाए हैं ।
पीड़ित किसानों के अकाम लघु सेवक हैं,
कानूनन जुर्म है क्या ? सोच सकुचाए हैं ।
भाषण दिया न कोई लेख लिखा ऐसा कहीं,
फिर क्यों बताओ हमें यहाँ आप लाये हैं ।

सोच–सोच हारे किन्तु किसी भांति अब तक,
हम अपना न अपराध जान पाये हैं ।

न्याय की रूपरेखा :–

देने को गवाही जो बुलाया गया बांका वीर,
वही बात–बात में लगाया गया गोता है ।
यद्यपि विचार पति जानते यथार्थ किन्तु,
बेच दिये हाथ 'कॉन सेन्स' पड़ा सोता है ।
तर्क किया गर्क हुआ फर्क है नजीरें कैसी ?
ताजीरात हिन्द का तो बर्क–बर्क रोता है ।
अब तो अजीब 'आर्डिनेंस' गुप्त सर्क्यूलर,
'डिओ' के विचार से अनोखा न्याय होता है ।

अपराध स्वीकार :-

शाँतिसत्य–सुमति, अहिंसा व्रत पालन में,
कौन अपराध है विरोध उकसाने का ?
देखकर–दुर्विचार बार–बार सोचता था,
बदल गया है क्या ! रवैया हा ? जमाने का ।
मानता हूँ किंतु हा ! कुसूर अब आया याद,
जुर्म है जरूर यहाँ जो कि सजा पाने का ।
किया था विचार मन में जो देश भाव भरे,
भूले–भाईयों को ठीक राह दिखलाने का ।

अतः-

आओ आज हौंसले मिटा लें दिल खोल कर,
स्वागत है आपकी जफा का जुल्म ढाने का ।
हमको मुसीबतें उठाने में मिला है मजा,
शोक जमाने में तुम्हें रोब के जमाने का ।
देखना कसर रह जाय नहीं कोई कहीं
कभी फिर क्या ये भला मौका हाथ आने का ।
बल आजमाने का बहाना मिला आपको है,
हमको बहाना मिला दिल आजमाने का ।[66]

यह था राष्ट्र कवि व्यास जी का खुला जीवन दर्शन, उन्होनें उपर्युक्त पदों में अपनी अभिव्यक्ति प्रस्तुत की है । उन्हीं के शब्दों में उन्हीं का खरा व्यक्तित्व उनके काव्य के साथ सदा अमर रहेगा । उनकी जीवन शैली अपने ढंग की अनूठी और निर्भीक भाव लिये हुए है । यही कारण है कि वे सदा–सदा के लिये अमर है और अमर रहेगें । उनका साहित्य सदैव देश और समाज को स्वाभिमान, राष्ट्रीयता एवं देश पर मर – मिटने के लिये प्रेरणा देता रहेगा ।

"श्री घासीराम व्यास का जीवन सदैव राष्ट्रीय संघर्ष में व्यतीत हुआ वे राष्ट्र के लिये जिए और राष्ट्र के लिये मरे । इन दृष्टियों से उनको राष्ट्रकवि कहा जाय तो अतिशयोक्ति न होगी । उन्होने अपने जीवन के 34 बसन्त इस बुन्देलखण्ड वसुन्धरा की गोद में बिताएँ, जिनमें 12 वर्ष अध्ययन और शेष 22 वर्ष साहित्य सेवा एवं राष्ट्रीय आन्दोलन में अंग्रेजी सरकार की कठोर यातनाएँ झेलते हुए बितायें । व्यास जी ने अपनी काव्यमयी अनुभूतियों द्वारा साहित्य एवं राष्ट्र की जो अनूठी भाव राशि प्रदान की

उससे सारा साहित्य जगत और जन मानस सदा–सर्वदा ऋणी रहकर स्मरण करता रहेगा ।"

कवि श्री व्यास जी ने यह शिक्षा 'रामायण' से ली हैं, वे स्वयं अपना जीवन – दर्शन इस भक्ति पूर्ण याद में चित्रित करते है –

सीखी शीलताई पितृ – भक्ति रामचन्द्र जू सों,
भरत सो सीखी भ्रातृ – भक्ति अभिराम हैं ।
सीखौ सेवकाई लक्ष्मण ते लक्ष मन ते,
सीखौ स्वामि भक्ति हनुमान ते सुधाम हैं ।
'व्यास कहें' सहन–सु–शक्ति कौशिला ते सीखौ,
सीखहु, सुमित्रा तें उदारता अकाम है ।
परम – पुनीत नीत – रीत के सिखायते कौ,
वन्दनीय रामायण ललित – ललाम है ।[67]

व्यास जी का अपने जीवन मे एक ही मूल–मंत्र रहा है, वह देश के लिए मर मिटने की भावना उन्हीं के शब्दों में :–

दुःखी भूख से बंधु करोड़ो मरे, पड़े ऐश में आपका मौज उड़ाना ।
लूटती ललनाओं की लाज रहैं, तुम मौन रहो धिक मर्द कहाना ।।

द्विज 'व्यास' न मा की पुकार सुनी, उल्टे उसी राह में काँटे बिछाना ।
यदि देश के काम जो आया नहीं, इस जीवन सें तो भला मर जाना ।[68]

व्यास जी की बुन्देलखण्ड विषयक रचनायें इतनी लोकप्रिय और आकर्षित सिद्ध हुई कि देश के चोटी के विद्धानों एवं कवियों तथा साहित्यिक पत्रिकाओं द्वारा विशेष रूप से सम्मानित हुई । व्यास जी को बुन्देलखण्ड के प्रति विशेष प्रेम रहा हैं, उनकी अनेक रचनायें लोकप्रिय रही

हैं, जिसमें बुन्देलखण्ड की महत्ता एवं लोकप्रियता दर्शायी गई हैं, कुछ पक्तियों में उनके भाव यहाँ प्रस्तुत किए जा रहे हैं –

वन्दनीय अभिनंदनीय भारत माँ की आँखों का तारा ।
यश अखण्ड नव खंड विमंडित वर बुन्देलखण्ड है प्यारा ।।

X X X

छक्के छूट गये सहसा अग्रेजो का कुछ चला न चारा ।
पर बुन्देलखण्ड है प्यारा ! वन्दनीय अभिनन्दनीय ।[69]

व्यास जी की ओजस्वी वाणी श्रोताओं को मंत्र मुग्ध किए बिना नहीं रहती उनका कंठ इतनां सुरीला और ललित था कि लोग उन्हें बुन्देलखण्ड कोकिल कहा करते थे । उनमें भावना और कर्तव्य का अद्भूत समन्वय था । वे भावुक और रससिद्ध कवि थे । ऐसे कवि थे जिनकी एक आवाज पर सारा – समाज उठ खड़ा होता था । उनकी वाणी इतनी रसमयी और ओज पूर्ण थी कि उनके लक्ष्य की पूर्ति के लिए जन–समाज आगे बढ़कर सक्रिय हो उठता था । स्वतंत्रता संषर्ष के वे नेता थे । देश पर मर मिटने की चाह लिए हुए वे विदेशी सत्ता को निडर भाव से बिना किसी दुखद परिणाम को सोचे – सक्रिय हो उठते थे ।

व्यास जी के कृतित्व के माध्यम से सामाजिक, राष्ट्रीय चेतना काव्य मे विद्रोह एवं क्राँति के स्वर तथा एक सचेतक कवि के रूप मे महती भूमिका –

राष्ट्रकवि श्री घासीराम व्यास माँ भारती के उन सपूतों में से एक हैं, जिन्होंने अपनी लेखनी और वाणी से सुसुप्त – मानस में स्वदेश के प्रति स्नेह एवं चेतना की लहर पैदा की अंग्रेजी शासन की क्रूर दमन नीति के विरूद्ध स्वाधीनता की प्राप्ति के लिए जो आंन्दोलन तीव्र गति से उत्रोत्तर

आगे बढ़ रहा था वह अकस्मात् नहीं था, वरन् दासता के बंधन से मुक्ति पाने के लिये इन महान क्रॉंतिकारियों के निस्वार्थ त्याग और बलिदान का वह सहज भाव था, जो स्वयं स्वतंत्र होने के लिये आतुर तो था ही, जनमानस में देश भक्ति के भाव को जगाने के लिए भी आतुर था, किन्तु सामान्य ढंग से प्रयास कर रहा था । वैसे तो हिन्दी साहित्य में आदिकाल से लेकर रीतिकाल तक अनेकानेक कवियों ने राष्ट्र प्रेम से सम्बन्धित रचनाये की, किन्तु आधुनिक काल जैसी भावभूमि उन कवियों को न मिल सकी थी ।

व्यास जी ने साहित्यकार के रूप में न केवल राष्ट्रीय जागरण का मंत्र फूका बल्कि लेखकों, कवियों, समाज सेवियों, स्वतंन्तत्रा के लिए कार्य करने वाले समाज सेवियों को उचित दिशा – निर्देशन एवं प्रेरणा प्रदान की । व्यास जी की रचनाओं में एक और राष्ट्रीय संरचना की मृदु वीणा झंकृत है तो दूसरी और राजतंत्र एवं साम्राज्यवाद की व्यवस्था को विनिष्ट करनें हेतु प्रलयंकर शंकर की भांति उद्दीप्त ओज प्रकट करने की शक्ति ।

सन् 1920 में महात्मा गाँधी द्वारा सत्याग्रह आँदोलन चलाया गया उसमें आपने न केवल तन से भाग लिया, वरन् वाणी और लेखनी के द्वारा वीरों को भी सक्रिय बनाने के लिए प्रोत्साहित किया । अपनी ओजस्वी एवं राष्ट्रीय रचनाओं द्वारा राष्ट्रीय विचारधारा के देशभक्तों को इतना प्रभावित किया कि देश के लिए बलिदान होना सबने अपना अंतिम लक्ष्य मान लिया । उनका मानना था कि देश के पतन का मूल कारण विदेशी सत्ता का आधिपत्य है । उन्होने जनता को आगाह किया कि विदेशी शासन जब तक रहेगा तब तक भारत भूमि की आत्मा रोग मुक्त न होगी । अतः पूर्ण स्वस्थ्य होने का तो सवाल ही नहीं उठता । ऐसी पराधीनता के प्रति इन

महान देश भक्त की आत्मा में बड़ा ही आक्रोश था । इस आत्मा का रोम – रोम दासता की वेदना से क्रंदन कर उठता था । अंग्रेजी साम्राज्य द्वारा सत्याग्रहियों को भीषण, दर्दनाक यातनाऐं दी जाती थी, जो असहय थी, पर आजादी के उन्माद में उन्हें कठोर से कठोर यातनाएँ भी फूलों कें स्पर्श जैसी लगती थी । उनका संकल्प था उस माँ भारती को स्वतन्त्र कराना, जो आज परतन्त्र है । उनका नारा था कि देश के लिए पूर्ण समर्पित हो जाओं, आजादी तो मिलेगी ही । विश्वास रखों तुम्हारी यह कुबार्नी व्यर्थ नही जायेगी । आपकी अबाध साधना एवं उद्दीप्तमान चेतना ने स्वतंत्रता संग्राम की विस्तृत भाव भूमि तैयार की ।

व्यास ज़ी का देश प्रेम, हिन्दी प्रेम और साहित्य प्रेम प्रसिद्ध है । देश को जगाने के लिए सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड तथा अन्यान्य देश के भागों में सक्रिय भूमिका निर्वाह कर रहे थे । जीविका का माध्यम भी उनका नगण्य सा ही रहा है । जिये तो आत्मदान के सहारे और टिके तो अपनी अंर्तशक्ति के बलबूते । लोक शक्ति का स्नेह और सम्मान उन्हें सत्त मिलता रहा है । वे जो कुछ भी कहते थे लिखते थे, बोलते थे, उसमे एक तड़प होती थी, एक बिजली होती थी, एक कौंध होती थी, जो किसी और में नसीब न थी । इस शैली और शिल्प पर सभी मुग्ध थे । एक–दो उदाहारण इसके लिए पर्याप्त है ।

माना अनुपम त्याग किया है ।
कष्टों से अनुराग किया है ।
भारत माँ के है सपूत, पर
किन भावों मे हा ! भरमाये,
क्यों हम यहाँ जेल में आये ?

सहज शक्ति सुचिता उदारता,
प्रेम सहानुभूति प्रण–दृढ़ता,
भूल गये सब कुछ पर खुश हो,
फिरते पशुता को अपनाये,
क्यों हम यहाँ जेल में आये ?

आश्रम इसे मान लेते जो,
संयम नियम ठान लेते जो,
कर्म – अकर्म जान लेते जो,
साधन होते सबल सबाये ।
क्यों हम यहाँ जेल में आये ?[70]

वस्तुतः कवि एक सर्जन शीलता से प्रतिबद्ध होता है । जितना अधिक कवि संवेदनशील–बहुज्ञ, पुरातनता के निकट और सम–सामयंकिता से प्रतिबद्ध रहकर पूर्ण काव्य परम्परा का अवगाहन करते हुए समसामयिक समस्याओं और परिस्थितियों के समाधान से सम्पन्न काव्य सर्जना करने में लगा रहता हैं, तो वह अपने कृतित्व को स्वतः ही प्रांसगिक बना देता है, वह उतना ही वर्तमान या तत्कालीनता से आगे बढ़कर भविष्य गामी नवीनता की सृष्टि करते हुये सदैव प्रांसगिक हो जाता है ।

प्रांसगिकता का सन्दर्भ किसी रचनाकार या उसकी रचना कृति के सम्बन्ध में तभी उठता हैं, जब उस कृतिकार या कृति का मूल उद्‌देश्य उसकी जीवन्तता उपयोगिता और सन्दर्भ संलग्नता एक निश्चित कालाबधि और समसामयिकता की परिधि लाँघकर अपने जीवन सत्यों का साक्षात्कार संजोकर ऐसे जीवन मूल्यों और मानव मूल्यों की अभिव्यक्ति करता हैं, जो शाश्वत्ता और जीवन्तता ग्रहण किये होते हैं, क्योकि प्रत्येक सजग

सर्जनाशील रचनाकार अपने युग बोध और युग संदर्भ के निष्कर्ष पर ग्रहीत अनुभूतियों को अपने सम–सामयिक संदर्भो में इस प्रकार प्रयुक्तकरता है कि वे जीवन सत्यों की सार्थकता मात्र युग परिपेक्ष्य में नही अपितु गत घटनाओं को भी वर्तमान जीवन सदर्भ के साथ देखने की सर्तक दृष्टि भी देता है । व्यास जी की प्रांसगिकता इस रूप में ही सिद्ध हो जाती है कि वे अपने आप में अपने युग और साहित्य के अनुवादक रहे है, जो व्यवहार में था, उसका उल्लेख उनके लेखन में था और जो लेखन में निहित चितंन था, वह अपने युग और देशकाल परिवेश की समग्र सर्जनात्मक भावना का पर्याय था । देश की तद्युगीन परिस्थितियाँ और विदेशी सत्ता की व्यापक होती हुई शोषण और अत्याचार की नीतियों के विवादात्मक अनुभव मुखर राष्ट्रीय भावना एवं गौरव के स्वरों की झनकारों से व्यास जी के सर्जनशील व्यक्तित्व को प्रभावित किया ।

परिणामतः अपने दारिद्रय में जन्में, आर्थिक अभावों में पोषित, स्वास्थ्यगत रूगण्ता से निरन्तर आक्रान्त मनीषी व्यास जी राष्ट्र के प्रति अपनी कर्तव्य भावना से प्रेरित रहकर, असहयोग आँदोलन में सम्मलित हो गये । कारावास की अवधि में उनका कवित्व जाग उठा अनेक उत्कृष्ठ कवि, साहित्यकार एवं राजनीतिज्ञ उनके प्ररेणा स्रोत रहे । गाँधी जी, जवाहरलाल नेहरू, सुभाष चन्द्र बोस, पं0 परमानन्द आदि से उन्होने देश प्रेम की प्रेरणा ग्रहण की । उनकी रचनाओं की जीवन्तता, वर्तमान में उपयोगिता और सार्थकता तथा संदर्भ – संलग्नता विद्यमान है । उनकी राष्ट्रीय भावधारा की काव्य रचनाओं मे जिस विद्रोह एवं क्राँति का स्वर उस युग में प्रवाहित हुआ था, उसे आज कम नहीं आका जा सकता, मातृभूमि के प्रति भावना उनके इस उदाहारण में देखिये :–

सत्य जग–जीवन वन के फूल ।

प्रफुल्लित हुए मंजु कुंजन में झुक–झुक झूला–झूल।

कुसमय में निर्दय माली के पड़े न कर प्रति कूल।

X X X

अड़े रहें निज स्वाभिमान पर सदा सनेह कबूल ।

अंत समय शुचि मातृ भूमि की शीश चढ़ाई धूल ।

धन्य, जग – जीवन वन के फूल ।[71]

कवि व्यास जी द्वारा राष्ट्र प्रेम की प्रबल भावना और आत्मोत्सर्ग का अपरिमित बल का संकेत आज हमारे लिए नया संदेश ही नही हैं, वरन् आज के जीवन का भी प्रबल आग्रह है क्योंकि हम राष्ट्र प्रेम और राष्ट्रीयता के बिना भारत अस्मिता की पहचान नहीं बना सकता है । इसीलिए कवि ने अपनी सशक्त लेखनी से व्यक्त काव्य धारा को बहुत ही प्रांसगिक सिद्ध किया है –

जनता की शुचि सेवा करना अपना स्वधर्म पहिचाना है ।

हैं जान हथेली लिए हुए, पावन स्वदेश व्रत ठाना हैं ।

कर्तव्य मार्ग पर मिट जाना, इतना बस केवल जाना हैं ।

यह दुनिया गौरख धंधा हैं, सुख–दुख का ताना–बाना हैं ।

है विपदाओं से भीति नहीं डर प्रीति न फल उपहारों से,

आजादी के दीवाने है खेला करते अंगारो से ।[72]

इस प्रकार व्यास जी की आत्मा सम्पूर्ण निष्ठा के साथ भारत माता की भक्ति और सेवा में लगी रही । राष्ट्रके स्वाधीनता संग्राम में अपना सर्वस्य न्यौछावर करके कूद पड़ने वाले वे एक महाकवि थे । देश और

साहित्य की सेवा में उन्होने अपना जीवन ही खपा दिया । राष्ट्रीय स्वतंन्त्रता संग्राम में उनके त्याग और बलिदान को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता, वे आज भी हमारे प्रेरणा स्रोत है और रहेगें ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. हिन्दी अनुशीलनः जून 1998, पृष्ठ – 78 ।

2. मैथलीशण गुप्त : परम्परा और प्रयोग–डॉ0 हरवंश लाल शर्मा ।

3. " " " " " "

4. राष्ट्रीय क्रँाति के जुझारू कवि पं0 बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' – डा0 शियाराम शरण शर्मा ।

5. महान क्रँातिकारी पं0 परमानन्द 'अभिनंदन ग्रंथ' पृष्ठ – 88

6. युग चेतना के यशस्वी कवि पं0 घासीराम व्यास – डॉ0 सियाराम शरण शर्मा ।

7. श्रद्धाँजलि अंक – राष्ट्र कवि पं0 घासीराम व्यास – पृष्ठ – 5 ।

8. श्रद्धाँजलि अंक – राष्ट्र कवि पं0 घासीराम व्यास – पृष्ठ – 6 ।

9. श्रद्धाँजलि अंक –राष्ट्र कवि पं0 घासीराम व्यास – पृष्ठ – 25 ।

10. श्रद्धाँजलि अंक –राष्ट्र कवि पं0 घासीराम व्यास – पृष्ठ – 4 ।

11. श्रद्धाँजलि अंक – राष्ट्र कवि पं0 घासीराम व्यास – पृष्ठ – 4 ।

12. श्रद्धाँजलि अंक – राष्ट्र कवि पं0 घासीराम व्यास – पृष्ठ – 5 ।

13. श्रद्धाँजलि अंक – राष्ट्र कवि पं0 घासीराम व्यास – पृष्ठ – 5 ।

14. श्री नाथूराम माहौर अभिनंन्दन ग्रंथ – पृष्ठ – 40 ।

15. श्री नाथूराम माहौर अभिनन्दन ग्रंथ – पृष्ठ – 33 ।

16. श्री नाथूराम माहौर अभिनंन्दन ग्रंथ – पृष्ठ – 35 ।

17. व्यास – यश – सिंधु (राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ), पृष्ठ – 92 ।

18. व्यास श्रँद्धाजलि अंक – पृष्ठ – 8 ।

19. सुकवि अप्रैल 1930 – पृष्ठ – 31 ।

20. व्यास श्रँद्धाजलि अंक – पृष्ठ – 9 ।

21. राष्ट्रकवि घासीराम व्यास का व्यकित्तव एवं कृतित्व – रामचरण हयारण मित्र – पृष्ठ – 11 ।

22. राष्ट्रकवि घासीराम व्यास का व्यकित्तव एवं कृतित्व – रामचरण हयारण मित्र – पृष्ठ – 12 ।

23. व्यास यश सिंधु (राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ), – पृष्ठ – 16 ।

24. व्यास यश सिंधु (राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ), – पृष्ठ – 15 ।

25. व्यास यश सिंधु – (राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ), पृष्ठ – 15 ।

26. सुकवि 15 जून 1941 (आजादी के दीवने – छंदाश) ।

27. सुकवि 15 जून 1941 (मातृभूमि गीत सन् 1933) ।

28. सुकवि सन् – 1930 (राष्ट्रीय गीत)

29. व्यास – यश – सिधु (राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ), – पृष्ठ – 91 ।

30. व्यास – यश – सिधु (राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ), – पृष्ठ – 92 ।

31. व्यास – यश – सिधु (राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ), – पृष्ठ – 109 ।

32. व्यास – यश – सिंधु – (राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ), काव्य चिदाकाश राष्ट्रकवि व्यास – श्रीनिवास शुक्ल (एडवोकेट) पृष्ठ – 110

33. व्यास – यश – सिंधु (राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ), – पृष्ठ – 116 ।

34. व्यास – यश – सिंधु – (राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ), पृष्ठ – 117 ।

35. व्यास – यश – सिंधु – (राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ), पृष्ठ – 118 ।

36. व्यास – यश – सिंधु (राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ), – पृष्ठ – 119 ।

37. व्यास – यश – सिंधु – (राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ), पृष्ठ – 124 ।

38. व्यास – यशं – सिंधु – (राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ), पृष्ठ – 103–104 ।

39. व्यास – यश – सिंधु – (राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ), पृष्ठ – 132 ।

40. व्यास – यश – सिंधु – (राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ), पृष्ठ – 231 ।

41. व्यास – यश – सिंधु – (राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ), पृष्ठ – 232 ।

42. व्यास – यश – सिंधु – (राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ), पृष्ठ – 230 ।

43. व्यास – यश – सिंधु – (राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ), पृष्ठ – 123 ।

44. अर्चना – घासीराम व्यास, पृष्ठ – 71 ।

45. व्यास – यश – सिंधु – (राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ), पृष्ठ – 113 ।

46. व्यास – यश – सिंधु – (राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ), पृष्ठ – 108 ।

47. व्यास – यश – सिंधु – (राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ), पृष्ठ – 96 ।

48. व्यास – यश – सिंधु – (राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ), पृष्ठ – 91 ।

49. व्यास – सुधा – घासीराम व्यास – पृष्ठ – 27

50. व्यास – सुधा – घासीराम व्यास – पृष्ठ – 28 – 29

51. व्यास – सुधा – घासीराम व्यास – पृष्ठ – 30 – 31

52. व्यास – सुधा – घासीराम व्यास – पृष्ठ – 33 – 35

53. अप्रकाशित चक्रव्यूह – घासीराम व्यास – पृष्ठ – 10 ।

54. व्यास – यश – सिंधु – (राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ), पृष्ठ – 98 ।

55. श्याम सन्देश – घासीराम व्यास पृष्ठ – 30 ।

56. व्यास – यश – सिंधु – (राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ), पृष्ठ – 101 ।

57. मधुकर, वर्ष 2, अंक 22, पृष्ठ – 22 ।

58. खेत की आत्म कथा – हिन्दी साहित्य सम्मेलन इंदौर सन् 1934 ।

59. श्री पीताम्बरा पीठ वनखण्डेश्वर, दतिया, नवरात्रि सं0 2034 ।

60. अर्चना – घासीराम व्यास, पृष्ठ – 3 ।

61. अर्चना – घासीराम व्यास, पृष्ठ – 25 ।

62. अर्चना – घासीराम व्यास, पृष्ठ – 72 ।

63. राष्ट्रकवि घासीराम व्यास, व्यक्त्तिव एवं कृतित्व – रामचरण हयारण मित्र, पृष्ठ – 38 ।

64. भेंट श्री रामचरण हयारण मित्र – पृष्ठ – 25 ।

65. अर्चना घासीराम व्यास – पृष्ठ 71 ।

66. राष्ट्रकवि घासीराम व्यास व्यक्तित्व एवं कृतित्व, रामचरण हयारण मित्र, पृष्ठ – 58 – 60 ।

67. राष्ट्रकवि घासीराम व्यास व्यक्तित्व एवं कृतित्व, रामचरण हयारण मित्र, पृष्ठ – 32 ।

68. ज्येष्ठ अषाढ़ सम्वत् 1990, पृष्ठ – 7 । (शीषर्क – देश के काम जो आया नहीं) ।

69. अर्चना – घासीराम व्यास, पृष्ठ – 58 – 59 ।

70. अर्चना – घासीराम व्यास, पृष्ठ – 25 ।

71. अर्चना – घासीराम व्यास, पृष्ठ – 72 ।

एवं

ज्येष्ठ अषाढ़ सम्वत् 1990, पृष्ठ 7, वाणी नीमाड़ अंक, खरगौन ।

72. अर्चना – घासीराम व्यास, पृष्ठ – 67 ।

चतुर्थ अध्याय

- ❖ व्यास जी की प्रकाशित रचनाओं का विकास क्रम :

- ❖ व्यास जी की अप्रकाशित रचनाओं का विकास क्रम :

चतुर्थ अध्याय

घासीराम व्यास जी की रचनाओं का विकास क्रम :–

राष्ट्रकवि घासीराम व्यास की काव्य प्रतिभा का उदय देश के दारूण – दासत्व की दृष्टि से और भारतीय संस्कृति की भक्ति रसपूर्ण रचनाओं को आत्मसात् करने की स्वानुभूतियों से हुआ, वे काव्य जगत में छायावाद की अभिव्यजंना से प्रभावित न होकर प्राकृतिक सौन्दर्य और जन साहित्य तथा छंद शास्त्र की प्रगाढ़ उच्चतम रीतियों का अध्ययन तथा अनुशीलन करके माँ भारती की सेवा में जनता के समक्ष प्रस्तुत हुए है । व्यास जी मात्र सत्तरह वर्ष की अल्प आयु में काव्य शास्त्र के श्रेष्ठ अध्येता तथा जनप्रिय कवि के रूप में स्थापित हो गये । उस समय कवि दरबार अधिक प्रचलित था । पर्व एवं उत्सव के अवसर पर प्राचीन कवियों का रूप धारण कर उनकी कविताओं का पाठ किया जाता था । काव्य गोष्ठी, कीर्तन, भजन, ख्याल, प्रतिस्पर्धा आदि के आयोजन हुआ करते थे । प्रायः कवि गोष्ठियों में उनकी रचनाओं का पाठ होता था । छंदबद्ध काव्य लिखने में वे विशेष लोकप्रिय हो गये थे । पं0 श्याम सुन्दर बादल तो व्यास जी की प्रशंसा करते हुये कभी अघाते ही नही थे । उनकी इन छंद बद्ध पंक्तियों में उनकी लोकप्रियता का अनुमान लगाया जा सकता हैं :–

बड़े से भी बड़े अधिवेशनों में, तुम नित्य निमंत्रित थे किये जाते ।
फलीभूत बन जाता रहा, जिस मंच पर आप अलापते आते ।
जहाँ आपका नाम पुकारा गया, वहाँ श्रोता प्रशन्न हो ताली बजाते ।
अहो ! व्यास जी है कहाँ ? हैं कहाँ ? व्यास जी है, यही तो झुक–झूमते आते ।[1]

व्यास जी के साहित्य सृजन का केनवास विस्तृत था । उन्होनें देश प्रेम, राष्ट्रीयता, प्रकृति चित्रण, श्रृंगार, आध्यात्म, धर्म, समाज, सैर, फड़ आदि विषयों पर कलम चलाई । काव्य में लोकोत्तियाँ, मुहावरों का प्रयोग, सशक्त वाक्य रचना, भाषा का सहज प्रवाह और प्राजंलता उनकी शैली के विशिष्ट गुण थे । क्योकि उन दिनों कवि की श्रेष्ठता का मापदण्ड सा बन गया था, कविताओं की समस्या पूर्ति करना ।

कविवर श्री रामचरण हयारण 'मित्र' ने समस्यापूर्ति में उनकी प्रतिभा का मुक्तकंठ से बखान किया है । वे लिखते हैं :– करूणा, जो उनकी राजनीतिक विवशता की देन हैं, उनकी कविता की चिर संगिनी होकर रही हैं .... । आज की परिवशता और गरीबी का जो हमारे किसानों के लिए विधि –विधान हैं, उनका संजीव चित्रण कवि ने इस प्रकार किया हैं –

"जमींदार वसुधा हरी, करौ महाजन घात।
गयी गरीब विदेश तज, प्रिय परिजन अकुलात"

और जब वह विदेश से अपने बच्चों को देखने के लिए अपने घर द्वार पर पहुँचता हैं तो उनकी दयनीय स्थिति देखकर वह दुःखी तो होता ही है वापिस भी लौट जाता हैं, इन पंक्तियों में यह कारूणिक चित्रण कविवर व्यास जी ने इस प्रकार प्रस्तुत किया हैं :–

"आयौ परदेश से सतायौ विपदा को एक,
कृषित किसान गति कहा कहौं गात की ।
सोचतैं सभीत परयौ घर की पद्दीत रैन,
गाँठ मे न कौड़ी सुधि कैसी कुशलात की।
भूख तै बिकल बाल कन समुझावे मातु,

आँये पितु प्रात ल्याहें मीठी भाँति–भाँति की ।

तज विलखात मुख देखे बिन द्वार ही ते,

लौट गौ विचारों, सुन बातें अधरात की ।[2]

ऐसा कारूणिक और ह्रदय विदारक चित्र किस प्रगतिशील कवि ने किया हैं, यह विचारणीय हैं ।

कविवर निराला तो एक वृद्ध भिखारी का चित्रण इस प्रकार करते हैं :–

पेट – पीठ दोनों है एक, चल रहा लकुटिया टेक,

मुट्ठी भरदाने को, भूख मिटाने को,

टो टूक कलेजे के पछताता पथ पर आता ।

दोनों कवि एक ही समय व काल के रहे हैं, मानव जीवन की दुर्दशा के चित्रण में कविवर व्याज जी कितने विहल हो उठे है इस यर्थाथ परक रचनाओं से तत्कालीन मानव दुर्दशा का जीवन – दर्पण सहज ही देखने को मिल जाता है ।

व्यास जी का साहित्य निम्न हैं :–

प्रकाशित साहित्य :–

1. वीर ज्योति (सन् 1931 ई0) प्रकाशक : बलवंत प्रेस – झाँसी ।

2. जवाहर ज्योति (सन् 1931 ई0) प्रकाशक : आनन्द प्रेस – झाँसी ।

3. श्याम सन्देश (सन् 1943 ई0) प्रकाशक : दीनानाथ दिनेश भार्गव मानव धर्म कार्यालय खारी बावली, दिल्ली ।

4. अर्चना (सन् 1953 ई0) प्रकाशक : न्यू यूनियन प्रेस, मानिक चौक, झाँसी ।

5. राष्ट्रकवि घासीराम व्यास का व्यक्तित्व एवं कृतित्व (सन् 1977–78) लेखक श्री रामचरण हयारण 'मित्र' प्रकाशक – बुन्देलखण्ड शोध संस्थान, व्यास हिन्दी भवन (लक्ष्मी व्यायाम मंन्दिर, झाँसी) ।

6. व्यास सुधा (सन् 1998 ई0) प्रकाशक : बुन्देलखण्ड हिन्दी शोध संस्थान, झाँसी ।

7. व्यास श्रद्धाँजलि अंक (सन् 2002 ई0) प्रकाशक : व्यास स्मृति न्यास 1353/3 मेंहदीबाग, नई बस्ती – झाँसी ।

8. व्यास – यश – सिंधु (कवि व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ) सन् 2003 प्रकाशक – श्री लक्ष्मी नारायण व्यास 'व्यास बंधु आश्रम' 1353/3 मेंहदी बाग – झाँसी ।

<u>अप्रकाशित साहित्य</u> :–

1. पियूषिनी ।
2. चन्द्रलोक की यात्रा ।
3. अन्य व्यास रचनाएँ ।
4. व्यास स्फुट रचनाएँ ।
5. व्यास फड़ साहित्य ।

राष्ट्रीय गीत ।

वीर ज्योति :- रचना में व्यास जी का शौर्य साहित्य संकलित हैं । स्वतंत्रता संग्राम की प्रथम सेनानी महारानी लक्ष्मीबाई की प्रशंसा में कवि ने कमाल ही कर दिया हैं । वे राष्ट्रीय कवि थे, उनकी राष्ट्रीय वाणी वीर रस से ओत–प्रोत होकर इस रचना में फूट पड़ी हैं, जिसने सम्पूर्ण देश में स्वतंत्रता संग्राम का बिगुल फूंका और जन–जन में राष्ट्रीय भावनाओं का प्रसारण किया । महारानी लक्ष्मीबाई का ओजस्वी रूप – स्वरूप इन पंक्तियों में मुखरित हो उठा हैं :–

लेके करबालिका कराल काल बालिका सी,
कालिका सी कठिन कठोर प्रण ठाने थे ।
रण रस रंगी जंगी फौज के तिलंगी हुए,
अमित उमंगी तेग नंगी के निशाने थे ।
'व्यास' कहैं महारानी लक्ष्मीबाई तुम्हारे त्रास,
सारे शत्रुओं के हीय हौसिलें हिराने थे ।
कोई बने मोची कोई बने धोबी पोची कोई ,
कोई अंगरेज रंगरेज से दिखाने थे ।

X X X

बातन में कलकत्ता लयो जिन–
घातन में पटना छपरे की ।
लातन लूट लाहौर लई मद,
रास लई मदरास खरे की ।
'व्यास' कहैं जिन बम्बई सूरत,
औंधलई बिन और करे की ।

हांसी नही यह सांसी कही पर

झाँसी भई उन्हें फाँसी गरे की ।[3]

X X X

हम हैं दरिद्र तू सुलक्ष्मी महारानी रहीं,

'व्यास' ठान ठानी रही वीर यश लेबी थी ।

कायर कपूत हम कुटिल कलह प्रिय,

माँ तू भव्य भावना भरी सुभाव भेवी थी ।

हम अपवित्र देश भक्ति हीन–दीन दुखी ,

परम पवित्र तू स्वदेश व्रत सेवी थी ।

हम गुण हीन तेरे गुण गण गायें कैसे,

हम परतंत्र तू स्वतंत्रता की देवी थी ।[4]

"बुन्देलखण्ड केसरी" छत्रसाल कविता में वीर रस साक्षात् रूप में अवतरित सा प्रतीत हो रहा हैं :–

मानों पीय बात रार ठानो ना बुन्देलन सों,

प्रबल प्रताप तेज तपत उजागरौ ।

जानो जीय कालहु कौ काल विकराल महा,

विक्रम विशाल छत्रसाल नर नागरौं ।

'व्यास' कहै जो पै कहूँ पलक उघार देहे,

तो पै कर छार दैहे छुद्र छल छागरौ ।

रवर भर पार दैहे गजब गुजार दैहे,

जार दैंहे दिल्लिये उजार दैहे आगरौ ।[5]

जवाहर ज्योति :–

सन् 1932 में 2 मई को मऊरानीपुर में भारत के हृदय सम्राट पं0 जवाहर लाल नेहरू की अध्यक्षता में किसान कॉन्फ्रेस का आयोजन किया गया था, तब व्यास जी ने नेहरू जी के सम्मान में इन कविताओं की रचना की थी जिनके प्रमुख अंश इस प्रकार हैं :–

जाहिर जौहर जीवित जाति कौ,
जागृति जीवन जाग जवाहर ।
शान्ति स्वतंत्रता साम्य स्वरूप,
अनुपम पुण्य प्रयाग जवाहर ।
सत्य स्वदेश कौ साधक सिद्ध,
सदा अनुराग कौ राग जवाहर ।
भव्य विभूषण भूषित भौनन,
भारत भूमि कौ भाग जवाहर ।

X X X

जीवन ज्योंति की आग जवाहर,
सत्य संदेश सुराग जवाहर ।
विश्व विमोहन लाग जवाहर,
'व्यास' विनोद को बाग जवाहर ।
राजत राग विराग जवाहर,
सर्वस वैभव त्याग जवाहर ।
आरत कौ अनुराग जवाहर,
भारत की शिर पाग जवाहर ।

X X X

देख स्वदेश की दीन दशा,

उठयौ औचक नींद सों जाग जवाहर ।

वस्त्र विदेशी की हौलिका हेतु,

भयौ अति आतुर आग जवाहर ।

व्यूह में बैरिन चीर धस्यों,

नरसिंह सौ वीरता पाग जवाहर ।

पो रण रंग रंग्यौ अंग – अंग

उमंग सौ खेलत – फाग – जवाहर ।

X X X

दीनों का दुलारा दुखियों का प्राण प्यारा – धन,

जीवन जवाहर है कृषित किसानों का ।

मोहर–मही का श्री का शौहर स्वतन्त्रता का,

गौहर का गौहर है जौहर जवानों का।

X X X

क्राँति में अनन्त शान्त महासागर सा,

शान्ति महासागर में क्राँन्ति की लहर सा ।

मातृ – मणि मुकुट ह्रदय धन हिन्दियों का,

जालिमों को जाहिर जवाहर जहर सा ।

X X X

राष्ट्र सभा कौ प्रधान है राष्ट्र कौ,

प्रांण जवान की जान जवाहर ।

सत्य की शान है मातु कौ मान है,

भारत कौ अरमान जवाहर ।[6]

इस कविता को सुनकर नेहरू जी इतने द्रवित हुये थे कि उन्होनें अपने उद्बोधन में कहा था कि – "मैं राष्ट्रकवि घासीराम व्यास के राष्ट्रीय और उनकी राजनीतिक् विचारधारा की तारीफ करता हूँ ।" यही से सुकवि घासीराम व्यास राष्ट्रकवि बने ।[7]

रूकमणी मंगल :–

विदर्भ प्रदेश में कुंडलपुर नामक नगर के राजा भीस्मक धर्मशील, बल, बुद्धिमानी एवं प्रजाप्रिय थे । उनके पाँच पुत्र और एक रूपवती रूकमणी नाम की कन्या थी, जो सर्वगुण सम्पन्न थी । उनका नीति निपुण एवं रण कुशल ज्येष्ठ पुत्र रूक्म अपनी बहिन के लिए उर्पयुक्त वर की खोज में निकला उसने बुन्देलखण्ड के वैभवशाली चंदेरी राज्य के नृप शिशुपाल को अपनी बहिन के लिए उर्पयुक्त वर पाया ।

इन्हीं दिनों नरेश भीस्मक के दरबार में संगीत के एक प्रसिद्ध गायक ने श्रीकृष्ण के रूप में सौन्दर्य का वर्णन सुनाया, जिसे सुनकर रूकमणि श्रीकृष्ण के रूप पर आशक्त हो गयी और उन्होनें श्रीकृष्ण को एक पत्र लिखकर अपनी हार्दिक भावना विवाह के उद्देश्य से व्यक्त की । कविवर व्यास जी ने 'रूकमणि मंगल' काव्य रूकमणि की कृष्ण के प्रति अनन्य श्रद्धा का सुन्दर चित्रण इस प्रकार प्रस्तुत किया :–

सुन्दर सरस मन भावना सुहावन जो,
पावन परम पुण्य गाथा अभिराम की ।
मोद सरसावन विनोद वर सावन है,
मरति मनोज ओज शोभा सुख धाम की ।
'व्यास' कहैं जा दिन ते श्रवण सुनी है मंजु,
रूक्मिणि सुगान तान गुण गण ग्राम की ।

ता दिन तें भोरी ब्रंजचंद की चकोरी भई,

चारू चित्त चातकी भई है घनशाम की ।

X X X

विनय विनीत यह बिसर न जावै कहूँ,

वेग ही विचार सुख साधन सरसिबौ ।

परम पुनीत प्रीत पूरण प्रतीत होवै,

स्वीकृत सुजान पीय पायन परसिवौ ।

'व्यास' कहै निपट नजीक लग्न आई अब,

विलम न कीजो क्षण एक हूँ अरसिवौ ।

के हूँ भाँति फेर कोऊ काम नहिं ऐ है जब,

खेती सूख जैहै घनश्याम कौ बरसिवौ ।

X X X

परम सुजान हो हमारी यह थोरी लिखी,

जांनवी विशेष हित मानवी बढ़ाय कें ।

पर यह बीनती विनीत परतीत लाय,

सुलभ उपाय ध्यान दीजियों दृढ़ाय के ।

'व्यास' कहैं में तो जब आय हो भवानी मठ,

पूजन सखीन यह सुमित मढ़ाय के ।

तब तुम आयकें लिवाय मोंहि जैयो संग,

द्वारिके समोद श्याम सुरथ चढ़ाय के ।[8]

कविवर व्यास बुन्देली ब्रजभाषा के मर्मज्ञ रहे है । उपर्युक्त पदों में भाव साम्य की दृष्टि से उनके कवित्व में स्वभाविकता, मनोवैज्ञानिकता एवं

भावों में आतुरता के भाव दृष्टव्य हैं । ऐसे आचार्य कवि है व्यास जी, जिनकी कलम से न जाने कितने भाव – विभाव उभरे है, जिनकी समता का अन्य कोई कवि नही दिखाई देता है । राष्ट्र प्रेम और भक्ति भावना का उनके काव्य में मनोहारी सांमजस्य देखने को मिलता है ।

व्यास सुधा :–

साहित्य के क्षेत्र में जो कवि जीवन की विभीषिकाओं का जितना संजीव और सशक्त चित्रण कर सकता हैं, वह उतना ही दीर्घजीवी हो सकता है, लेकिन जिस कवि ने जीवन का यह विष स्वयं पिया हो उसे नीलकंठ के अतिरिक्त और क्या कह सकते ? व्यास जी ऐसे ही राष्ट्रीय चेतना के प्रेरणा स्रोत थे । क्योंकि इनके ह्रदय में बलिदान की जो भावना निहित थी वह भौतिक सुखो से कोसो दूर है । व्यास जी ने प्राचीन गौरव गरिमा के गान द्वारा जन–मानस तक अपना स्वतन्त्रता का उद्घोष इस प्रकार पहुँचाया :–

उन्नत मस्तक सुखद वीर पंजाब हमारा,
नानक गुरू गोविन्द जहाँ लेकर अवतारा ।
अत्याचारी यवन राज्य तस नस कर डारा,
वीर हकीकत देश धर्म हित स्वर्ग सिधारा ।
बालक मोहन मदन सम हुए जहाँ बलिदान है,
अगुआ लाला लाजपत बने आज मेहमान है ।[9]

X X X

उस समय बिट्रिश शासन ने देश तथा हिन्दू जाति की गरिमा को अधोगति तक पहुँचा दिया था । राष्ट्रभाषा हिन्दी को उपेक्षित किया जा रहा

था, तब व्यास जी नें भारत को जगाकर स्वतन्त्रता का मंत्र इस प्रकार दिया :–

जयति ब्रहम वर विरत ब्रहम वर विरति विचारी,
अवध पुरी अनुरक्त आदि कवि के अवतारी ।
जय हिन्दी–हिन्दू–हिन्द के हितकर पुरूष प्रधान हो ।[10]

स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों के प्रति व्यास जी के ह्रदय में अटूट श्रद्धा थी उन्होंने भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की प्रथम दीप शिखा महारानी लक्ष्मीबाई के प्रति अपने श्रद्धा सुमन इन शब्दों में व्यक्त किए :–

तरूण प्रताप मान तरनि प्रताप तेरा,
तप रहा विश्व में विमोह तम खोता है ।
तेरा यश चन्द्र सुधा सींच वसुधा में 'व्यास',
त्याग तप वीर बलिदान बीज बोता है ।[11]

राष्ट्रकवि घासीराम व्यास ने देश भक्ति पूर्ण राष्ट्रीय चेतना के सम्पूर्ण सोपानों का बड़ा ही सजीव चित्रण किया है, इन्होनें देश के स्वतन्त्रता संग्राम के अगुआ महात्मा गाँधी, जवाहर लाल नेहरू, सुभाष चन्द्र बोस, पं0 विजय लक्ष्मी, चन्द्र शेखर आजाद, जैसे प्रिय देश भक्तों को एक ही स्थल पर भाव विभोर हो अपनी कविता के माध्यम से इस प्रकार स्मृत किया है :–

भई रोशनी सारे जग में गाँधी हिन्द सितारे की वीर जवाहर प्यारे की ।
प्राण भेंट भी कमला कर गयी देवी देश हमारे की ।
सुनकर हाँक सुभाष चन्द्र की दम गई अत्याचारे की ।
विजय लक्ष्मी कौ तप लख के उठी दुकान दवारे की ।[12]

अर्चना :–

अर्चना काव्य में व्यास जी ने राष्ट्रीय चेतना से सम्बन्धित पदों को विशेष रूप से प्रस्तुत किया है । 28 दिसम्बर सन् 1931 को झाँसी मे इक्कीसवां हिन्दी साहित्य सम्मेलन स्वागताध्यक्ष श्री वृन्दावन लाल वर्मा के सफल प्रयास से आयोजित किया गया था, जिसमें अखिल भारतीय कवि सम्मेलन अयोध्या सिंह उपाध्याय "हरि औध" की अध्यक्षता में आयोजित किया गया था । कवि सम्मेलन में संयोजक महोदय के अनुरोध करने पर घासीराम व्यास ने अपनी 'धान – सरसी' रचना प्रस्तुत की जो राष्ट्रीय विचार धारा की कविता थी, इसको सुनकर कवि सम्मेलन के अध्यक्ष श्री अयोध्या सिंह उपाध्याय हरि औध ने कहा था कि – व्यास जी ने जो बुन्देलखण्ड को कवि भूमि की मान्यता प्राप्त की हैं, उसकी सार्थकता का प्रत्यक्ष उदाहरण अपनी वाणी से प्रस्तुत किया हैं, मैं इसके लिए तरूण कवि 'श्री व्यास' की सफलता की उत्तरोत्तर कामना करता हूँ ।[13]

अवलोकन कीजिए इस राष्ट्रीय विचार धारा की कविता का :–

तन से हो भला कुछ प्राणियों का,
इस से दुःख में सुख पा रहे थे ।
फिर आ इसी गोद में जन्म को लें,
इस आशा भरे पुलका रहे थे ।
मरते–मरते कुछ मातृ–भू की,
पद सेवा करे झुके जा रहे थे ।
अड़ै आन पै धान समान खड़े,
खड़े शान से शीश कटा रहे थे ।
मृदु मानस मोहन मंत्रणा की,
मधु मादकता छवि छा रही थी ।

सरसी सुख से दृग आंसुओं को,

निज पी रही थी, बलि जा रही थी ।

दु:खी दीनौं के पालने की ध्वनि में,

उर के घने घाव छिपा रही थी ।

जग के उपकार में लाड़िले यें,

निज गोद के लाल लुटा रही थी।[14]

कांग्रेस मंत्री श्री रमानाथ त्रिवेद्वी ने दिनांक 2 मई सन् 1932 को मऊरानीपुर के समीप कांग्रेस कार्यकत्ताओं की एक बैठक बुलाई जिसमें यह निश्चित किया गया कि मऊरानीपुर में एक किसान कांन्फ्रेस का आयोजन किया जाना है और जिसके अतिथि पं0 जवाहर लाल नेहरू होगें । इस कांन्फ्रेस का आयोजन मऊरानीपुर में नझाई बाजार में किया जाना सुनिश्चित हुआ, परन्तु जैसे ही अंग्रेज सरकार को इसकी जानकारी प्राप्त हुई उन्होनें मऊरानीपुर में सभा करने पर 144 धारा लागू कर दी, लेकिन राष्ट्रकवि घासीराम व्यास ने अपनी सूझबूझ से सुखनई नदी के किनारे ईसुरी की फागो का आयोजन किया । अंग्रेज पुलिस नझाई बाजार में किसान कॉन्फ्रेस को रोकने के लिए पहरा देती रही और इधर ईसुरी फाग सम्मेलन में नेहरू जी ने आकर सभा को सम्बोधित किया और इसी सभा में व्यास जी ने अपनी इस कविता का पाठ किया :–

यदि हो जाते संगठित सभी,

होते दु:ख क्या संघठित कभी ।

भारत समृद्धि साधन होते,

तो सुख संभव संभवित अभी।

जगमग जगती जगती तल में,

नव जीवन जागृति ज्योतिमान ।

कितने उदार कितने महान,

कितने महान हो, हैं ! किसान ।[15]

इस कविता को सुनकर नेहरू जी को बरबस ही कहना पड़ा था कि अगर भारत के किसान एक जुट हो जाये तो वह दिन दूर नहीं जिस दिन हम आजाद भारत में साँस लेगे ।

रामचरण हयारण 'मित्र' अपनी पुस्तक 'राष्ट्रकवि घासीराम व्यास व्यक्तित्व कृतित्व' के पृष्ठ संख्या 73 पर लिखते है कि व्यास जी की बुन्देलखण्ड विषयक रचनायें इतनी लोकप्रिय और आकर्षित सिद्ध हुई की उनको मूर्धन्य लेखक यशपाल जैन, हरगोविन्द गुप्त ने 'हिन्दुस्तान' तथा 'नवभारत टाइम्स' में एवं डा0 गनेशी लाल बुधोलिया, गौरीशंकर द्विवेदी, साहित्य महोपाध्याय श्याम सुन्दर बादल आदि अपने लेखो को सुकवि, प्रेमी अभिनन्दन ग्रन्थ एवं पत्रिका 'वाणी' आनन्द, मधुकर आदि में इनको सम्मानित उच्च स्थान प्रकाशन की दृष्टि से दिया । व्यास जी की बुन्देलखण्ड पर यह रचना काफी लोकप्रिय थी अपने समय में :–

जिसके द्धशुचि सपूत 'चम्पतरा' से दबंग 'दारा' था हारा ।

जहाँ बुन्देलों ने उच्च स्वर आजादी का मंत्र उचारा ।

स्वाभिमान की आन मान 'औरगजेंब' को था ललकारा ।

झाँसी की 'लक्ष्मीबाई' ने जिस पर निज प्राणों को वारा ।

छक्के छूट गये सहसा अग्रेजो का कुछ चला न चारा ।

पर बुन्देलखण्ड हैं प्यारा .... ।

वन्दनीय अभिवंदनीय भारत माँ की आँखो का तारा ।[16]

भारतमाता को आजाद कराने के लिए भारत माता के सपूत हमेशा अपना शीश हथेली पर रखकर व्यास जी की निम्न पक्तियों का उच्चारणगान करते हुये आजादी के दीवाने हो रण क्षेत्र में कूद पड़ते थे । यथा :

माया है जीवन में लड़ना, उत्पीड़न अत्याचारों से ।
आजादी के दीवाने हैं, खेला करते अंगारो से ।
मनमानस को भुवि भारत के प्रिय भावों से भरना सीखा ।
नौका पतवार बिना दुर्वह भवसागर से तरना सीखा ।
आजादी के शुभ यज्ञ बीच प्रिय प्राणाहुति करना सीखा ।
पावन बलिवेदी पर चढ़कर, हँसते – हँसते मरना सीखा ।
सीखा फांसी से प्यार अधिक सुरभित सुमनों के हारों से ।
आजादी के दीवानें है खेला करते अंगारों से ।
ध्रुव धाम – धरा – धन छोड़ दिया मुह मोड़ दिया सुखसारों से ।
तरूणी से नाता नेह नहीं मन मोहन शिशु सुकुमारों से ।
बिजली की सी उठ रही लहर क्षण –क्षण पर झन–झनकारों से ।
रग – रग में रोये – रोयें से स्वासों के तारों – तारों से ।

भारत स्वतंन्त्र, भारत स्वतन्त्र हो गाते है ललकारों से ।
आजादी के दीवाने हैं, खेला करते अंगारों से ।[17]

श्याम सन्देश :–

श्याम सन्देश काव्य में व्यास जी द्वारा प्रणीत बृजांगनाओं के विशुद्ध अंतर आत्मा और अनन्य प्रेम का उद्घोष मिलता है । इसमें कृष्ण के व्यापक सत्य स्वरूप का तादात्म होता है , जिससे उद्वेलित होकर उधव उनके साधक बन जाते हैं, उधव ज्ञान के प्रबल झकोरों से उद्वेलित होकर

साधना की दृढ़ निष्ठा में प्रविष्ठ हो रस – माधुरी से प्रवाहित होकर प्रेमानुरागियों के ह्रदयों में सत् चित् आनन्द का परम पीयूष प्रदान करते है । 'श्याम सन्देश' का प्रकाशन वि0 सम्वत् 2000 में जमना प्रिटिंग वर्क्स दिल्ली से हुआ, जिसकी भूमिका राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त और समर्थन हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार जैनेन्द्र कुमार जैन ने लिखी । स्वयं इस काव्य के रचियता श्री व्यास जी ने अपनी ब्रज वंदना इन शब्दों में व्यक्त की हैं :–

तरूण प्रणाम ब्रज लतन प्रणाम ब्रज –
बनन प्रणाम ब्रज गिरिन प्रणाम हैं।
'व्यास' बार – बार ब्रज खगन प्रणाम ब्रज,
मृगन प्रणाम ब्रज नंदिन प्रणाम है ।
गोपन प्रणाम ब्रज गोपिन प्रणाम ब्रज,
गौबण प्रणाम ब्रजमोहन प्रणाम है ।
ब्रज को प्रणाम ब्रजरज को प्रणाम ब्रज –
राज को प्रणाम बृजरानी को प्रणाम हैं ।

X X X

करहूँ कृपा की कोर हरि, वँधों रहे मन मोर ।
चोरू चरण नख चंद्र कौ, चाहक चतुर चकोर ।
भूलत भटकत भ्रमत हों, विदित न राह – कुराह ।
अब तो केवल आपके, हे हरि हाथ निवाह ।

श्याम स्नेह से सारा ब्रज डूब उठा हैं, गोप –गोपिकायें सभी उनके प्रति और अधिक आकृष्ठ हो उठे, जब उन्होनें ब्रज का त्याग कर दिया । उनके प्रति ब्रज के स्नेह भाव को कवि ने इन शब्दों में व्यक्त किया हैं :–

ब्रज तज आये जबहिं तै, ब्रजपति श्याम सुजान ।

नेह नीर नैनन भरे, ब्रज के करत बरवान ।।

और कृष्ण भी सखियों तथा राधिका के वियोग में आतुर हो उठते हैं, उनकी इस भाव दशा का चित्रण कवि के शब्दों में इस प्रकार हैं :–

आवत ही सुधि संग सखान की,

श्याम सुजान अयान विसारें ।

'व्यास' सनेह सौ गौविन के कबौं,

गोपिन के प्रिय नाम उचारें ।

लेत उसासे हसें कबहूँ निरखे,

नभ कौं कवौं भूमि निहारें ।

बात कढ़ें नहि बैनन ते ढेरे

नैनन तें असुवान की धारें ।

X X X

राधिका–राधिका टेरैं हसें ,

कवौं मौन रहे कबौ आँसू बहावें ।

'व्यास' कहैं इमि दीन दयाल की,

ऊधव देखि दशा दुःख पावें ।

बात कहयौ चित्त चाहें कछु,

पर बैन नहीं मुखतें कहिं आवें ।

बुद्धि विवेक बढ़ावे अयान से,

सोचे सुनें सकुचै रहिजावें ।[18]

कृष्ण के शब्दों में उपयुक्त प्रेम का उत्तर –

सत्य सखा तुम ग्यानी गुनी गुन –

रावरे देखि सवै ही सिहावें ।

'व्यास' कहें अति नीकी कही, हर –

भाँतिन सौं हमहूँ यह चावै ।

छूटे सनेह परयौ कहूँ क्यौ ? कोऊ –

प्रेम करैं हम नेम भुलावै ।

कैसहूँ बे जो न ध्याबै हमे हिय –

सौं तौं उन्हें हमहूँ विसरावैं ।

ऊधव ब्रज की और चल पड़े, गोपियों के हाव – भाव, प्रेम – साधना से प्रभावित होकर अपने मन ही मन सोचते और विचारते चलते चले जा रहे हैं –

लोचन लालस तै उमहै, कब, –

देखें धरा ब्रज की सुख – रासी ?

सोचत जात चले मग ऊधव,

कैसे सुभाग भरे ब्रजवासी ?

कैसे करील के कुज कदम्ब हैं,

कैसे कलिन्दजा – कूल, सुपासी ?

श्याम उपासी बने जिनके रहें,

कैसी वे गोपिका श्याम – उपासी ।

गोपियाँ भी यमुना के तीर करील की कुजों में बैठी प्रेम में विह्ल है । तभी ज्ञानी उद्धव वहाँ जा उपस्थित होते हैं । गोपिकाओ को कृष्ण का रथ आने का सखी द्वारा संदेश मिलता हैं, वे अपने देह की सुध – बुध भूलकर उनके स्वगतार्थ उत्साह मैं दौड़ पड़ती हैं –

चारिहूँ औरतें घेरि रथै सब

पूछे लगीं कुशलात को चीनों ।

ऊधव चौंक चके से जके से,

थके लखि प्रेम को पंथ प्रवीनों ।

आप न आये संदेसोई भौत,

विचार हिये भयौ नेह नवीनों ।

सादर श्याम सखा को समान तें,

श्याम सौ सौगुनौं स्वागत कीनों ।

और ऊधव गोपियों को योग का उपदेश देने लगे –

कहौ काहु कौ कौन ? यहाँ सब झूठौं जगत पसारौ ।

धारौ जोग जुक्ति अनुसारों अपनी मुक्ति सुधारौ ।[19]

और ऊधव के ज्ञानोपदेश से गोपियाँ भड़क उठी प्रत्युत्तर देती हुई वे कह उठी :–

हम योग कुयोग कौं जाने कहा,

रसना रस रास रसालिनी हैं ।

गुन हीन गवारिनी ग्वारिनि हैं,

पर प्रीति प्रतीति की पालिनी हैं ।

द्विज 'व्यास' कहै तुम ऊधौ सुनौ,

सदा सूधी सुचाल सुचालनी हैं ।

भले भूखी रहैं कि चुगैं मुकता,

हम मानस – राज मरालिनी हैं ।

और गोपियाँ ऊधव के ज्ञानोपदेश को धत्ता बताकर उनसे उलझ पड़ती हैं, स्पष्ट शब्दों में उनके योग का खंडन इन शब्दों में कह उठती है :–

है दुखिया ब्रजबाल सबै तिन,

में मुखिया मनु होवन आये ।

सत्य सनेह के सागर में गुन –

ज्ञान कौ नीर निचोवन आये ।

'व्यास' कहै भले भावन सौ घनै –

घावन नौन सौं धोवन आये ।

पावन प्रेम की वाटिका में तुम –

ऊधौ बबूरन बोबन आये ।

योग – वियोग को नकारते हुए वे स्पष्ट शब्दों में ऊधव को अपना उत्तर देती हुई कहती हैं :–

योग कौ सोच न सोच वियोग कौ,

सौच न भोग विभोग भुलानी ।

चिंता नही भई दूबरी देह,

कहा दुविधा भई कूबरी रानी ।

'व्यास' न प्रीति प्रीतित की भीति,

पै श्याम की देख दशा ये दिवानी

दाह दहै हियरे में यही,

हियरे वसिकैं हियरे की न जानी ।[20]

अद्भुत उत्तर हैं, ऊधौ के योग का, साथ ही कृष्ण के वियोग में गोपियों का उपालम्भ भाव, कवि की यह शब्द रचना स्वाभाविक, यथार्थ परक और प्रेरणास्पद हैं :–

हेरती हाय रही नभ और,

किये कुछ प्रीति प्रतीति सहारे ।

फेरती माला रहीं तिहिं नाम की,

याद में भोग वियोग बिसारे ।

'व्यास' कहै तुम्हें दूरि तें देखि कें,

आश कारी पर भाग हमारे ।

सूखत धान पैं तानकें ऊधव,

आनकें योग के पाथर पारे ।[21]

और गोपियाँ तो ऊधौ से कृष्ण के प्रति सनेह की बातें कहने की ही हठ ठान रही हैं :–

योग कुयोग कौ रोग पठायौ,

भली करी योग उन्हें यहीं यातें ।

प्रीति को नीति नई धनश्याम ,

लई सुलई न करौ तुम घातें ।

'व्यास' कहैं बिनती है इती कर

जोर निहोर करौं बहु भातें ।

जो कहिबे रस नाते चहौ तो,

कहौ रसना तें सनेह की बातें ।[22]

और गोपियाँ ऊधौ को खरा सा उत्तर देती हुई उनके योग को स्पष्ट शब्दों में नकार देती हैं :–

जितने मुंह बात सुनो उतनी,

जग जीवन की तन की धन की ।

तुमकौ भला ऊधव काह परी,

हमरे सुख सोच संकोचन की ।

द्विज 'व्यास' वृथा समुझावत हो,

करकै चरचा मनमोहन की ।

अब तो हमने यह ठान लई,

सुनिये सबकी करिये मन की ।[23]

उर्पयुक्त छंदो की विशेषता यह है कि बुन्देली लोकोत्तियों, शब्दों से भाव अभिव्यक्ति अत्यन्त स्वभाविक रूप में कवि ने प्रस्तुत की हैं । बृजागनाओं के आत्म स्पर्शी भावात्मक व्यंग वचनों द्वारा ऊधव की ज्ञान गरिमा का सटीक प्रत्युत्तर देखते ही बनता है । काव्यात्मक अभिव्यंजना जैसे – पानी में आग लगावन आयें, अपुनोई सखिदाम है खोटो, हाथी के दाँत कढ़े सो कढ़े, आदि सुक्तियां, मुहावरों व लोकोत्तियां में देखने को यत्र – तत्र मिलती हैं ।

व्यास जी ने ध्वनि द्वारा मांगे की अभिव्यक्ति अपने छंदों में व्यक्त की है, उनके छंदो के मध्य अंको में उत्पन्न हुई ध्वनि द्वारा भावों की अभिव्यक्ति अपने छंदो में व्यक्त की हैं, उनके छंदो के (मिलन), तीस छै अर्थात, 36 (विलग) दो पै सुन्न अर्थात 20 (विश्वास) दो पे सुन्न अर्थात 20 (विष) आदि । एक उदाहारण इस प्रकार हैं, जिसमें विचार विमर्श के उपरान्त गोपियाँ ऊधों से स्पष्ट भाव व्यक्त करती हुई कह उठती हैं :–

ऊधौ जाय सूधो सो सन्देशों कह दीजो यह,

श्याम तें हमारो कर जोर जुग हीनों हैं ।

जान्यो तीन राशि नव नेही सुख मान्यों हम,

कैसे एक छै पै को स्वभाव तुम लीनो है ।

'व्यास' कहै छे पै तीन भाव चित्त चीनों हम,

कैसे तुम तीस कै समान मन कीन्हों है ।

सुमति सुजान हम दो पै सुन्न दीनों पर –

सुमति सुजान तुम दो पै सुन्न दीनों है ।

और ऊधव की क्या दशा होती हैं, कवि के शब्दों में इस प्रकार :–

काह कहें कछु सोच न पावत,

भावत भाव भये जनु बौरे ।

ज्ञान गुमान के दुर्ग ढहे दृढ़,

लागत ऊधव और के औरे ।

'व्यास कहें' मन मोद भरे कल –

कूल कलिन्दजा कुज के कौरे ।

गोपिन की अनपायन पायन –

की रज शीश लगावन दौरे ।

और ऊधव की इस विनम्रता और सहजता पर गोपियाँ उत्तर देती हैं :–

हाँ हाँ हमे जनि पाप में ठेलहु,

काह करो यह ? ज्ञान बिसारे।

'व्यास' कहें ब्रज बाल गरीवनी,

बैठी पुनीत प्रतीत सहारे।

संग रहो उनके निशि बासर

अधब जू भले भाग्य तुम्हारे ।

जैसे सखा शुचि श्याम के हो तुम,

तैसे ही पावन पूज्य हमारे ।[24]

और ऊधव गोपियों की नेह नदी में डुबकी लगाने लगे, उनकी मनः स्थिति कवि के शब्दों में इस प्रकार हो गई हैं :–

उत्तर देत बन्यो न कछु,

रहिगे मन एक न उक्ति सुझानी ।

'व्यास' कहें दृढ़ ज्ञान गुमान के,

बाँध बँधी हुती मोद प्रदानी ।

गोपिन की ध्रुव – धारना नेम,

उपासना बाढ़ – बढ़ी सरसानी ।

ऊधव की उर नेह नदी नव –

नेनन के मग है उमगानी ।[25]

अभी तक जिन–जिन कवियों ने ऊधव गोपी संवाद लिखे हैं वे भी सब कविवर घासीराम व्यास के उपर्युक्त संवाद के समाने फीके लगते हैं,

ऊधव और गोपियां इनके सवादों में एक दूसरे के प्रति इतने समरस से हो उठे हैं जिसकी सराहना जितनी की जाय उतनी कम है । श्री जगन्नाथ प्रसाद रत्नाकर ऊधव शतक भी भावना की दृष्टि से इसके समकक्ष नही कहा जा सकता । गोपी ऊधव एक दूसरे के प्रति भावनात्मक दृष्टि से इतने तन्मय हो गये है कि उनका भाव तादात्म हिन्दी साहित्य में कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता । जो भी इसको पढ़ेगा वह उनके साथ उसी भाव–अनुभाव में गोता लगाने लगेगा । और अपने ह्नदय में सदा–सदा के लिये आत्मसात कर लेगा धन्य हैं व्यास जी जिन्होंने गोपियों ऊधव और कृष्ण के अंतस्तल में प्रविष्ट होकर उसी भावना में डूबकर इस प्रसंग को लिखकर हिन्दी साहित्य में अपना महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया ।

ऊधव गोपियों को समझा–बुझाकर वापस आते हैं किन्तु अपने उद्देश्य में असफल रहने के भाव सा लिये हुए जब ब्रज भूमि में पैर रखते है तो विचार करते है कि यशोदा ग्वालबाल, गोपियों को यह सब कैसे बताया जा सकेगा, फिर भी कृष्ण का संदेश तो सुनाना ही है, उनकी इस मनः स्थिति का चित्रण कवि के ह्नदय में उमड़े भावनुसार इस प्रकार हैं, यशोदा ने जैसे ही श्याम की कुशल पूछी, ऊधव विचलित हो उठे :–

> श्याम कुशल पूंछन चाहै पर बात न कछु कहि आवै।
> सहज सुभाव गरो भरि आवै नयन नीर उमगावै ।।[26]

और राधा की क्या स्थिति हो गयी ? कवि के शब्दों :–

> श्रवन भनक कछु परी श्याम की सुनत राधिका घाई।
> अति उतकंठित उर कुंठित सी झपट पौर लौं आई ।।

X X X

देखि दशा राधा की ऊधव हिये अधिक अकुलाने ।
बिसराने गुन ग्यान साधना योग विराग भुलाने ।।

X X X

सुनि के श्याम सन्देश धीर धर बोली जसुमति मैया ।
ऊधव ! मेरो तो अधार बस ये ही कुंवर कन्हैया ।।[27]

निःसन्देह कविवर व्यास इस प्रसग में पूर्ण सफल रहे है (गोपी ऊधव संवाद लिखकर वे हिन्दी साहित्य में सदैव के लिए अमर हो गये ।

अप्रकाशित चक्रव्यूह :– अप्रकाशित चक्रव्यूह कविवर व्यास जी ने कुरूक्षेत्र में युद्ध स्थल पर बनाये गये चक्रव्यूह का वर्णन ऐतिहासिक धार्मिक परिपेक्ष्य में किया हैं । यद्यपि इसका आधार महाभारत की कथावस्तु हैं, किन्तु कवि ने अपनी अनुभूति से कथानक को सार्थक और सामयिक बना दिया हैं । चक्रव्यूह की संरचना में वीर योद्धा पूर्ण रूपेण तत्पर हैं, युद्ध के लिए ललकार रहें है । साक्षात् वीर रस अवतार लेता दिखाई दे रहा है । कवि ने व्यूह रचना में सुभटब सैनिकों के उत्साह, वीर भाव और उनके कृतित्व का वर्णन इस प्रकार किया हैं :–

व्यूह को बनाय धाय सुभट समूह लाय,
शंख कौ बजाय द्रोण गर्ज्यो धन घोर में ।
समर सुनाय 'व्यास कहत उठाय हाथ'
सन्मुख सुहाय होय वीर वर जोर में ।
पार्थ बिन हाय यौं पांडव समुदाय करे,
कौन हो सहाय आय विपति हिलोर मैं ।

धीरज बंधाय समझाय पान खाय बोल्यौ,

व्यूह कौ विनाँसू तौ हौ अर्जुन किशोर मैं ।

अर्जुन पुत्र अभिमन्यु युद्ध के लिए सिंह गर्जना करते हुय धर्मराज युधिष्ठर को धैर्य बधाते हुए पुकार उठता हैं :–

ऐ हो धर्मराज महाराज ब्रजराज जू की,

सपथ सुआज कहौं दुहुं कर जोर मैं ।

धीरज बंधाय वीर मत अकुलाय धाय,

दैहौं विचलाय शत्रु सैनहिं विथोर मे ।

कुरू कुल क्रूर दुरयोधन गरूर झूर,

चूर–चूर दैहों कर धूर में लिथोर में ।

कृपहिं कपाऊ द्रोण दिल दहलाऊँ 'व्यास',

व्यूह विनसाऊं तो हू अर्जुन किशोर में ।

अर्जुन युद्ध में उदास धर्मराज को धैर्य बधाते हए कहते हैं :–

धर्मराज होहु न अधीर धीर धारौ उर,

कीजे विसवास सत्य वचन उचारों मैं ।

वरूण सुरेश औ महेश यह रक्षा करें,

तौ हूँ चक्रव्यूह चक चूर कर डारौं में ।

जननि सुभद्रे 'व्यास' अर्जुन सुनाई यह,

व्यूह कथा गर्भ मांझ सुन्यौ भेद सारौ में ।

समर सिधारौं शत्रु सैन कों संहारों कुल,

कीर्ति बिसतारौ पांडु सुयश पसारौ में ।[28]

अभिमन्यु द्रोण को अश्वस्त करते हुए कहता है :–

अर्जुन नहीं तौ कछु हरज न मानो आप,

मेरी अर्ज न मानो देत उत्तम सलाहू मैं ।

चाचा जी भला हूँ तुब कृपा कोर चाहू बीच,

रन अचला में आज समर चला हूँ मैं ।

दुमर्ति दुर्योधन के दर्प कौ दलै हौं दौरे,

दुमर्ति दुर्योधन के दलन दला हूँ मैं ।

कृपहिं कपाऊँ द्रोण दिल दहलाऊ 'व्यास',

व्यूह बिनसाऊं तौपे अर्जुन लला हूँ में ।

द्रोणाचार्य अभिमन्यु को ललकारते हुए जीवन रक्षा की सलाह और चेतावनी देते हुए कहते हैं :–

दूजे द्वार द्रोण देख ताहि ललकारौ आय,

ऐरे कुल तेरा कर हाय हाय रोवैगा ।

न कर नादानी अभिमानी अभिमन्यु बाल,

नाहक ही हाथ जान अपनी से धौबेगा ।

'व्यास' चक्रव्यूह साज कीन्हीं हैं प्रतिज्ञा मैंने,

कोई पाण्डवों का वीर आज रण सोवैगा ।

मान लै सला कों लौंट अर्जुन लला तूं देख,

आगे को चला तो तेरा भला नही होवेगा ।

किन्तु अभिमन्यु द्रोणाचार्य की सीख से प्रभावित हुए बिना उनसे निडर भाव से अपना मत व्यक्त करते हुए उन्हें आश्वस्त करते हुए कहता हैं :–

दीन्ही नीक सीख सोच गुरू महाराज मोहिं,
पुत्र कौन कौ हूँ आप नेक न विचारौ हैं ।
अर्जुन बिना न भेद पै है कोऊ वीर या को,
सोच ये उपाय यों अनर्थ निरधारौं हैं ।
संभलों गुरूजी निज अस्त्र को संभारों 'व्यास'
कह अभिमन्यु वीर रण ललकारौ हैं ।
सैन को संहारौ मारौं सुमर महारथीन,
व्यूह कौ बिदारौं प्रण आज ये हमारौं हैं ।

अभिमन्यु की वीरता से द्रोणाचार्य सहित सभी हतप्रभ हो जाते हैं, अंत मैं अभिमन्यु चक्रव्यूह में प्रविष्ट हो जाते हैं और अपनी वीरता से सभी को आकृष्ट करते हैं । वह अपनी वीरता से दुर्योधन के सभी वीर सेनानियों को परास्त कर अपनी विजय पताका फहराता हैं, कवि ने इसका ओजस्वी चित्रण इस प्रकार किया हैं :–

तब रविनंदन पद वंद भृगुनंदन के,
स्यंदन बढ़ायौ अग्नि बाण को छुड़ायौ हैं ।
'व्यास' अभिमन्यु जल बाण कौ चलायै सब –
अग्नि कों बुझायौं दल कौरव डुबायौं हैं ।
कर्ण पौन बाण अभिमन्यु सर्प सर्प सर,
कर्ण कुद्ध वर्हि सर सर्प सब खायो हैं ।

कृष्ण सो जो पाये अभिमन्यु सौ चलाये,

अस्त्र रूड मुंड ढायें तोप धरन छिपायौ है ।

x x x

अभिमन्यु क्रोध बान कर्ण उर मारे तान,

साठ सर आन छाड़े द्रोण गुरू अंग कौं ।

दस कृप होय तीर द्रोणी उर असी वेध,

पांच सर छाड़े भूर श्रवहिं कुढंग कौ ।

नव सर त्यागे मोह दुःसासन भागे जाहिं,

काटे है पता के ध्वजा लागे रथ भंग कौ ।

'व्यास कहै कीन्हों युद्ध प्रबल प्रबुद्ध वीर,

चौपट कियो है सात लक्ष चतुरंग कौ ।

अभिमन्यु शत्रुओं से घिर जाता है । अस्त्रहीन हो जाता है । ऐसी स्थिति में शत्रुओं का तीव्र प्रहार उसे सहन करने के लिए विवश हो जाना पड़ता हैं । जैसे ही अभिमन्यु कुरूराज दुर्योधन पर तीव्र प्रहार करने के लिए तत्पर होता है, वैसे ही द्रोणाचार्य ने उसे एक ही अस्त्र में बाण विहीनकर दिया, ऐसी स्थिति में शत्रुओं का प्रहार एक साथ उस पर होने लगा । हुआ यह :-

कुपित चल्यौ कुरूराज पहं करन प्रहार प्रचंड ।

द्रोण चंड सर छड़ किय खग काट बै खंड ।

तब अभिमन्यु द्रोणाचार्य के प्रति क्रुद्ध होकर कह उठता है :-

सत्य है अधर्म से कि निहित कियो है मोहिं,

पर सब शीघ्र ही कुकर्म फल पावेगें ।

ज्वलित प्रचंड क्रोध अग्नि मध्य पाण्डवों की,

तत्क्षण ताय तूल तुल्य जर जावेगे ।

मै तो कर कर्म आज अमर बनूंगी तुम –

और अन्य मेरे रिपु कुटिल कहावेगे ।

सुनिय चरित्र 'व्यास' परम पवित्र मित्र,

शत्रु सर्वत्र आंसू सकल बहावेगे ।[29]

वीर - कर्ण :–

इस शीर्षक से व्यास जी की अनेक रचनाएँ उल्लेखनीय हैं, एक दो छंद इस प्रकार है :–

मार–मार अरि सैन पर शर अति कठिन कराल ।

करौ पांडवन कौ विकल जो दिनकर को लाल ।

गहव गुमान हनूमान कौ मिटाऊँ काट,

कर कौ पताकौ दिव्यता कौ जो समर कौ ।

रथ कौं विदार मार पारथ महारथि कौं,

शीश लै सजाऊँ शुभ हीय हार हर कौ ।

'व्यास' कहैं ल्याऊँ रण पकर गुबिन्द हूँ कौ,

सुयश बढ़ाऊ दुरयोधन प्रवर कौ ।

ऐतौ पुरूषारथ करूंगौ आज भारत में,

तौ पे सत्य सुबन दुलारौ दिनकर कौ ।[30]

X X X

जाको गाय गाय वेद पावत न भेद कबों,

शेष शारदा हूँ सुख सुकृति सुचीने हैं ।

कर–कर यतन अनेक भांति भांतिन सौं,

जाकौ ऋषि रहत सदा ही ध्यान कीने हैं ।

'व्यास' कहैं मुदित महेश मन मानस के,

मंजुल मराल जौन परम प्रवीने हैं ।

सोई आज पारथ के काज के सभारवे कौं

रथ की सुडारे कर कंजन तें लीने हैं ।[31]

X X X

कीनौं कर्ण विक्रम विशाल महाभारत में,

पर गयौ अधिक अंदेशो पाँडवन में ।

चलत उपाय है न कोऊ बेग अर्जुन कौं,

लागे तीर तीखन तमाम तन–तन में ।

'व्यास' कंहें भूल गये हांकिवौ तुरगंन को,

डोरी गहैं रथ की मढ़े हैं मौन मन में ।

चित्रित विचित्र चारू चित्र के लिखे से चित्त,

चकृत चितौत चक्रपाणि बीच रन मैं ।[32]

व्यास जी की रचनायें 'सुकवि' के अनेक अंको में प्रकाशित होती रही है, उन दिनों सुकवि में प्रकाशित रचनायें सम्मान की दृष्टि से देखी जाती थी । सम्पादक 'स्नेही जी' ने सुकवि के माध्यम से सैकड़ों अज्ञात–अल्पज्ञात कवियों को प्रकाश में लाने का कार्य किया । व्यास जी की एक दो ऐसी रचनायें यहाँ उद्धृत करना उपर्युक्त है, ताकि उनकी महत्ता एवं गरिमा का आंकलन किया जा सकें । 'शारदाभिनंन्दन' कविता इस प्रकार हैं :–

अमित अनंद प्रद पद अरविन्दन की,

रज मकरंद के मलिन्द मद छाके हैं ।

चारू चित चाहत चकोर चसकीले हम,

द्युति नख चंद की अमंद प्रतिभा के हैं ।

दृढ़ व्रत नेमी पुण्य प्रेमी वसुधा के 'व्यास'

चातक चतुर स्वांति पानिप सुधा के हैं ।

सील सुख सारदा के सुमति विसारदा के,

सेवक सदा के जगदम्ब सारदा के हैं ।[33]

X X X

गरन गुमान लागै चौंक चंचलान हूँ के,

जान लागै घहर घनेरे घन घूम घूम ।

मन मुस्कान लागै कंज विकसान लागै,

गुन गन गान लागै चंचरीक चूमचूम ।

'व्यास' कहैं सरस सुहान लागै बागवन,

ललित लतान लागैं लौन तरू लूम लूम ।

छान लागै छहर छपाकर छटान छिति,

आन लागी शरद सलौनी ऋतु झूम–झूम ।[34]

X X X

दिसि दिसि फैल रही दीपत दुचंद द्युति,

चारू चांदनी न वर वसन बिलौवे है ।

कांस कौ विकास परिहास परिहास भाखै,

द्विजन विलास 'व्यास' अभिलाष दौवे है ।

खंजन दृगन रस रंजन रंगीले रूप,

गुरूपति ज्ञान राज हंस गुन गौबे है ।

सरद सुहाग भरी भाग मौन भारती कौ,

चाहक चकोर है मयंक मुख जौबे है ।[35]

इस प्रकार कविवर व्यास जी ने समय–समय पर कवि सम्मेलनों, फड़ साहित्य सम्मेलनों तथा गोष्ठियों में कवियों के मध्य अपनी ओजस्वी, सम–सामयिक तथा आचार्यत्व प्रदर्शित करने वाली उत्कृष्ट रचनाओं का पाठ किया ।

रीतकालीन कवियों की भांति व्यास जी ने समय–समय पर ऋतुओं का भी काव्य के माध्यम से वर्णन किया है । प्राचीन कवियों की परम्परानुसार व्यास जी ने भी इसी भाव से अनुपालन किया है । ज्ञातव्य है कि वर्षा का प्रभाव ग्रीष्म और शरद का प्रभाव हेमन्त एवं शिशिर ऋतु तक रहता है । शिशिर ऋतु में माघ शुक्ल पंचमी (बंसत पंचमी) को सरस्वती का जन्म होता है । इस कारण उसी समय से बंसतोत्सव प्रारम्भ हो जाता है, यद्यपि वसन्त ऋतु चैत्र मास से प्रारम्भ होती है, मुख्यतः यही कारण है कि प्राचीन कवियों का जो साहित्य उपलब्ध होता है, वह सर्वाधिक बंसत, वर्षा और शरद ऋतु की अभिव्यक्ति का ही प्राप्त होता है । यहाँ शिशिर, हेमन्त ऋतु के प्रभाव का चित्रण व्यास जी ने इस प्रकार किया है :–

आवत हिमन्त हिय हुलस उठी है निसि,

दिसन दुहाई फिरी हिम हिमकर की ।

चटुल चकोर चाह चौजुनी चढ़ी है चित,

दादुर नकीवन की छाती धक धरकी ।

'व्यास' कहैं कांस बांस फूल्यौं न समावै हीय,

कंजवन दाहक तुषार खर बर की ।

सीत भीत भौनं ते न कौन चाहैं कोऊ,

मंद भई पुन्य प्रभी दिव्य दिनकर की ।[36]

रामचरण हयारण 'मित्र' के अनुसार :– "प्राचीन कवियों ने केवल भाषा मात्र को ही मान्यता प्रदान की है, क्षेत्रीय भाषा विवाद को नहीं । ऐसा ही प्रयोग मुझको स्व0 व्यास जी के काव्य में दृष्टिगत हुआ है।"[37]

चन्द्रलोक की यात्रा :–

व्यास जी का अधिकाँश काव्य साहित्य अप्रकाशित ही रह गया । इस साहित्य को तत्कालीन कवियों एवं साहित्यकारों ने कठंस्थ भी कर लिया था, किन्तु समय के साथ वह भी चला गया । तत्कालीन पत्र–पत्रिकाओं में भी प्रकाशित होता रहा, किन्तु वह भी बहुत कुछ अप्राप्त ही है । चन्द्रलोक की यात्रा भी उनका अप्रकाशित रहा, किन्तु वह मऊरानीपुर निवासी श्री मातादीन पंखी के सौजन्य से प्राप्त हो सका है । व्यास जी की विज्ञान में भी रूचि रही है, उन्होनें चंद्रलोक की कल्पना करके वहाँ के देवी – देवताओं के क्रिया – कलापों, जीवन – दर्शन, वैभव, प्रकृति चित्रण तथा साजबाज, गायन, बाघ, वहाँ के राजपाट, दरबार आदि का चित्रण अपनी कुशल लेखनी से किया है । कतिपय छंद उनकी इस काव्य कला की महत्ता को स्पष्ट कर रहे है । चन्द्रलोक की यात्रा कवि कल्पना पर आधारित हैं, उसने अपनी स्वभाविक कल्पना में यह यात्रा की है और उसमें उसने वहाँ के वैभव को कैसा देख उसका सजीव काल्पनिक चित्रण इन पदों में किया है :–

एक ओर वरूण कुबेर दिग्पाल बैठे,

एक ओर गन्धर्व किन्नरो का राज्य था ।

रम्भा रति मेनका तिलोत्मा खड़ी थी सजी,

सामे प्रतीक्षा में सुरीला साज बाज था ।

ऋतुराज उत्सव मनाने के लिए ही वहाँ,

जुड़ा हुआ दिव्य देवराज का समाज था ।

लिपट लतायें तरूओं से रही झूम–झूम,

नन्दन निकुंज का अनौखा ओज आज था ।

प्रकृति का वैभव देखते ही बनता था । चारों ओर हरियाली फैली थी, कवि ने इस प्रकृति चित्रण का संजीव चित्रण इस प्रकार किया है।

दिव्य द्युति दीपत दिखाई पड़ी आती हुई,

तेजोमयी मूर्ति देव गुरू महाराज की ।

उठके सुरेश ने प्रणाम को झुकाया शीश,

देख पड़ी भाल में कचोट ओट ताज की ।

कौतुक प्रवाह जो तंरगित हुआ तो व्यास,

रोके रूकी हाँसी नहीं क्यो हूँ द्वज राज की ।

निपट निशंक मन मुदित मंयक देख,

हो गयी सतंक बंक भौंहे सुरराज की ।

अप्सरायें रंग–बिंरगी साड़ियाँ पहने हुए खड़ी थी, सुरभित, सुभग, शीतल, समीर बह रही थी, तितलियाँ थिरक रही थी, कोकिलायें कलित बिखेर रही थी, किन्नरियाँ ताल–ताल पर कूक उठती थी, ऐसा था चन्द्रलोक का वैभव ।

देवराज इन्द्र ने चन्द्रमा से असन्तुष्ट होकर उसे मृत्युलोक में जाने का कठोर दंड दिया और आदेश किया कि जब तक तू मेरे लिए वहाँ की कोई अमर भेंट लेकर वापिस आयेगा, तभी तुझे माफ किया जायेगा, और

वह भेंट देव–दुर्लभ अमूल्य वस्तु, होनी चाहिये । विवश होकर चन्द्रदेव को मृत्युलोक में आना पड़ा । जब वह स्वदेश छोड़कर मुत्युलोक में आया तो यहाँ के नर–नारियों की दयनीय दशा देखकर उसे अत्यधिक पीड़ा हुई, यहाँ न विनोद था न शांति, न सुख, बल्कि दुःखो का अपार पारावार था । बड़वाग्नि से पीड़ित नर–नारियाँ झुलस रहे थे, राजा पापाचार में डूबे हुये थे । निर्धन दाने–दाने को तरस रहे थे । धर्म उनका हिसां करना था । जनता करूण – क्रन्दन कर रही थी । कही भी उन्हें सुख–शाँति दिखाई नही दी । एक दिन द्विजराज ने वंद पीजरो में सुकुमार शुक को टें करते तड़फते देखा, बेचारा विवशता से पीड़ित था, तब द्विजराज के माध्यम से कवि लिखता हैं :–

देखते ही द्रवित दयालु द्विजराज हुए,
कील पिंजरे की खोलदी प्रशन्न होहिये ।
खिड़की उधार उड़ पंखे फड़फड़ा के शीघ्र,
सुरभि स्वतंत्र सुधा घूँट सुख के पिये ।
लौटा फिर आके पास बैठ नम्र डाल पर,
सांस ले कृतज्ञ कुछ नाम राम के लिये ।
चारू चन्द्र चरण पखारने की लालसा में,
युगल दृगों से अश्रुविंदु टपका दिये ।
किन्तु बीच में ही शशि ने सहर्ष अंजुली में,
अश्रु बिन्दु ले पयान निज लोक को किया ।
और द्विजराज जाके देव दरबार मध्य,
स्वामि अभिनन्दनार्थ सिर को झुका दिया ।
प्रस्तुत पुनीत भेंट सामने ही देखकर,
उठे शीघ्र देवराज शीतल किया हिया ।

बस–बस यही अमूल्य निधि ऐसा कह,

बिहँस गले से चन्द देव को लगा लिया ।

जहाँ एक ओर स्वर्ग लोक में सभी प्रार्णी मुक्ता भाव से विचरण करते थे, वहीं मुत्युलोक में बंधन वद्य थे, जब चद्र शुक के अश्रु बिन्दु को लेकर स्वर्गलोक पहुँचे तब इन्द्र ने उसकी सरहाना की और चन्द्रमा की प्रशसां करते हुए कहा :–

कलित कलाओं की कलाओं के कलाधार हो,

ओजनीय आज अमरों के अग्रगण्य हो ।

बोले प्रेम गद्‌गद् हो देवराज शशि तुम,

सरल स्वभाव सत्य सुह्रदय अनन्य हो ।

तापित जनो की सुधा सींच सुख देते शुचि,

शीतकर ज्योतिमान् जलानिधि जन्य हो ।

निसिनाथं न्यारे नलिनी के नैन तारे प्यारे ।

चतुर चकोरी के दुलारे धन्य – धन्य हो ।[38]

अद्‌भूत कल्पना है कवि की । सुख दुःख के अन्तर को स्वर्ग – नरक के माध्यम से प्रस्तुत किया है । शीतलता प्रदान करने वाले चन्द्र का इन्द्र ने स्वागत किया और उसके महत्त्व का सही आकलन किया ।

कविवर व्यास जी की ऐसी ही न जाने कितनी रचनाएँ काल के गाल में समा गयी हैं । स्वतंत्रता सेनानी होने के कारण वे प्रायः कारावास में ही रहे । जीवन की कठोर साधना में रत रहने से अपनी काव्य निधि को सम्भाल कर रखने का अवसर ही नही मिला । अपने मित्रों और शुभ चिन्तकों के पास उनकी प्रायः रचनायें पठन–पाठन के लिये रही, उनमें जो

प्राप्त हो सकी, वह आज हम लोगो के समक्ष है और जो अप्राप्त रही वह इधर उधर काल के गाल में समा गयी । वे अपनी रचनाओं का प्रकाशन अपनी अल्प आयु में करा ही नही सके । उनके सुपुत्र ने यह कार्य कर दिखाया और जितना बना वह प्रकाशन के उपरान्त हमारे समक्ष हैं । उनके परम शिष्य श्री रामचरण हयारण मिश्र के प्रयास से तथा बुन्देलखण्ड शोध संस्थान, झाँसी के प्रकाशन से व्यास जी का पर्याप्त साहित्य प्रकाश में आ सका हैं, यह एक पुनीत कार्य ही कहा जायेगा । व्यास जी आचार्य कोटि के कवि थे, अल्प आयु में उन्होनें काव्य की अद्भूत रचना करके सदा–सदा के लिये अमर हो गये ।

'श्याम सन्देश' आध्यात्मिक काव्य – राष्ट्रकवि व्यास जी कृतित्व रीति परम्परा और स्वतंत्रता आन्दोलन दोनों पर आधारित रहा हैं । बुन्देलखण्ड के प्रमुख साहित्यकार एवं कवि डॉ0 कन्हैयालाल 'कलश' ने अपने एक आलेख में बताया है कि सन् 1940–41 ई0 में 'श्याम–सन्देश' की हस्तलिखित प्रति उन्होनें देखी थी, वह तीन भागों में थी । बालकृष्ण को उन्होनें भारत माता के उद्वारक कृष्ण के रूप में पहले भाग में प्रस्तुत किया था । द्वितीय भाग में ऊधव संदेश के रूप में और तीसरे खण्ड में उन्होनें गोपी कृष्ण मिलन के पद्य लिखे थे । यह भाग ब्रहम, जीव और माया का अद्भूत विश्लेषक था । यह कृति एक महाकाव्य थी । तत्कालीन कवि गोविन्द दास 'विनीत' की प्रिया या 'प्रजा' और मैथलीशरण गुप्त की 'साकेत' तथा अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध का 'प्रिय प्रवास' से उसकी तुलना की जा सकती थी । परन्तु आज जो अंश श्याम संदेश का उपलब्ध हैं वह विप्रलब्ध विलाप मात्र ही शेष हैं ।[39]

श्री व्यास जी का श्याम सन्देश अन्य भ्रमर गीतों से भिन्न हैं, और इसका आधार भी श्रीमद् भागवत महापुराण के दशम स्कन्ध का भ्रमरगीत

हैं । वह शुद्धा द्वैत वाद पर निर्भर हैं और बल्भाचार्य के अणुभास्य पर भासित भक्ति पर पुष्टि मार्गीय सम्प्रदाय पर प्रतिष्ठित हैं ।

आगे श्री 'कलश' जी लिखते हैं – "श्री व्यास जी के" 'श्याम सन्देश' काव्य की दार्शनिक मीमाँसा करने के लिये अध्येताओं को कैवलाद्वैत (शंकर भाष्य) स्याद्वाद (गौत मीगण धर कुंद कुंदाचार्य) विशिष्ठाद्वतैवाद (स्वामी रामानुजाचार्य श्रीभाष्य) और शुद्धादैतवाद (अणुभाष्य) तथा शून्यवाद (बौद्ध) सहित जैमिनीकृत पूर्वमीमांसा उत्तर मीमांसा का गहन अध्ययन करना आवश्ययक हैं । ऊधव के कथन का विशेष अर्थ कैवला द्वैत वाद के आधारी "सत्यं ब्रम्ह जगन्मिथ्या" हैं । इस गूढ़ विषय का निर्णय परमहंस श्री स्वयं न कर काले भ्रमर "कृष्ण संगम" शब्द देकर 'ध्यायन्ती' से ब्रम्ह का साक्षात्कार जीव (गोपियों) को कराने का द्योतक हैं । कविवर व्यास अपने काव्य में स्वयं शुक्राचार्य का कार्य सम्पादन करते हैं और गोपियों के मुख से कहलाते हैं ।[40]

महाकवि व्यास जी के श्याम सन्देश के 34 शीर्षक हैं । यथा – 1 आत्म परिचय, 2 – ब्रजवन्दना, 3 – आब्हान, 4 – ब्रजांगनाओं का विकल्प, 5 – श्याम स्नेह, 6 – उद्धव – उलझन, 7 – नेहनिकुँज, 8 – विह्वलता, 9 – सनेह का मोह, 10 – प्रेम का उत्तर, 11 – उधव ब्रजगमन, 12–स्नेह की पगडंडी, 13– श्याम सुरति, 14 – उद्धव स्वागत, 15– उद्धव योग युक्ति, 16– गोपियों की व्यंग वाणी, 17– अनन्य प्रेम, 18– योग के पाथर, 19–भूलने में याद, 20 – ह्रदय की पीर, 21 – हाथी के दाँत, 22 – प्रेमपपीहरी, 23 – प्रेम का नेम, 24 – श्याम का सोच, 25 – प्रीति की चौसर, 26 – प्रेमोद्वार, 27 – उद्धव की दशा, 28 – गोपियों का उत्तर, 29 – उद्धव की नेह नदी, 30 – प्रेम प्रभाव, 31 – श्याम उद्धव मिलन, 32 – उद्धव के हदयोद्गार, 33 – ब्रज की दशा, 34 – ज्ञान का ज्ञान । इन

शीर्षकों का अर्थ पूर्ण शुद्धाद्वैत को सुस्पष्ट करता हैं । ऐसा जान पड़ता हैं कि व्यास जी ने अष्टयाम और अध्वविनिर्णय का गहन अध्ययन करने के पश्चात् अपने इस महाकाव्य का संस्कार किया होगा जो कि पूर्ण दार्शनिक आध्यात्मिक बन गया हैं ।[41]

व्यास जी की कृति व्यास सुधा में प्रारम्भ में मंगलाचरण, विविध देवी देवताओं की वंदना एवं गौरी, शंकर, रामायण महिमा, तुलसीदास स्तवन, दीन और दीन बन्धु ऐसी अद्भुत काव्य चारूता मय रचनाएँ हैं । इसके साथ ही कतिपय रचनाएँ सांस्कृतिक एवं सामयिक हिंडोरा, बधाई, कजरिया, जल बिहार प्रभृति रचनाओं का संकलन हैं । इनके अतिरिक्त व्यास जी की राष्ट्रीय चेतना से परिपूर्ण उत्प्रेरक एवं उत्कृष्ट रचनाएँ भी समाहित हैं । यथा – महारानी लक्ष्मीबाई, स्वामी श्रद्धानंद, आत्मोसर्ग ऐसी देशभक्ति परिपूर्ण रचनायें समाहित हैं । 'व्यास–सुधा' में जेल में मूंज बटना, निराले राजवेदी, सैनिक की विदाई, तथा देश की पुकार जैसी काव्य रचनाएँ अत्यंत मार्मिक एवं सटीक हैं ।[42]

व्यास सुधा में नायिका भेद यथा मुग्धा नायिका, मध्या नायिका, वासक नायिका, खंडिता नायिका के द्वारा सम्बन्धित कथन प्रस्तुत किए गये हैं । व्यास जी ने नायिका भेद भाव नख शिख से सम्बद्ध प्रचुर साहित्य लिखा हैं । जिसमें पर्याप्त मौलिकता तथा मार्मिकता तथा नूतन उद्भावनाओं का समावेश हैं अंलकारों में यमक, परिकर, मीलित, संदेह, परिकरांकुर आदि मिलते हैं । शब्द रचना में तत्सम, अर्द्धतत्सम, अरबी, फारसी, बुन्देली एवं ब्रजभाषा, खड़ी बोली, अंग्रेजी सभी शब्दों का चयन किया गया हैं । प्रसाद, माधुर्य, ओज, गुण से मुक्त भाषा हैं । अभिधा, लक्षणा एवं व्यंजना का भी प्रयोग हुआ हैं ।

उपर्युक्त तथ्यों की जानकारी के अतिरिक्त कविवर व्यास जी के व्यक्तित्व कृतित्व का मूल्यांकन तथा जिनकी सम सामयिक रचनाओं की उपादेयता आदि के लिये अनेक लेख और काव्य समीक्षा के साथ – साथ श्री रामचरण हयारण 'मित्र' की कृति व्यास जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व तथा अन्य सम्पादित रचनाओं में 'व्यास–यश–सिंधु' तथा व्यास श्रद्धाजंलि अंक का भी प्रकाशन हुआ हैं । जिसमें सुयोग्य लेखकों एवं कवियों ने व्यास जी के विभिन्न पक्षो पर अपने मंतव्य प्रस्तुत किये हैं । इस दृष्टि से व्यास जी के व्यक्तित्व – कृतित्व की समग्र जानकारी इनके माध्यम से मिल जाती हैं ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मधुकर वर्ष – 2, अंक – 11, कविता श्रद्धाँजलि, डॉ0 श्याम सुन्दर बादल, राठ ।

2. मधुकर वर्ष – 2, अंक – 29, अगस्त 1942, पृष्ठ – 21 ।

3. बुन्देलखण्ड संस्कृति और साहित्य, पृष्ठ – 98 ।

4. वीर ज्योति – घासीराम व्यास, पृष्ठ – 17 ।

5. वीर ज्योति – घासीराम व्यास, पृष्ठ – 31 ।

6. जवाहर ज्योति – घासीराम व्यास, पृष्ठ – 1 – 8 ।

7. व्यास – यश – सिंधु (राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ) पृष्ठ – 13 ।

8. रूकमणि मंगल – अप्रकाशित – घासीराम व्यास, पृष्ठ – 1–14 ।

9. व्यास – सुधा – घासीराम व्यास, पृष्ठ – 25 ।

10. व्यास – सुधा – घासीराम व्यास, पृष्ठ – 11 ।

11. व्यास – सुधा – घासीराम व्यास, पृष्ठ – 18 ।

12. व्यास – सुधा – घासीराम व्यास, पृष्ठ – 38 ।

13. राष्ट्रकवि घासीराम व्यास का व्यक्तित्व एवं कृतित्व – रामचरण हयारण 'मित्र' – पृष्ठ – 39 ।

14. अर्चना – घासीराम व्यास, पृष्ठ – 71 ।

15. अर्चना – घासीराम व्यास, पृष्ठ – 19 ।

16. अर्चना – घासीराम व्यास, पृष्ठ – 61 ।

17. अर्चना – घासीराम व्यास, पृष्ठ – 65–67 ।

18. राष्ट्रकवि घासीराम व्यास का व्यक्तित्व एवं कृतित्व – रामचरण हयारण 'मित्र' – पृष्ठ – 134–139 ।

19. राष्ट्रकवि घासीराम व्यास का व्यक्तित्व एवं कृतित्व – रामचरण हयारण 'मित्र', पृष्ठ – 140–143 ।

20. राष्ट्रकवि घासीराम व्यास का व्यक्तित्व एवं कृतित्व – रामचरण हयारण 'मित्र', पृष्ठ – 144 ।

21. राष्ट्रकवि घासीराम व्यास का व्यक्तित्व एवं कृतित्व – रामचरण हयारण 'मित्र', पृष्ठ – 145 ।

22. राष्ट्रकवि घासीराम व्यास का व्यक्तित्व एवं कृतित्व – रामचरण हयारण 'मित्र', पृष्ठ – 146 ।

23. राष्ट्रकवि घासीराम व्यास का व्यक्तित्व एवं कृतित्व – रामचरण हयारण 'मित्र', पृष्ठ – 151 ।

24. श्याम–सन्देश – घासीराम व्यास, पृष्ठ – 151 – 153 ।

25. राष्ट्रकवि घासीराम व्यास का व्यक्तित्व एवं कृतित्व – रामचरण हयारण 'मित्र' – पृष्ठ – 153 ।

26. राष्ट्रकवि घासीराम व्यास का व्यक्तित्व एवं कृतित्व – रामचरण हयारण 'मित्र', पृष्ठ – 153 ।

27. राष्ट्रकवि घासीराम व्यास का व्यक्तित्व एवं कृतित्व – रामचरण हयारण 'मित्र', पृष्ठ – 154 ।

28. चक्रव्यूह – अप्रकाशित – घासीराम व्यास, पृष्ठ – 1–3 ।

29. चक्रव्यूह – अप्रकाशित – घासीराम व्यास, पृष्ठ – 1 – 23 ।

30. सुकवि – सितम्बर – 1956, पृष्ठ – 23 ।

31. सुकवि – 1929, पृष्ठ – 23 – 24 ।

32. कर्ण – अप्रकाशित – घासीराम व्यास, पृष्ठ – 7 ।

33. सुकवि – अक्टूबर – 1926, पृष्ठ – 16 ।

34. सुकवि – अक्टूबर – 1930, पृष्ठ – 27 ।

35. सुकवि – अक्टूबर – 1930, पृष्ठ – 26 ।

36. राष्ट्रकवि घासीराम व्यास का व्यक्तित्व एवं कृतित्व – रामचरण हयारण 'मित्र' – पृष्ठ – 241 ।

37. राष्ट्रकवि घासीराम व्यास का व्यक्तित्व एवं कृतित्व – रामचरण हयारण 'मित्र' – पृष्ठ – 243 ।

38. चन्द्रलोक की यात्रा – अप्रकाशित – घासीराम व्यास, पृष्ठ – 58 ।

39. व्यास – यश – सिंधु (राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ) पृष्ठ – 58 ।

40. व्यास – यश – सिंधु (राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ) – पृष्ठ – 61 ।

41. व्यास – यश – सिंधु (राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ) – पृष्ठ – 63 ।

42. व्यास – यश – सिंधु (राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ) – पृष्ठ – 76 ।

पंचम अध्याय

- पं० घासीराम व्यास के सम्पूर्ण काव्य में उद्घोषित तत्कालीन सामाजिक, साँस्कृतिक एवं राष्ट्रीय चेतना का मूल्याँकन :

- तत्कालीन युग चेतना का काव्य विकास में राष्ट्रीय, बुन्देलखण्डीय तथा क्षेत्रीय स्थितियों और परिस्थितियों की दृष्टि से काव्य का परम्परागत स्वरूप :

- स्वतंत्रता आँदोलन विषयक रचनाएँ, जन जीवन, कार्य व काव्य के माध्यम से स्वाधीन चेतना में उनकी महती भूमिका का आँकलन :

- राष्ट्रीय आँदोलन के सन्दर्भ में उनका तुलनात्मक मूल्याँकन :

पंचम अध्याय

पं० घासीराम व्यास के सम्पूर्ण काव्य में उद्घोषित तत्कालीन सामाजिक, साँस्कृतिक एवं राष्ट्रीय चेतना का मूल्यांकन :–

छायावाद आधुनिक हिन्दी साहित्य की एक महत्वपूर्ण प्रवृति है । सन् 1915–16 से लेकर सन् 1936 तक हिन्दी कविता क्षेत्र में इसी का आधिपत्य रहा । इसका प्रधान कारण यही था कि सन् 1915–16 के पूर्व की हिन्दी कविता एक दूसरे ही मोड़ पर बह रही थी, जो उसकी उपर्युक्त इच्छाओं पर बुरी तरह अंकुश लगाये थी । लेकिन ऐसा अधिक दिनों तक न चल सका और एक क्षण आया जब कवि ने अपने हृदय की संचित अनुभूतियों को सबके सम्मुख उभार दिया, उसने सारे बंधनों को छिन्न–भिन्न कर डाला, उसने विद्रोह किया, उसके हृदय ने विद्रोह किया और इस विद्रोह के फलस्वरूप उसके कंठ से जो भी गीत निकले, उसके हृदय की जो भी अनुभूतियाँ व्यक्त हुई, उन सबको छायावाद के अंतर्गत रखा जाता रहा ।

डॉ0 नगेन्द्र के अनुसार 'परिचय के स्वच्छन्द विचारों के सम्पर्क से राजनीतिक और सामाजिक बंधनों के प्रति असंतोष की भावना मधुर उभार के साथ उठ रही थी, भले ही उसको तोड़ने का निश्चित विधान अभी मन में ही नहीं आ रहा थां । राजनीति में ब्रिटिश साम्राज्य की अचल सत्ता और समाज में सुधारवाद की दृढ़ नैतिकता, असंतोष और विद्रोह की भावनाओं की बहिर्मुखी अभिव्यक्ति का अवसर नहीं देती थी ।' स्थूल रूप में द्विवेदी युग की कविता की भाव निष्प्राणता कोरी नैतिकता, कोरे देश प्रेम, इतिवृत्तात्मकता, गद्यात्यमकता, उपदेशात्मकता, नीरसता, संकीर्णता आदि के विरूद्ध काव्य क्षेत्र में जो जिहाद हुआ वह छायावाद कहलाया । जिस

प्रकार रीतिकालीन श्रंगारिकता के विरूद्ध भारतेन्दु युग के कवि उठ खड़े हुए थे, या भारतेन्दु युग की कविता की प्रतिक्रिया स्वरूप द्विवेदी युग की कविता ने जन्म पाया था ।

उपर्युक्त परिस्थितियों में नवयुवक कवियों ने अपनी राहें स्वयं बनाईं, अपनी कविता को स्वयं गतिशील किया । उन्होंने कविता को उसका वास्तविक सौन्दर्य प्रदान किया । शनैः शनैः इनका विद्रोह और भी व्यापक हो उठा और भव, भाषा, समाज, नीति, धर्म सभी क्षेत्रों में इसका प्रभाव हुआ । फल यह हुआ कि कविता स्थूल की परिधि से हटकर सूक्ष्म की परिधि में आ गई । भाव, भाषा, अभिव्यंजना सभी क्षेत्रों में नये प्रयोग हुए, हिन्दी का प्रगतिवाद उस प्रगतिशील साहित्यिक आंदोलन की उपज है, सन् 1936के बाद जो न केवल हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में वरन समूचे भारतीय जगत में युग की अनिवार्य मांग बनकर अवतरित हुआ था । साहित्य स्वभावतः अपने युग की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक स्थितियों से प्रभावित होता है और सन् 1936 तक युगीन यथार्थ का स्वरूप इतना विषम और जटिल हो चुका था कि उसकी पृष्ठभूमि में देश की साहित्यिक चेतना एक नये प्रकार की साहित्य की आकांक्षा करने लगी थी । राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सभी क्षेत्रों में एक गहरी अस्त–व्यस्तता दिखाई पड़ने लगी थी ।

राष्ट्रीय आंदोलन की स्थिति भी बहुत आशाजनक नहीं थी । करांची कांग्रेस अधिवेशन 1931 में राजनीतिक स्वाधीनता की बात की जाने लगी । 1936 में लखनऊ कांग्रेस अधिवेशन में अध्यक्ष पद से भाषण करते हुए पं० जवाहर लाल नेहरू ने राष्ट्रीय आंदोलन के समाजवादी पक्ष पर विस्तार से प्रकाश डालंते हुए स्थिति को और भी स्पष्ट कर दिया । युगीन यथार्थ की इसी पृष्ठभूमि में नवीन मार्क्सवादी समाजवादी प्रेरणा से प्रभावित

होकर देश के कतिपय बुद्धिजीवियों द्वारा प्रगतिशील आंदोलन की नींव डाली गई और उससे प्रेरणा लेकर जिस नवीन काव्य प्रवृत्ति ने परवर्ती छायावाद की अतिशय कल्पना–प्रधानता और वायवीयता तथा उत्तर छायावाद की ह्रासोन्मुखी प्रवृत्ति की प्रतिक्रिया में अपना स्वरूप उद्घाटित किया, उसे हिन्दी में प्रगतिशील अथवा प्रगतिवादी काव्य की संज्ञा दी गई। वस्तुतः प्रगतिवादी सहित्य अंग्रेजी के 'प्रागोसिव लिटरेचर' शब्द का हिन्दी अनुवाद है। सन् 1935 ई0 में श्री ई0एम0 फार्स्टर के सभापतित्व में 'प्रोग्रेसिव राइटर्स एसोसियेशन' नामक एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था का अधिवेशन हुआ और उसके दूसरे ही साल अर्थात् सन् 1936 ई0 में भारत के श्री मुल्कराज आनन्द व श्री सज्जाद अहीर के प्रयत्नों से उसकी एक शाखा खोली गई, जिसके लखनऊ में होने वाले प्रथम अधिवेशन का सभापतित्व मुंशी प्रेमचन्द ने किया।

बुन्देलखण्ड कोकिल राष्ट्र कवि पं0 घासीराम व्यास के काव्य का अविर्भाव ऐसी ही स्थिति परिस्थिति के मध्य हुआ। जहाँ चारों ओर अंग्रेजी साम्राज्य की दासता से सारा देश एक ओर आर्थिक झंझावात से जूझ रहा था तो दूसरी ओर अंग्रेजी साम्राज्य के कठोर अत्याचारों से पीड़ित था। यह स्मरणीय रहे कि कवि व्यास का जन्म 5 सितम्बर 1903 और निर्वाण 16 अप्रैल 1942 में हुआ था, इतनी अल्प अवस्था में उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन में तो सक्रिय भाग लिया ही था, अंग्रेजी साम्राज्य के अत्याचारों से विद्रोह करने के कारण उन्हें कठोर कारावास भी सहन करने पड़े, निर्धन परिवार की चिंता किए बिना उन्होंने अंग्रेजी साम्राज्य से लोहा लिया। रोचक और प्रेरक कविताओं द्वारा जन–मन में राष्ट्रीय चेतना जाग्रत करने के अतिरिक्त राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय भाग लेकर उन्होंने जेल की कठोर यातनायें

सहनी पड़ीं, फलस्वरूप उनका शरीर जीर्ण–शीर्ण हो गया और अंतिम जेल यात्रा के फलस्वरूप केवल 39 वर्ष की अवस्था में वे स्वर्गवासी हो गए ।

व्यास जी बुन्देली जनपद में अपनी पीढ़ी के पहिले सुकवि थे, जिन्होंने बुन्देली की सशक्त और प्राणवन्त काव्याधारा को राष्ट्रीय चेतना और जन–जाग्रति की विद्या की ओर मोड़ा । रस सिद्ध सुकवि के नाते व्यास जी ने प्राचीन शैली की काव्य परम्परा को भी नवीन ज्योति प्रदान की और बुन्देली भाषा के सौष्ठव को अपनी उचित काव्य शैली में सजीव बना दिया । यही नहीं ब्रजभाषा में भी उनकी कविताएँ हिन्दी साहित्य की अनूठी निधि हैं । "उन्होंने राष्ट्र स्वातंत्रय, राष्ट्रभाषा–प्रेम, चरित्र निर्माण, राम, श्याम, तुलसी, किसान, ऋतुवर्णन, नायिका भेद इत्यादि पर काव्य रचना की । वे जन कवि थे किन्तु उनकी वाणी अलंकृत एवं प्रवाहपूर्ण थी ।"[1]

व्यास जी का कंठ इतना सुरीला और ललित था कि लोग उन्हें बुन्देलखण्ड कोकिल कहा करते थे । ऐसा सीधा, सरल व्यक्तित्व कि जिसमें तनाव की कहीं कोई रेखा नहीं । सहज सहानुभूति उनमें सामान्य से बहुत अधिक थी, किसी को किसी भी तरह का कष्ट हो, यदि वह उनके पास पहुंच गया तो अपना सब कुछ छोड़कर वे उसकी सहायता के उद्योग में तत्पर हो जाया करते थे । इसीलिए आज भी बुन्देलखण्डवासी व्यास जी को सश्रद्धा याद करते हैं ।

व्यास जी में भावना और कर्त्तव्य का अद्‌भुत समन्वय था । वे भावुक और रससिद्ध कवि थे । ऐसे कवि थे कि उनकी वाणी में तेज था और लोगों को उठा देने की प्रेरणास्पद शक्ति थी । निश्चय ही राष्ट्रीय आंदोलनों में बुन्देलखण्ड की जनता ने जो कुछ किया, उसके मूल में व्यास

जी की कुछ कर बैठने की उमंग जगाने वाली कविताओं का बहुत बड़ा हाथ था । राष्ट्र युद्ध में व्यास जी स्वयं एक कर्त्तव्यपरायण सेनानी रहे । कई बार जेल गए । 1942 की अंतिम जेल यात्रा में उन्होंने मुस्कराते हुए ही अपना स्वास्थ्य होम दिया और जेल से लौटने के बाद ही उन्हें यह सांसारिक कार्य क्षेत्र ही इतना छोटा दिखाई दिया कि वे सदा के लिये चले गए । जब वे गाते तो लोग तन्मय हो जाते । उनके उद्बोधन सुनने वालों की नसों में उष्ण रक्त दौड़ा दिया करते थे ।"[2]

उन्होंने नवयुवकों को अंग्रेजी साम्राज्य की दासता से मुक्ति हेतु एक ही मूल मंत्र दिया –

"गोलियों को खाना, शीश फांसी पै झुलाना,
मरजाना, पर वीरों ! न लजाना दूधा माता का ।"

और नवयुवकों को उन्होंने यही प्रेरणा प्रदान की –

"अड़ा रहा आन पर, व्यास स्वाभिमान पर,
जान पर खेला माना भय न विधाता का ।
हुआ बलिदान मातृभूमि–बलिवेदी पर,
वन्दनीय वही है सपूत वीर माता का ।"[3]

स्वतंत्रता ही उनके लिए निष्ठुर हो गयी, न जाने उसने अपने आगोश में कितने नवयुवकों, युवाओं, वृद्धों को सदा–सदा के लिए समेट लिया, वह निष्ठुर स्वतंत्रता को सम्बोधित करते हुए कहते हैं –

निष्ठुर स्वतंत्रते ! क्या चाहती है, तेरे लिए
तरूणों की करूण कहानी कहनी पड़ी ।

विभव विलास तज आज राज–रानियों को,

जेल की अनन्त यातनायें सहनी पड़ीं ।

महात्मा गांधी के आदर्शों के व्यास जी दृढ़ उपासक थे, उनमें वे आलौकिक प्रेरक शक्ति के दर्शन करते थे –

"खेल जाते खेल, जेल जाते, झेल जाते कष्ट,

ठेल जाते ठसक, दलेल को मिटाते हैं ।

लाठियों को खाते, गोलियों से घबराते नहीं,

'व्यास' पास फांसी के बलि–बलि जाते हैं ।

मोहन तरूण तेरे एक ही सहारे पर,

समुदित सुख सरवस्य को लुटाते हैं ।

बलिदान होने को स्वदेश बलिवेदी पर,

वीरों के करोड़ों शीश आके झुक जाते हैं ।"[4]

इस संदर्भ में यह भी उल्लेखनीय हो जाता है कि व्यास जी के समकालीन मऊरानीपुर के ही निवासी पं0 घनश्याम दास पाण्डेय और पं0 नरोत्तम दास पाण्डेय भी उत्कृष्ट कवि रहे हैं, उनका साहित्य भी उल्लेखनीय रहा है । पाण्डेय जी आचार्य कोटि के कवियों में थे । श्री नरोत्तम पाण्डेय मातृभूमि पर विख्यात हैं । मऊरानीपुर के इन कवियों ने राष्ट्रीय, सामाजिक, आध्यात्मिक काव्य लिखकर हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया ।

श्री हरिचरण पाण्डेय मऊरानीपुर निवासी ने तो व्यास जी को अमर शहीद बुन्देलखण्ड कोकिल की संज्ञा से विभूषित किया है । निःसंदेह उन्हें अमर शहीद ही कहा ज़ाना चाहिए क्योंकि जेल जीवन में अपार कष्ट सहने

के फलस्वरूप उनकी काया इतनी जर्जर हो गई थी कि जेल से छूटने के तत्काल बाद ही उनका निधन हो गया था । वे निःसंदेह अमर शहीद है।, जिन्होंने हंसते–हंसते राष्ट्र के लिये अपने आपको न्यौछावर कर दिया । पाण्डेय जी के शब्दों में – "स्व0 घासीराम व्यास एक ऐसे सेनानी थे, जिन्होंने प्रत्येक राष्ट्रीय आंदोलनों में अपने तन, मन, धन से कार्य तो किया ही, प्रस्तुत अपनी ओजस्वी रचनाओं द्वारा राष्ट्र में जाग्रति का शंखनाद किया, जिससे बुन्देलखण्ड जनपद के आंदोलन का गौरव बहुत अधिक बढ़ गया, इस अर्थ में वे अमर शहीद थे, क्योंकि वे जेल में ही घातक रोग से आक्रान्त हो गए थे और जेल से मुक्त होने के पश्चात ही उन्होंने मृत्यु को वरण किया था ।"[5]

तत्कालीन युग चेतना का काव्य विकास में राष्ट्रीय, बुन्देलखण्डीय तथा क्षेत्रीय स्थितियों और परिस्थितियों की दृष्टि से काव्य का परम्परागत स्वरूप –

प्राचीन भारत की स्वतंत्रता और तदुपरान्त गांधी दर्शन की रामराज्य की अपनी कल्पना के अनुरूप समाज–रचना के लक्ष्य के प्रति राष्ट्र कवि पं0 घासीराम व्यास के जीवन की हर सांस्कृतिक सम्पूर्णतः समर्पित थी । अहिंसक आन्दोलन में सक्रिय भाग लेकर अंग्रेजी राज के कारागृहों की यातनाएं उन्होंने वर्षों तक सहीं । कारावास के कष्टों ने उनके कवि मन को गहरी अनुभूतियां दीं, साहित्य चेतना को नये आयाम दिए । उनका काव्य पूरे भारत की आत्मा का प्रतिबिम्ब है । उनकी वाणी हर देश भक्त की वाणी है । उनके सुर में भारतीय जनता का सुर है ।

व्यास जी हिन्दी की राष्ट्रीय विचारधारा के कवि हैं । इस धारा की एक अपनी गौरवमयी परम्परा रही है, जिसमें पं0 माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा नवीन, सुभद्रा कुमारी चौहान, रामकुमारी चौहान, रामधारी

सिंह 'दिनकर', भवानी प्रसाद मिश्र आदि के नाम उल्लेखनीय हैं । उनकी दृष्टि में स्वातंत्र्य प्रथम मूल्य है, जिस पर दूसरे सभी मूल्य आधारित हैं ।

व्यास जी के काव्य में अनेक रूपों में राष्ट्रीय भावना अभिव्यक्त हुई है । 1– जन्म भूमि के प्रति निष्ठा, 2– देश का मस्तिष्क ऊँचा करने वाले महापुरूषों के प्रति श्रद्धांजलि, 3– देशप्रेम और आत्मोत्सर्ग, 4– स्वर्णिम अतीत का स्मरण, 5–राष्ट्र ध्वज की वन्दना, 6– वर्तमान अवस्था पर क्षोभ, 7– भुखमरी, 8– देश के दुखी किसानों और मजदूरों का चित्रण, 9– साम्राज्यवाद का विरोध और स्वराज्य का जय–जय कार, 10– निचले वर्गों के प्रति उदारता, 11– राष्ट्रीय समस्याओं को पूर्ण करने की प्रेरणा ।

व्यास जी ने प्राचीन कवियों के काव्य का भी अध्ययन किया तथा गोष्ठियों में उनके काव्य को भी प्रस्तुत करते रहे है।, साहित्यिक गोष्ठियों में पहले प्राचीन कवियों की रचनाओं पर विशेष रूप से पाठ किया जाता था, तत्पश्चात नवीन कवियों की कविताओं का ।

इस बात का प्रयास किया जाता था कि छंद जिस भाव का हो, प्रत्युत्तर में भी वैसे ही भाव का छंद पड़ा जाना चाहिए । यथा :–

बाल विधु भाल पर सुभग सुधा कौ कुंड,
सरस त्रिनैन ऐन त्रिगुण त्रिपुंड पुंड ।
मोदन मढ़ावत बढ़ावत विनोदन कौ,
नलिन चढ़ावत, सुलेकर भुसुंड सुंड ।
'व्यास' कहैं मैन–मद स्वतंत्र अखंड वर,
मंजु ध्वनि गुजरित भृंग झुक झुड–झुंड ।

मंडलित कुंडल डुलत गंड मंडल पै,

शोभित सो सुकुडलित विसद वितुंड–तुंड ।

X X X

फाग मद माती लगी लाग नंद नंदन सौ,

बचन विलास मुख झरत सुधा सौ हैं ।

केसर को रंग संग अतर सुंगधन सौ,

परसत अंग पर दरसत खासौ है ।

झाखै टार घूंघट 'ह्रदेश' सुख लूट मूठ,

छूटत विसाल लाल सरस हुलासौ हैं ।

गरद गुलाल भाल परत न भासौं सांसौ,

जलधर लाल तैं प्रकासौ चन्द्रमा सौ हैं ।

X X X

रतन जटित पिचकारिन फुहारिन में,

कुसुमित रंग गंध कलित बखान कौ ।

केसर के कुंभ भर उगम उलीचै बाल,

मलत अवीर मुखलाल सुखदान कौ ।

फैकों नंदलाल ने गुलाल लै 'ह्रदेस' वैस,

परयौ कुच कुंभ पर दिपत ललाम कौ ।

मानो कलधौत गिरि मंडित अखंड पर,

फैलगौ अकास तै प्रकास बाल भान कौ ।[6]

इस प्रकार कवियों में परस्पर फड़ों पर जो काव्य पाठ होते थे वे आज भी हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि बन गए हैं । प्राचीन परम्परा का छंद साहित्य आज दुर्लभ सा हो गया हैं ।

घुमक्कड़ दल – मऊरानीपुर में श्री कविवर व्यास जी द्वारा गठित एक घुमक्कड़ दल था, जिसके मुख्य घुमक्कड़ थे – श्री काशीप्रसाद अड़जरिया, बाबूलाल बहुरे, रामभरोसे अड़जरिया और बल्देव प्रसाद 'भ्रमर' आदि । दल के व्यक्ति जितनी प्राकृतिक सौन्दर्य में अभिरूचि लेते थे, उतनी ही साहित्य में । दल द्वारा भ्रमण समय–समय पर केदारगिरि, चंद्रिका पर्दत, खंदियन के महावीर, नउला तला और सुखनई तट के प्राकृतिक स्थलों पर होता था । भ्रमण करते समय दल के सदस्य द्वारा समस्या रखने पर प्रत्येक व्यक्ति पूर्ति करने का प्रयास करता था । राम भरोसे अड़जरिया के कवित्त का अंतिम चरण –

मुद्दत में मिले हो मियां मुगल सरांय वाले,
राम द्विज भरोसे का लेना प्रणाम है।

इसी प्रकार बल्देव प्रसाद 'भ्रमर' द्वारा समस्या पूर्ति का सवैया –

तुम तौ कछआंत के आओ भटा,
हम लालमलाल टमाटर हैं ।
तुम बैंरग पत्र विचित्र सखे,
हम नोटन के मनियाडर हैं ।
प्रिय द्वापर दूर गऔ अब तौ –
कल काल यहाँ भरिया भर है ।
तुम तौ करते अपने मन की,
हम भी अपने मन की कर हैं ।[7]

इस प्रकार फड़ साहित्य स्थान–स्थान पर होने से नये – नये विषयों पर कवि अपनी रचनायें प्रस्तुत करते थे । फड़ साहित्य इतना समृद्ध होता गया कि आज भी वह स्थायी साहित्य के रूप में सुरक्षित हैं । प्राचीन शैली

की कवितायें आज ढूढें से नहीं मिल रही हैं । आचार्य कवि अब इने गिने हैं । आचा्र्य कवियों की रचनायें समय के साथ धूमिल होती जा रही हैं, प्रायः बस्तों में सिमटकर रह गई हैं, धीरे-धीरे वे पांडुलिपियाँ भी परिवारों की उदासीनता के कारण समाप्त प्राय हो जायेगी, तब ऐसा उत्कृष्ट साहित्य फिर कहाँ देखने को मिल सकेगा ।

यह तो प्रसन्नता की बात हैं कि बहुत कुछ साहित्य संकलित और प्रकाशित हो गया हैं और हो रहा हैं । अनेक शौध कार्य इन अल्पज्ञात और अज्ञात कवियों पर किये जा रहे है । उन दिनों स्नेही जी के के सम्पादन में 'सुकवि' का प्रकाशन होता रहा हैं, सुकवि के माध्यम से अनेक ज्ञात-अल्प ज्ञात – अज्ञात कवि प्रकाश में आ सके हैं । उन दिनों काव्य की ऐसी धारा बहती रही, जिसके द्वारा सैकड़ों कवि सामने आए और उनका कृतित्व प्रकाश में आ सका । दुख इस बात का है कि आज इस प्रकाशन युग में भी हम ऐसा नही कर सके और प्राचीन काव्य शैली को धरोहर के रूप में सुरक्षित नही रख पाये, फलस्वरूप अमूल्य पांडुलिपियाँ समय के साथ नष्ट प्राय हो गई ।

झाँसी में नाग पंचमी के अवसर पर प्रति वर्ष कवि सम्मेलन हुआ करता था, वह भी आज नहीं हो पा रहा हैं, इस सम्मेलन की चारों तरफ धूम रहती थी, सैकड़ों श्रोता अनगिनत कवियों के काव्य का रस स्वादन करते थे और प्रेरणा ग्रहण करते थे ।

यहाँ हम एक ऐसी ऐतिहासिक काव्य गोष्ठी का उल्लेख कर रहे हैं, जिसकी चर्चा आज भी उन लोगों द्वारा होती हैं, जो उस समय उसका रसस्वादन करते रहें हैं । व्यास मंडली द्वारा सावन शुक्ल 5 (नाग पंचमी) सन् 1920 में झाँसी के तुलसीराम आढ़तिया और नाथूराम मकड़ारिया ने

सुरम्य स्थल लक्ष्मी सरोवर के तट पर भगवान भूतनाथ के प्रांगण में आयोजित की । अध्यक्षता वरिष्ठ ख्याल गायक श्री उस्ताद छोटे मियाँ ने की, परम्परानुसार गोष्ठी का श्रीगणेश, गणेशवन्दना से प्रारम्भ हुआ । श्री गौरीशंकर खत्री 'गिरीश' ने 'ह्लदेश जी' द्वारा रचित वन्दना प्रस्तुत की :–

सुंडादंड मंडित अखंडित वितुंड तुंड,
एक रद धार हिये हार फनिपति कौ ।
चारों भुज कर पीन दीन दुख दल मल,
छल मल खलन रखैया जनपति कौ ।
भनत 'ह्लदेश' सिद्धि दायक दलित नर –
पावत चलत फल ध्यान धनपति कौ ।
दरस अमंद भाल चंद सुख कंद चंद,
रहत न फंद पद बंद गनपति कौ ।

कवित्र गायक झाँसी निवासी मनसुख मोदी ने स्व0 'ह्लदेश' जी रचित वर्षा ऋतु के छन्द ओजस्वी वाणी में प्रुस्तुत किये –

दिस चहुंओर घन घोर सोर जोर कर,
मोर मुख तौर गौर करत अरी रहैं ।
हरित कंदवन लतान ललिताई पर,
कड़ तड़िता की दीप प्रथक भरी रहैं ।
मनत 'ह्लदेश' ब्रजमोहन प्रदेस सखि,
वलित कलेस जाल जिम सफरी रहै ।
अधर धराते फिरै बादर बरातें धुर,
बारध धराते छाती धरक धरी रहै ।

तत्पश्चात् परमानन्द बुधैलिया ने ओजस्वी वाणी से व्यास जी की गणपति वन्दना प्रस्तुत की –

अमल अलोक यश छायौ लोक लोकन में,
शोकन के ओक थोक थोकन दरैया हैं ।
सिद्धि के करैया शुद्धि बुद्धि के बड़ैया भूर –
भावन भरैया भले अलख लखैया हैं ।
'व्यास' कहें सुमति सुकाज के सजैया साज,
कुमति अकाज काज विघन हरैया हैं ।
सुर – सरताज, ताज सुजन समाज मांझ,
मेरी गणराज आज लाज के रखैया हैं ।

x x x

उमड़–उमड़ मंड–मंड कर धूम–धूम,
घिर–घिर घेर–घेर घोर घन घोरे देत ।
तम–तम तोम में तमकें तेख तेज तई,
तड़ित तमाम तैं तमाम तम तोरै देत ।
'व्यास' कहें पारावार है न कछु धारा–धार
धारन तै अवनि अकास जनु जोरै देत ।
भाग चल ऐसी सबै मथुरै रहैंगी कहूँ,
अब यह बेर बृज बारिधर बोरै देत ।

आगे श्री काशी प्रसाद अड़जरिया ने मेंहदी वर्णन किया –

सावन सनेह सर सावन सुहावन को,
भावन समेते किये कौतुक नवीनेरी ।
अंग राग – राग अंग अंगन उमंगन सौं,

धार बार वसन सुरंग रंग भीनेरी ।
'व्यास' कहैं कीन्हें आज सुंभग श्रृंगार साज,
रूच–रूच आछी भांति चारू चित चीनेरी ।
सुभग गुलाल मंजु महदी रचाय बाल,
कर–कर लाल–लाल बस कर तीनेरी ।

तत्पश्चात् नारायण दास हयारण 'डबलेस' ने श्री नाथूराम माहौर के वर्षा के अभिव्यंजना पूर्ण सर्वोत्कृष्ट छंद अपनी कोकिल वाणी में प्रस्तुत किये –

चादर सी तानें आन बादर तमासै करै,
वारि झिर झरै सर – सरिता हिलौरी हैं ।
प्रघटत वृक्ष स्वच्छ पल्लव प्रसून लच्छ,
लच्छ कर बंद लेत बिज्जु चित चोरी हैं ।
'नाथूराम' नये–नये रंग दिखराय ढंग,
काम कृत पौन गौन डारै झकझोरी हैं ।
करत ठगौरी फिरै देखौ ब्रज खोरी–खोरी,
पावस न होय गौरी जादूगर झोरी है ।[8]

झाँसी में अनेक वर्षो के पश्चात् ऐसा स्वर्ण अवसर आया था, जिसमें बुन्देलखण्ड के दो प्रतिभावन कवि भी घासीराम व्यास और श्री नाथूराम माहौर ने भाग लिया था । साहित्य प्रेमी जनता ने इन सम्मानीय कवियों की रचनाओं की रस–सुधा का सोल्लास पान किया ।

श्री गोस्वामी तुलसी जयन्ती और कवि सम्मेलन :–

सन् 1922 में गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती पर होने वाले कवि सम्मेलन का सभापतित्व झाँसी के श्री मदन मोहन द्विवेदी 'मदनेश' ने किया

और कवि सम्मेलन का मंगलाचरण श्री गौरीशंकर खत्री 'गिरीश' ने स्व0 मन्नू कवि रचित भगवान राम के तेज और शौर्य भावोत्पादक छंद से प्रारम्भ किया –

एक पाद ऊरध त्रिपाद की विभूति सर्व,
श्री मुख सहस्र पाद अंध्रिज अरत जात ।
श्रीपति स्वयंभु शंभु अंबु तप तेज सबै,
'मन्नू कवि' नजर निछावरै करत जात ।
यत्र तत्र धरत पदारविन्द रामचन्द्र,
तत्र–तत्र भूमि भूरि भाग सौ भरत जात ।
देवी देव वन्दन के इन्द्रन उपेन्द्रन के,
मुकट महेन्द्रन के पांवड़े परत जात ।

तदुपरान्त श्री नाथूराम माहौर ने श्री राघवेन्द्र के यश और शौर्य पर भक्ति रस पूर्ण काव्य सूक्तियां प्रस्तुत की –

वेद – रीत – रीतन पै गीता ज्ञान गीतन पै,
राजनीति नीतन पै नीति के जहाज हैं ।
धर्म – धुर धीरन पै वीर वर वीरन पैं,,
गुनन गंभीरन पै गुनन दराज हैं ।
'नाथूराम' शासन पै सुयश सरासन पै,
शत्रु कुल त्रासन पै गाज से गराज हैं ।
ताज सरताजन पै महाराज राजन पैं,
आज दगावाजन पै बाज रघुराज हैं ।

X X X

भक्ति भाव भावन के शक्ति सरसावन के,
अहिं कुल रावण के भक्ष पक्षिराज हैं ।
ज्ञान गुन भाजन के सौरव्य साज साजन के,
उमर दराजन के उमर दराज हैं ।
'नाथूराम' लाजन के काज पर काजन के,
रसिक समाजन के नीके रसराज हैं ।
बाज दगाबाजन के ताज सरताजन के,
महाराज राजन के राजै रघुराज हैं ।

श्री माहौर जी की भगवान राघवेन्द्र के यश शौर्य पर पठित रचनाओं की साहित्य प्रेमी जनता ने भूरी–भूरी प्रशंसा की पश्चात् सेंवढ़ा से पधारे कविराज श्री लक्ष्मण गोविन्द भट्ट ने एवं श्री रामचरण बरूआ तथा कुलपहाड़ के कविवर श्री चतुभुर्ज पाराशर ने श्री गोस्वामी जी पर अपनी सुमधुर कवितायें प्रस्तुत की । इसके पश्चात् संयोजक ने श्री व्यास से कविता पाठ का अनुरोध किया ।

श्री व्यास जी की काव्य प्रतिभा का उदय, देश के दारूण दासत्व तम हरण की दृष्टि से और भारतीय संस्कृति की भक्ति रस पूर्ण भावनाओं को आत्मसात करने की क्षमता की स्वनुभूतियो से हुआ है । वे काव्य जगत में छायावाद की अभिव्यंजना से प्रभावित न होकर प्राकृतिक सौन्दर्य और जन साहित्य तथा छंद शास्त्र की प्रगाढ़ उच्चतम रीतियों का अध्ययन तथा अनुशीलन करके माँ भारती की सेवा में जनता के समग्र प्रस्तुत हुए हैं, जिसका शुद्ध रूप उंनकी श्री गोस्वमी तुलसीदास जी की तथा अन्य काव्यात्मक सूक्तियों में प्रतिबिम्बित हुआ है । उनकी कवि कुल चूड़ामणि गोस्वामी तुलसीदास पर प्रथम काव्य सूक्तियाँ प्रस्तुत हैं :–

जाके हेतु, ठानव्रत विविध विधान युक्त,

आदि कवि अंशुमान तप निरधारा हैं ।

'व्यास' द्वैपायन, दिलीप जग जाके हेतु,

जीवन अधारा शुचि सुकृत सुधारा हैं ।

जो कि अभिराम राम पुण्य पद पद्मजा है,

जाहि चित चाह चन्द्रमौलि मौल धारा हैं ।

भाग्य भौन तुलसी भागीरथ भयो है भूप,

लायौ जौन भू–पै दिव्य देव – धुनि धारा हैं ।

निशि नैनन एक अनूप लखी,

सुषमा सुख संकुलसी कुलसी ।

अमरावति उत्सव साज सजी,

कल कीरत उज्जवल सी जुलसी ।

द्विज 'व्यास' विचित्र विनोद भरी,

मन, मातु फिरैं हुलसी – हुलसी ।

सुर सिद्ध सबै सिय–राम रटे,

सिय–राम रटें तुलसी – तुलसी ।।

तदुपरान्त व्यास जी ने श्री रामचरित मानस पर संदेहालंकार में एक युक्ति पूर्ण भावत्मक छंद प्रस्तुत किया –

शीतल करन वर हीतल सु–शशि है कि –

पावन पृथ्वी तल प्रताप रवि प्यारा है ।

अभिमत कामधेनु कलि कामधेनु है कि,

कामकृत मोचन त्रिलोचन अंगारा है ।

तुलसी गुसाई कृत राघव चरित्र है कि –

जीवन अधार जग जलद विचारा हैं ।
पाप पुंज पाटवे कौं सुर सरि धारा है कि,
कल कुंज काटबै कौं दुसह दुधारा है ।

चारू चरित्र विचित्र पवि ,
समोद संजीवन कौं सर सावन ।
भक्ति सुभायन भावन दै –
चित चायन दै नव–नेह बसायन ।
विश्व विकार विषायन बात सी,
काम कसायन राम रसायन ।
श्री तुलसी कविराज रची रूचि सों,
रस रीति सों राम रसायन ।[9]

पश्चात् श्री रामायण महासभा के प्रधान मंत्री श्री छोटेलाल पाण्डेय ने अध्यक्ष श्री 'मदनेश' जी, श्री व्यास जी, श्री माहौर जी ने तुलसी जयन्ती की महत्ता तथा आज की उपलब्धि पर प्रकाश डालते हुए कहा कि तुलसी दास जी के भक्ति साहित्य में यह पद सदैव के लिय उनकी वन्दना–स्तुति की दृष्टि में स्मरण किये जाते रहेंगे । कवि सम्मेलन की सार्थकता का उद्देश्य भी यही है और यही रहेगा ।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, झांसी – 28 दिसम्बर, 1931 ई0 को झाँसी में इक्कीसवां हिन्दी साहित्य सम्मेलन स्वागताध्यक्ष श्री वृन्दावन लाल वर्मा और स्वागत मंत्री श्री सुधीन्द्र कुमार वर्मा के सफल प्रयास से श्री गोपाल बाग (गोपाल की बगिया) में आयोजित किया गया । इस अवसर पर हिन्दी के सुविख्यात साहित्यकार स्व0 श्री किशोरी लाल गोस्वामी वृन्दावन (उ0प्र0) सभापति थे और मनोनीत अध्यक्ष साहित्य जगत के यशस्वी कवि श्री

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' थे । प्रमुख कवियों में हिन्दी जगत के यशस्वी कवि राष्ट्र कवि श्री मैथिली शरण गुप्त, राजकवि श्री मुंशी अजमेरी, श्री दीनानाथ 'निशंक', श्री मातादीन शुक्ल, श्री कुसुमाकर दीक्षित, श्री गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही', श्री केशव देव शास्त्री, श्री करूणेश, श्री प्रणयेश, श्री वचनेश, श्री जगदम्बा प्रसाद हितैषी, श्री रामकुमार वर्मा, श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान, श्री गौरी शंकर द्विवेदी 'शंकर', कविराज श्री बिहारी लाल भट्ट 'बिहारी', कविराज़ श्री हरनाथ, राष्ट्र कवि श्री घासीराम व्यास, श्री पुत्तूलाल वर्मा 'करूणेश' आदि । इस प्रकार यह अपने आपमें ऐतिहासिक सम्मेलन रहा । देश के हिन्दी विद्वान–कवियों की उपस्थिति से हिन्दी साहित्य के इतिहास में उनकी रचनाओं की सार्थकता तथा उपादेयता का मूल्यांकन हुआ ।

काव्य मंच से श्रीमती सुभद्रा कुमार चौहान की ऐतिहासिक रचना 'झाँसी की रानी' की प्रथम पंक्तियाँ 'बुन्देले हर बोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी, खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी' विशेष लोकप्रिय रही । जब श्री रामकुमार वर्मा ने अपनी रचना 'नूरजहाँ' अपने कोकिल कंठ से सुनाई, तब उपस्थित श्रोता मंत्रमुग्ध हो गए ।

संयोजक के अनुरोध पर श्री घासीराम व्यास ने अपनी 'धान–सरसी' रचना जिसमें प्रकृति और राष्ट्रीय विचारधारा का समन्वय मुखरित हुआ है, अपनी ओजपूर्ण वाणी में प्रस्तुत की, इस कविता पर प्रशंसा करते हुए अध्यक्ष 'श्री हरिऔध जी' ने प्रभावित होकर मुक्त कंठ से स़रहाना करते हुए कहा – "व्यास़ जी ने, जो बुन्देलखण्ड को कवि भूमि की मान्यता प्राप्त है, उसकी सार्थकता का प्रत्यक्ष उदाहरण अपनी वाणी से प्रस्तुत किया है, मैं इसके लिये तरूण कवि श्री 'व्यास' की सफलता की उत्तरोत्तर कामना करता हूँ ।"

तत्कालीन सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना का मूल्यांकन :-

साहित्यकार अपने समग्र कर्त्तव्यों का निर्वहन कर जन–मन–गण के कल्याण के सरोकारों को दिशा प्रदान करता है, जिसमें जनता, देश, भाषा, संस्कृति के स्वरूप का निर्माण कतरा है । वह जन भावनाओं, देश और राष्ट्र बोध एवं सांस्कृतिक मर्यादाओं का रक्षक बनता है । इन सब सरोकारों द्वारा कविवर व्याव ने अपने साहित्य के माध्यम से समकालीन समाज, धर्म संस्कृति एवं राष्ट्र प्रेम की राजनीति को आदर्श अवसर प्रदान किये । कविवर व्यास जी ने बुन्देली संस्कृति का भरपूर चित्रण अपने काव्य में किया है । हिंडोला, केंचुकुधा के काव्य इसकों प्रमताण हैं । इसके अतिरिक्त केदारेश्वर, सिद्धनगर, अलकूढो तनव पर भी उन्होंने अपनी लेखनी चलाई है । बुन्देलखण्ड की नदियों, पहाड़ों, झरनों का मनोहारी काव्य गान व्यास जी ने कर यहाँ की सांस्कृतिक विरासत को पुर्नस्थापित किया । वास्तव में यही हमारी धर्म–संस्कृति के सरोकार हैं । व्यास जी ने लोक हितकारी साहित्य का स्तजनकर लोक रंजन का कार्य किया ।

"कविवर व्यास को धर्म, कर्म के मर्म विरासत में मिले थे । यही उनके काव्य प्रसून अर्ध्य के रूप में सकर्पित हुए, किन्तु जब स्वातंत्र्य समर की अनगूंज ने व्यास जी के हृदतंत्री को झंकृत कर दिया तो मातृभूमि के, राष्ट्र प्रेम के गीत उनकी लेखनी के स्त्रोत बन गये थे । जिसमें राष्ट्र भक्ति, शक्ति ओर स्वाभिमान के चित्र चित्रित हुए, वहीं देश जननी के दुखों की विमुक्ति हेतु आगे बढ़ने की प्रेरणा उनके काव्य में मिली थी । निज जननती के वचनों – 'न लजाना दूध माता का' की पूर्ति और शत्रु के भेजा फाड़ने क्रांतिकारी काव्य की रचना से व्यास जी राष्ट्रीय धारा के राष्ट्रकवि बन गए थे । जिसमें उस समय के साहित्यिक, राजनीतिक प्रसोधाओं ने उनकी लेखनी को स्थान दिया था । कविवर घासीराम व्यास के तन–मन

पर कतने व्याघातों का प्रहार हुआ, उतनी ही तीव्रता और राष्ट्रीयता के गीत उनके काव्य रूप बने । कारा प्रवास को सम्भवतः कृष्णावतार की पृष्ठभूमि मान उनकी 'रूक्मिणी मंगल' और 'श्याम संदेश' जैसी उत्कृष्ट काव्य कृतियों का निर्माण हुआ । उसमें भी वह मातृभूमि के प्रति श्री कृष्ण के प्रेम भाव के रूप में अपना ही प्रेम प्रदर्शित करते हुए दिखाई देते हैं ।"

कविवर घासीराम व्यास ने समकालीन कवियों की भांति लोकहितकारी साहित्य का सृजन कर लोक रंजन का कार्य किया था । ईसुरी की लोकाभिव्यक्ति के 'फाग' साहित्य, सैर, कवित्त, भजन प्रणीत किये और कवि दंगलों (फड़ों) के काव्य शिरोमणि कहलाये । वे आशुकवि एवं समस्यापूर्ति के सुयोग्य कवि थे । लोक में प्रचलित उक्तियों को उन्होंने अपने काव्य में समाहित कर लोकोक्ति काव्य की रचना की थी । प्रकृति चित्रण, कल–कल निनाद करती सरिताओं, निर्झरों, पर्वत मालाओं की मोहक छवि ने कवि हृदय को वन्दना करने के लिए विवश किया । रीति काव्य की परम्परागत काव्य रीति के साथ छायावाद की प्रतिच्छाया उनके केन नदी के सम्बोधन में उद्भूत हुई –

यह मौन किया किसके लिए भंग,
    किसे कल गान सुना रही हो ।
किसके पगों में जल–बिन्दु भला,
    मुक्ताहल से बिखरा रही हो ।
गिरी गहरों में गिरती कभी हो,
    कभी पर्वतों से टकरा रही हो ।
कहो केन कहो कहाँ आज यों,
    आकुल सी किसे खोजने जा रही हो ?[10]

ऐतिहासिक किसान कॉन्फ्रेन्स :-

मऊरानीपुर में सुखनई नदी के मैदान में जनकवि ईसुरी के काव्य साहित्य का आयोजन किया गया, और उसी समय किसान कॉन्फ्रेन्स को सम्बोधित करने के लिए पं0 जवाहर लाल नेहरू, उनकी पुत्री इन्दिरा गाँधी के आगमन पर विशाल सभा आयोजित करने का निश्चय किया गया ।

कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं, जिनमें कविवर घासीराम व्यास भी थे, उन्होनें इस आयोजन की पूर्ण तैयारी की यद्यपि यह कार्य पूर्ण गोपनीय था किन्तु गुप्तचर विभाग को इसकी जानकारी हो गई, जिलाधीश ने 15 मई, 1932 को अमन सभा की बैठक झाँसी में बुलाई इस अवसर पर जिलाधीश ने कहा कि मऊरानीपुर क्षेत्र में शांति भंग होने की आशंका है, अतः इस बात का प्रयास किया जाये कि किसी भी प्रकार की शांति भंग न हो, किसान कांन्फ्रेस 2 जून, 1932 को आयोजित की गई, पं0 नेहरू कांग्रेसी नेता श्री रामेश्वर प्रसाद शर्मा के साथ मऊरानीपुर पधारे, उनके साथ उनकी पुत्री इन्दिरा गाँधी भी थी, पुलिस सर्तक हो गई, सभा स्थल पर 144 धारा लागू कर दी गई, फलस्वरूप जनता आंतकित होकर वहाँ से चली गई, दूसरी ओर ईसुरी के फाग पण्डाल में हजारों किसानों का जमघट था। कांग्रेस के मंत्री श्री रामनाथ त्रिवेदी और श्री घासीराम व्यास के साथ नेहरू जी को इसी पण्डाल में लाया गया और यहाँ पर ईसुरी की फाग नगड़िया और झांझो के ताल स्वर गूँज रहे थे । जिसकी राष्ट्रीय भावना से ओत–प्रोत इन पंक्तियों ने वातावरण को राष्ट्रीय भावना से ओत प्रोत बना दिया –

हंसा आ गये देस विराने, सरवर जाये सुखाने ।
यहाँ रहे सौं कौन भलाई, जहाँ बकन के थाने ।

उतचल समद – अगम्य भरे है, सुख पावैं मन मानें ।

बचत बने तो बचों ईसुरी, तानें काल कमानें ।[11]

पं0 नेहरू फाग की यह पंक्ति – 'हंसा आ गये देस बिराने', जिसमें देश के प्रति राष्ट्रीय भावना पूर्ण अभिव्यक्ति की उपलब्धि थी, सुनकर आत्म विभोर हो करने लगे – 'धन्य हैं .... । मंत्री जी ने नेहरू जी का किसान जनता को परिचय दिया । अब क्या था – 'जय नेहरू जवाहर, जय गाँधी जी की' गगन भेदी जय घोषों से पंडाल गूंज उठा।' सभा मंच पर राष्ट्रीय कवि व्यास जी ने किसानों की प्रशस्ति में सरस बोध रचना प्रस्तुत की, जिसके कतिपय अंश इस प्रकार हैं –

कितने उदार कितने महान्,

कितने महान हो हे किसान ।

चल रही लूह जल रही धरणि,

तप रहा तरणि हें तपों–धाम ।

तब तुम खेतों में हल जोत,

करते अपार श्रम अविश्राम ।

वर्षा पाला या सर्दी हो,

तुमने इसका कब किया ध्यान ।

कितने उदार कितने महान ।।

x x x

जब जमीदार या साहूकार,

आते हैं घोड़े या सवार,

गाली जूते, लाठी प्रहार

सह लेते अंचल को पसार,
सह्रदय तुमको देखे न कभी,
मुंह से कहते कड़वी जबान ।
कितने उदार कितने महान ।।

X X X

तब गुण अगेय तुम हो अजेय,
तुम निर्विकार तुम अप्रमेय,
सांचे सपूत हो पुण्य पूत,
तुम देवदूत ध्रुव धन्य ध्येय,
तुम सहन शक्ति के महादेव,
पर हित करते हो गरलपान,
कितने उदार कितने महान,
कितने महान हो हे किसान ।[12]

पं0 जवाहर लाल नेहरू ने किसानों को सम्बोधित करते हुए कहा कि किसान भाइयों को चाहिये कि संगठित होकर गाँधी जी द्वारा कांग्रेस की शांति पूर्ण नीति में विश्वास करते हुये अहिंसात्मक आंदोलन में अपना योगदान दें, जिससे देश को स्वतंत्रता प्राप्त हो और जिसके फलस्वरूप भारत की विशाल जनता शांति से जीवन व्यतीत कर सकें ।

कविवर व्यास जी केवल ग्रामीणों, किसानों और निर्धनों के शुभ चिंतक ही नहीं थे वरन् खेत– खलिहानों की बात करना भी नहीं भूलते थे । जब हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इन्दौर के सन् 1934 में महात्मा गाँधी जी की अध्यक्षता में सम्मेलन सम्पन्न हुआ था, तब हिन्दी के विकास, राष्ट्रीय उत्थान में साहित्यकारों का योगदान एवं राष्ट्र द्वारा कृषकों का

बौद्विक योगदान पर चर्चा की गई । इस अवसर पर श्री कुसमाकर दीक्षित के संयोजन में आयोजित कवि सम्मेलन में सर्व श्री प्रकाश कलकत्ता, श्री कुसुम भोपाल, अंबिका प्रसाद 'हितैषी', केशव देव शास्त्री कानपुर, शांति प्रिय द्विवेद्वी वाराणसी, घसीराम व्यास मऊरानीपुर, आदि ने भाग लिया व्यास जी ने इस अवसर पर 'खेत की आत्मकथा' विषय पर एक कविता प्रस्तुत की जिसमें राष्ट्रीय चेतना का प्रमुख रूप से चित्रण हुआ हैं :—

कितनी विपरीत हवायें चली,
सहेशीत सभीत पै आह न की ।
जलते हुये ग्रीष्म प्रभा कर ने,
बरसाये अंगार कराह न की ।
घनघोर घटायें घिरी सिर पै —
गिरे बज्र कभी परवाह न की ।
इक प्रेम निगाह से और मेरी
कोइ देख कभी चित चाह न की ।

X X X

स्वरथ त्याग दिये जिनके लिये,
हा उन्हीं ने अहसान भुलाये ।
काली घटायें घिरी हुई देख के,
फूले नहीं मन में बे समायें ।
रौंदते आये मनोरथों को खुली —
छातियों पै हल शूल चलाये ।

किन्तु कभी दुख माना नहीं,

सुख से ही सदा उनके गुण गाये ।

X X X

सुख में सुख था दुख में दुख था,

जिनके वही हो प्रतिकूल गये ।

सर्वस्व लुटा दिया था जिन पै,

वही बात की बात में भूल गये ।

दिल की थी उम्मीदें न क्या क्या भला,

अरमान मिला मेरे धूल गये ।

अपना पन मानते थे अपना पन,

वे अपना पन भूल गये ।

X X X

गोद में पुण्य प्रसून खिले –

मुस्का रहे थे भले भाव भरे–भरे,

आँखे जुड़ा रहे थे जग की

लहराते नये–नये पौधें हरे हरे ।

X X X

कितनी विपदायें व्यथायें सही,

फिर भी न कभी मुख पै उफ लाये ।

बड़े नाज़ के पाले हुए दिल के,

टुकड़े जिनके लिये हाथ कटाये ।

उर में उठते अरमान सदा,
　　जिनके चरणों पर भेंट चढ़ायें,
वही चांदी के लोभ में लाल मेरे,
अनमोल बाजार में बेचने आयें ।

X　　　X　　　X

कभी भेद हैं माना नही जग में,
　　फिर भी कुछ थाहनें वाले मिले ।
अहसान की आग जला–जला के,
　　दुखिया दिल दाहने वाले मिले ।
शिकवा न किसी से किया कुछ भी,
　　उल्टे ही उलाहने वाले मिले ।
हमें चाहने वाले मिले जितने,
　　वे सभी कुछ चाहने वाले मिले ।

कवि ने खेत की आत्म कथा के माध्यम से व्यक्ति के संघर्षमय जीवन की कथा का चित्रण किया हैं । उसके त्याग बलिदान की महिमा की ओर संकेत करते हुये उन अनुदार व्यक्तियों की स्वार्थ परायणता को भी चित्रित कर दिया है जो उसके शोषक बने हुये हैं, इससे कवि की शोषितों के प्रति गहरी सहानुभूति एवं उनके जीवन के विस्तृत अध्ययन की झाँकी मिलती हैं । महात्मा गाँधी ने 'व्यास' जी की कविता सुनने के उपरांत उनकी प्रशंसा करते हुए कहा – 'बुन्देलखण्ड धन्य हैं, जिसने व्यास जी जैसे जन मानस के ह्रदय को स्पर्श करने वाले राष्ट्र कवि को जन्म दिया । मैं श्री व्यास जी की इस 'खेत की आत्म कथा' नामक रचना का और उनकी काव्य शक्ति की क्षमता का ह्रदय से स्वागत करता हूँ ।[13]

व्यास जी ने गाँधी के आवाहन पर सन् 1935 में विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार किया और कराया, मद्य निषेध को बढ़ावा दिया और अंग्रेजी शासन को उखाड़ फेकने के लिये जनता का आवाहन किया गाँधी जी द्वारा निर्देशित असहयोग आन्दोलन में झाँसी, ललितपुर, बरूआसागर, मऊरानीपुर अग्रणी रहा । सभा का कूटनीति पूर्ण दमन चक्र अत्यन्त क्रूरता से चलने लगा । अन्त में झाँसी से गंगाधर जोशी, ललितपुर से बृजनन्दन किलेदार बरूआसागर से बालचन्द्र गुप्त और मऊरानीपुर से घासीराम व्यास को अंग्रेजी सरकार ने 2 मार्च 1935 को गिरफ्तार कर झाँसी कारावास भेज दिया । जुर्माना न देने पर व्यास जी और इनके साथियों (श्री बृजनन्दन किलेदार जिन्होनें जुर्माना अदा कर दिया छोड़कर) को चार–चार मास की सादा कैद और एक–एक मास का कठोर कारावास भुगतना पड़ा ।

'व्यास' जी का एक अप्रकाशित काव्य लवकुश भी अपने समय की प्रमुख रचना हैं । उसका उल्लेख भी यहाँ देना उर्पयुक्त हैं –

राय रामचन्द्र अश्वमेघ को रचाय जाय,
सौम्य वरन् श्याम करन तुरंग भगाय लाय ।
वेद के उपाय अश्व पूज कें बधाय शीश,
हेम पत्र कहयौ शत्रुसूदने बुलाय धाय ।
धनुष उठाय 'व्यास' सजग सहाय रहौ,
कर रखवाय तात अश्व को लिवाय जाय ।
अवधपुरी में वेग विजय बढ़ाई पाय,
लोटियो सुनाय घोर दुंदुभी बजाय आय ।

X X X

बाज बांध तरू से बहुर विकल बंधु ढिगं जाय ।

देख दशा दारूण दुखद लीनों गोद उठाय ।

तब लब देय आशीष तें उठ बैठे हरषाय ।

चले मातु ढ़िग परस्पर मिल सप्रेंम दोऊ भाय ।

X X X

कृपा सिंधु वश सोच तब भरतहिं तुरत बुलाय ।

कहयो तांत जंह भयो रण अनुजहिं देखहु जाय।

और इस प्रकार कवि ने अश्वमेघ यज्ञ का पूर्ण वर्णन विवेचन इस काव्य में किया हैं । संघर्ष होता है और लवकुश संग्राम में विजयी हो रहे हैं –

बिन कीन्हें संग्राम हाथ न लागे तुंरग मख ।

अस विचार बल धाम भरत लियों धनुवान कर,

X X X

देख दशा भागे सुभट बचे जे जीवित खेत ।

जाय पुकारे ते सभी जहं प्रभु लखन समेत ।

सुनत भरत गति अति दुखित लखनहिं तुरत बुलाय ।

कहत जात हत बंधु रिपु आबहु अश्व लिबाय ।

और अन्त में :-

क्रोधित महान धनु कुश बलबान लीन्हौं,

श्रवणन तान लगे बानन चलेवै कौं ।

कोऊ बिलखावै कलपावै अकुलावै कोऊ,
दाव को न पाबै 'व्यास' द्वौर भग जैबे को ।
कसक रहे है तीर कठिन करेजन में,
सिसक रहे हैं वीर नीर के अचैवै को ।
सैन के समेत जूझे लखन अचेत होय,
बचेहू न वीर खेत खबर पठैवे को ।[14]

लवकुश के और अन्य छंद भी थे, जो आज तक उपलब्ध नहीं हो सके, व्यास जी के सर्वाधिक छंद श्री परमानन्द बुधौलिया को कंठाग्र थे, उनके निधन के साथ वे सभी अप्रकाशित छन्द अब और कहीं उपलब्ध नहीं हैं ।

डा0 गुणसागर सत्यार्थी ने अपने एक आलेख में अपनी प्रतिक्रिया इन शब्दों में व्यक्त की हैं – 'बुन्देलखण्ड में जन्में तीन महा नक्षत्र' ऐसे विलोपित हो गये, जिन्होनें हिन्दी सरस्वती का अथाह भण्डार संजोया था, इनमें कालपी निवासी स्व0 रसकेन्द्र, मऊरानीपुर के नर रत्न स्व0 पं0 घासीराम व्यास और चिरगाँव के सर्वाधिक वरिष्ठ साहित्यकार स्व0 मुंशी अजमेरी 'प्रेम' को हिन्दी साहित्य एवं साहित्य प्रेमियों ने भुला दिया । आज भी उनका साहित्य देश समाज के लिए सम–सामयिक है और वह सदा अमर रहेगा । सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं कवि डा0 ताराचन्द पाल 'बेकल' ने कविवर व्यास जी को अपनी सादर श्रद्धाँजलि इन शब्दों में देकर उनके नाम गुणगान एवं कवि शक्ति तथा राष्ट्रीयता को सदा–सदा के लिये अमर कर दिया –

'छन्द ज्ञान, आन बान युक्त देश भक्ति गुण'
रोम रोम मध्य था समाया घासीराम में ।

तेज को सहेज व्यक्तित्व था सवांरा नित्य,

कुशल व्यवहार रहा, नगर और ग्राम में ।

देश की स्वतन्त्रंता के गीत थे सदैव गाये,

चाहे रहें जेल या कि व्यस्त निजी काम में ।

गाँधी व जवाहर और मैथिली शरण गुप्त,

देखते थे दिव्यता वे 'व्यास कवि नाम में ।[15]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. ब्रजभाषा और अवधी के अधुनातन कवि – लेखक डॉ0 राम प्रसाद मिश्र, पृष्ठ सं0 – 290 ।

2. श्री माहौर अभिनंदन ग्रंथ – राष्ट्र कवि श्री व्यास जी – श्री द्वारिकेश मिश्र पृष्ठ सं0 – 33 ।

3. श्री माहौर अभिनंदन ग्रंथ – राष्ट्र कवि श्री व्यास जी – श्री द्वारिकेश मिश्र पृष्ठ सं0 – 34 ।

4. श्री माहौर अभिनंदन ग्रंथ – राष्ट्र कवि श्री व्यास जी – श्री द्वारिकेश मिश्र पृष्ठ सं0 – 35 ।

5. महान क्राँतिकारी पं0 परमानंद अभिनंदन ग्रन्थ, पृष्ठ – 46 ।

6. राष्ट्रकवि घासी राम व्यास 'व्यक्तित्व एवं कृतित्व' रामचरण हयारण 'मित्र' – पृष्ठ सं0 2 से 6 तक ।

7. राष्ट्रकवि घासी राम व्यास 'व्यक्तित्व एवं कृतित्व' रामचरण हयारण 'मित्र' – पृष्ठ – सं0 – 9 ।

8. राष्ट्रकवि घासी राम व्यास 'व्यक्तित्व एवं कृतित्व' रामचरण हयारण 'मित्र' – पृष्ठ – सं0 – 11 – 16 ।

9. राष्ट्रकवि घासी राम व्यास 'व्यक्तित्व एवं कृतित्व' रामचरण हयारण 'मित्र' – पृष्ठ – सं0 – 29 – 32 ।

10. कवि के सरोकार – व्यास – यश – सिंधु (राष्ट्रकवि जन्म शताब्दी ग्रन्थ) – पृष्ठ सं0 10 ।

11. राष्ट्रकवि घासी राम व्यास 'व्यक्तित्व एवं कृतित्व रामचरण हयारण 'मित्र' – पृष्ठ सं0 45।

12. अर्चना – राष्ट्रकवि घासी राम व्यास – पृष्ठ सं0 19 ।

13. राष्ट्रकवि घासी राम व्यास 'व्यक्तित्व एवं कृतित्व रामचरण हयारण 'मित्र' – पृष्ठ सं0 51 – 54 ।

14. लवकुश – अप्रकाशित – घासीराम व्यास पृष्ठ सं0 1 से 9 ।

15. व्यास – यश – सिंधु – (राष्ट्रकवि जन्म शताब्दी ग्रन्थ) पृष्ठ 192 ।

षष्ठ अध्याय

- पं० घासीराम व्यास के काव्य का शिल्पगत स्वरूप :
- रस :
- काव्य कला (नख शिख चित्रण):
- नायिक भेद :
- अंलकार :
- भाषा - शैली :
- गुण :
- शब्द शक्ति :

अध्याय षष्ठ

पं० घासीराम व्यास के काव्य का शिल्पगत स्वरूप :-

हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय काव्यधारा के कवि व्यास जी ने अपने काव्य के भाव क्षेत्र में रीति परम्परा का पालन करते हुये सभी रसों में काव्य रचना की है । श्रृंगार रस भी यथा स्थान उनके काव्य में प्रतिबिम्बित हुआ हैं । वीर, भयानक, अद्‌भुत, शाँत, करूण उनसे छूटा नहीं हैं । हास्यान्तर्गत उनके व्यंग पठनीय हैं । रीतिकालीन परम्परा के क्रम में नायक भेद, श्रंगार रस से लेकर सभी रसों का समावेश उनके काव्य में हुआ है । अनेक छंदों में उन्होंने लोकोक्तियों का भी पात्रानुकूल प्रयोग किया है । लोकोक्ति काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है –

दुख दायन है घंर हाथन पै,
भरती हिए में कछु भेदन कौ ।
अड़ती मग आन गरीबन के,
उपजावती है खल खेदन को ।
द्विज 'व्यास' कहैं शुचि शील सने,
उपहासें महा मग वेदन को ।
डरती न मनें ब्रज की वनिता,
करती नभ में यह छेदन को ।[1]

जन साहित्य भी व्यास जी ने खूब लिखा है, उनका फाग साहित्य बहुत प्रसिद्ध रहा है । सैर काव्य, दोहा, सैर और कवित्त छंद में मिल जाता है ।

दोहा छंद का एक उदाहरण -

बुद्धिमान पंडित चतुर, सावधान निरज्ञात,
कोउ बात बाजी समय, बाज आन कैं खात ।[2]

सैर छंद का एक उदाहरण -

अपनेई जान स्यानों सब जग दिखात है,
चरचा में चतुर अपनी चूकत न घात है ।
सुन लेऔं कछू तुम सौं नइं बतन कात है,
बाजी समय में बाजी बात बाज खात है ।
जो चूक जात बाकी नई हक जात है,
चांय डार–डार भटकौ चांय पात–पात है ।[3]

रस रंग काव्य जिसमें नव रस एक साथ हैं, व्यास जी ने लिखा है । उदाहरणार्थ –

भक्ति –

विनय सुनाऊँ कांह विन यश नाऊँ पद,
सरस जुगाऊं पद सरसिज ध्याऊं मैं ।
तारिका अथाह भव जलधि उतारिका है,
जन दृग तारिका सुतारिका लखाऊँ मैं ।
'व्यास' गुन औगुन गनाऊँ निज केते गुन,
सगुन मनाऊँ नित सगुन मनाऊँ मैं ।
प्रेम वारिका के हेत कीनी वार काके तज,
नाथ द्वारिका के द्वार काके अब जाऊं मैं ।[4]

हास्य –

जन खान के कान न काटत हैं,

गन कानहु की न रही वरनी ।

अब के मरदान की शान सही,

पुरषान की हान करी करनी ।

लख आवत हीय हंसी जुलिये,

शिर पै असमान धरैं धरनी ।

पग ठेल न जाय पताल कहूँ,

इहि कारण शेष धरै धरनी ।

करूण -

घनश्याम लिवाय गयौ मथुरे,

अति क्रूर अक्रूर करी करनी ।

ब्रज बाम खरी यमुना तट आन,

लखौ रथ ओर हियें हरनी ।

बहुरोय बिसूर बिसूर सभी द्विज,

'व्यास' न जाय दशा वरनी ।

अँसुआन की धार न डूबे कहूँ,

इहि कारण शेष धरै धरनी ।

रौद्र -

खोज्यौ सीता को बहुत वन गिरि. गुहा तमाम,

बोले लक्ष्मण ते तबैं क्रोधित हो श्रीराम ।

छिन बीतत कल्प समान महा,

सह जात नहीं जिय की जरनी ।

सुन भ्रात गहा धनु हाथ मेरौ,

जय मांहि दिखाऊँ कछू करनी ।
बन रूद जराय समुद्र सुखाय,
दऊ उलटाय वहै वरनी ।
अबलौं न लत्यौ सिम सोध भल्यौ,
किहि कारण शेष धरै धरनी ।

वीर -

घननाद करैं घननाद अलक्ष,
सुलक्षण त्यों सर–निर्झरनी ।
अति क्रुद्धत युद्ध विरूद्ध विरूद्धत,
उद्धत भाव बदैं बरनी ।
रूच रंगन अंग उमंग भरे,
दोऊ वीरन की लखकैं करनी ।
उलटाय न जाय रसातल को,
इहि कारण शेष धरैं धरनी ।

भयानक -

चहु ओरन ते झक झोरन दै,
झुक पौन चलै मति की हरनी ।
घन–घोर–घनी–घनघोर करें,
चक चौंध छरे–छनदा–छरनी ।
बरसे नभ मंड अखंड महान,
भयानक दृश्य दशा बरनी ।
जल धारन डूब न जाय कहू,
इहि कारण शेष धरैं धरनी ।

वीभत्स -

विसवास रहयौ कहुँ नेक नहीं,
विष वास रहयौ जिय में जरनी ।
चहुं ओर लख्यौ यह आपुस में,
लघु बातन बात बदैं बरनी ।
अतिभाव घृणा के बढ़ै नितही,
करै खच्चर खून मयी करनी ।
किमजान रसातल देत नहीं,
किहि कारण शेष धरैं धरनी ।

अद्भुत -

बरनी वर कौन कहौ जग में,
अबलौ कवि कोविद न वरनी ।
दरनी दुति कंज गुलाबन की,
द्विज 'व्यास' अनूपम आदर नी ।
कर नीक सकैं अस कौन भला,
जस अद्भुत राधिका की करनी ।
धरनी धर धारन नैन किये,
किहि कारण शेष धरैं धरनी ।

शांत -

शुचि सेजन पै नहिं नींद लगै,
कछु को नहिं हाथ भरी वसनी ।
केहु कौ न रूचि मधु मेवन की,
किहु कौ नहिं एकहु अत्र कनी ।

गनिकान के गान में मस्त कोऊ,

कोऊ कष्ठ पुकार करैं अपनी ।

असमानता यों जग व्याप रही,

किहि कारण शेष़ धरै धरनी ।

श्रंगार -

कहि जाय नहीं अनयारी महा,

अंखियां कजरारिन की करनी ।

कल कंजन भंजन मान कियौ,

मन रंजन खंजन की हरनी ।

जिन छेद कियौ शशि के उर में,

तिनकी जग कौ़न करै बरनी ।

विछकें न रसातल जाय कहूँ,

इहि कारण शेष धरै धरनी ।[5]

हास्य-व्यंग -

मुश्किल अराम वैसे ही था गरमी से मियाँ,

सोना भी हराम दुख रोना ये बजा किया ।

सूना घर जान घुस आते छिप जाते कहीं,

कोना देख दिन भर न निकले नजाकिया ।

'व्यास' मदमाते इठलाते गीत गाते शाम –

होते ही चलाते खेंच खंजर कजाकिया ।

घूम घूम जाते झुक झूम झूम जाते कभी –

चूम चूम जाते मुँह मच्छर मजाकिया ।[6]

केश जूड़ा -

नैक जो संभार कर बांधौं सीस जूरे माहिं,
तुरत सुहोत घुति मरकत आला क्यों ।

बेंदी -

सुरंग दुकूल 'व्यास' बेंदी छवि मूल झूल,
शीश फूल राशि प्रेम सौं पगावै री,
सखिन दुरावै भेद बाहिनै बतावै आजु,
क्यों न दृग अंजन में अंजन लगावै री ।

मुख -

तिय मुख चंद की भई है घुति मंद कौन,
कारण विलोक घुति मंद दिनकर की ।

नेत्र-भौंहें -

'व्यास' कहैं राजत आनूप सुखमा स्वरूप,
वरूनी सु राहु केत भौंहन सुचैन हैं ।
विग्रह विहाय आय बसत अनुग्रह तें,
प्यारी तेरे नैन हैं कि नव ग्रह ऐन हैं ।

शीश फूल-

आनन विलोको ऐसौ आनन विलोको कछु,
आनन कहौं हौं चतुरानन हरेठयौं हैं ।

कारे सटकारे लटकारे अटकारे केश,
वारे छवि वारे ओज मान को उमेठयौ हैं ।
'व्यास' कहैं सो है शीश फूल सुख मूल मंजु,
उपमा अतूल भूल नाहिं मन पैठयौ हैं ।
अमल अमंद द्वन्द राहु ने झपेट्यौ देख,
मानों मारतण्ड राहु शीष चढ़ बैठयौ है ।

बरौनी -

पलक पुरैन जाल डोरन मृणाल लाल,
सुभ्रता सरोज पंक्ति वरूनी भ्रमर है ।

कपोल -

'व्यास' कहें गोल गोल ललित कपोलन पै,
रद छद छाजै छवि छूट छिति छोरा में ।

माला-हार -

'व्यास' ज्योति जालन के हरि मुक्ति मालन के,
हार तज धारन के प्रचुर प्रवालन के ।
मंजु मणि लालन जटित सुलालन के,
आगे धारे लालन के पींजरा सुलालन के ।

नाक नथुनी -

'व्यास' कहैं सौत कौ संजौग नहिं काने सुनै,
सासु सुख मानै मन, मानै अब गाहें तें ।
अमल अमोल वर मंजुल सुमोंतिन की,
पहिरत नाक में नथूनी नाहिं काहे तें ।

माहुर-मांग -

'व्यास' कहैं भाल में सु अजब अनौखे लाल,
अजब अनौखौ लाल माहुर सुहायौ है ।
सांची कहौं अधरन अंजन लगायबौ जू,
सुभग सयानी कौन सौतन सिखायौ है ।

मेंहदी -

है न छल छंद कौ प्रबन्ध कछु यामें सुख,
सुखमा अमंद मुख उपमा लगै री मंद ।
लिख दै सखी री ऐरी मेंहदी लगाय मेरे,
कर अरविन्द में गुविन्द के पदारविंद ।

चोली -

भूषन अटोट धार वसन सुगौट दार,
उरज उचोट चोट बंद कस चोली की ।

घांघरा -

'व्यास' कहैं कौन तें कहौं री दुख जी कौ यह,
तरकै तनी हैं कंचुकी की यों खरी–खरी ।
लगत हरी–हरी अरी सुकौन कारन तें,
परत सुढ़ीली जात घांघरी घरी – घरी ।

करधौंनी -

'व्यास' कहैं करत सँभार वार–वार तौ हू,
रहत न रोकी हार मानी मन मौनी की ।

कुन्दन कौं तान भौजी ढीली कर दीनी कैधौं ,
निपकन लागी आली कील करधौंनी की ।

नूपुर किंकनी -

नूपुर नवीन सुरलीन किंकनींन झींन,
घूंघट की ओट नैन सैन कौं चलाबै है ।
बधिक प्रवीन बीन बीन मृग दीन चीन,
बीन कौं बजाय कड़ाबीन चटकावै है ।

यौवन -

तरल तरंग संग यौवन उमंग अंग,
अंगन अनंग रंग रंगन सुडौल है ।[7]

इस प्रकार कविवर व्यास जी के काव्य में रीतिकाल की परम्परा का अनूठे और स्वाभाविक ढंग से निर्वाह हुआ है, साथ ही इस काव्य में रस, अलंकार, छन्द का भी परम्परानुसार रीतिकालीन आचार्यों की भांति समावेश हुआ है । आचार्यों की परम्परा में उनका स्थान सदैव अविस्मरणीय रहेगा ।

नायिका भेद :-

आचार्यों ने नायिकाओं के स्वकीया, परकीया और सामान्य तीन प्रकार के भेद किए हैं तथा स्वकीया के भी तीन भेद मुग्धा, मध्या और प्रौढ़ा किये हैं ।

मुगधानायिका :-

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार वह स्त्री मुग्धा कहीं जाती है जो नम्र, सरल तथा गृहकार्य में तत्पर और पतिव्रता होती है । एक उदाहरण इस प्रकार है –

'व्यास' कहैं नागरी, मुनागरी न जाने कौन,
करत सुगान मन मोद के मजा में है ।
सखिन झला में बैठी सुमति सला में आयो,
लख घनश्याम नाम हेरत न सामें है ।[8]

प्रस्तुत उदाहरण कृष्ण की किसी चतुर और गुणी पत्नी का है, जो सखियों के समूह में बैठी प्रसन्न मन से गीत गा रही है, कृष्ण अचानक आते हैं किन्तु लज्जा के कारण वह नेत्र नीचे कर लेती है, रतिभाव की अपेक्षा लज्जा की अधिकता के कारण यहाँ मुग्धा नायिका है ।

मध्या नायिका -

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार मध्या स्वीकाया वह नायिका होती है, जो रति लीलाओं में प्रवीण, काम पिपासा युक्त होती है, उसका यौवन उभार पर आता है, उसे प्रेमालाप में अधिक हिचक नहीं होती और उसमें रति, लज्जा भी अधिक नहीं होती –

संग लै सहेली अलबेली काम खेली मेली,
उरज उठेली तन चोली बंद खोले ना ।
जान तीज सावन की गत गज गामिन की,
आई बाग झूलन रस जाने क्यों घोलै ना ।[9]

वासक सज्जा -

यह वह नायिका होती है, जो अपने शोभित रंग महल में सखियों के द्वारा सजाई जाती है और अपने प्रियतम से मिलने की प्रतीक्षा में निरत रहती है –

सुन्दर नवेली बोल षोडश श्रृंगार सजि,
जाके अंग अंग छाये अतन अताई है ।
दुख हिय छायो देख मुख मुरकायो मंजु,
नभ घनश्याम घनश्याम सुध आई है ।[10]

खंडिता नायिका -

नाट्याचार्य भरत मुनि ने खंडिता नायिका के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए कहा है खंडिता वह नायिका है, जिसका प्रेमी अपनी किसी दूसरी प्रेमिका के साथ प्रेम प्रसंग में पड़े रहने के कारण उसके पास नहीं आता, तो नायिका विरह में दुखी होती है –

ए हो घनश्याम तन श्याम उघरे हैं नख,
मोतिन माल चिन्ह उरते उर लागे तैं ।
नैन अरूनारे बैन अद्भुत उघारे नैन,
आलस भरे हो अंग मैन सैन दागे तें ।[11]

इस प्रकार व्यास जी ने श्रृंगारिक रीति परम्परानुसार लिखे काव्य में खंडिता नायिकाओं की विविध स्थितियों का चित्रण किया है ।

<u>**अलंकार**</u> – व्यास जी के काव्य में इन अलंकारों का समावेश हुआ है –

यमक अलंकार -

परम पुनीत अंग मृदु नवनीत रीत,
झामा झीन पीत प्रीत पूरन पुनाई में ।
मंजुल मुकुट लट लटकै कपोल तट,
कुंडल डुलत अति सुषमा सुहाई में ।[12]

परिकर अलंकार -

जहाँ साभिप्राय विशेषणों का प्रयोग किया जाय, जिससे वक्ता का तात्पर्य विशेषण से प्रकट होता हो वहाँ परिकर अलंकार कहा गया है । व्यास जी ने श्री कृष्ण की दीन दयालुता से सम्बद्ध एक छंद में अनेकानेक साभिप्राय विशेषणों को व्यवहत्त किया है, जो बड़ा ही मनोरम जान पड़ा है –

दीन जन हितकारी दीनबंधु दीनानाथ,
दारिद दुरंद दूर द्वन्द्वन दुरैया हौ ।

उक्त स्थल पर दीनबंधु, हितकारी, दीनजन, देवन सहाई, द्वंदन, दरैया आदि अनेकानेक शब्द श्रीकृष्ण के विशेषण होने के कारण परिकर अलंकार का उत्कृष्ट उदाहरण है ।

मीलित एवं अधिक अलंकार -

जहाँ दो पदार्थों में सादृश्य न दृष्टिगोचर हो, वहाँ आचार्यों ने मीलित अलंकार माना है –

तट यमुना के जाके बांसुरी बजाई श्याम,
ध्वनि मनमोहन त्रैलोकन समानी है ।

रिषि मुनि ध्यान तजी शंकर समाधि,
ज्ञान ब्रह्म विस्नु देव धाए मति बुधरानी है ।

यहाँ राधिका का स्वरूप और रविरंजित धूल में सादृश्य होने के कारण भेद का पता न लगने से मीलित अलंकार है । यहाँ कृष्ण की मुरली की ध्वनि के आकार से तीनों लोकों का आधेय अधिक होने के कारण अधिक अलंकार भी है ।

संदेह एवं परिकारंकुर अलंकार -

जहाँ किसी पदार्थ के सम्बंध में सादृश्य के कारण संदेह प्रतीत हो वहाँ संदेह अलंकार होता है –

हार मान बैठे कै बिसार मान बैठे नाथ,
धार मान बैठे कैधौं मति भ्रम हवै रही ।
कैधौं भई कृपन कृपा की कान कृपा खान,
कैधों सुखदान सुखदान बान स्वै रही ।[13]

उपर्युक्त उदाहरण में हार मान बैठे, विसार मान बैठे, धार मान बैठे, मतिभ्रम में होना, कृपा की कान में करी आना, दया का दीनों की दयालुता से हीन हो जाना इत्यादि पदों में 'कै' और 'कैधों' शब्दों के द्वारा अनेक बार संदेह प्रकट किया गया अनेक विकल्पों के पश्चात् भी सन्देह बना हुआ है यह संदेह अलंकार का उत्कृष्ट उदाहरण है । इसके अतिरिक्त इसमें कृ पाखान, सुखदान, करूणाकर इत्यादि अनेक शब्द साभिप्राय विशेष्य होने के कारण परिकरांकुर अलंकार भी हैं ।

अन्य अनेक अलंकारों की संसृष्टि -

'व्यास सुधा' में अनेकानेक छंद ऐसे भी हैं, जिनमें एक साथ प्रथक–प्रथक लक्षित होने वाले अनेक शब्दालंकार और अर्थालंकार अपनी छटा बिखेर रहे हैं, एक उदाहरण इस प्रकार है –

> देख मुँख चन्द घुति चंद्र दुति मंद होत,
> लोचन विलोक मृग शावक लजायो है ।
> देखकें अनूप रूप जात रूप जात रूप,
> सोनौं और सुगंध दोनों एक में समायो है ।
> उन्नत उरोज ओज ओठन ललाई 'व्यास',
> यौवन अनंग अंग अंग सरसायो है ।
> एक लट लटकै है प्यारी के कपोलन पै,
> मानो राहु चन्द्रमा पै चाबुक चलायो है ।[14]

उपर्युक्त छंद की प्रथम पंक्ति में मुख चन्द में रूपक अलंकार है और नायिका के मुख के प्रकार के समक्ष चन्द्रमा का प्रकाश मंद होने में तथा नायिका के नेत्रों के समक्ष मृग छौना के लज्जित होने में व्यतिरेक अलंकार है । छंद की तृतीय पंक्ति में 'जात रूप', 'जात रूप' में 'जात रूप' के प्रथक दो अर्थ (1) सोना, (2) रूप का चला जाना निष्पन्न होने से सार्थक यमक अलंकार है । इसके अतिरिक्त अंतिम दो पंक्तियों में गालों पर लटकती हुई बालों की लट में राहु द्वारा चन्द्रमा पर चाबुक चलाने की कल्पना में उत्प्रेक्षा अलंकार स्पष्ट है । इसमें कुछ अन्य शब्दालंकार भी काव्य चारूता का वर्द्धन कर रहे हैं । अन्य अलंकारों में 'छेकानुप्रास', 'अन्त्यानुप्रास' और 'पुनरूक्ति प्रकाश' भी अपनी छटा बिखेर रहा है ।

भाषा शैली -

व्यास जी का शब्द चयन उदारतावादी रहा है, उन्होंने भारत में प्रचलित तत्सम, तद्भव, अरबी, फारसी, बुन्देली एवं ब्रजभाषा, खड़ी बोली और अंग्रेजी भाषा के शब्दों को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया है, उदाहरणार्थ –

तत्सम शब्द -

ईश, अनिल, गुण–गण, पुण्य, विरद, सुत, गज, व्याघ्र, जगत, पुण्य, भव्य, दिग्भुवि, भगवद्, सुजन भूषण, जय जीवनकारी, वरिष्ठ, वशिष्ठ, प्रतिमा, वर, विश्व, भुवि, मुक्ति, प्रमोद, प्रिय, अधर्म, महि मंडल वेद, ज्ञान, जग द्वेष, दम, क्षिति, शचि, प्रभाव ।

अर्द्ध तत्सम -

सुण्ड, शुच, ईस, विद्वता, पुरान, चित, अनीत, सुबास, यतन, बिहार, मंजन, पौन ।

तद्भव -

सिद्धि, रिद्धि, निद्धि, सुन, मोर, जरन, झूम, विषैला, तीज, आँचर, हियहि, दूनों, दुपहरिया, सावन, धावन, तिरछी, हियरा, नेहन, विज्जू, चोंटी ।

अरबी-फारसी और उनके तद्भव -

मुफ्तखोर, मगरूर, जवान, कुरबान, इज्जत, दिल, बेमेल, यानी, ईद, चांद, कमाल, माफिक, शकल, मुहर्रमी, अकल एवं नकल ।

बुन्देली -

लड़ैती, लड़ैते, गुदबो, कोर, अड़ैतो, रसीली, पखवारो, खोर, जौन, चुचाए, कतैया, पै, सूनो, कुचाली, बरयाकें, बिरजौन, मचाई, निहारो, विचारो ।

ब्रजभाषा -

लगावत, गावती, लिपटै, झूलती, सावन, बढ़ावे, कुबिरिया, ओढ़े, लजावती, समझावती, दिखावती, उराहनों, लगावत, मुरकायो, अरूझाने, कठिनाई, फसैयो, सरसाये, लजायो, बलैया ।

खड़ी बोली -

बरसात, लुटाते, सिखाया, मिटाया, दिलाया, सुलाया, लीजिए, पाए, नहलाया, हुए, गिराया, निभाया, सुखाया, निराले, संभाले, मतवाले, प्याले, मुसकाना, झुकाना, अड़ जाना, भाषाएं, अभिलाषायें, अत्याचारों, झंकारों ।

अंग्रेजी और अंग्रेजी के तद्‌भव -

लाइन, किलियर, टिकट, ट्रेन, प्लेटफार्म, रिवाल्वर, ड्राइवर, कोट, पतलून, बिस्कुट, वरंडी, राउण्ड, टेबिल, लेवर ।

विषयाकुल अपेक्षित भाषा -

प्रसाद गुण सम्पन्न – 'व्यास सुधा' में प्रसाद गुण सम्पन्न भाषा है –

'आज भिखारी आया द्वार, मांग रहा है हाथ पसार ।
ए माँ बहिनों बहू बेटियों, लाज रखो माता की आज ।

माधुर्य गुण की प्रमुखता -

'व्यास सुधा' में अधिकाधिक वर्ण्य विषयों में माधुर्य व्यंजक वर्णों की ही अधिकता से प्रयोग है –

'पले पुण्य पल्लवों की गोद में पीयूष पी पी,
भव्य भाव झूले चारू चित में न चेते हैं ।
'व्यास' जल डूबत गयंद की गुहार सुन,
द्रवित दयालु दौरे बिनु पद त्रान के ।
दीन दुख देख जो न करते कृपा की कोर,
कानन लाग्यो कहा कसाई कोउ कान के ।[15]

ओज गुण -

कवि ने 'व्यास सुधा' में ओज की प्रभावोत्पादक योजना की है –

गड़ गड़ धक–धक धाँय–धाँय ध्वनि से गुंजरित आकाश हुआ,
धूंधारित ध्रुवों धूधरित धुवाँ के शोले से एक प्रकट प्रचंड प्रकाश हुआ ।

X X X

बाल भी न बांका होगा वीर सत्याग्रही का,
जारशाही पापिनी जलेगी आज होली में ।[16]

अभिधा शक्ति -

व्यास जी ने प्रभावोत्पादक एवं बोध गम्य भाषा द्वारा राष्ट्रीयता की भावना को जागृत करने के लिये अभिधा शब्द शक्ति को ही अधिक प्रश्रय दिया हैं –

रात और दिन हमारी कमाई हुई न बचत साल भर में भी पाई हुई
जो भी पुरखो की पूंजी बचाई हुई इस तिहाई में वो भी सफाई हुई ।
है हमारी फज़ीहत और उनका जसन मुफ्त खोरो ने लूटा हमारा है धन।[17]

लक्षणा शक्ति -

मुख्यार्थ : की बाधा होने पर किसी प्रयोजन को लेकर जिस शक्ति के द्वारा मुख्य अर्थ से सम्बन्ध रखने वाला अन्य अर्थ लक्षित किया जाये उसे लक्षणा शक्ति कहते हैं, व्यास जी ने देश में प्रचलित मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग इस दृष्टि में किया हैं –

1) न डरती मन मैं बृज की बनिता करती नभ में यह छेदन को ।
2) नभ में थिंगरीन लगावती हौ ।
3) लालन ईद के चाँद भये है ।
4) उर्दन के धोखे लाल मिर्च चबैयो ना ।
5) मुंस कियो मातु ने तिहारी बुरो कियो ।

छोड़ दियो फेर ये तौ और ही बुरो कियो ।[18]

राष्ट्रीय कवि व्यास जी का शब्द चयन अत्यन्त आर्कषक और प्रभावशाली है इनके भाषा और भाव का चमत्कार इस छन्द में देखिये, इसमें कवि ने बुन्देलखण्ड की महानता का चित्र प्रस्तुत किया है –

नैसुक खनत निकसत पुंज हीरन के,
जगमग होति ज्योति जागत विभाबरी ।
हिम है न आतप न पंकिल प्रवेश जाहि ,
बिरचि–विरंचि करे सुरूचि घराघरी ।

आंधी कौ न ऊधम न उल्कापात घात भूमि,
कंप की भरा–भरी न बाढ़ की तरा–तरी ।
कीरति अखण्ड धन्य–धन्य श्री बुन्देलखण्ड,
ऐसो कौन देश करै राबरी –बराबरी ।

इसके अतिरिक्त व्यास जी ने बुन्देलखण्ड के प्राकृतिक विशेष स्थलों पर भी रचनायें प्रस्तुत की हैं ।

व्यास जी ने भक्ति काव्य रीति परम्परा का पालन सभी रसो में किया हैं, वीर, भयानक, अद्भूत, शांत, करूण उनसे छूटा नहीं हैं । अनेक छन्दों में उन्होनें लोकोत्तियों का पात्रानुकूल सुन्दर प्रयोग किया हैं । बुन्देली रचनाओं में अनुप्रासों का बहुल प्रयोग हैं । अनुप्रासों में लाट्, यमक, वृत्यानुप्रासों का बाहुल्य हैं, अर्थालंकारों में उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, वक्रोक्ति, असंगति, अन्योक्ति, अपन्हुति आदि अनेक इनके काव्य में यथावसर प्राप्त होते हैं ।

क्रांतिकारी एवं सुप्रसिद्ध साहित्यकार डा0 भगवानदास माहौर के अनुसार – "रानी लक्ष्मीबाई विषयक व्यास जी की कुछ कवितायें उनके एक छोटे से काव्य संग्रह 'वीर ज्योति' में छपी है ।" इसमें अपूत ध्वनि, सवैया, घनाक्षरी, किखान आदि छन्द है जिसमें दंगली काव्य कौशल के साथ हार्दिक वीर भाव और स्वतंत्रता के लिये सच्चे उत्साह के भी दर्शन होते हैं । 'अमृत ध्वनि छन्द' का एक उदाहारण इस प्रकार हैं –

दमकत बाई साब्र की दीपति अमल अंभग ।
चमकत चपल उमंग सौ जंग साहब तुरंग ।
जंगग्गहन तुरूमम्मत कुरूंगगगति रूख ।
खंगग्गहत फिरंगिग्गिरत सुंरगग्गत मुख ।

संगग्गरव उमंगग्गरज सुगंगग्गुन रत ।

छन्दद दुरत अंमद द्धधुति यश चन्दद्धमकत ।

व्यास जी की उल्लेखनीय काव्य भाषा तत्कालीन हिन्दी साहित्य में इतनी अधिक प्रभावशाली एवं लोकप्रिय रही हैं की उनकी रचनाओं का प्रकाशन तत्कालीन दैनिक, साप्ताहिक एवं मासिक पत्र पत्रिकाओं में निरन्तर होता रहा, इनमें सुकवि, मधुकर, नवभारत टाइम्स, दैनिक हिन्दुस्तान, अनेक अभिनन्दन ग्रथों एवं आकाशवाणी दिल्ली से उनकी रचनाओं का प्रसारण हुआ । श्री लक्ष्मी व्यायाम मन्दिर झाँसी में इनके काव्य शिष्य श्री राम चरण हयारण 'मित्र' के प्रयास से यहाँ 'बुन्देलखण्ड शोध संस्थान' की स्थापना भी कविवर व्यास जी की स्मृति स्वरूप की गई हैं, जहाँ प्रायः साहित्यक कवि गोष्ठियां, साहित्यकारो की जंयतियां आयोजित की जाती है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. व्यास – यश – सिंधु (राष्ट्रकवि जन्म शताब्दी ग्रंथ), पृष्ठ – 33 ।
2. व्यास – यश – सिंधु (राष्ट्रकवि जन्म शताब्दी ग्रंथ), पृष्ठ – 33 ।
3. व्यास – यश – सिंधु (राष्ट्रकवि जन्म शताब्दी ग्रंथ), पृष्ठ – 33 ।
4. भक्ति संकेत (अप्रकाशित) घासीराम व्यास, पृष्ठ – 2 ।
5. राष्ट्रकवि घासीराम व्यास का व्यक्तित्व एवं कृतित्व – रामचरण हयारण 'मित्र' पृष्ठ 183 – 185 ।
6. राष्ट्रकवि घासीराम व्यास का व्यक्तित्व एवं कृतित्व – रामचरण हयारण 'मित्र' पृष्ठ – 178 ।
7. व्यास– यश – सिंधु (राष्ट्रकवि जन्म शताब्दी ग्रंथ), पृष्ठ– 46–48 ।
8. व्यास–सुधा – घासीराम व्यास, पृष्ठ – 50 ।
9. व्यास–सुधा – घासीराम व्यास, पृष्ठ – 51 ।
10. व्यास–सुधा – घासीराम व्यास, पृष्ठ – 51 ।
11. व्यास–सुधा – घासीराम व्यास, पृष्ठ – 52 ।
12. व्यास–सुधा – घासीराम व्यास, पृष्ठ – 71 ।
13. व्यास–सुधा – घासीराम व्यास, पृष्ठ – 58 ।
14. व्यास–सुधा – घासीराम व्यास, पृष्ठ – 55 ।

15. व्यास–सुधा – घासीराम व्यास, पृष्ठ – 59 ।

16. व्यास–सुधा – घासीराम व्यास, पृष्ठ – 19 – 35 ।

17. व्यास–सुधा – घासीराम व्यास, पृष्ठ – 24 ।

18. व्यास–सुधा – घासीराम व्यास, पृष्ठ – 47, 48, 48, 54, 75 ।

सप्तम् अध्याय

- राष्ट्रीय काव्य धारा में कविवर व्यास जी के काव्य की प्रासाँगिकता :
- तत्कालीन् काव्य साधना में उनका स्थान :
- स्वतंत्रता आन्दोलन विषयक दस्तावेज :
- महत्वपूर्ण पत्र:
- संस्मरण :
- स्वाधीनता आन्दोलक विषयक तथ्य आदि :
- उद्गार :

अध्याय सप्तम्

राष्ट्रीय काव्यधारा में कविवर व्यास के काव्य की प्रासंगिकता :-

हिन्दी की छायावादी काव्यधारा देश और समाज के नूतन इतिहास – बोध, नए सांस्कृतिक एवं सामाजिक चैतन्य की अनिवार्य काव्य परिणति रही हैं । लोकतांत्रिक चेतना की इस पृष्ठभूमि ने सम्पूर्ण राष्ट्र के साहित्य मानस को प्रभावित किया, फलस्वरूप छायावाद में राष्ट्रीयता की रागात्मक अभिव्यक्ति हुई । इसी से इस युग में अतीत गौरव, उद्बोधन गीत, प्रयाणगीत आदि की रचना के साथ – साथ यर्थाथ परक चित्रण भी हुआ । छायावाद युग के पश्चात् हिन्दी साहित्य में आधुनिकता की अभिव्यक्ति प्रयोगवाद और प्रगतिवाद के रूप में दिखाई पड़ी, जो क्रमशः व्यक्तिवादी और समाजवादी जीवन दृष्टि लिये हुये थी । प्रगतिशील काव्य छायावाद का सहज विकास माना जायेगा, किन्तु प्रगतिवादी कविताऐं एक विशिष्ट, प्रतिबद्धता के परिणाम स्वरूप लिखी गयी । लोक भावों और जीवन की ज्वलन्त समस्याओं की अभिव्यक्ति इस काव्य में अधिक हुई हैं, जीवन का यथार्थ प्रगतिवादी युग में विशेष रूप से मुखर रहा । समाजवाद से सहज सम्बन्ध होने के कारण प्रगतिवादी साहित्य को मुख्यतः सामाजिक या सामूहिक चेतना मानता हँ, वैयक्तिक नहीं, इस काव्य की प्रवृतियाँ स्वतंत्रता की भावना, और अन्तर्राष्ट्रीयता, परिवर्तन की पुकार, समाजवादी यथार्थवाद, समस्याओं के प्रति जागरूकता, काव्य के विषय में अति सामान्य धारणा व बौद्धिकता और व्यंग का प्रसार मुख्य हैं ।

छायावाद की समाप्ति के तत्काल बाद 1939 में पंतजी के 'ग्राम्या' तथा 'युगवाणी' का प्रकाशन हुआ, परिणाम स्वरूप प्रगतिवाद का आरम्भ हो जाता हैं । प्रगतिवाद युग की दृष्टि से प्रधान नहीं हो पाया, किन्तु परम्परा के रूप में सम्पूर्ण साहित्य को आज भी प्रभावित करता है । हिन्दी साहित्य

में माखनलाल चतुर्वेदी, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', रामधारी सिंह 'दिनकर', बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' प्रगतिवादी दृष्टिकोण के कवि हैं । आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में लिखा हैं – "यहाँ भी किसान आंदोलन, मजदूर आंदोलन, अछूत आन्दोलन आदि आंदोलन एक विराट परिवर्तन वाद के नाना व्यावहारिक अंगो के रूप में चले । इन कवियों की वाणी द्वारा ये भिन्न – भिन्न प्रकार के आंदोलन प्रतिध्वनित हुए ।" शुक्ल जी ने आगे चलकर इन कवियों को 'स्वच्छन्द धारा' का कवि स्वीकार किया हैं । कविवर घासीराम व्यास यद्यपि किसी विशेष धारा के कवि नहीं रहे किन्तु उनका अपना मूल काव्य साहित्य स्वच्छन्द धारा के अंतर्गत लिया जाना चाहिये । क्योकि इनका अपना काव्य स्वतंत्र भाव प्रकाशन से प्रेरित था ।

व्यास जी तत्कालीन क्रांति एवं राष्ट्रीय आंदोलन से प्रभावित रहे हैं और उनकी रचनायें भी राष्ट्रीय आंदोलन तथा सम–सामयिक मानवीय समस्याओं से प्रेरित रही हैं, उन्होनें हिन्दी साहित्य के इतिहास का पूरी तरह अध्ययन किया था । वे रीति, भक्ति एवं क्रांतिकारी साहित्य से प्रभावित हुये बिना नही रहें । उन्होंने एक ओर रीति विषयक अचार्यात्व का निर्वाह किया तो दूसरी ओर गांधीवाद, राष्ट्रीयता तथा क्रांतिकारी भावना से प्रभावित होकर तत्सम्बन्धित काव्य रचनायें भी की । लोक साहित्य का सृजन कर लोक कवियों को प्रेरित और प्रभावित भी किया । उनके प्रयत्नों से 'बुन्देलखण्ड कवि मंडली' की स्थापना हुई, तत्कालीन साहित्य सेवी इस प्रतिद्वन्दिता से न केवल प्रोत्साहित हुये वरन् सम–सामयिक एवं छंद बद्ध रचनायें करने में पारंगत भी हुये । इस प्रकार से इस क्षेत्र में कवि दंगलों की भरमार आ गई और साहित्य सेबी अपनी–अपनी रचनाओं से जन–समुदाय को प्रभावित करने लगे । जन–कवि के रूप में व्यास जी की

ख्याति बुन्देलखण्ड के ग्रामों – ग्रामों में फेल गयी, हजारों लाखों व्यक्तियों ने इन काव्य दंगलो से प्रेरणा ग्रहण की तथा अनेक कवियों का आविर्भाव भी इसी माध्यम से हुआ ।

व्यास जी अपनी शैली के कुशल एवं पारंगत कवि रहे । तत्कालीन राष्ट्रीय आन्दोलनों में उनका सक्रिय योगदान रहा । उन्होंने जेल यात्रायें भी की, अंग्रेज सरकार के दमन को भी सहा हैं, 39 वर्ष की अल्प अवस्था में उन्होनें हैरत अंगेज राष्ट्रीय कार्य किये । जेल जीवन मे भी उन्होनें अपनी अमूल्य रचनायें लिखी । राष्ट्रीय नेताओं के निरन्तर सम्पर्क में रहे, स्वतंत्रता आन्दोलन, अछूत आन्दोलन, किसान आन्दोलन, सत्याग्रह आन्दोलन तथा अन्यान्य राष्ट्रीय आन्दोलनों मे भाग लेकर अपना एक राष्ट्रीय इतिहास निर्मित किया । महात्मा गाँधी जी के सत्य, अहिंसा और न्याय के सिंद्धान्त से भी वे प्रभावित रहे । उनके अनुयायी होने का उन्हें गर्व था । अहिंसात्मक सत्याग्रहों में ही उन्हें विशेष रूचि थी, इसके लिये उन्होनें अपना सर्वस्र न्यौछावार कर दिया । कठोर कारावास, पारिवारिक निर्धनता आदि ने उनके शरीर को तोड़ दिया, इस स्थिति ने अनेक रोगों को जन्म दिया और ऐंसी ही स्थिति परिस्थिति का सामना करते हुये वे सन् 1942 मे सदा–सदा के लिये चले गये । उनके पीछे एक राष्ट्रीय इतिहास जीवित रहा, जिसे आज भी स्मरण किया जाता हैं । कवि दंगलों में उन्होनें न जाने कितने नये कवियों को प्रोत्साहित किया तथा प्रेरणा प्रदान की । बुन्देलखण्ड में इनके प्रभाव से अनेक कवियों ने दुर्लभ साहित्य का सृजन कर अपना स्थान बनाया । आज भी कविवर घासीराम व्यास, आचार्य कवि नाथूराम माहौर और पं0 गौरीशंकर द्विवेदी शंकर के काव्य साहित्य को स्मरण किया जाता हैं । लोक कवि श्री राम चरण हयारण 'मित्र' कविवर

व्यास जी के ही शिष्य रहे और निरन्तर उनके भूले–बिसरे साहित्य को प्रकाश में लाने में जुटे रहे ।

मेरी अपनी दृष्टि में कविवर श्री घासीराम व्यास राष्ट्रीय चेतना के कवि हैं, वे सम–सामयिक जन आंदोलन के प्रेरक कवि हैं, उनकी रचनाओं में युग की पुकार हैं, राष्ट्रीय चेतना और क्रांतिकारी भावना हैं । उन्होनें तत्कालीन परिस्थितियों को समझा हैं और उनसे जूझने के लिये अपनी लेखनी उठाई हैं, वे निःसन्देह एक जुझारू कवि हैं, उन्हें किसी वाद के घेरे में नहीं बाँधा जा सकता । उनका एक ही बाद हैं – मानवतावाद, जिसमें तत्कालीन गांधीवाद, समतामूलक समाजवाद, चेतना प्रधानवाद, जनक्रांति वाद आदि आते हैं । इनके बाद में युगानुरूप रचनायें समाहित हो जाती हैं । उनके कवि की अपनी एक निराली दुनिया हैं, एक निराला चिन्तन है, जो अन्दर और बाहर दोनों में एक रूपता और तादात्म लिये हुये हैं । वह जनमानस की भावना के प्रतीक हैं । "यह कहना मुश्किल है कि व्यास जी को राजनीति, साहित्य क्षेत्र में ले आयी थी या उनकी साहित्यक प्रतिभा उन्हें राजनीति में ले आयी । उनके लिये देश सेवा और साहित्य–सेवा में कोई फर्क नही था ।"

जिस समय व्यास जी का अभ्युदय हुआ, देश में स्वंतत्रता संग्राम छिड़ चुका था। उस युग के सभी कवि एवं साहित्यकार इससे प्रभावित हुये बिना न रह सके । देश के कोने–कोने में नवजागरण के ओजस्वी स्वर फूट पड़े । देशवासियों ने स्वतंत्रता को अपना जन्म सिद्ध अधिकार स्वीकार किया और उसकी सम्प्राप्ति में अपने प्राणों का उत्सर्ग करने के निमित्त वे क्रांतिकारी पथ पर अग्रसर हो उठे, जिन्हें अनुप्रेरित करने वाले ये राष्ट्रीय कवि ही थे । कविवर व्यास जी का तो एक ही मूल मंत्र बन गया 'देश को पराधीनता से मुक्ति दिलाना ।' उनका काव्य तत्कालीन राष्ट्रीय कवियों से

भी प्रभावित रहा, उस समय एक भारतीय आत्मा माखनलाल चतुर्वेदी के ये ओजस्वी स्वर जन–जन के जागरण गीत बन चुके थे –

"बलि होने की परवाह नहीं मैं हूँ, कष्टों का राज्य रहे ।
मै जीता, जीता–जाता हूँ, माता के हाथ स्वराज्य रहे ।"

इसी समय 'नवीन' जी की भी रण–दुंदभी बज उठी थी –

"कवि कुछ ऐसी तान सुनाओं, जिससे उथल–पुथल मच जाये ।
प्राणों के लाले पड़ जायें, त्राहि–त्राहि स्वर नभ में छाये ।
एक हिलोर इधर से आये, एक हिलोर उधार से आये ।"

व्यास जी का य़ौवन – काल कड़े संषर्षो विद्राहों और बलिदानों का काल था । भारतीय नवचेतना स्वतंत्रता संग्राम को आगे बढ़ाने के लिये छटपटा रही थी, गाँधी जी के असहयोग आन्दोलन की शंख ध्वनि नवयुवकों को प्रेरित कर रही थी । उनके आवाहन पर नवयुवक विद्यालयों एवं महाविद्यालयों से बाहर आ गये थे । व्यास जी भी उनमें एक थे । उनका युवक ह्रदय राष्ट्रीय भावनाओं से उद्धेलित हो उठा । वे राष्ट्रीय चेतना के सजग प्रहरी बन गये । वे गोरी सरकार को चुनौती देने के लिये तरूणों का आवाहन करते हुये कह उठे –

"आओं आज हौसलें मिटा लें दिल खोलकर ।
स्वागत हैं आपकी जफा का जुल्म ढाने का ।।"

ठीक उसी समय 'बिस्मिल' के क्रांतिकारी गीत भी गूँज रहे थे, जिसने नवयुवकों को बलिदान की ओर प्रेरित किया –

"सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में हैं ।
देखना है ज़ोर कितना बाजुये कातिल में हैं ।।"

व्यास जी का भी मानस मंथन हिलौरें लेने लगा, और वे निरतंर अंग्रेजी साम्राज्यवाद के विरूद्ध जेहाद करने के लिए उतारू हो उठे, जन–जन में उनकी ओजपूर्ण वाणी गूंज उठी–

"बढ़े चलो मातृ – भू की नमक अदाई हेतु,
भय है क्या काल का, त्रिकाल का, विधाता का।
गोलियों का खाना शीश फांसी पर झुलाना मर –
जाना पर वीरों ! न लजाना दूध माता का।"

आगरा जेल में रहते हुऐ उन्होनें भारतीयों एवं नवयुवकों को अपना काव्य संदेश इन पंक्तियों में प्रसारित किया था–

"धन्य होगी कोख पुण्य होगा दूध मेरा जब,
देखूँगी कि तेरा गला फांसी पर लटके ।
तन पर लाठियां हों सीने पर,
शीश पर याकि फिर तेरे तेग खटके ।"

बात यह है कि आगरा जेल में राष्ट्रीय कवि पण्डित बाल कृष्ण शर्मा (नवीन) भी इनके साथ थे, नवीन जी के अनुरोध पर ही इन्होंने 'खटके' शब्द की समस्या पूर्ति पर अपनी उर्पयुक्त रचना लिखी थी, उस समय देश–वासियों के लिए इनका यह सन्देश सार्थक सिद्ध हुआ ।

व्यास जी भारतीय स्वतंत्रता के निर्भीक सेनानी थे उनकी ओजस्वी वाणी सहस्रों नर–नारियों को राष्ट्रीय भावनाओं से ओत–प्रोत कर देती थी। जब वे भारत माता को विदेशी सरकार से पीड़ित, अपमानित और शोषित देखते तो उनके मन में विद्रोह की चिंगारियां निकलने लगतीं थीं, उनमें आत्मविश्वास था, दृढ़ता थी, तत्कालीन परिस्थितियों से जूझने के लिए वे

विप्लव और क्रांति के सशक्त पक्षधर बन गये थे, उन्होंने राष्ट्र प्रेमियों के समक्ष अपना यह तीव्र उद्घघोष इन शब्दों में व्यक्त किया –

"प्रण कर निकले हैं शीश को हथेली धर,
प्राण रहते न पग पीछे को पछेलेंगे।
अरि के समक्ष दुरलक्ष लक्ष्य गोलियों के,
समर समक्ष निज वक्ष पर झेलेंगे।

'व्यास' भारतीय शान्ती क्रांति का अपूर्व पाठ,
देंगे पढ़ा विश्व को समोद स्वत्व ले लेंगे।
धसेंगे दुधारों पर नाचेंगे कटारों पर,
आरों पर चलेंगे अंगारों पर खेलेंगे।"

उनके काव्य के विविध रूप सम सामयिक परिस्थितियों एवं चितंन पर आधारित है। प्रमुख रूप में उनका योगदान राष्ट्रीय धारा को आगे बढ़ाने तथा स्वतन्त्रता संग्राम को शक्ति प्रदान करने में ही रहा है। स्वतन्त्रता आंदोलन में उनकी सक्रिय भूमिका रही है, उन्होंने इसके लिए जेलों में कठोर यातनाऐं सही। उनकी कसक और पीढ़ा जेल के सीखचों में गूँजती रही। कवि एक नए भविष्य के प्रति आस्थावान है, उसे उस दिन का विश्वास है कि जब सामाजिक क्रांति होगी, नवीन समाज का निर्माण होगा और वह समाज अपने आप में शक्ति सम्पन्न होगा, दीनता कोसों दूर हो जायेगी और मानव मन में आई निराशा स्वतः समाप्त हो जाएगी, वह दिन कितना विस्मयकारी होगा।

व्यास जी आत्मदर्शी परम भक्त थे, ऊपर से बड़े हंसौड़, विनोदी और फक्कड़ थे, परन्तु वे अपने काव्य में अपनी आत्म तुष्टि खोजा करते थे। वे

विनम्र थे और उनकी आध्यात्मिक तृष्णा अपार थी, भक्ति परक काव्य में उनके यह अनूठे विचार देखिए –

"दीनन निवाज नाथ दीन हीन हों अजान –
दास जान दया दृष्टि दीजिए दराज आज।
गुणगन गाय गाय गहन गहन गण,
साथ गणनाथ, गणनाथ फनराज आज।
'व्यास' शुभ साज साज विघन अकाज–काज ।।"

इस प्रकार व्यास जी का एक रूप तो राष्ट्रीय उपासना एवं देश सेवा का, दूसरा रूप सरस्वती उपासना का अथवा काव्य साधना का। दोनों पक्ष साथ साथ गतिशील रहे और यह पखेरू भरपूर उड़ाने भरता रहा। उन्होंने आरम्भ में फड़ बाजी, गवि गोष्टियां, कवि सम्मेलनों के माध्यम से बुन्देलखण्ड में साहित्यिक वातावरण को जीवन्त बनाया, तत्पश्चात जनसामान्य में जनचेतना, राष्ट्रीय ज़ागरण किया। उनकी रचनाओं का मूल उद्देश्य देश भक्ति और राष्ट्रीयता रही है, काव्य पाठ उनका अत्यन्त आकर्षक सुरीला और ललित होता था जिसका जन साधारण पर अमिट प्रभाव पड़ता था।

वीर ज्योति, जवाहर ज्योति, विजय ग्लानि, अश्वमेघ यज्ञ, रूकमणी मंगल, श्याम संदेश, कुरूक्षेत्र, अर्चना आदि रचनाओं के अतिरिक्त आज भी उनका उपलब्ध और अनुपलब्ध साहित्य शोधाधीन है । जिस पर मैंने भरपूर प्रकाश डालने का प्रयास किया हैं । और उनका दुर्लभ साहित्य भी प्राप्त करने में जुटा रहा । यह भी उल्लेखनीय हैं कि व्यास जी के प्रकाशित ग्रंथ पर परम योगी, योगाचार्य पीताम्बरा पीठाधीश्वर परम पूज्य स्वामी महाराज दतिया ने भी अपना शुभाशीर्वाद प्रदान किया था ।

यह वह युग था, जब राष्ट्र नेता महात्मा गाँधी ने कांग्रेस संगठन को व्यापक जनाधार दिया और उसे मध्यवर्गीय सीमाओं से बाहर निकालकर उसमें जन समान्य किसान – मजदूर का प्रवेश कराया । इस प्रकार प्रस्ताव पारित कराने वाली संस्था के स्थान पर कांग्रेस धीरे–धीरे अधिक जनोन्मुख होती गई । स्वाधीनतां हमारा जन्म सिद्ध अधिकार हैं, पूर्ण स्वराज जैसे उद्घोष कांग्रेस को प्रखर राष्ट्रीय बना रहे थे । गाँधी जी ने सत्य–अहिंसा से स्वतन्त्रता आंदोलन को खूनी क्रांति की राह अपनाने से बचाया । असहयोग आन्दोलन उग्र और हिंसात्मक हो गया तो उन्होनें उसके स्थगन की भी घोषणा की । राष्ट्र कवि व्यास जी गाँधी जी के परम अनुयायी थे, उनका राष्ट्रीय सन्देश पाकर उन्होनें किसान मजदूरों का संगठन किया, उन्हें स्वराज का मंच समझाया, उनके जीवन स्तर को उँचा उठाने के लिये उन्हें प्रोत्साहित किया । किसान सम्मेलन आयोजित किये । ग्रामीण अंचलों में जनजीवन को प्रभावित करने वाले काव्य सम्मेलन, फड़ तथा लोक जीवन से जुड़े जन समस्याओं से ओत–प्रोत काव्य साहित्य के माध्यम से जनसाधारण में राष्ट्रीय चेतना जाग्रत की । व्यास जी ने किसानों की दयनीय दशा का चित्रण करते हुये उनके दारिद्र पर प्रकाश डालते हुये लिखा हैं –

"न तो कपड़े हैं, न कुछ भी खाने को,
न ही ढ़कने को तन, न बिछाने को हैं ।

भूखे बच्चों को कुछ न खिलाने को हैं ।
रोज बेगार में मुफ्त जाने को हैं ।।

रात दिन है हमें सिर्फ रंज और गम,
मुफ्तखोरो ने लूटा हमारा हैं धन ।

हम पै लागन हैं भारी, लगाने लगे,

किश्त में बैल तक बिकवाने लगे ।"[1]

यहाँ तक कि प्रकृति के लहलहाते पोधों में खिलने वाले बेजुबान फूलों की आंहें भी उनसे नहीं बच सकी । प्रकृति के माध्यम से वे गरीब अमीर की असमानता का चित्रण इस प्रकार करते हैं –

"ये हैं वेजबान कहो किसने सताया इन्हें,

कोई–कोई कितने कठोर दिल होते हैं ।

पंत्तियों की ओट में छिपाये मुँह शाम से ही,

सरल सुमन फूट–फूट कर रोते हैं ।"[2]

व्यास जी खादी के वस्त्र पहनते थे, गाँधी जी से प्रभावित होकर उन्हानें खादी के कपड़े पहनते रहने का दृढ़ संकल्प किया । व्यास जी की माता जी रांटा से सूत कातकर अपने लिये कोरी से धोती बनवा लेती थी । व्यास जी धोती कुर्ता, चूड़ीदार पजामा, साफा, टोपी, गलगन्दा, वनयायन, अचकन, कोट, चादर, तौलिया सभी खद्दर के प्रयोग करते रहे । वे और खादी उनके जीवन में इतनी रचपच गई थी कि जल बिहार के अवसर पर उन्होनें भगवान को भी गाँधी टोपी में पूरी पोशाक सफेद खादी में पहनाई थी । जो भी दर्शनार्थी देखता वह वाह ! वाह! करते न अघाता । दर्शन के लिये भीड़ उमड़ पड़ी । पुलिस और अधिकारी भीड़ को देखकर परेशान ! उस समय अंग्रेज कलेक्टर था, खबर लगते ही वह पुलिस लेकर वहाँ पहुँचा तो भगवान का विमान और उनकी खादी वेशभूषा को देखते ही कहने लगाा – "पुजारी व्यास जी कांग्रेसी और अपने ठाकुर जी को भी कांग्रेसी बना लिया ।"[3]

व्यास जी की खादी विषयक एक कविता अत्यंत लोकप्रिय रही हैं उसकी अन्तिम कड़ी इस प्रकार हैं –

"कुमति कमायेगा खपायेगा दरिधर को,
लायेगा स्वराज हिन्द खद्दर के बल से ।"

मऊरानीपुर में खादी भण्डार न होने पर व्यास जी अपने लिये खादी झाँसी से मंगवाते थे ।

बुन्देलखण्ड के वरिष्ठ साहित्यकार डॉ0 कन्हैयालाल 'कलश' सम्पादक 'बुन्देली वार्ता' गुरसराय ने अपने संस्मरणों में व्यास जी के अंतरंग एवं बाह्मय पक्षों पर बड़े ही स्वाभाविक और शोध परक दृष्टि से प्रकाश डाला हैं । उनके अनुसार "ईसुरी, गंगाधर व्यास और लोक कवि भुजबल, बुन्देली साहित्य की तीन विधाओं (फागों, ख्यालों और गारियों) के साथ एक नई चौथी विधा राष्ट्रीयता के गीतों के साथ उत्पन्न हुई । इस चौथी राष्ट्रीयता विधा के प्रवर्तक चार प्रमुख व्यक्ति थे । जिस प्रकार कवियत्री में कहा हैं –

"धीरे फाग राग फड़ मइयाँ, ईसुर आँय पताका" उसी प्रकार चौथी विधा के प्रवर्त्तको में – "मुंशी प्रेम बिहारी अजमेरी जी चिरगाँव, नाथूराम माहौर झाँसी, घासीराम व्यास मऊरानीपुर और आर्चाय चर्तुभुज 'चतुरेश' भसनेंह में पुन्य श्लोक श्री पंण्डित घासीराम व्यास उपनाम 'श्याम' कवि चतुष्टय इस उन्नीसवीं शताब्दी में पताका के सदृश प्रकट हुये ।" कलश जी आगे लिखते हैं – श्री व्यास, घनश्याम पाण्डेय, चारों चतुरेश और मुंशी जी को छोड़कर कविन्द्र नाथूराम माहौर आरम्भ में फड़ वाले साहित्यकार थे । उन्नीसवीं शताब्दी में चिरगाँव, दतिया, झाँसी, मऊरानीपुर, गुरसरांय, भसनेह के फड़ो का रंग बदला तो श्री व्यास जी ने कांग्रेस के सन् 1932ई0

के अधिवेशन में श्री नेहरू के सामने पताका की जगह तीखी नोंक वाला 'नेजा' (भाला) गाड़ दिया । 'नेजा पर टांग देना, भेजा देशद्रोही का' और मैनें प्रथम बार छरहरे तन वाले, गाँधी टोपी धारी, माथे पर शक्ति का प्रतीक लाल तिलक वाले व्यास जी को देखा था । इस कवित्त पर श्री नेहरू ने व्यास जी को गले लगाकर राष्ट्रीय कवि कहा था और फिर तो वे नेहरू जी को अतयन्त प्रिय हो गये थे, यहाँ तक की वह दिल्ली के मंचो पर पताका फहराने लगे ।'[4]

सुकवि दयालु झाँसी ने 'राष्ट्र वरदान' शीर्षक से कविवर व्यास जी की वन्दना इस छन्द में की हैं –

"भारतीय गौरव, गुमानी भारतीयता के,
दासता से द्वेष, दीन दुखियों की शान थे ।
सुकवि महान, ज्ञानवान, गुणवान और,
साहस निधान, देश प्रेमियों की आन थे ।
प्राण थे शहीदों के, कमान शूरवीरों की ही,
जीवन स्वदेशी, जन शक्ति पहचान थे ।
मानव सुकर्मी, देश द्रोहियों के भी थे शत्रु,
परम सनेही व्यास, राष्ट्र–वरदान थे ।"[5]

डॉ0 हरिमोहन गुप्ता कौंच (जालौन) ने इस प्रकार उनके कृतित्व–व्यकतित्व पर प्रकाश डाला हैं, उनकी मुख्य पंक्तियां इस प्रकार है –

"कौन कहता है कि व्यास जी मर गये है,
उनके आदर्श कृतिव व्यक्तित्व,
आज भी उत्साह से भरते हैं ।

देश पर मर – मिटने की प्रेरणा से ही

तो जवान सीमा पर लड़ते है ।"[6]

तत्कालीन काव्य रचनाओं में उनका स्थान -

कविवर व्यास जी की काव्य कुशलता एवं प्रतिभा का उदय राष्ट्रीय आवश्यकता से होता है । व्यास जी के जाने माने शिष्य एवं मित्र श्री रामचरण हयारण लिखते हैं – "वे काव्य जगत में छायावाद की अभिव्यंजना से प्रभावित होकर प्राकृतिक सौन्दर्य और जन साहित्य तथा छंद शास्त्र की प्रगाढ़ उच्चतम रीतियों का अध्ययन तथा अनुपालन करके माँ भारती की सेवा में जनता के समझ प्रस्तुत हुये हैं ।"[7] तात्पर्य यह है कि तत्कालीन सृजन की श्रृगरीक रीति मुक्त कविताओं का व्यापक चलन था, उसमें एक स्वस्थ परिवर्तन आया । तत्कालीन कवियों ने अपनी अभिव्यक्ति के पारस्परिक क्षेत्रारिकता का त्याग किया और यास जी द्वारा प्रगति काव्य स्वजन के विषय एवं विधि को अपनाकर स्वयं अच्छी राष्ट्रीय गीत कविताओं का प्रस्तुतीकरण किया ।

डॉ0 रामकुमार वर्मा के अनुसार – "व्यास जी में एक और काव्य शास्त्र पर असाधारण अधिकार, दूसरी ओर काव्य रचना की नैसर्गिक प्रतिभा, एक ओर श्रृगांर की अजस्र धारा और दूसरी ओर वीर काव्य की घोर हुँकार, एक ओर जीवन की मर्यादा में विश्वास और दूसरी ओर क्रांति का शंखनाद के समन्वय पर आश्चर्य होना स्वाभाविक है । ऐसे उत्कृष्ट काव्य के रचयिता थे राष्ट्रीय कवि श्री घासीराम व्यास, जिनका अमर काव्य देशवासियों को सदैव राष्ट्र पर बलिदान होने के लिए प्रेरित करता रहेगा ।" उनके जीवन की अन्तिम अभिलाषा थी –

'कब्र पर डाल दें जरा सी कोई लाके पाक,

माँ के कदमों की खाक मेरे मरने के बाद ।'[8]

डॉ0 भागीरथ मिश्र ने व्यास जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के सम्बन्ध में अपना अभिमत प्रस्तुत करते हुए लिखा था "व्यास जी गहरी संवेदना के तथा राष्ट्रीय चेतना के कवि थे । उनका जीवन ऐसे युग में व्यतीत हुआ जो अनेक प्रकार के राष्ट्रीय, सामाजिक और साहित्यक आंदोलनों का समय था । उनकी प्रखर प्रतिभा ने सभी क्षेत्रों में अपना प्रकाश डाला और सभी आंदोलनों मे महत्वपूर्ण योगदान किया ऐसा लगता है कि उनमें इस उर्वर भूमि के सभी संस्कार पूंजीभूत रूप में विद्यमान थे, झाँसी की रानी, छत्रसाल की वीरता, भूषण लाल की ओजस्विनी वाणी केशव, बिहारी, प्रताप सिंह, ठाकुर की सौन्दर्य दृष्टि एवं मर्मस्पर्शिनी अभिव्यक्ति तथा अक्षर अनन्य, प्राणनाथ की भूमि भावना उनकी कविता में समाई हुई हैं । उनकी ओज पूर्ण राष्ट्रीय वाणी आज भी हमारे प्राणों में उत्साह और उल्लास का संचार करती हैं ।"[9]

बुन्देलखण्ड के वरिष्ठ साहित्यकार डा0 कैलाश बिहारी द्विवेदी ने कविवर व्यास जी के काव्य का मूल्यांकन करते हुये लिखा हैं – "आधुनिक युग में उत्तर माध्य कालीन ढंग से लिखने वाले ख्यात कवियों में गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही' सत्यनारायण कवि रत्न, बाबू जगन्नाथ दास 'रत्नाकार' आदि के साथ व्यास जी का नाम भी लिया जा सकता हैं । लेकिन व्यास जी की विशेषता यह थी कि जहाँ उन्होनें नायिका भेद लिखा, वहीं हिन्दी के आधुनिक काल की प्रमुख प्रगतिशील काव्य धारा के अनुरूप विषय वस्तु को भी अपनाया था ?"[10]

कविवर व्यास जी सुमित्रानन्दन 'पंत', रामकृष्ण दास, माखनलाल 'चतुर्वेदी', 'बचनेश जी' आदि महान कवियों की उपस्थिति में इलाहाबाद कवि सम्मेलन जो अग्रवाल महासभा द्वारा आयोजित था, भाग लेने सन् 1933ई0 में गए थे, और अपने काव्य से सभी को प्रभावित किया था । व्यास जी की ऋतुवर्णन विषयक स्वतंत्र रचनायें बहुत ही प्रभावशाली हैं, पावस वर्णन में रूपक अंलकार का बहुत सटीक प्रयोग हुआ हैं, पावस वर्णन की रचनाओं में व्यास जी का प्रयोगवादी रूप भी देखने को मिलता हैं, प्रकृति चित्रण में उनके काव्य सौष्टव की महता इस प्रकार व्यक्त हुई हैं –

1. "विशद – विशाल सड़क सुंरग रंग,
   उदित अकाश इन्द्र धनुष अमान की ।"

   "दम–दम विज्जु इलैक्ट्रिक लैंनटर्न,
   करते हैं प्रकाश न भासतम तान की ।"

2. "आपस में रार में, रहा न सार प्यार में हैं,
   बीसवीं सदी में क्या बसन्त की बहार हैं ।"

उपर्युक्त छंदों में छेकानुप्रास, अनत्यानुप्रास, लाटानुप्रास यमक एवं अर्थान्तरन्यास अंलकार एक साथ मिलते हैं । साथ ही अंग्रेजी शब्दों यथा इलैक्ट्रिक, लैनटर्न का भी प्रयोग हुआ हैं ।

व्यास जी वाणी के अमर पुत्रों में से थे, जिनकी रस – सिद्ध –तपः पूत आत्मा को मृत्यु स्पर्श नहीं कर सकती । इस युग ने जिन अनेक तपस्वियों को जन्म दिया हैं, उनमें एक सच्चे तपस्वी व्यास जी भी थे, उनकी आत्मा में दयार्द्र ओज था । उनके सक्रिय व्यक्तित्व ने एक ओर रसमय साहित्य में अभिव्यक्ति पाई, तो दूसरी ओर विशुद्ध राजनीति में ।

एक शब्द में व्यास जी का व्यक्तिव स्फटिक शुभ्र तथा सजल मेघ के समान उदार रहा हैं । स्वभाव से वह सदा आशुतोष शंकर रहे हैं । उनके जीवन चरित्र में एक क्रांतिकारी का आत्म त्याग, एक योद्धा का शौर्य और एक कवि की भावुकता, इन तीनों विशेषताओं ने एक त्रिवेणी बना दी थी । वे गोलियों के सामने स्थिर रह सकते थे .... परन्तु एक मोहक कविता सुनाते समय अथवा सुनते समय उनके नेत्रों से आंसुओं की धारा प्रवाहित होती थी । अपने सिद्धातों के वह सर्वथा सच्चे थे और उनके विनिमय का कोई व्यापार करना उन्होनें कभी स्वीकार नही किया ।

व्यास जी को आत्मदर्शी, तत्वदर्शी और परम भक्त के रूप में सब लोग जानते हैं । उनका नितान्त फक्कड़ हंसोड़ व्यक्तित्व अपने इस अध्यात्म रूप को आंचल में लौ की तरह छिपाये रहता था । अपने कवि कर्म के कृतित्व से वह कदाचित कभी संतुष्ट नहीं हुए । कभी उन्होनें अपने काव्य की डींग नही हांकी । काव्य के रूप में उनकी आध्यात्मिक तृष्णा अपार थी । वे भारत की सर्व श्रेष्ठ भक्ति परम्परा के आधुनिक कवि रहे है ।

राष्ट्रीय कवि श्री घासीराम व्यास जेल यात्राओं एवं राष्ट्रीय आंदोलनों तथा कार्यक्रमों में इतने व्यस्त रहे कि उन्होनें कभी अपने जेल जीवन, कारावास तथा अन्य अनेक अर्थदंडो के दस्तावेजों की ओर ध्यान ही नहीं दिया । उनकी धर्मपत्नी का उनके सामने ही निधन हो चुका था । उनके पुत्र श्री लक्ष्मीनारायण व्यास जी ने मुझे उन कुछ दस्तावेजों की फोटो कापी प्रदान की, जिसे में ज्यों का त्यों उदृधृत कर रहा हूँ :–

رسید نمبر रसीद नं० 11718

سنہ ۱۹ ع सन् १६३४.

इण्डियन नेशनल कांग्रेस। انڈین نیشنل کانگریس

मैं तसदीक करता हूँ कि श्री पं॰ [illegible] .... میں تصدیق کرتا ہوں کہ...

पिता का नाम पं॰ [illegible] .... ولدیت उम्र ...३०... عمر........

मजहब ...हिन्दू... مذہب पेशा ...[illegible]... پیشہ ग्राम ...[illegible]... موضع........

तहसील ...[illegible]... تحصیل हल्का ...[illegible]... حلقہ........

श्री पं॰ [illegible] कांग्रेस के मेम्बर हैं। आप इण्डियन नेशनल कांग्रेस की व्यवस्था और नियमों के अनुकूल मेम्बर हुए (हुई) हैं और आपने। चार आना ~~दो हजार मय सूत~~ फीस मेम्बरी बाबत १६३४ अदा कर दिया है।

.........کانگریس کمیٹی کے میمبر ہیں آپ انڈین نیشنل کانگریس کے قاعدوں کے مطابق میمبر ہیں اور آپ نے چار آنہ ادو ہزار گز سوت فیس میمبری بابت سنہ ۱۹ ع ادا کر دیا ہے۔

दस्तख़त मेम्बर बनाने वाले का [illegible]
دستخط ممبر بنانے والے کا

[illegible] मंत्री
سکریٹری

नोटः—गोहाटी कांग्रेस के प्रस्ताव के अनुसार प्रत्येक कांग्रेस के।) वाले सदस्य को भी जरूरी है कि अगर वह कांग्रेस कमेटियों और प्रतिनिधियों के चुनाव में अपना वोट देना चाहें तो आम तौर से खद्दर ही पहने।

कलकत्ता कांग्रेस के प्रस्ताव के अनुसार हर कांग्रेस के मेम्बर से आशा की जाती है कि अपनी आमदनी का एक हिस्सा कांग्रेस के लिये दे दाता को यह अधिकार है कि वह जिला या प्रान्तीय कमेटी को सूचित कर दे कि वह रुपया कांग्रेस के किस कार्यक्रम (मद) में खर्च किया जाय।

نوٹ—گوہاٹی کانگریس کی تجویز کے مطابق ہر ایک کانگریس کے ۴ آنہ والے ممبر کو بھی ضروری ہے کہ وہ کانگریس کمیٹیوں اور نمایندوں کے انتخاب میں اپنا ووٹ دینا چاہیں تو عام طور سے کھادی ہی پہنیں*

کلکتہ کانگریس کی تجویز کے مطابق ہر کانگریس کے ممبر سے اُمید کی جاتی ہے کہ وہ اپنی آمدنی کا ایک حصہ کانگریس کے لئے دے دینے والے کو یہ حق ہے کہ وہ ضلع یا صوبہ کمیٹی کو آگاہ کر دے کہ وہ روپیہ کانگریس کے کس مد میں خرچ کیا جائے

Rly Station Mauranipur

Jail Manual Form No. 13 } 22-4-1940
1,0000 copies. } A.C P.P.

RELEASE CERTIFICATE

D Jail Jhansi

Date of Release 12-11-41

Admission Register No. 4693

Name Ghasi Ram Vyas

Father's name Changa Lal

Caste Brahmin

Residence Mau Ranipur P.S. Mau Ranipur Jhansi

Road expenses ... ... Rs as. 6-0

Cash Deposit ... ... Rs 7 as. p.

Details of Jewellery etc., returned (if any)

Superintendent

महत्वपूर्ण पत्र

भारत रक्षा कानून के अभियुक्त का बयान

दिनाँक : 4.5.1941

व्यास आश्रम मऊरानीपुर

(जेल की राह में)

आदरणीय दादा जी,

सादर चरण स्पर्श,

भैया जी, रावत जी, काका जी, यशपाल जी, सीता भाई और आपके पड़ौसी तथा परिजन बन्धुओं एवं पचवटी के खग वृन्द नाना जीवों को यथा योग्य । अभी में जेल के बाहर हूँ कुछ अस्वस्थ्य हो गया था । अब अच्छा हूँ बिल्कुल । हाँ में छंद भेज रहा हूँ – पत्र के रूप में । आर्शीवाद देते रहिये ।

भवदीय

घासीराम व्यास

कविवर रामचरण हयारण 'मित्र' का पत्र

दिनाँक : 3.9.1939

झाँसी

पं0 श्री लल्ला जी पालागन,

अपाके चरणों की कृपा से यहाँ कुशलता हैं । अपनी कुशलता लिखना और बाई से पालागन कहना तथा यह सवैया सुधार कर जितनी जल्दी भेज सको सो भेज दीजियेगा ।

दिन नाथ की स्वर्ण प्रभा से खिले,

बिहंगा वलियों को लुभा रहे हो ।

नव योवन पे झुके चूमते हों,

मन में नहीं फूले समा रहे हो ।

न बने किसी के उर हार कभी,

प्रतिभा वन में ही दिखा रहे हो ।

सुमुनो ! यह वैभव दो दिन का,

लघु जीवन पे इतरा रहे हो ।

गिरिराज के शीष पे फूलता हूँ,

जग जीवन का सुख पा रहा हूँ ।

खग शावकों के संग खेलता हूँ,

वन की शुचि शोभा बढ़ा रहा हूँ ।

पढ़के नही स्वप्न में भावियों के,

करसें सुई शूल को पा रहा हूँ ।

झड़ते – झड़ते निज मातृ भू के,

पंद पंकजों में मिला जा रहा हूँ ।

उर मैं नये भाव तंरगें लिये,

नव पल्लवों मे झुके जा रहे हैं ।

रवि के नव वासर में खिलके,

प्रिय पुण्य पराग लुटा रहे हैं ।

जग की भरी दूषित शमनीकी,

नजरों से बचे सुख पा रहे हैं ।

कर याद अतीत की पादपों में ,

हंसते – हंसते झड़ें जा रहे हैं ।

आपका

रामचरण हयारण 'मित्र'

दत्तूलाल बद्रीनारायण मालू जी का पत्र

पं0 श्री घासीराम जी व्यास,

दन्तू लाल मालू का प्रणाम पहुँचे आप नवम्बर में ही घर आ आ गये होंगे, लेकिन में आपको दिसम्बर में नमस्कार भेज रहा हूँ । माफ कीजियेगा । आपके सुन्दर हल्फों में लिखे कुछ कवित्त जब गाता हूँ तो बरबस ही आपके गले से सुनने की इच्छा होती हैं , अब यह सुन्दर घड़ी न मालूम कब आवेगी, आश लगाकर इन्तजार करूँगा । आपने मुझे कविता की दो काँपियाँ जो छपी हुई हैं भेजने को कहा था कृपया भेज दीजिये, मेरे लायक कोई सेवा हो तो लिखिये । पत्तोत्तर दीजिये ।

इन्दौर – 10–12–1941 आपका

दत्तूलाल मालू
छोटा सराफा (इन्दौर)

कल्याण मल लखौटिया का पत्र

श्रीमान् पंडित घासीराम जी व्यास, मऊरानीपुर

लिखी कल्याणमल लखोटिया की वंदे मालूम हो । आप जेल से छूटकर आये ऐसी खबर पत्रों द्वारा हमें मालूम पड़ गयी थी । लेकिन अफसोस हम आपको चिट्ठी नही लिख सका । कसूर माफ फरमाये ।

कल्याणमल लखौटिया

बड़ा सराफा, इन्दौर

संस्मरण :-

महामना श्रदेय व्यास जी के सानिध्य में जो व्यक्ति कुछ क्षणों के लिये भी आ गया वह उन्हें जीवन पर्यन्त नही भूल सकता । मेरे तो संस्कृत शिक्षा के गुरू नाट्य कला के पथ प्रदशर्क एवं राजनीतिक जीवन के प्रेरणा श्रोत थे ।

सौम्यता, सरलता और शिष्टाचार की साक्षात् प्रतिमूर्ति श्रदेय व्यास जी को कभी किसी ने क्रोधित मुद्रा में नही देखा होगा । मैने देखा घटना इस प्रकार हैं –

अंग्रेजी शासन था, मेरी आयु भी 11–12 वर्ष के लगभग होगी । स्थानीय बाजपेयी तालाब से नहाकर लौट रहा था, मार्ग गौशाला (वर्तमान अग्रसेन महाविद्यालय) के पास व्यास जी टीकमगढ़ बस से उतरे, तुरन्त ही पुलिस उन्हें गिरफ्तार कर नगर की ओर ले गयी । मैंने यह दृश्य देखा और दौड़ता हुआ घर पर आकर कुछ पुष्प तोड़कर आनन–फानन एक माला तैयार की । माला जेब में रखकर रेल्वे स्टेशन पहुँच के दरवाजे पर ही रखे डाक विभाग के बड़े बक्स पर खड़ा होकर प्रतीक्षा करने लगा ।

जैसे ही व्यास जी पुलिस के साथ गेट पर आये मैने वह पुष्प माल उनके गले मे डाल दी । मेरे माल्यापर्ण करते ही एक पुलिस वाले ने एक जोर का तमाचा मेरे गाल पर मार दिया ।

वह क्षण था, गुरूदेव के नेत्रों से आग बरसने लगी और उनका रोद्र रूप सामने आ गया, व्यास जी वहीं बैठ गये बगल में मुझे बिठा लिया । और पुलिस के साथ जाने से मना कर दिया, ट्रेन प्लेटफार्म पर खड़ी हैं रेल्वे और पुलिस के अधिकारी व्यास जी से अनुनय विनय कर रहे हैं, किन्तु गुरूदेव टस–से–मस नहीं हुए । जब उन्होंने उस अपराधी सिपाही द्वारा

क्षमा याचना नहीं करा ली, और मुझसे क्षमादान नहीं करा लिया । शान्त नहीं हुये ।

यह यब होने के बाद ही ट्रेन व्यास जी को लेकर झाँसी प्रस्थान कर सकी ।

हीरालाल सूरौठिया
मऊरानीपुर

सन् 1938 में जरौखर (हमीरपुर उ0प्र0) में किसान कॉफ्रेन्स थी, उसमें मित्र जी और व्यास जी को भी निंमत्रित किया गया था । दोनों जनों के पहुँचने पर पण्डित परमानन्द जी ने प्रबन्धकर्ता से कहा कि व्यास जी व मित्र जी के ठहरने की व्यवस्था करें । प्रबन्धकर्ता ने पंण्डित जी से कहा सब स्थान भरे हुये हैं, केवल एक महिला कैम्प खाली हैं, पण्डित जी मुस्कुराते हुये बोले अरे – भईया उसी कैम्प में 'व्यास जी' व मित्र जी को ठहरा दीजिये कवि तो नायिका का भी वर्णन करते हैं और नायक का भी, ये समय पर दोंनो के अनुरूप कार्य कर सकते हैं । पण्डित जी के इन शब्दों को सुनकर खूब हंसाई हुई ।

जरौखर किसान कॉन्फ्रेंस के सभापित के लिये पं0 जवाहर लाल नेहरू ने प्रस्ताव रखा कि सभापति के आने में विलम्ब हैं अतः मेरा क्राँतिवीर पं0 परमानन्द जी को आज की सभा के लिये सभापति का प्रस्ताव हैं, सभी ने प्रस्ताव को पारित किया । कवि सम्मेलन प्रारम्भ हुआ जब व्यास जी का क्रम आया तो पं0 जवाहर लाल नेहरू ने मुस्कुराते हुये व्यास जी से कहा कि 'आनद भंवन' के जवाहर पर सुनाने जा रहे हो या जनता के सेवक

जवाहर लाल पर इन महत्वपूर्ण शब्दों ने सभा स्थल को करतल ध्वनि से गुंजा दिया ।

डॉ0 रामचरण हयाराण 'मित्र'

झाँसी

जब मैं प्राईमरी स्कूल सराफा बाजार में पढ़ता था, एक बार व्यास जी से पैसे मांगे तो कह दिया मेरे पास नहीं हैं मैं कथा बॉच कर आया था तो बाई को सब पैसे दे दिये, उनसे मांगा करें, और मुझे बाजार ले गये कि तुम्हें जो भी कॉपी आदि की जरूरत हुआ करें, तुम इस दुकान से ले लिया करो उस समय मऊरानीपुर में मऊँया कगदीगर की दुकान थी । सिद्ध गोपाल रामचरण मऊरानीपुर और उसके बाद बड़े बाजार में ही किदारी बड़ौनिया की मिठाई की दुकान थी तो उससे भी कह दिया, जब यह जो मागा करे दे दिया करो । फिर मैंने व्यास जी से कभी पैसे नहीं मांगे ।

श्री लक्ष्मीनारायण व्यास

(राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जी के ज्येष्ठ पुत्र)

से साभार

टीकमगढ़ नरेश प्रतिवर्ष कुण्डेश्वर में वसन्त उत्सव पर एक वृह्लद कवि सम्मेलन आयोजित करते थे, । जिसमें पन्ना, बिजावर, अजेगढ़, रीवा, छतरपुर, झाँसी, दतिया आदि के सब कवि मऊरानीपुर होकर टीकमगढ़ जाया करते थे । व्यास चूंकि मऊरानीपुर के निवासी थे, अतः उन्हानें सभी

से कह रखा था कि जब आपका अपने साथी का घर हैं, इतनी दूरी से आप लोग आते हैं तो घर फारिग होकर जाया करें । श्री रामाधीन खरे, अम्बिका प्रसाद, दिव्य जी, माहौर जी, मित्र जी, अम्बिकेश गोस्वामी जी आदि सभी व्यास जी के घर रूक कर भोजन आदि करके (दुबे चौक में मोटर आ जाती थी टीकमगढ़ के लिये) सब एक साथ उसी बस मे बैठकर टीकमगढ़ को प्रस्थान करते थे ।

श्री लक्ष्मीनारायण व्यास

(राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जी के ज्येष्ठ पुत्र)

से साभार

पं० श्री घासीराम व्यास विनोदी स्वभाव के थे, जो इस घटना से उद्‌घटित होता है :-

अक्सर सुनने में आता है कि कुछ स्त्रियों को गर्भावस्था में शाम से रतौंधीं आने लगती हैं । हमें याद है कि मेरी माँ को भी रतौंधी आती थी । कार्तिक के महीने में स्त्रियाँ कार्तिक नहाती हैं । उस समय सिंघाडपाव (सिघाड़े के आटे के छोटे–छोटे सेब बनाकर उस पर मोटी चासनी की शक्कर चढ़ा देते हैं) हलवाईयों की दुकानों पर मिल जाता था । (यह उपवास में खाया जाता हैं । मेरी माँ ने व्यास जी से कहा कि रात को जब घूमकर आओं तो सिघाड़पाव लेते आना) व्यास जी को शरारत सूझी वह एक हडुआ पत्थर (इससे मकानों का चूना बनाया जाता था) लाए । मिठाई की दुकान से सिघाड़ पाव दौना में ले आये और सिघाड़ पाव के दौना में नीचे हडुआ रख दिया । जब माँ ने रात को वह खाया तो जब वह मुँह में

गया तो वह मीठा तो था नही पकड़ में आ गया । सुबह उन्हानें परमानंद बुधौलिया की पत्नी से कहा कि – देखा असाटीवारी लल्ला को आज क्या सूझी । उनसे सिघाड़पाव मगाया था, तो उन्होनें एक हड्डुआ पत्थर रख दिया । तो उन्हानें हँसकर कहा लल्ला को ऐसा नहीं करना था । पास में मैं वहाँ खड़ा था तो हमें हसीं आ गयी तो माँ ने मुझे डाटकर भगा दिया ।

श्री लक्ष्मीनारायण व्यास

(राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जी के ज्येष्ठ पुत्र)

से साभार

स्वाधीनता आंदोलन विषयक अन्य तथ्य आदि :-

- राष्ट्रकवि पं0 घासीराम व्यास की जयन्ती पर श्रद्धाँजलि अर्पित करते हुये देश के प्रख्यात साहित्यकार एवं विचारक श्री यशपाल जैन ने "बुन्देलखण्ड शोध संस्थान झाँसी" में आयोजित समारोह में कहा कि व्यास जी ने अपनी साहित्यक कृतियों के द्वारा राष्ट्रीय चेतना जाग्रत की वह देश के लिए सदैव प्रेरणास्रोत बने रहेगें ।

  श्री जैन ने कहा कि 'व्यास जी' ने साहित्य की सेवा तो की ही है, वह राजनीति में भी पूर्ण निष्ठा के साथ कार्य करते थे तथा समाज सेवी के रूप में भी उनमें उतनी ही लगन थी जितनी व्यास जी ने साहित्य के द्वारा राजनीतिक चेतना प्रज्जवलित की ।

  आपने स्व0 श्री व्यास जी की साहित्यिक साधना का मूल्याँकन करते हुये कहा कि उन्होनें तीन भाषाओं का सहारा लेकर रचना कार्य किया । उनमें ज्ञान कर्म व भक्ति की धारा अटूट थी । व्यास जी हमारे देश की विभूति हैं । हमें उनके द्वारा प्रतिपादित साहित्यिक व मानवीय मूल्यों की ओर आगे बढ़ना और बढ़ाना हैं ।

- इस अवसर पर समारोह की अध्यक्षता करते हुये बुन्देलखण्ड विश्व विद्यालय के कुलपति डा0 गोरखनाथ द्विवेदी ने कहा – व्यास जी जैसे अमर साहित्यकार जो दे जाते हैं, वह थोड़े समय में नष्ट नही होता । डा0 द्विवेदी ने सुझाव दिया कि

बुन्देलखण्ड के सभी साहित्यकारों की एक पुस्तक तैयार होना चाहिये ताकि बुन्देलखण्ड की साहित्यिक गतिविधयों का परिचय एक साथ हो सकें ।

- श्री रामसेवक रावत ने व्यास जी सम्बन्धी संस्मरण सुनाते हुये कहा कि व्यास जी ने आंचलिकता को राष्ट्रीय चेतना व जाग्रति के साथ जोड़ दिया । व्यास जी ने राष्ट्रीय ओज तथा शौर्य का मार्ग प्रशस्त किया । अतः में कवि गोष्ठी हुई ।

25.09.1980

दैनिक जागरण, झाँसी

- व्यास जी कोरे कवि नहीं थे । राजनीति के क्षेत्र में उन्होंने बीस वर्ष में जो काम किया वह कम सराहनीय नही था । सच्चे सिपाही की भाँति वह सदा आगे रहे और अनेक बार जेल गये । सन् 1921 में फिर सन् 1930 में लम्बी – लम्बी अवधि उन्हें कारावास में बितानी पड़ी । सन् 1941 में व्यक्तिगत सत्याग्रह आँन्दोलनों में वे झाँसी जिले के डिक्टेटर नियुक्त किये गये । जेल जाने के पूर्व टीकमगढ़ हम लोगों के पास आये, विदाई का वह दृश्य आज भी मेरी आंखों के सामने घूम रहा हैं, उन्हें छोड़ने कोई दो फलांग हम साथ गए । तब बीच सड़क पर रूक कर हमारे एक साथी रामसेवक रावत ने एक कविता सुनाई जिसका भाव था "ओ वीर सेनानी माँ को परतन्त्रता की बेड़ी से मुक्त करने के लिये

तू जा रहा हैं । भगवान तुझे सफलता दे । मेरे प्यारे योद्धा हम तुझे विदाई देते हैं ।" श्री बनारसी दास चतुर्वेदी जी ने व्यास जी को बेला के पुष्प भेंट किये । विदाई के उस समय में हम सबकी आँखे छलछला आई । व्यास जी भी विकलित हो गये । नमस्कार करके जब वह चले तो चेहरे पर मुस्कुराहट थी कुछ दिन बाद सूचना मिली की सरकार ने उन्हें अपना अतिथि बना लिया ।

"इस बार का जेल जीवन उनके लिये बड़ा ही घातक सिद्ध हुआ । झाँसी जेल से जहाँ कि उन्हें रखा गया था । उन्हें इतना अनुपयुक्त वातावरण मिला । जिससे उन्हें भारी मानसिक क्लेश हुआ । इसका असर उनके स्वास्थ्य पर पड़ा । जब वह जेल से मुक्त होकर आये तो उनका वजन छब्बीस पौंड कम हो गया था । मिलने पर उन्हानें कहा अबकी बार तो जेल ने मेरे प्राण ही ले लिये । अपने ही भाईयों के व्यवहार से मुझे जितना सन्ताप हुआ, उतना अधिकारियों के बर्ताव से नहीं ।"

व्यास जी में अपनी भूमि के प्रति अगाध अनुराग था, अपनी पावन भूमि की महिमा को उन्होनें अनेक रचनाओं में अभिव्यक्ति प्रदान की –

"वंदित विश्व में खण्ड बुन्देलखण्ड हैं और नहीं जिसका कहीं सानी ।
हो गया धन्य धरा में वही, जिसने कभी यहाँ का जो पिया पानी ।।"

नवभारत टाइम्स 20 मई सन् 1942 के
लेख से साभार
(यशपाल जैन – दिल्ली)

व्यास जी उस महान भूमि की सन्तान थे, जिसका इतिहास वीरों त्यागियों और कवियों की अमर गाथाओं से भरा पड़ा हें , व्यास जी में वीरता त्याग और काव्य इन तीनों का अद्भुत संमिश्रण था । बहादुरी उनमें कूट–कूट कर भरी थी । त्याग उनके स्वभाव का अभिन्न अंग था और काव्य तो मानों उनके जीवन की श्वांस थी । अपने समकालीन व्यक्तियों में उन्हें असामान्य लोकप्रियता प्राप्त थी, उनकी चारों ओर मांग रहती थी । जहाँ वह पहुँच जाते थे, लोग गद्गद् हो उठते थे ।

उद्‌गार :-

- "श्री व्यास जी को तो घर और बाहर राष्ट्रीयता ही नजर आती हैं ।"

  आगरा जेल 16.06.1922

  पं0 बाल कृष्ण शर्मा 'नवीन'

- "किसान कॉन्फ्रेस में राष्ट्रकवि घासीराम व्यास के राष्ट्रीय काव्य की और उनकी राजनीतिक विचारधारा की तारीफ करता हूँ ।"

  मऊरानीपुर 02.05.1932

  पं0 जवाहर लाल नेहरू

- "बुन्देलखण्ड धन्य हैं जिसने व्यास जी जैसे जन मानस के ह्रदय स्पर्श करने वाले राष्ट्रीय कवि को जन्म दिया ।"

  हिन्दी साहित्य सम्मेलन इन्दौर

  विक्रम सं0 1974

  महात्मा गाँधी

- "श्री व्यास जी बड़े मिलनसार, सरल, निरभिमानी और हंसमुख सज्जन थे । वे कोरे काल्पनिक जगत में विचरण करने वाले जीव न थे । वल्कि वास्तविक बातावरण में भी विहार करते थे । देश के लिये वे कई बार जेल गये । इसीलिये उनका स्वास्थ्य इतना खराब हो गया कि उन्हें असमय में ही परलोक यात्रा करनी पड़ी । व्यास जी गये और सदा के लिये गए, उनकी कहानी रह गयी । कहानी

से क्या ? आवश्यकता इस बात की हैं कि हिन्दी प्रेमी जन या कम से कम बुन्देंलखण्ड के मित्र उनके प्रति अपना कर्त्वय पालन करें । यह कर्तव्यपालन उनकी कविताओं का एक सुन्दर संग्रह प्रकाशित करने के रूप में हो ।"

राजा मण्डी– आगरा
मधुकर 16 मई 1942
हरिशंकर शर्मा

- स्वर्गवासी श्री घासीराम की सुधि आते ही मन को एक मसोस लग जाती हैं (वह भव्य सुन्दर चेहरा स्नेह और उदारता के निर्झर वे नेत्र जिनके पीछे निर्भीकता । चुपचाप हिलोड़े मारा करती थी आज सामने होते तो न मालूम कितनी सत्प्रेरणाओं को बल मिलता) ।

वृन्दावन लाल वर्मा

28.12.1953

- "स्वर्गवासी व्यास जी हमारे प्रान्त के एक रत्न थे । उनकी प्रतिभा से अभी हमें और पाने की आशा थी । परन्तु काल ने वह पूरी नहीं होने दी । उनकी मुत्यु से समष्टि रूप से हिन्दी की हानि तो हुई ही हैं । व्यक्तिगत सम्बन्ध से मेरी जो क्षति हुई उसकी पूर्ति अब कहाँ ?"

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

वि.सं. 1999 कार्तिक

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. व्यास – यश – सिंधु (राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ) पृष्ठ – 160 ।
2. व्यास – यश – सिंधु (राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ) पृष्ठ – 159 ।
3. व्यास – यश – सिंधु (राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ) पृष्ठ – 219 ।
4. व्यास – यश – सिंधु (राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ) स्मृतियाँ – पृष्ठ सं0 – 215 ।
5. व्यास – यश – सिंधु (राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ) स्मृतियाँ – पृष्ठ सं0 – 211 ।
6. व्यास – यश – सिंधु (राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ) स्मृतियाँ – पृष्ठ सं0 – 210 ।
7. व्यास – यश – सिंधु (राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ) स्मृतियाँ – पृष्ठ सं0 – 166 ।
8. व्यास – यश – सिंधु (राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ) स्मृतियाँ – पृष्ठ सं0 – 119 ।
9. व्यास – यश – सिंधु (राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ) अभिमत – पृष्ठ सं0 – 4 ।
10. व्यास – यश – सिंधु (राष्ट्रकवि घासीराम व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ) अभिमत – पृष्ठ सं0 – 151 ।

परिशिष्ट

आधार ग्रन्थ सूची :-

1. वीर ज्योति (सन् 1931 ई0) प्रकाशक : बलवंत प्रेस – झाँसी ।

2. जवाहर ज्योति (सन् 1931 ई0) प्रकाशक : आनन्द प्रेस – झाँसी ।

3. श्याम सन्देश (सन् 1943 ई0) प्रकाशक : दीनानाथ दिनेश भार्गव मानव धर्म कार्यालय खारी बावली, दिल्ली ।

4. अर्चना (सन् 1953 ई0) प्रकाशक : न्यू यूनियन प्रेस, मानिक चौक, झाँसी ।

5. राष्ट्रकवि घासीराम व्यास का व्यक्तित्व एवं कृतित्व (सन् 1977–78) लेखक श्री रामचरण हयारण 'मित्र' प्रकाशक – बुन्देलखण्ड शोध संस्थान, व्यास हिन्दी भवन (लक्ष्मी व्यायाम मन्दिर, झाँसी) ।

6. व्यास सुधा (सन् 1998 ई0) प्रकाशक : बुन्देलखण्ड हिन्दी शोध संस्थान, झाँसी ।

7. व्यास श्रद्धाँजलि अंक (सन् 2002 ई0) प्रकाशक : व्यास स्मृति न्यास 1353/3 मेंहदीबाग, नई बस्ती – झाँसी ।

8. व्यास – यश – सिंधु (कवि व्यास जन्म शताब्दी ग्रंथ) सन् 2003 प्रकाशक – श्री लक्ष्मी नारायण व्यास 'व्यास बंधु आश्रम' 1353/3 मेंहदी बाग – झाँसी ।

राष्ट्रकवि घासीराम व्यास का अप्रकाशित साहित्य :-

1. पियूषिनी ।
2. चन्द्रलोक की यात्रा ।
3. अन्य व्यास रचनाएँ ।
4. व्यास स्फुट रचनाएँ ।
5. व्यास फड़ साहित्य ।
6. राष्ट्रीय गीत ।

राष्ट्रकवि घासीराम व्यास के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाशित विद्धानों के आलेखों की सूची :-

1.	श्री रामचरण हयारंण 'मित्र'	:	आकाशवाणी, दिल्ली : 1946 दैनिक जागरण, झाँसी : 1959
	ब्रज साहित्य को देन	:	दैनिक जागरण, झाँसी : 1960 ब्रज भारती मथुरा : 1960
	गोपांगनाओं का विशुद्ध प्रेम	:	कल्याण गोरखपुर : 1963 आजाद मजदूर, जमशेदपुर दैनिक जागरण, झाँसी : 1967
	स्वतंत्रता संग्राम के बलिदानी कवि	:	स्वतंत्र प्रवाह, झाँसी : 1968
2.	श्री कन्हैयालाल 'कलश'	:	मेला जल बिहार और व्यास जयन्ती महिला उत्थान, मऊरानीपुर : 1983
3.	श्री सुभद्रा देवी पहारिया	:	व्यास मूर्ति स्थापना दिवस, महिला उत्थान, मऊरानीपुर : 1983
4.	वीरेन्द्र कौशिक, मऊरानीपुर	:	बुन्देलखण्ड कोकिल कविवर व्यास देशबन्धु सतना : 1988
5.	श्री हरीराम पाठक	:	राष्ट्रीय चेतना के गायक 'व्यास' दैनिक भास्कर, झाँसी : 1990
6.	श्री रामचरण हयारण 'मित्र'	:	राष्ट्रकवि व्यास लोकपथ समाचार दर्शन, झाँसी 1990
7.	श्री रामचरण हयारण 'मित्र'	:	बुन्देलखण्ड के कलमकार 'व्यास' दैनिक भास्कर, झाँसी : 1992
8.	श्री ओमशंकर खरे 'असर'	:	अततः व्यास जी दैनिक जागरण, झाँसी : 1993
9.	श्री लक्ष्मीनारायण व्यास	:	राष्ट्र प्रेमी व्यास जी दैनिक भास्कर, झाँसी : 1992
10.	श्री गौरीशंकर उपाध्याय	:	दैनिक अमर उजाला, झाँसी : 1997

11.	श्री लक्ष्मीनारायण व्यास	:	स्वतत्रंता संग्राम में व्यास जी का योगदान लोक समाचार दर्शन, झाँसी : 1997
12.	श्री लक्ष्मीनारायण व्यास	:	दैनिक विश्व परिवार, झाँसी : 1998
13.	श्री ओमप्रकाश हयारण 'दर्द'	:	दैनिक कर्मयुग प्रकाश, उरई 2001
14.	श्री गौरी शंकर उपाध्याय	:	दैनिक आज, झाँसी, 2002

-: सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. हिन्दी साहित्य में सामाजिक चेतना – डॉ0 रत्नाकार पाण्डेय – हरिराम द्विवेदी पाण्डुलिपि प्रकाशन, दिल्ली संस्क0 1976 ।

2. भारतीय संस्कृति और सांस्कृतिक चेतना – डॉ0 रामलेखावन पाण्डेय – राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली, प्र0 संस्करण – 1996 ।

3. भारतीय संस्कृति की रूपरेखा – डॉ0 गुलाबराय – साहित्य प्रकाशन मंदिर ग्वालियर, संस्क0 – 1978 ।

4. भारतीय संस्कृति – डॉ0 देवराज – सूचना विभाग लखनऊ प्र0 संस्करण – 1985 ।

5. साहित्य और संस्कृति – विश्वविद्यालय प्रकाशन दिल्ली 1967 प्रथम संस्करण ।

6. बुन्देलखण्ड का साहित्यक इतिहास – मोतीलाल त्रिपाठी 'अशाँत' लक्ष्मी प्रकाशन, 86 पुरानी नझाई, झाँसी ।

7. बुन्देलखण्ड का इतिहास – मोतीलाल त्रिपाठी 'अशाँत' ।

8. वर्तमान हिन्दी कवियों में राष्ट्रीयता – श्री कन्हैयालाल 'सहल' ।

9. वीर चीन पचीसी – कवि अम्बिकेश ।

10. मैथिलीशरण गुप्त : परम्परा और प्रयोग – डॉ0 हरवंश लाल शर्मा ।

11. बुन्देली लोक साहित्य – राममूर्ति त्रिपाठी ।

12. बुन्देलखण्ड की संस्कृति और साहित्य – रामचरण हयारण 'मित्र' ।

13. बुन्देल भारती – अवधेश ।

14. बुन्देलखण्ड की अमर क्रांति – श्रवण कुमार ।

15. वन्दनीय बुन्देलखण्ड – रा0के0 जड़िया ।

16. बुन्देली काव्य परम्परा – बलभद्र तिवारी ।

17. बुन्देलखण्ड की समस्यायें – मुन्ना द्विवेदी ।

18. बुन्देलखण्ड भाषी क्षेत्र के स्थान अभिधानों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन – डॉ0 कामिनी ।

19. बुन्देलखण्ड का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक अनुशीलन–रामस्वरूप ढेगुला ।

20. बुन्देलखण्ड का ऐतिहासिक मूल्याँकन – राधाकृष्ण बुन्देली ।

21. बुन्देली समाज और संस्कृति – बलभद्र तिवारी ।

22. मुक्तिबोध की काव्य चेतना और मूल्य संकल्प – हुकुमचंद्र राजपाल ।

23. मुक्तिबोध के काव्य में राष्ट्रीय चेतना – देवराज पंथिक ।

24. हिन्दी कविता में राष्ट्रीय भावना – विधानाथ गुप्त ।

25. कविता और संघर्ष चेतना – यश गुलाटी ।

26. मुक्तिबोध युग चेतना और अभिव्यक्ति – आलोक गुप्ता ।

27. सुमित्रानंदन पंत का नव चेतना काव्य – प्रेमनारायण जोशी ।

28. साहित्य और दलित चेतना – महीप सिंह ।

29. साहित्य और संस्कृति – अमृतलाल नागर ।

30. हिन्दी साहित्य में दलित चेतना – आनंद वास्कर ।

31. नई कविता की चेतना – डॉ0 जगदीश कुमार ।

32. राष्ट्रीय चेतना के कवि मैथिलीशरण गुप्त – सम्पादक – डॉ0 अर्जुन सतपथी – मधुसूदन साहा ।

33. हिन्दी कविता में राष्ट्रीय भावना – विधानाथ गुप्त ।

34. हिन्दी की राष्ट्रीय काव्य धारा – डॉ0 देवराज शर्मा 'पथिक' ।

35. माखन लाल चतुर्वेदी के काव्य में राष्ट्रीयता – सुरेन्द्र यादव ।

36. बुन्देलखण्ड का राजनैतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास – अब्दुल कय्यूम मर्दन ।

37. 1857 के स्वाधीनता संग्राम का हिन्दी साहित्य–डॉ0 भगवान दास माहौर ।

38. भारत का इतिहास एवं संस्कृति – कालूराम शर्मा – प्रकाश व्यास ।

39. साहित्य चिंतन – रामकुमार वर्मा ।

40. बुन्देलखण्ड (साहित्यक, ऐतिहासिक, साँस्कृतिक वैभव) डॉ0 रमेश चन्द्र श्रीवास्तव ।

41. राष्ट्रीयता के विसराव का आंतक – भानुप्रताप शुक्ल ।

42. बुन्देली कहानियाँ – डॉ0 रामनारायण शर्मा ।

43. बुन्देली भाषा साहित्य का इतिहास – डॉ0 रामनारायण शर्मा ।

44. बुन्देलखण्डकी लोकचित्र कला – डॉ0 श्रीमती मधु श्रीवास्तव ।

45. राष्ट्रीयता – बाबू गुलाब राय ।

46. हिन्दी साहित्य में गाँधी चेतना – डॉ0 रमेश चन्द्र शर्मा ।

47. बुन्देली लोक साहित्य – डॉ0 रामस्वरूप श्रीवास्तव 'स्नेही' ।

48. बुन्देलखण्ड दर्शन – श्री मोतीलाल त्रिपाठी 'अशाँत' ।

49. वेतवा वाणी – बुन्देलखण्ड विश्व विद्यालय – झाँसी ।

50. झाँसी की रायसो – श्री कल्याण सिंह कुंडरा ।

51. बुन्देली लोक साहित्य – श्री प्रकाश जैन ।

52. मैथिलीशरण गुप्त – व्यक्ति और काव्य – डॉ0 कमलाकाँत पाठक ।

53. बुन्देली लोक काव्य – डॉ0 बलभद्र तिवारी ।

-: सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

दैनिक समाचार पत्र :-

1. दैनिक मध्यदेश – गणतत्रं विशेषाँक – 1971 ।

2. साहित्य संदेश – आगरा अप्रैल – 1939

3. दैनिक राष्ट्रबोध – झाँसी 14 सितम्बर 2003 ।

4. दैनिक जागरण झाँसी – 25 सितम्बर 1980 ।

5. बुन्देलखण्ड साहित्य लेखमाला – 28 ।

6. नवभारत टाइम्स, 20 मई 1942

7. नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली – 28 जुलाई 1957 ।

पत्रिकाएँ :–

1. बेतवावाणी – बुन्देली काव्य भाषा और बोली – श्री नाथूराम माहौर अंक अगस्त – अक्टूबर – 1978 ।

2. मधुकर – 16 जुलाई – 1941, पृष्ठ 32 – 34 ।

3. बेतवावाणी – बुन्देलीखण्ड विश्व विद्यालय, झाँसी अंक – अगस्त – अक्टूबर – 1978 ।

4. लोकप्रभा – सुकवि – अप्रैल – 1930, पृष्ठ 31 ।

5. बुन्देली वार्ता – मासिक

6. ज्येष्ठ – असाढ़ सम्वत् – 1990, पृष्ठ – 7 ।

7. वाणी – नीमाड़ अंक – खरगौन ।

8. सुकवि – 15 जून – 1939 ।

9. बुन्देलखण्ड प्रांत निर्माण अंक मधुकर सन् 1943 ।

10. सुकवि, सितम्बर – 1929 पृष्ठ – 23 ।

11. सुकवि, सितम्बर – 1956 पृष्ठ – 23 ।

12. सुकवि, 15 मई – 1941 पृष्ठ – 14 ।

13. सुकवि, अक्टूबर – 1926 पृष्ठ – 16 ।

14. सुकवि, अक्टूबर – 1930 पृष्ठ – 26–27 ।

15. मधुकर – 16 फरवरी 1942, पृष्ठ – 24 ।

16. मधुकर – 16 मई 1942 ।

17. मधुकर – 1 अगस्त 1942, पृष्ठ – 20 ।

18. बुन्देली वार्ता

अभिनन्दन ग्रन्थ :–

1. राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त – अभिनन्दन ग्रंन्थ ।

2. श्री माहौर अभिनंदन ग्रथ । पृष्ठ – 33 – 36 सन् 1959 ।

3. प्रेमी अभिनंदन ग्रथ पृष्ठ 601 – 602 ।